तब्लीग़-ए हिदायत

लेखक

हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब एम.ए.(रज़ि)

प्रकाशक

नज़ारत नश्र-व-इशाअत, क़ादियान

هُوَ الَّذِیۡۤ اَرۡسَلَ رَسُوۡلَهٗ بِالۡهُدٰی وَدِیۡنِ الۡحَقِّ لِیُظۡهِرَهٗ عَلَی الدِّیۡنِ كُلِّهٖ وَلَوۡ كَرِهَ الۡمُشۡرِكُوۡنَ۔ (الصّف:10)

अनुवाद :- वही (ख़ुदा) है जिसने अपने रसूल को हिदायत और सच्चे धर्म के साथ भेजा ताकि वह उसे धर्म (के प्रत्येक क्षेत्र) पर पूर्णरूप से विजयी कर दे चाहे मुश्रिक कितना ही बुरा मनाएँ।

तब्लीग़-ए-हिदायत

लेखक

हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब एम.ए.(रज़ि)

प्रकाशक

नज़ारत नश्र-व-इशाअत, क़ादियान

नाम पुस्तक : तब्लीग़-ए-हिदायत

Name of book : Tablig-e-Hidayat

लेखक : हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब एम.ए.(रज़ि)

Writer : Hazrat Mirza Bashir Ahmad M.A.[R]

अनुवादक : अलीहसन एम.ए., एच.ए.

Translator :Ali Hasan, M.A., H.A,

प्रथम हिन्दी संस्करण : जुलाई 2018 ई.

First Hindi Ed. : July 2018

संख्या : 1000

Quantity : 1000

प्रकाशक : नज़ारत नश्र व इशाअत,
क़ादियान 143516
ज़िला-गुरदासपुर (पंजाब)

मुद्रक : फ़ज़्ले उमर प्रिंटिंग प्रेस,
क़ादियान 143516
ज़िला-गुरदासपुर (पंजाब)

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

प्राक्कथन

ख़ुदा लोगों के सन्मार्ग हेतु सदैव से नबी, रसूल (अवतार) अवतरित करता रहा है जैसा कि क़ुर्आन शरीफ़ में वर्णित है कि

وَلِكُلِّ قَوْمٍ هَادٍ (अर्रअद - ८)

उसने हर क़ौम में हिदायत देने के लिए सुधारक भेजे हैं, अतः वे लोगों के लिए सन्मार्ग की एक दिशा छोड़ जाते हैं परन्तु समय बीतने के साथ-साथ लोग उनकी शिक्षाओं और सन्मार्ग प्राप्ति के ढंगों को भूल जाते हैं और अपनी अलग-अलग मनगढ़ंत विचारधाराओं को सन्मार्ग प्राप्ति के साधन समझ बैठते हैं जिससे एक ही धर्म में अनगिनत पंथ और गिरोह (फ़िर्क़े) जन्म ले लेते हैं और हर एक अपने आप को सन्मार्ग का अनुगामी और दुसरे को भ्रष्ट समझने लगता है इस्लाम में भी ऐसा ही हुआ और मुसलमान सन्मार्ग प्राप्ति की सही दिशा निर्देश न पाकर सैंकड़ों फिर्कों में बंट गए।

अतः इस पुस्तक में क़ुर्आन, हदीस और उम्मत के बुज़ुर्गों के दृष्टान्तों को ध्यान में रखते हुए लोगों की सन्मार्गप्राप्ति का विशेष ध्यान रखा गया है और स्पष्ट किया गया है कि आख़िरी युग में आने वाले मसीह और महदी एक ही अस्तित्व के दो रूप हैं और उससे सम्बन्धित भविष्यवाणियों और निशानियों के अतिरिक्त उनके स्थान और कार्यों का भी वर्णन किया गया है। इसके अतिरिक्त ख़त्मे-नुबुव्वत और हज़रत मिर्ज़ा गुलाम अहमद साहिब क़ादियानी अलैहिस्सलाम के दावों पर भी उदाहरण एवं तार्किक रूप से प्रकाश डाला गया है।

यह उर्दू भाषा की मूल पुस्तक तब्लीग़-ए-हिदायत लेखक मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब एम.ए. का हिन्दी अनुवाद है जिसे आदरणीय

अली हसन साहिब एम.ए. फ़ाज़िल ने बड़ी लगन से किया है और श्री शेख़ मुजाहिद अहमद शास्त्री, श्री मुहम्मद नसीरुल हक़ आचार्य और श्री फरहत अहमद आचार्य ने इसका रिवियु किया है। समय की आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए इसे पहली बार इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब की अनुमति से प्रकाशित किया जा रहा है। आशा है कि यह पुस्तक हिन्दी भाषियों के लिए बहुत लाभदायक सिद्ध होगी। अमीन

नाज़िर नश्र व इशाअत
क़ादियान

विषय सूची

प्रस्तावना

पैग़म्बरों के आने का सिलसिला

विश्व के समस्त धर्मों पर दृष्टि डालने से पता लगता है कि प्रारम्भ से ही अल्लाह तआला का यह विधान है कि वह अधर्म और अन्धकार के प्रत्येक युग में अपनी ओर से किसी स्वच्छ छवि वाले महान व्यक्ति को लोगों के सन्मार्गदर्शन के लिए अवतरित करता है और उसके द्वारा लोगों का सुधार करता है और नए-नए चमत्कारों के द्वारा अपने रूप संसार पर प्रकट करके नास्तिकता के अन्धकार से लोगों को बाहर निकालता है। पैग़म्बरों के आने का यह सिलसिला प्रारम्भ से लेकर अब तक निरन्तर चला आ रहा है। प्रारम्भिक काल में जब विभिन्न देशों और क़ौमों के मध्य पारस्परिक मेल-जोल के साधन न के बराबर थे, हर देश दूसरे देश से कटा हुआ था, हर क़ौम दूसरी क़ौमों से अनभिज्ञ थी मानों हर देश और हर क़ौम का एक अलग-अलग संसार था। इसलिए अल्लाह तआला की ओर से उस समय अलग-अलग देश और क़ौमों के लिए अलग-अलग पैग़म्बर आते थे। जैसा कि क़ुर्आन शरीफ में अल्लाह तआला का कथन है कि :-

وَإِنْ مِّنْ أُمَّةٍ إِلَّا خَلَا فِيهَا نَذِيرٌ -

(सूरह फ़ातिर 35:25)

अर्थात ''कोई ऐसी क़ौम नहीं जिसमें अल्लाह तआला की ओर से कोई जागरुक करने वाला (पैग़म्बर) न आया हो।''

अत: जिस तरह शाम (सीरिया), मिस्र, इराक़ इत्यादि में अल्लाह तआला के पैग़म्बर आए उसी तरह हिन्दुस्तान, चीन, फारस के अतिरिक्त विश्व के अन्य देशों में भी आए। इसलिए हम हर देश और हर क़ौम में आए हुए रसूलों को सच्चा जानते और

मानते हैं, जहाँ हम हज़रत नूह[(अ)], हज़रत इब्राहीम[(अ)], हज़रत मूसा[(अ)] और हज़रत ईसा[(अ)] पर ईमान लाते हैं वहीं ज़रतुश्त, गौतम बुद्ध, कन्फ्यूशस और कृष्ण इत्यादि के भी पैग़म्बर होने को स्वीकार करते हैं और उनको उसी आदर सम्मान की दृष्टि से देखते हैं जो एक नबी की शान के अनुकूल है।

सिलसिला-ए-पैग़म्बरी का चरमोत्कर्ष

उपरोक्त सारे पैग़म्बर और उस काल में आने वाले अन्य पैग़म्बर भी उसी प्राचीनकाल के लिए थे जब संसार की विभिन्न क़ौमें एक दूसरे से अनभिज्ञ थीं और हर देश दूसरे देशों से कटा हुआ था और मनुष्य का मानसिक विकास भी अपनी प्रारम्भिक अवस्था में था, परन्तु जब वह समय निकट आने लगा कि समस्त संसार वसुधैव कुटुम्बकम बनने लगा और विभिन्न क़ौमों के मध्य पारस्परिक सम्बन्ध स्थापित होने लगे और लोगों का मानसिक विकास शनै: शनै: उन्नति करके अपनी परिपक्वता को पहुँचने लगा तो अल्लाह तआला ने अलग-अलग क़ौमों और अलग-अलग देशों में रसूल भेजने के बजाए सारे विश्व के लिए एक ही सिरमौर रसूल अवतरित किया और ऐसी पृथक-पृथक शिक्षाएँ अवतरित करने के स्थान पर जो पूर्व की भाँति लोगों की केवल सामयिक आवश्यकताएँ पूरी करने वाली हों, समस्त युगों और समस्त मानव क़ौम के लिए एक ही सकल और सम्पूर्ण पुस्तक अवतरित की। यह रसूल मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पुत्र अब्दुल्लाह थे जो सातवीं शताब्दी ईसवी के प्रारम्भ में ख़ुदा की ओर से समस्त विश्व की पैग़म्बरी के लिए चुने गए और वह किताब क़ुर्आन मजीद है जो मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को दी गई।

क़ुर्आन की शिक्षा का शाब्दिक व आर्थिक संरक्षण इस्लाम के जीवन्त होने का आसमानी प्रमाण

इस पवित्र रसूल और पवित्र पुस्तक के अवतरण से रसूलों और पुस्तकों के अवतरण का सिलसिला अपने चरमोत्कर्ष को पहुँच गया। जैसा कि अल्लाह तआला का कथन है :-

وَلٰكِنْ رَّسُوْلَ اللّٰهِ وَخَاتَمَ النَّبِيّٖنَ

(सूरह अहज़ाब 33:41)

फिर फ़रमाया :-

اَلْيَوْمَ اَكْمَلْتُ لَكُمْ دِيْنَكُمْ وَاَتْمَمْتُ عَلَيْكُمْ نِعْمَتِيْ وَرَضِيْتُ لَكُمُ الْاِسْلَامَ دِيْنًا ۔

(सूरह मायद: 5:4)

अर्थात ''मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम अल्लाह तआला के ऐसे रसूल हैं जिन पर पैग़म्बरी की समस्त विशेषताएँ अपने चरमोत्कर्ष को पहुँच चुकी हैं। इसलिए आज हमने तुम्हारे लिए तुम्हारे धर्म को चरमोत्किर्ष तक पहुँचा दिया है और तुम पर अपनी नेमत पूरी कर दी है और तुम्हारे लिए धर्म इस्लाम पसन्द किया है।''

चूँकि क़ुर्आन करीम के माध्यम से ख़ुदा की शिक्षा अपने चरमोत्कर्ष को पहुँच चुकी अब इसके बाद अन्य कोई शरीअत (धर्म विधान) नहीं थी। इसलिए अल्लाह तआला ने इसके सम्बन्ध में स्वयं कहा कि :-

اِنَّا نَحْنُ نَزَّلْنَا الذِّكْرَ وَاِنَّا لَهٗ لَحٰفِظُوْنَ ۔

(सूरह अल-हज्र 15:10)

अर्थात ''नि:सन्देह हमने ही यह क़ुर्आन उतारा है और अवश्यमेव हम इसकी रक्षा करेंगे।''

सुरक्षा का यह वादा अन्य किसी आसमानी पुस्तक के साथ

नहीं है, जिसका यह कारण कदापि नहीं कि अन्य किताबें ख़ुदा तआला की ओर से न थीं बल्कि ऊपर बताया जा चुका है कि क़ुर्आन शरीफ से पहले जितनी भी आसमानी पुस्तकें अवतरित हुईं वे भी ख़ुदा तआला की ओर से थीं परन्तु वे केवल विशेष समय और क्षेत्र तक सीमित थीं और विशेष क़ौमों और विशेष युगों की ही आवश्यकताओं को पूरी करती थीं वे सम्पूर्ण मानव जगत और सम्पूर्ण युगों के लिए न थीं, अन्तत: एक दिन उनकी समयसीमा समाप्त हो जाने वाली थी। इसलिए उनके साथ ऐसे चिरस्थायी वादा की आवश्यकता न थी। किन्तु क़ुर्आन शरीफ की सुरक्षा आवश्यक थी क्योंकि वह समस्त मानव जगत और समस्त युगों की आवश्यकताओं को पूरा करने वाली थी। जिसके अन्दर ऐसे रहस्यज्ञान छिपे हुए थे जो समयानुसार विभिन्न युगों में प्रकट होने वाले थे। इसलिए आवश्यक था कि वह सदा के लिए अपने मूल शब्दों में सुरक्षित रखा जाता।

यह सुरक्षा दो प्रकार से हुई। **प्रथम** शब्दों की दृष्टि से और द्वितीय अर्थों की दृष्टि से। अत: सुरक्षा के यही दो दृष्टिकोण हैं, **प्रथम** यह कि क़ुर्आन शरीफ के शब्दों की सुरक्षा हो, अभिप्राय यह कि जिस रूप में उनका हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पर अवतरण हुआ है उसी रूप में वे बिना किसी परिवर्तन के ज्यों के त्यों सुरक्षित रहें। **दूसरा** यह कि क़ुर्आन शरीफ के सही अर्थ दुनिया में मौजूद रहें और क़ुर्आन की शिक्षाओं का वास्तविक मर्म दुनिया से मिटने न पाए। अतएव क़ुर्आन शरीफ को यह दोनों प्रकार की सुरक्षा मिली। लेकिन अन्य पुस्तकें और धर्म इस सुरक्षा से वंचित रहे, न तो उनके शब्द ही मूलत: सुरक्षित रहे और न ही उनके मार्मिक अर्थों और शिक्षाओं को शाश्वत रखने के लिए अल्लाह तआला की ओर से कोई स्थायी प्रबन्ध हुआ क्योंकि वे अपना कार्य और समय पूरा कर चुके थे अब उनकी आवश्यकता

न थी। इसलिए वे अपनी आधारभूत शिक्षाओं की दृष्टि से मर गए और केवल नाम या बदले हुए ढाँचे के अतिरिक्त उनका कुछ शेष न रहा और उनका हाल उस बाग़ की तरह हो गया जिसके मालिक ने उनके वृक्षों के सूख जाने के कारण उसकी देखभाल छोड़ दी हो और एक नया बाग़ लगा लिया हो। अत: इस्लाम उनकी तरह नहीं है बल्कि यह एक जीवित धर्म है और सदैव जीवित रहने के लिए क़ायम किया गया है। इसलिए इसके शब्दों की सुरक्षा की गई और अर्थों की भी।

शाब्दिक सुरक्षा तो इस तरह हुई कि वह अवतरण के समय से ही साथ-साथ लिखा गया और साथ ही बहुत से लोगों को शब्द-शब्द ज्यों का त्यों कंठस्थ करा दिया गया और इसकी कई प्रतियाँ लिखकर सुरक्षित कर ली गईं और इस्लामी शासन की ओर से उसकी विशेष सुरक्षा की गई और शीघ्र ही लाखों प्रतियों में लिखकर सम्पूर्ण विश्व में फैला दिया गया और प्रकाशित भी किया गया। आज भी दुनिया में लाखों लोग ऐसे हैं जो क़ुर्आन को कंठस्थ किए हुए हैं। तात्पर्य यह कि इसकी ऐसी सुरक्षा हुई कि स्वयं इस्लाम के कट्टर विरोधी भी स्वीकार करते हैं कि मौजूदा क़ुर्आन बिना किसी परिवर्तन के नि:सन्देह वही क़ुर्आन है जो आज से साढ़े तेरह सौ वर्ष पूर्व मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पर अवतरित हुआ था। सारा विश्व इसकी शाब्दिक सुरक्षा को आज भी स्वीकार करता है। (देखिए लाइफ ऑफ मुहम्मद - लेखक सर विलियम म्योर)

अर्थों की सुरक्षा इस तरह हुई कि इसके लिए अल्लाह तआला की ओर से यह प्रबन्ध हुआ कि हर ज़माने में ऐसे लोग पैदा होते रहे हैं जो क़ुरआनी शिक्षा के मर्म को उजागर और क़ायम करते रहे हैं जिनके द्वारा इस्लाम अपने मर्म और चमत्कार की दृष्टि से जीवित रहा। अर्थात इस्लाम उस फल की भाँति कभी नहीं हुआ जिसका गूदा नष्ट हो जाए और केवल छिलका शेष रहे। अत: जब जब मुसलमान

अधर्म और दुराचार की ओर झुके हैं और उनमें इस्लामी शिक्षाओं से लगाव कम हुआ है और उनमें ग़लत आस्थाएँ और दूषित विचार दाखिल होने लगे हैं और उनका ईमान कमज़ोरी की ओर अग्रसर हुआ है और नास्तिकता अपना रंग दिखाने लगी है और हालात बिगड़ने शुरू हुए हैं। तात्पर्य यह कि जब कभी अधर्म ने ज़ोर पकड़ा है तो अल्लाह तआला ने अपनी सुन्नत (विधान) के अनुसार मुसलमानों के मार्गदर्शन हेतु अपने आदेश से किसी मुजद्दिद (सुधारक) को अवतरित कर दिया है ताकि वह ख़ुदा के नए चमत्कारों के साथ पुन: लोगों के ईमान को जीवित करे और अपने पवित्र सदाचरण के द्वारा उनको पुन: धर्म की मज़बूत चट्टान पर खड़ा करके इस्लाम की वास्तविक शिक्षा सिखाए और उनकी ग़लत आस्थाओं और दूषित विचारों को दूर करे। ऐसे महापुरुष हमेशा इस्लाम के अन्दर पैदा होते रहे हैं और यही इस्लाम के जीवित धर्म होने का जीवित प्रमाण है। इससे ज्ञात होता है कि इस्लाम एक छोड़े हुए बाग़ की तरह नहीं है बल्कि इसका माली हर समय इसकी सुरक्षा और सुधार की फिक्र में है और इसके वृक्ष अभी सूखे नहीं और न ही फल देना बन्द किया है बल्कि अब भी फल दे रहे हैं, परन्तु दूसरे धर्म इस विशेषता से वंचित हैं अर्थात अब उनमें ऐसे लोग नहीं पाए जाते जो ख़ुदा के आदेश के साथ संसार में सुधार के लिए खड़े होते हैं जिन्हें ख़ुदा अपनी वाणी और प्यार से प्रतिष्ठित करता है।

मात्र भौतिक ज्ञान जीवन का प्रमाण नहीं और न ही वह जीवनदायक है

नि:सन्देह भौतिक ज्ञानों की दृष्टि से हर धर्म में विद्वान पाए जाते हैं। परन्तु यह ज्ञान जीवन का प्रमाण नहीं, क्योंकि ऐसे लोग उन

सूखी लकड़ियों से बढ़कर नहीं जो एक उजड़े हुए बाग़ में मिलती हैं बल्कि जीवन उसका नाम है कि अल्लाह तआला की ओर से ज्ञान पाकर और उसकी जीवित वाणी से जीवन प्राप्त करके कोई महापुरुष सुधार के लिए खड़ा हो। पर खूब देख लो कि ऐसे लोग इस्लाम के अतिरिक्त और कहीं नहीं दिखाई देंगे। संसार के अन्दर सुधार करना हर एक का काम नहीं और नास्तिकता के गढ़े से निकालकर एक ख़ुदा की इबादत और उस पर विश्वास की मज़बूत चट्टान पर खड़ा कर देना मात्र भौतिक ज्ञानों के द्वारा नहीं हो सकता। भौतिक ज्ञान के बल पर यदि कोई व्यक्ति ख़ुदा की हस्ती को मनवा सकता है तो केवल इस हद तक कि कोई ख़ुदा **''होना चाहिए''** इससे बढ़कर कुछ नहीं। परन्तु क्या यह विश्वास मोक्ष के लिए पर्याप्त है ? और क्या इस स्तर का ज्ञान मनुष्य के जीवन में कोई सच्चा परिवर्तन पैदा कर सकता है ? कदापि नहीं। बल्कि मोक्ष के लिए यह आवश्यक है कि अल्लाह के सम्बन्ध में हमारा विश्वास इस सीमा तक हो कि मानो हमने ख़ुदा को देख लिया और उसके अस्तित्व का आभास कर लिया। अतएव हमारा विश्वास ख़ुदा ''होना चाहिए'' तक न रहे बल्कि ख़ुदा ''है'' के विश्वसनीय स्तर तक पहुँच जाए। यही वह ईमान है जो सुधार कर सकता है और दिल के अन्दर विश्वास भरता है और हृदय के मनोविकारों को जलाकर राख कर देता है और मनुष्य को एक नया जीवन प्रदान करके उसके अन्दर एक नया आत्मविश्वास डाल देता है और स्रष्टा के साथ उसका व्यक्तिगत सम्बन्ध करा देता है। यहाँ तक कि ख़ुदा ख़ुद बन्दे से बातें करता है और उसकी दुआओं को सुनता है और उसके सवालों का जवाब देता है। लेकिन यह बातें मात्र भौतिक ज्ञान से संभव नहीं और न यह आवश्यक है कि भौतिक ज्ञानों का ज्ञाता इन्हें जानता हो।

इस्लाम में मुजद्दिदों (सुधारकों) के आने का सिलसिला

इस्लाम की यह एक विशेषता है कि हमेशा इसमें ज़रूरत के समय ऐसे लोग पैदा होते रहे हैं जो ख़ुदा के संवाद और वार्तालाप से सम्मानित थे और ख़ुदा से हिदायत प्राप्त करके लोगों का मार्ग दर्शन करते थे और इस्लामी शिक्षाओं की वास्तविकता उनके द्वारा जीवित रहती थी। ऐसे लोग यों तो समय-समय पर इस्लाम में पैदा होते रहे हैं। परन्तु हर शताब्दी के आरम्भ में विशेष रूप से ऐसे महापुरुषों का प्रकटन होता रहा है जिसकी आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने स्वयं भविष्यवाणी की थी कि :-

إِنَّ اللّٰهَ يَبْعَثُ لِهٰذِهِ الْأُمَّةِ عَلٰى رَأْسِ كُلِّ مِائَةِ سَنَةٍ مَنْ يُّجَدِّدُ لَهَا دِيْنَهَا ۔ (ابوداؤد جلد ۲ باب الملاحم)

''अल्लाह तआला मुसलमानों के अन्दर हर शताब्दी के आरम्भ में किसी ऐसे व्यक्ति को पैदा करता रहेगा जो मुसलमानों की उन ग़ल्तियों को दूर करेगा जो मध्यान्तरकाल में उन के अन्दर पैदा हो चुकी होंगी और मुसलमानों को नवजीवन प्रदान करेगा।''

अत: इतिहास से स्पष्ट होता है कि वादा के अनुसार हर शताब्दी हिजरी के प्रारम्भिक काल में विशेषत: और शेष समयों में साधारणत: ऐसे लोग प्रकट होते रहे हैं जिनके द्वारा क़ुर्आन की असल शिक्षा और इस्लाम की वास्तविक विशेषता का समय की आवश्यकतानुसार प्रकटन होता रहा है और वे ख़ुदा के आदेश से लोगों का शैक्षिक और आध्यात्मिक सुधार करते रहे हैं। अत: हज़रत शेख अब्दुल क़ादिर साहब जीलानी, बारहवीं शताब्दी हिजरी के मुजद्दिद हज़रत शेख अहमद साहब सरहिन्दी, हज़रत शाह वलीउल्लाह साहब देहलवी, हज़रत सैयद अहमद साहब

बरेलवी इत्यादि उन्हीं पवित्र लोगों में से हैं। उन लोगों ने अपने-अपने समय में ख़ुदा से हिदायत पाकर लोगों का सुधार किया और अपने-अपने समयों की उन कुरीतियों को दूर किया जिनके दूर करने का समय आ चुका था और जिनके विषय में ख़ुदा की इच्छा थी कि वे दूर किए जाएँ।

शिक्षा की पूर्णता के बावजूद सुधारकों की आवश्यकता है

यदि किसी के दिल में यह भ्रम पैदा हो कि जब क़ुर्आन शरीफ की शिक्षा हर तरह से पूर्ण और पर्याप्त है तो इसके होते हुए सुधारक की क्या आवश्यकता है, हर व्यक्ति जो इसकी शिक्षा का पाबन्द हो वह अपना सुधार स्वयं कर सकता है ? तो यह पूर्णत: एक ग़लत विचार होगा। क्योंकि :-

1. हमारा अनुभव इस विचार को ग़लत ठहराता है क्योंकि हम देखते हैं कि क़ुर्आन की व्यापक और पूर्ण शिक्षा होने के बावजूद भी मुसलमान धार्मिक दृष्टि से दिन प्रतिदिन नीचे गिरते जा रहे हैं और यह जानते हुए भी कि हम गिर रहे हैं, उठ नहीं सकते। इसके अतिरिक्त जब हम पूर्व युगों पर दृष्टि डालते हैं तब भी यही पाते हैं कि संसार के इतिहास में कभी ऐसा नहीं हुआ कि कोई क़ौम धार्मिक दृष्टि से गिरकर फिर अपने आप उठी हो या उठ सकी हो।

2. प्रारम्भिक काल से चला आ रहा ख़ुदा का कानून इस विचार को ग़लत सिद्ध कर रहा है। क्योंकि हम देखते हैं कि प्रारम्भ से ख़ुदा का यही विधान चला आ रहा है कि हर अन्धकार के युग में वह कोई न कोई सुधारक पैदा करता है। देखो हज़रत मूसा अलै. की क़ौम के लिए तौरात की शिक्षा पूर्ण थी जो उनके अन्दर मौजूद थी, लेकिन

उसके बावजूद अल्लाह तआला हर अन्धकार के युग में अपनी ओर से कोई न कोई सुधारक भेज कर उनके द्वारा मूसा की क़ौम का सुधार करता रहा। क़ुर्आन शरीफ में ख़ुदा का वर्णन है कि :-

وَقَفَّيْنَا مِن بَعْدِهِ بِالرُّسُلِ۔

(सूरह अल-बक़र: 2:88)

''हमने मूसा के बाद उसी की पेरवी (मतानुसरण) में लगातार बहुत से रसूल भेजे।''

3. शिक्षा के पूर्ण होने का तो यही अर्थ है कि अल्लाह तआला ने समस्त आध्यात्मिक तरक़्क़ियों की राहें इसमें बता दी हैं और तमाम आवश्यकताएँ पूरी कर दी हैं। लेकिन यदि लोगों की टीका-टिप्पणियों से उस शिक्षा की सूरत ही बिगड़ जाए और उसकी असली विशेषता समाप्त हो जाए तो फिर वह उस समय तक किस तरह सुधार का काम दे सकती है जब तक कि उसके ऊपर से टीका-टिप्पणियों के तमाम् पर्दों को उतार कर फिर से उसके अन्दर असली विशेषता न डाल दी जाए। पूर्ण शिक्षा नि:सन्देह एक जौहर प्रकट करने वाली तलवार के समान है लेकिन उसको चलाने वाला भी तो कोई होना चाहिए।

4. हर एक शिक्षा चाहे वह विशेषताओं की दृष्टि से कितनी ही व्यापक और परिपूर्ण हो, जीवित उदाहरण के बिना अधूरी ही होती है। इसलिए अल्लाह तआला उन आध्यात्मिक सुधारकों के द्वारा जो साधना के तमाम् स्तरों से परिचित होते हैं दुनिया में इस्लामी शिक्षा के आदर्श स्थापित करता है।

5. अल्लाह पर ईमान एक ऐसे वृक्ष के समान है कि जब तक उसे अल्लाह की ओर से ताज़ा-ताज़ा निशान रूपी पानी न मिलता रहे वह सूख जाता है और "है" के दृढ़ विश्वास से घटकर ''होना चाहिए'' के खतरनाक विचारों में आ जाता है जहाँ सन्देहों और भ्रान्तियों के विषैले विचार उसे मुर्दा कर देते हैं। परन्तु जो ईमान नबियों और वलियों के माध्यम से प्राप्त होता है वह एक ज़िन्दा हक़ीक़त है जिससे अल्लाह

तआला का अस्तित्व अनुभूत और सुस्पष्ट हो जाता है और मनुष्य अल्लाह तआला के साथ व्यक्तिगत सम्बन्ध पैदा करने के योग्य हो जाता है फिर उसे एक नया जीवन मिलता है। इसीलिए शिक्षा की पूर्णता के बावजूद भी ऐसे महापुरुषों की आवश्यकता शेष रहती है जो ख़ुदा तआला की विशेषताओं के द्योतक हों और उनके द्वारा दुनिया में नए-नए निशानों की धारा बहती रहे। इसके अतिरिक्त ये आध्यात्मिक मार्गदर्शक जो अल्लाह तआला के आदेश से दुनिया में खड़े किए जाते हैं अपने अन्दर एक विशेष खिंचाव और आकर्षण रखते हैं जिसके द्वारा वे सज्जनों को अपनी ओर आकर्षित करने में समर्थ होते हैं और वस्तुत: यही वह आकर्षण है जो सोए हुओं को जगाता है।

6. आध्यात्मिक विषयों में जो ख़ुदा से सम्बन्ध रखते हैं जब तक सच्चा और नि:सन्देह मार्गदर्शन न हो तब तक वह लाभदायक नहीं हो सकता बल्कि हानिकारक ही सिद्ध होता है। निश्चित रूप से सच्चा सुधार किसी ऐसे महापुरुष के बिना असम्भव है जो ख़ुदा की ओर से ज्ञान पाने वाला और उसके ताज़ा आदेश से खड़ा हुआ हो। एक भौतिकवादी अपने भौतिक ज्ञान से जो सुधार करेगा तो सम्भव है कि उसमें चार बातें सही हों और दस पूर्णत: ग़लत हों। अत: आज मुसलमानों में जो अत्यधिक मतभेद हैं वे किस तरह दूर हो सकते हैं ? जब तक कि कोई व्यक्ति ख़ुदा तआला की ओर से न्यायक बन कर उसका निर्णय न करे।

7. आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का यह भविष्यवाणी करना कि इस्लाम में आध्यात्मिक सुधारक पैदा होते रहेंगे, स्वयं इस बात का प्रमाण है कि शरीअत की पूर्णता के बावजूद भी सुधारकों की आवश्यकता है।

8. इस्लाम के अन्दर ऐसे लोगों का अस्तित्व भी व्यावहारिक दृष्टि से उनकी आवश्यकता को सिद्ध करता है।

तात्पर्य यह कि हर अन्धकार के युग में ख़ुदा की ओर से किसी आध्यात्मिक सुधारक का पैदा होना आवश्यक है और व्यवहारिक

दृष्टि से भी आज तक अल्लाह तआला का यही विधान, इस्लाम के अन्दर चला आया है कि वह अपनी पवित्र वाणी के द्वारा अपने पवित्र भक्तों को इस्लाम की सहायता और मुसलमानों के सुधार के लिए खड़ा करता रहा है। इसके अतिरिक्त आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की भविष्यवाणी से भी यही पता चलता है कि हर अन्धकार युग में साधारणत: और शताब्दियों के प्रारम्भिक काल में विशेषत: सुधारक पैदा किए जाएँगे।

आख़िरी युग (अर्थात कलियुग) के बारे में एक भयानक फित्ना की भविष्यवाणी

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने जहाँ साधारण सुधारकों के पैदा होने की भविष्यवाणी की थी वहाँ आपने मुसलमानों को इस बात की भी ख़बर दी थी कि आख़िरी युग में बड़े-बड़े उपद्रव और बिगाड़ पैदा होंगे। जिनके सन्दर्भ में आपने फ़रमाया :-

''सच्चा अध्यात्मज्ञान उठ जाएगा और क़ुरआन शरीफ की वास्तविक शिक्षा लोगों के दिलों से ख़त्म हो जाएगी। ईमान संसार से उठ जाएगा और नास्तिकता अपना ज़ोर दिखाएगी लोग दुष्कर्मों में लिप्त हो जाएँगे और मुसलमान अपने दुष्कर्मों में पूर्णत: यहूदियों की नकल करेंगे और मुसलमानों में परस्पर बहुत मतभेद होगा और उनके बहुत से फ़िर्क़े हो जाएँगे। उलमा के आचरण बहुत ख़राब हो जाएँगे यहाँ तक कि वे आसमान के नीचे सबसे बुरे लोग होंगे। इस्लाम चारों ओर से मुसीबतों से घिर जाएगा। सारे धर्म इस्लाम पर हमले करेंगे, पर ईसाई धर्म विशेष रूप से बहुत ज़ोरों पर होगा और दज्जाल अपनी फ़ौजों के साथ इस्लाम पर हमले करेगा। तात्पर्य यह कि इस्लाम के लिए वह युग आन्तरिक एवं बाह्य दृष्टि से इतनी बड़ी मुसीबत का

होगा कि न इससे पहले कभी आया और न आगे आएगा। (देखें हदीसें - किताबुल फितन् इत्यादि)

इस्लाम और मुसलमानों की वर्तमान हालत

अब देख लो कि वह ज़माना आ गया है कि नहीं ? क्या सचमुच मुसलमानों की मज़हबी हालत उपरोक्त वर्णन के अनुसार नहीं ? कितने हैं जो सच्चे दिल से ख़ुदा पर ईमान रखते हैं ? ज़बान का रस्मी ईमान, ईमान नहीं। कितने हैं जो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के रसूल होने पर सच्चे दिल से विश्वास करते हैं ? कितने हैं जो ख़ुदा की वह्यी (वाणी) के अवतरण, फ़रिश्तों, मौत के बाद पुन: जीवित किए जाने, अच्छाई और बुराई की तक़दीर, पुरस्कार और दण्ड इत्यादि पर दिल से ईमान लाते हैं ? कितने हैं जो इस्लाम की शिक्षा से परिचित हैं ? कितने हैं जो इस्लाम की वास्तविकता को समझते हैं ? कितने हैं जो नमाज़, रोज़ा, ज़कात और हज्ज इत्यादि पर कारबन्द हैं ? कितने हैं जो दीन को दुनिया पर प्राथमिकता देते हैं ? क्या मुसलमानों के अन्दर मद्यपान, व्यभिचार, जुआ, ब्याज, चोरी, डाका, कत्ल, झूठ, धोखाधड़ी, हराम माल खाने इत्यादि का बाज़ार गर्म नहीं है ? क्या मौलवियों का आचार-व्यवहार इस्लामी ज़िन्दगी का सच्चा आदर्श है ? क्या यह सच नहीं कि अधिकतर मौलवी अत्यन्त नीच, अधर्मी, चरित्रहीन और दुराचारी हैं ? क्या उन्होंने वास्तव में इस्लाम की सूरत बिगाड़ कर नहीं रख दी ? क्या पारस्परिक मतभेदों की कोई सीमा रह गई है ? क्या इन बातों से इस्लाम की ज़ाहिरी शानो शौकत का जनाज़ा नहीं उठ रहा ? यह इस्लाम के अन्दर की हालत है।

बाहरी तौर पर इस्लाम दूसरे धर्मों के हमलों का इस तरह शिकार हो रहा है कि मानो आज और कल में इसका नामोनिशान मिटा दिया जाएगा। हर क़ौम इस्लाम के ख़िलाफ मैदान में उतर आई है और चारों

तरफ से हमले हो रहे हैं। नबियों के सिरमौर हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पर अत्यन्त नीच और गन्दे आरोप लगाए जाते हैं। इस्लामी शिक्षा को अत्यन्त बुरे और घिनावने रूप में प्रस्तुत करके उसका मज़ाक़ उड़ाया जा रहा है। ईसाई धर्म अपने पूरे ज़ोर पर है और शासन की गोद में दूसरे धर्मों के ख़ून पर पल रहा है और उन्नति कर रहा है। हिन्दू धर्म ने भी आर्य क़ौम के नीचे आकर सिर उठाया है और इस्लाम के विरुद्ध हमलावर है, नास्तिकता अपने आपको एक ख़ूबसूरत रंग में प्रस्तुत कर रही है और चारों तरफ अपना जाल फैला रही है।

तात्पर्य यह कि इस्लाम की नैय्या एक ऐसे ख़तरनाक तूफान के अन्दर घिरी हुई है कि यदि ख़ुदा का हाथ उसको बचाने के लिए आगे न बढ़े तो उसका किनारे तक पहुँचना असम्भव लगता है। यह सारी हालत पुकार-पुकार कर कह रही है कि यही वह युग है जिससे नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने हमें सचेत किया था। यदि ध्यानपूर्वक देखा जाए तो केवल हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने ही नहीं बल्कि हर नबी ने इस युग के बारे में भविष्यवाणी की थी और अपने अनुयायियों को इस भयानक तूफान से डराया था। यह युग केवल इस्लाम के लिए ही खतरनाक नहीं बल्कि तमाम धर्मों के लिए एक बड़ी मुसीबत है। आज यदि ईसाइयत का ज़ोर है तो वह ईसाइयत का ज़ोर नहीं बल्कि ईसाइयत के उन ग़लत विचारों का ज़ोर है जो हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के बाद उनकी शिक्षा में शामिल कर लिए गए और वस्तुत: यह उनका भी नहीं बल्कि ईसाई क़ौम का ज़ोर है जिसके साथ दुनिया में भौतिकवाद और नास्तिकवाद फैला है। सारांशत: यह कि यह एक व्यापक उपद्रव और आज़माइश का युग है जिसके बारे में सब नबियों ने भविष्यवाणी की है और अपने-अपने अनुयायियों को डराया और सचेत किया है।

अन्तिम युग के फितने का इलाज

नबी का काम केवल डराना और सचेत करना हीं नहीं होता बल्कि वह उसका इलाज भी बताता है ताकि जो व्यक्ति इलाज अपनाए वह बच जाए। अत: इन फित्नों का वर्णन करने के पश्चात् तमाम् नबियों ने यह भविष्यवाणी भी की है कि अल्लाह तआला अपने विधानानुसार उस समय एक आध्यात्मिक सुधारक को पैदा करेगा और उसके द्वारा संसार में सुधार करेगा और अन्धकार को दूर करेगा। इसके अतिरिक्त उन्होंने इस युग में आने वाले सुधारक की निशानियों का भी वर्णन किया जिनके द्वारा वह पहचाना जाएगा। अत: आजकल सारे धर्म अपने-अपने सुधारक की प्रतीक्षा कर रहे हैं और सारे इस बात पर सहमत हैं कि यही वह युग है जिसके बारे में समस्त नबियों ने भविष्यवाणियाँ की थीं। मुसलमान मसीह व महदी की प्रतीक्षा में हैं। ईसाई अपने मसीह के पुनरागमन की आशा में हैं। हिन्दू अपने अवतार की राह देख रहे हैं इत्यादि इत्यादि। परन्तु इस्लाम के अतिरिक्त सबको यह धोखा लगा है और दुर्भाग्य से हर एक ने यह समझ लिया है कि हमारा धर्म अभी भी जीवित है। हालाँकि इस्लाम के अतिरिक्त अब सारे धर्म अपने आध्यात्मिक प्रभाव की दृष्टि से मर चुके हैं। जिसका प्रमाण यह है कि इस्लाम के संस्थापक के बाद इस्लाम के अतिरिक्त दूसरे किसी भी धर्म में आज तक कोई भी ऐसा व्यक्ति पैदा नहीं हुआ जिसने ख़ुदा से संवाद पाने का सौभाग्य प्राप्त किया हो और ख़ुदा ने उसे अपनी ओर से आदेश देकर दुनिया के सुधार के लिए खड़ा किया हो और उसने ख़ुदा के नए-नए निशान दुनिया को दिखाए हों और प्रमाणों के साथ अपने आप को ख़ुदा की ओर से होना साबित कर दिया हो। अत: जब यह नहीं तो फिर धर्म की ज़िन्दगी ही क्या है ? सारांशत: यह कि अब इस्लाम के अतिरिक्त अन्य किसी भी धर्म में कोई भी आध्यात्मिक सुधारक पैदा नहीं हो सकता। इसलिए ख़ुदा के

यहाँ यह निर्णय पा चुका था कि आख़िरी ज़माने में समस्त नबियों के समरूप एक ही महापुरुष के रूप में इस्लाम के अन्दर प्रकट किए जाएँ और वही समस्त धर्मों का सुधार करे। इसीलिए प्रकट होने वाला अगर मुसलमानों के लिए महदी है तो ईसाइयों के लिए मसीह है और हिन्दुओं के लिए कृष्ण, इत्यादि इत्यादि।

अत: हम दुनिया को शुभ सन्देश देते हैं कि प्रकट होने वाला प्रकट हो चुका है और वह हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहब क़ादियानी के पवित्र अस्तित्व के रूप में है। जिसकी आँखे हो देखे और जिसके कान हों सुने। ख़ुदा ने अपना वादा पूरा कर दिया और नबियों की भविष्यवाणी पूरी हो गई। अब मानना न मानना लोगों का काम है। सौभाग्यशाली है वह, जो समय के सुधारक को पहचानता है और उसको स्वीकार कर के ख़ुदा के उन इनामों का वारिस बनता है जो उसने आदिकाल से नबियों के अनुयाइयों के लिए निर्धारित कर रखे हैं। सैकड़ों अफ़सोस उस पर, जो दिन-रात सुधारक की प्रतीक्षा करता रहा परन्तु जब वह आया तो उसने इनकार कर दिया और ख़ुदा की नाराज़गी को अपने ऊपर ले लिया। हे सत्याभिलाषियो! यदि प्रमाण चाहो तो उनकी भी कमी नहीं, पर देखने वाली आँख चाहिए। क्योंकि सबसे अधिक प्रमाण लाने वाले हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम थे पर न देखने वाली आँख उनको भी न देख सकी। वह ज्ञान का चन्द्रमा और सन्मार्ग का सूर्य था। पर कितने हैं जिन्होंने उसको पहचाना ? क्या मक्का के हकीम[1] (फिलास्फर) ने उन्हें पहचाना ? क्या यूनान के दार्शनिक ने उन्हें समझा ? क्या अब भी यूरोप के कुशाग्र बुद्धियों की आँख उसे देख सकी ? क़ुर्आन में

1. अबूजहल जो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का कट्टर विरोधी था। वह मक्का के लोगों में अपनी दार्शनिकता के कारण अबुल-हिक्म अर्थात युक्ति और दार्शनिकता का बाप के नाम से मशहूर था। परन्तु इसके बावजूद वह सन्मार्ग प्राप्ति से वंचित रह गया।

ख़ुदा का यह कथन है कि :-

مَنۡ یُّضۡلِلِ اللّٰہُ فَلَا ھَادِیَ لَہٗ ۔

(सूरह अल-आ'राफ़ 7:187)

وَمَا یُضِلُّ بِہٖۤ اِلَّا الۡفٰسِقِیۡنَ ۔

(सूरह अल-बक़र: 2:27)

दुराचारियों के अतिरिक्त वह किसी को पथभ्रष्ट नहीं ठहराता।

وَالَّذِیۡنَ جَاھَدُوۡا فِیۡنَا لَنَھۡدِیَنَّھُمۡ سُبُلَنَا ۔

(सूरह अल-अनकबूत : 29:70)

जिसे ख़ुदा पथभ्रष्ट ठहराए उसे कोई हिदायत नहीं दे सकता। ख़ुदा केवल दिल के अन्धों को ही पथभ्रष्ट ठहराता है। अन्यथा जो लोग हमारे मार्ग में सच्ची नीयत से चलने का प्रयत्न करते हैं हम उन्हें अवश्य सन्मार्ग दिखा देते हैं।

हज़रत मिर्ज़ा साहिब का दावा

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी ने ख़ुदा से आदेश पाकर यह दावा किया कि मैं मुसलमानों के लिए महदी, ईसाइयों के लिए मसीह और हिन्दुओं के लिए कृष्ण हूँ और अन्यों के लिए उनका कथित अवतार हूँ। ख़ुदा ने इस युग में मुझे लोगों के आध्यात्मिक सुधार के लिए पैदा किया है।

ख़ुदा की प्राचीन सुन्नत के अनुसार अभी बहुत थोड़े हैं जिन्होंने आपको स्वीकार किया है और उनकी संख्या बहुत अधिक है जिन्होंने आपको नहीं माना। इसीलिए ख़ुदा ने आपको संबोधित करके कहा कि :-

''दुनिया में एक नज़ीर (सचेतक) आया, पर दुनिया ने उसे स्वीकार न किया लेकिन ख़ुदा उसे क़ुबूल करेगा और बड़े शक्तिशाली हमलों से उसकी सत्यता प्रकट कर देगा।'' (तज़्किरा, पृष्ठ 105)

यह ख़ुदा का कथन है जो पूरा होकर रहेगा। परन्तु सौभाग्यशाली हैं वे जो सज़ा से नहीं बल्कि प्यार से मानते हैं और पुकारने वाले की आवाज़ को डर नहीं बल्कि प्यार से सुनते हैं। उन्हीं लोगों के लिए हम इस पुस्तक में संक्षिप्त रूप से उस आध्यात्मिक सुधारक की सत्यता के कुछ प्रमाण लिखना चाहते हैं ताकि वे जो प्यासे हैं तृप्त हों, और जो भूखे हैं अपना पेट भरें, और जो शक और सन्देहों की ठण्ड में ठिठुर रहे हैं इस आध्यात्मिक सूर्य की धूप से गर्मी प्राप्त करें।

अभी इस पुस्तक में हम केवल इस्लामी दृष्टिकोण से हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब के दावों पर दृष्टि डालेंगे और क़ुरआन, हदीस एवं ख़ुदा के द्वारा दी गई बुद्धि और विवेक की दृष्टि से आपकी सत्यता को परखेंगे। अभी इस संक्षिप्त पुस्तक में शेष धर्मों की भविष्यवाणियों एवं वर्णित लक्षणों के अनुसार आपको परखने की न तो गुंजाइश है और न ही इस समय यह प्रश्न हमारे सामने है। وما توفيقنا الا بالله العظيم۔

परखने का ढंग सबसे पहले हम परखने के ढंग को लेते हैं। स्पष्ट रहे कि परख और छानबीन सदैव किसी सिद्धान्त के अनुसार होना चाहिए अन्यथा परिणाम कभी सही नहीं निकल सकता बल्कि वैसा ही निकलेगा जो एक कहावत के अनुसार चार अन्धों का निकला था। कहते हैं कि चार अन्धों को हाथी देखने का शौक पैदा हुआ। जिस पर उन्होंने अपने किसी साथी से कहा कि जब कभी यहाँ कोई हाथी आए तो हमें बताना, हम भी देखना चाहते हैं कि हाथी कैसा होता है। अत: कुछ दिनों के बाद जब कोई हाथी आया तो उसने उनको सूचित कर दिया। यह सुनकर वे बाहर निकल आए और टटोलते हुए हाथी के पास पहुँचे उनमें से एक का हाथ हाथी के पेट पर पड़ा और दूसरे का हाथी की टांग पर और तीसरे का सूँड पर और चौथे का कान पर और उन्हीं को वे अपने हाथों से टटोलते रहे। जब वे टटोल चुके तब थोड़ी देर के बाद किसी ने उनसे कहा

कि हाफ़िज़ जी! अब आपने हाथी देख लिया। अब ज़रा बताइए तो कि हाथी कैसा होता है ? जिस पर पहला अन्धा बोला कि बस हाथी एक मोटा-चौड़ा भारी भरकम शरीर ही शरीर होता है। दूसरा कहने लगा नहीं यह झूठ बोलता है हाथी तो एक मोटे और ऊँचे खम्भे की तरह होता है। यह सुनकर तीसरा बोल उठा, ये दोनों झूठ बोल रहे हैं, हाथी एक नरम-नरम गाय की पूँछ की तरह ऊपर से नीचे की ओर पतला माँस का लोथड़ा होता है। यह सब सुनकर चौथे ने चिल्लाकर कहा, ज्ञात होता है कि इन सब को ग़लत फ़हमी हुई है, हाथी तो एक पतले और चौड़े पंखे की तरह होता है।

कहने को तो यह एक चुटकुला है परन्तु इससे एक शिक्षा अवश्य मिलती है कि जब तक बुद्धि और विवेक की दृष्टि से किसी नियमानुसार सिद्धान्त की दृष्टि से किसी चीज़ के बारे में जाँच-पड़ताल न की जावे तो परिणाम हमेशा ग़लत निकलता है। इसलिए यह आवश्यक है कि हम हज़रत मिर्ज़ा साहिब के दावा के बारे में किसी सही सिद्धान्त के अनुसार जाँच, पड़ताल करें, और वे सच्चे सिद्धान्त हमको क़ुर्आन शरीफ एवं सहीह हदीसों और गुज़रे हुए नबियों के हालात और ख़ुदा की दी हुई बुद्धि और विवेक से मिलते हैं।

परखने के प्रकार

परखने से पहले जाँच पड़ताल के प्रकारों का जानना आवश्यक है जिसके दो प्रकार हैं :-

(1) मन्क़ूली (उदाहृत) (2) माक़ूली (बौद्धिक)

1. मनक़ूली (उदाहृत) - इस नियम के अनुसार यह देखा जावे कि उदाहृत उदाहरणों अर्थात ऐसे उदाहरणों की दृष्टि से जो पूर्व हदीसों, कथनों या रचनाओं पर आधारित हैं, मुद्दई के दावा पर क्या रोशनी पड़ती है ? इसके बाद यह देखना चाहिए उदाहृत प्रमाणों के अतिरिक्त

बौद्धिक तौर पर उसका दावा कहाँ तक स्वीकार करने योग्य है। उदाहरण के तौर पर यदि किसी पूर्व धर्मग्रन्थ में यह बताया गया हो कि कथित सुधारक दरमियाना क़द और गेहुँए रंग का होगा, तो यह उसके समर्थन में एक उदाहृत प्रमाण होगा। पर बुद्धि की दृष्टि से यह कदापि आवश्यक नहीं कि वह कथित सुधारक अवश्य दरमियाना क़द और गेहुँए रंग का हो। लेकिन जब मुद्दई के दावा के समय यह देखा जावे कि इस ज़माने में किसी सुधारक की आवश्यकता है या नहीं। क्योंकि अल्लाह का कोई कार्य अनावश्यक नहीं होता, तो यह एक बुद्धि संगत और तर्कसंगत प्रमाण होगा। अतएव परखने और जाँच पड़ताल करने के सारांशत: यही दो प्रकार हैं, नक़ल और अक़ल।

मनक़ूली तहक़ीक़ का ढंग
(अर्थात उदाहृत प्रमाणों द्वारा परख)

पहले हम मनक़ूली तहक़ीक़ को लेकर उस के नियम निर्धारित करते हैं। इसलिए इस बारे में जानना चाहिए कि मनक़ूली (उदाहृत) बहस के लिए इस्लाम में **प्रथम स्थान** पर क़ुर्आन मजीद है। क्योंकि वह सर्वशक्तिमान ख़ुदा की वाणी है और उसी सुरक्षित हालत में अब तक मौजूद है जैसा कि वह हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पर अवतरित हुआ था। इसके किसी वाक्य, किसी अक्षर या किसी मात्रा के बारे में सन्देह नहीं किया जा सकता। यह प्रत्येक दशा में एक पूर्णत: और विश्वसनीय कसौटी है इसलिए यदि उसके विपरीत कोई हदीस होगी तो वह कदापि स्वीकार योग्य न होगी। हमारा कर्त्तव्य होगा कि या तो उसको क़ुर्आन के अधीन लाएँ और यदि ऐसा न कर सकें तो उसको रद्दी की तरह फेंक दें। क्योंकि वह मर्दूद (अस्वीकृत या रद्द करने योग्य) है। क़ुर्आन शरीफ में

अल्लाह तआला फ़रमाता है :-

فَبِاَيِّ حَدِيۡثٍۭ بَعۡدَ اللّٰهِ وَاٰيٰتِهٖ يُؤۡمِنُوۡنَ۔

(सूरह अल-जासिया 45:7)

अर्थात "क़ुर्आन की बातों को जो ख़ुदा की वाणी है छोड़कर लोग किस बात को मानेंगे ?"

दूसरे स्थान पर सुन्नत है। जिससे हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम और सहाबा किराम का वह अमली नमूना (व्यवहारिक आदर्श) अभिप्राय है जो मुसलमानों के निरन्तर अमली नमूना (व्यवहारिक आदर्श) के द्वारा हम तक पहुँचा है। बहुत से लोग हदीस और सुन्नत में अन्तर नहीं करते, जो एक स्पष्ट ग़लती है। क्योंकि हदीस से तो नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम और सहाबा किराम के वे कथन तात्पर्य हैं जो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के लगभग डेढ़ सौ वर्ष पश्चात् संग्रहीत होकर लिखित रूप में आए[1] लेकिन सुन्नत का वजूद क़ुर्आन के साथ-साथ शुरू से लगातार चला आया है और इससे हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम और सहाबा किराम का वह अमली नमूना (व्यवहारिक आदर्श) तात्पर्य है जो हम तक हदीसों के द्वारा नहीं बल्कि मुसलमानों की जमाअत के लगातार अमली नमूने (व्यवहारिक आदर्शों) से पहुँचा है। अत: क़ुर्आन शरीफ के बाद यह भी नि:सन्देह और विश्वास योग्य है।

तीसरा स्थान हदीस का है जैसा कि हम ऊपर वर्णन कर चुके हैं कि हदीस से आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम और सहाबा किराम के वे कथन और कर्म तात्पर्य हैं जो हम तक रिवायतों (वर्णनों) के माध्यम से पहुँचे हैं और ये वे वर्णन हैं जो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पावन युग के कुछ वर्षों पश्चात लोगों के द्वारा

---

1. परिभाषिक दृष्टि से सहाबा किराम के कथनों को "असर" कहते हैं।

संग्रहीत होकर लिखित रूप में आए। यद्यपि हदीसों के संकलनकर्ताओं ने बड़ी मेहनत से यह लाभदायक संग्रह एकत्र किया है और मनगढ़त हदीसों को सहीह हदीसों से अलग करके दिखाया है, लेकिन फिर भी हर बुद्धिमान यह सोच सकता है कि हदीसों में अवश्य एक हद तक सन्देह का पहलू मौजूद है क्योंकि वे बातें जो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से लगभग डेढ़ सौ वर्ष पश्चात् लोगों से पूछ-पूछकर एकत्र की गई हों और जिनकी शब्दों या अर्थों की दृष्टि से सुरक्षा का भी कोई पूर्णत: पक्का प्रबन्ध न हुआ हो उनके बारे में बुद्धि कभी भी यह स्वीकार नहीं कर सकती कि वे पूर्णत: सच्ची और विश्वसनीय होंगी। यह केवल हमारा ही विचार नहीं बल्कि पूर्वकालिक विद्वानों ने भी इसी सिद्धान्त को अपनाया है। अत: उसूल की सारी किताबों में लिखा है कि जब कोई हदीस क़ुर्आन शरीफ के विरुद्ध हो तो हदीस को छोड़ देना चाहिए और क़ुर्आन शरीफ को मानना चाहिए और हदीस की पारिभाषिक शब्दावली की पुस्तकों में भी स्पष्टरूप से लिखा है कि हदीसों से केवल काल्पनिक ज्ञान पैदा होता है। इसीलिए हदीस का स्थान तीसरे नम्बर पर है क्योंकि हदीस काल्पनिक ज्ञान है और क़ुर्आन और सुन्नत का मुकाबला नहीं कर सकता जिनकी प्रामाणिकता निरन्तरता से साबित है। लेकिन यह भी याद रखना चाहिए कि कई लक्षणों से कभी हदीस भी विश्वसनीय स्तर तक पहुँच जाती है। उदाहरण के तौर पर यदि कोई हदीस ऐसी हो जिसमें कोई भविष्यवाणी की गई हो और फिर वह भविष्यवाणी अपने समय पर सच्ची निकली हो तो चाहे मुहद्दसीन ने अपनी राय के अनुसार उसे कमज़ोर ही कहा हो वह भी सच्ची और विश्वसनीय समझी जाएगी। क्योंकि उसकी सच्चाई पर अल्लाह तआला ने गवाही दे दी है और घटनाओं ने उसकी सच्चाई पर मुहर लगा दी है। या उदाहरणत: एक कमज़ोर हदीस है लेकिन वह क़ुर्आन के अनुसार है तो वह उन बनावटी सहीह हदीसों से भी श्रेष्ठ समझी जाएगी जो क़ुर्आन के उलट हैं।

इसके उपरान्त हदीसों के भी कई स्तर और प्रकार हैं जो हदीस की पारिभाषिक शब्दावली की पुस्तकों में विस्तार से वर्णित हैं उन स्तरों का भी ध्यान रखना ज़रूरी है। उदाहरण के तौर पर यदि कोई हदीस कमज़ोर है जिसे हदीस के लेखकों ने कमज़ोर लिखा है और वह एक ऐसी हदीस के समक्ष आ गई है जो हदीस लिखने वालों की परिभाषा के अनुसार सही है तो सही को लिया जाएगा और कमज़ोर को छोड़ दिया जाएगा। इसी विभाजन की दृष्टि से हदीस की किताबों में भी दर्जे हैं। उदाहरणत: बुख़ारी, हदीस की सारी किताबों से सही समझी गई है। इसके बाद सही मुस्लिम है फिर "सिहाह सित्ता" की शेष हदीसों की पुस्तकें हैं इसके बाद साधारण हदीसों की किताबें हैं। अत: जाँच पड़ताल करते हुए हदीसों के दर्जों को भी मद्‌देनज़र रखना बहुत आवश्यक है, हदीसों के अन्दर लेकिन इससे कुछ कम दर्जे पर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के जीवन चरित्र और इस्लाम के इतिहास से संबंधित कुछ विश्वस्त पुस्तकें भी दाखिल हैं।

चौथे स्थान पर अन्य आसमानी पुस्तकें और पहले नबियों के वे ऐतिहासिक हालात हैं जो क़ुर्आन शरीफ के उलट न हों। कभी-कभी उनसे बहुत जानकारी मिलती है विशेषकर पहले नबियों के हालात से बड़ी रहनुमाई हासिल की जा सकती है क्योंकि मूल रूप से अल्लाह तआला के रसूल एक ही रंग में रंगीन होते और एक ही कसौटी पर परखे जाते हैं। अत: एक नबी के हालात समझने के लिए यह भी ज़रूरी होता है कि अन्य नबियों के हालात का अध्ययन किया जाए।

पाँचवे स्थान पर इस्लाम के पूर्वकालीन विद्वान (आलिम) विशेषकर प्रारम्भिक काल के आलिमों के कथन और रचनाएँ हैं। उनकी किताबों में भी काफी मालूमात का ढेर मौजूद है। क्योंकि उन लोगों ने भी बड़ी मेहनत और निश्छलता से क़ुर्आन शरीफ़ और हादीसों पर ग़ौर करके नतीजे निकाले हैं। पर नि:सन्देह उन्होंने इन्सान होने के नाते कुछ गल्तियाँ भी की हैं लेकिन इससे उनके कार्यों का दर्जा कम नहीं हो जाता।

यह वे पाँच ढंग हैं जो साधारण तौर पर मुसलमानों में मनकूली (उदाहृत प्रमाण की दृष्टि से) बहस के लिए अपनाए जा सकते हैं। लेकिन जहाँ हमारे लिए यह आवश्यक है कि हम इन पाँच ढंगों के अनुसार किसी मुद्दई के दावे को परखें और इनसे बाहर न जाएँ। वहाँ इससे भी बढ़कर यह आवश्यक है कि हम उनके दर्जों को भी मद्दे नज़र रखें अर्थात यह याद रखें कि सबसे श्रेष्ठ क़ुर्आन शरीफ है जिसके मुक़ाबले में शेष सब चीज़ें क़ुर्बान कर देने के योग्य हैं। यह वह सबसे बड़ी कसौटी है जिस पर सब खरा-खोटा परखा जा सकता है और कोई सच्चाई छुपी नहीं रह सकती। क्योंकि यह पूर्णत: सम्भव है कि पूर्व कालीन सज्जनों के कथनों की रोशनी में एक चीज़ की वास्तविकता छुपी रहे या उन्होंने किसी ग़लत बात को सत्य समझ लिया हो या सही को ग़लत घोषित कर दिया हो और यह भी सम्भव है कि प्राचीनकाल के आसमानी धर्मग्रन्थ और नबियों के हालात हम तक सही तौर पर न पहुँचे हों और हम उनके आधार पर ठोकर खा जाएँ और ग़लत परिणाम निकाल लें। फिर यह भी सम्भव है कि हदीसों की रिवायत में कोई ग़लती हो और किसी कारण से कोई शब्द या आशय बदल गया हो या कोई ग़लत अथवा मनगढ़त रिवायत शामिल हो गई हो या किसी कमज़ोर रिवायत को मुहद्दिसों ने सही समझ लिया हो और किसी सच्ची रिवायत को कमज़ोर ठहरा दिया हो, और उनके आधार पर हम भी ठोकर खा जाएँ। यह सब कुछ सम्भव है परन्तु यह कदापि सम्भव नहीं कि क़ुर्आन ग़लती करे और क़ुर्आन का सच्चा अनुसरण करके कोई व्यक्ति पथभ्रष्ट हो जाए। यह वह प्रकाश है जिसके सामने कोई अन्धकार नहीं ठहर सकता। यह वह प्रकाश है जिससे अन्धेरा कोसों दूर भागता है। यह वह मार्ग दर्शन है कि जिसके निकट तक भी अन्धकार भटक नहीं सकता। जैसा कि इसके बारे में अल्लाह ने फ़रमाया है कि :-

لَّا يَأْتِيهِ الْبَاطِلُ مِنْ بَيْنِ يَدَيْهِ وَلَا مِنْ خَلْفِهِ ۖ تَنزِيلٌ مِّنْ حَكِيمٍ حَمِيدٍ ۝

(सूरह हामीम सज्दः 41:43)

''न तो क़ुर्आन के सामने से असत्य आ सकता है और न उसके पीछे से। क्योंकि यह तत्वज्ञानी और प्रशंसित ख़ुदा की ओर से अवतरित हुआ है।''

तार्किक (बौद्धिक) रूप से परखने का ढंग

परखने का दूसरा ढंग तार्किक है जिसका अर्थ है किसी प्रश्न के बारे में बुद्धि के द्वारा चिन्तन-मनन करना एवं उसके गुण दोषों पर उचित रूप से दृष्टि डालना। इस विधि में उदाहृत प्रमाणों से कोई बहस नहीं होती। बल्कि मुद्दई के व्यक्तित्व और उसके हालात और उसके युग के हालात पर स्वयं बौद्धिक रूप से दृष्टि डालनी होती है और इस बात से कोई मतलब नहीं होता कि उसके बारे में प्राचीन धर्मग्रन्थों में क्या कहा गया है और क्या नहीं कहा गया। परन्तु यह याद रखना चाहिए कि तार्किक ढंग उदाहृत ढंग की अपेक्षा अधिक सूक्ष्म है और परखने वाले पर अधिक ज़िम्मेदारी डालता है। क्योंकि प्रथमतः इसमें मतभेद की बहुत गुंजाइश होती है। क्योंकि कभी-कभी एक ही वस्तु को एक व्यक्ति की बुद्धि अच्छा ठहराती है तो दूसरे की बुद्धि उसे नफरत और हेय दृष्टि से देखती है और आश्चर्य यह कि दोनों व्यक्तियों को अपने मत के सत्य होने पर हठ होता है। यद्यपि हम यह कह सकते हैं कि एक व्यक्ति ने सही ढंग से ग़ौर नहीं किया या कुछ हानिकारक विचारों को अपने दिल व दिमाग़ में प्रभावी होने दिया जिससे उसके विवेक में अन्तर आ गया और वह ग़लत परिणाम पर पहुँचा गया। इसलिए यह हर हाल में अटल सत्य है कि जिन विषयों पर केवल बौद्धिक तौर पर ग़ौर किया जाए उनमें अपेक्षाकृत मतभेद अधिक होता है।

दूसरे यह कि सामान्य परिस्थितियों में भी केवल बुद्धि पूर्णत: कोई विश्वसनीय और ठोस कसौटी भी नहीं है। मेरा यह तात्पर्य नहीं कि बुद्धि एक व्यर्थ चीज़ है। क्योंकि ख़ुदा ने इन्सान को बुद्धि भी चिराग़ के तौर पर दी है। जिसका प्रकाश उसको सच और ईमानदारी की ओर खींचता है और कई प्रकार के सन्देहों और भ्रान्तियों से बचाता है और भिन्न-भिन्न प्रकार के आधारहीन और व्यर्थ विचारों को दूर करता है। इसलिए यह बहुत लाभदायक और आवश्यक है और बहुत बड़ी नेमत है। परन्तु इन सब बातों और विशेषताओं के बावजूद फिर भी इसमें यह कमी का पहलू मौजूद है कि यह अकेली, चीज़ों की वास्तविकता की पहचान में मनुष्य को पूर्ण विश्वास के स्तर तक नहीं पहुँचा सकती। यह मर्तबा बुद्धि को तब प्राप्त होता है जब बुद्धि के साथ कोई दूसरा ऐसा साथी मिल जाता है जो उसके कल्पित कारणों की पुष्टि करके सच्चे तथ्यों को दिखा देता है और बुद्धि के वे साथी जो उसके सहायक और मददगार हैं हर स्थान और अवसर में अलग-अलग होते हैं। लेकिन बुद्धि की निर्भरता की दृष्टि से उसकी सहायता करने वाले मददगार तीन से अधिक नहीं। जिनकी व्याख्या इस प्रकार है कि यदि बुद्धि का आदेश संसार के अनुभवों और अवलोकनों से सम्बन्धित हो तो उस समय उसका मददगार जो उसके आदेश को पूर्ण विश्वास तक पहुँचा सकता है वह **मुशाहदा सहीहा** (सच्चा अनुभव और अवलोकन) है। जिसका नाम तजुर्बा है। इसके अतिरिक्त यदि बुद्धि का आदेश उन घटनाओं और बातों के बारे में हो जो विभिन्न समयों और स्थानों में होती रही हैं या होती हैं तो उस समय इसका एक और मददगार बनता है जिसका नाम **इतिहास** है जो कि तजुर्बा की तरह बुद्धि के धुँधले ज्ञान को ऐसा स्पष्ट कर देता है कि फिर उसमें सन्देह करना एक मूर्खता, पागलपन और दीवानगी है।

इसके अतिरिक्त यदि बुद्धि का आदेश उन विषयों के बारे में हो जो इन्द्रियों की पहुँच से भी आगे हैं जिनको न हमारी बाह्य इन्द्रियाँ ज्ञात

कर सकती हैं और न हम उनको इस दुनिया के इतिहास से ज्ञात कर सकते हैं। तो उस समय इसका एक तीसरा मददगार बनता है जिसका नाम **इल्हाम** और **वह्यी** है। (बराहीन अहमदिया - लेखक हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से उद्धृत)

जाँचने और परखने की सारांशत: यही दो विधियाँ हैं। (1)मनक़ूली (उदाहृत) (2) माक़ूली (तर्कसंगत)। परन्तु इन दोनों के बारे में यह स्मरण रखना अति आवश्यक है कि इन विधियों द्वारा मनुष्य तब ही सफल हो सकता है कि जब वह चिन्तन-मनन करने से पूर्व मनोभावों से बिल्कुल रिक्त हो जाए और मुद्दई को सच्चा मानने या झुठलाने के विचारों को पूर्णत: अपने दिल से निकाल दे और ऐसे विचारों, मनोभावों और विषयों को अपने पास न आने दे जो उसके विवेक को कमज़ोर करने वाले हों। फिर हार्दिक उमंग और उत्साह के साथ अल्लाह के तक़्वा को मद्देनज़र रखकर मुद्दई के दावों पर उसके विभिन्न पहलुओं को ध्यान में रखते हुए दृष्टि डाले। अगर यह नहीं तो कुछ भी नहीं और बुद्धि और उदाहरण दोनों व्यर्थ हैं।

रूहानी (आध्यात्मिक) ढंग - उपरोक्त दोनों ढंग भौतिक हैं। परन्तु एक और भी ढंग है जो रूहानी है और वह दुआ है। लेकिन अफसोस है कि दुनिया ने इस नेमत को नहीं पहचाना और न ही इसकी हक़ीक़त को समझा, अगर ग़ौर करते तो दुआ एक ऐसा दरवाज़ा है जिससे गुज़र कर इन्सान ख़ुदा के दरबार में पहुँचता है। अत: चाहिए कि हर ज़रूरत के समय इन्सान इसी दरवाज़े को खटखटाए और हर मुश्किल में उसी की ओर रुख करे, जो खटखटाएगा उसी के लिए खोला जाएगा और जो मांगेगा उसको मिलेगा। ख़ुदा के घर का सवाली खाली हाथ नहीं लौटता। विशेषरूप से इस विषय में, कि अल्लाह तआला की यही इच्छा है कि दुनिया पथभ्रष्टता के गढ़े से निकलकर हिदायत व नूर की बुलन्द चट्टान पर क़ायम हो जाए वह माँगने वाले की ज़रूर सुनेगा और मुहब्बत एवं हमदर्दी के साथ उसकी रहनुमाई के लिए हाथ बढ़ाएगा।

अत: जो व्यक्ति चाहता है कि हज़रत मिर्ज़ा साहिब के विषय में छानबीन करे उसे चाहिए कि उपरोक्त माक़ूली (तर्कसंगत) और मनक़ूली (उदाहृत) दोनों ढंग अपनाने के अलावा अपने आप को पूर्णत: अल्लाह के समक्ष डाल दे और उससे दुआ करे कि हे दयालु और कृपालु ख़ुदा मेरा ज्ञान कमज़ोर है तू मुझे ज्ञान प्रदान कर ताकि इस विषय में जो बात सत्य है उसे मैं देख लूँ। हे परोक्ष की बातें जानने वाले ख़ुदा! यदि इस दावेदार का दावा सत्य है तो तू मुझे सामर्थ्य दे कि मैं उस पर ईमान लाऊँ और तेरी उन फज़्लों (कृपाओं) का वारिस बनूँ जो तेरे पैग़म्बरों की जमाअतों पर अवतरित होती हैं और मुझे उसके इन्कार की सज़ा से बचा। हे मेरे ख़ुदा! यदि यह पथभ्रष्टता की ओर बुलाता है तो तू अपनी कृपा से मुझे उसकी दुष्टता से बचा। हे मेरे मालिक व स्वामी! मैं तेरे आदेशानुसार इस विषय में जाँच पड़ताल शुरू करता हूँ पर मैं अनभिज्ञ हूँ और सम्भव है कि ठोकर खा जाऊँ। अतएव तू अपनी कृपा से मेरी सहायता कर और मुझ पर वास्तविकता प्रकट कर दे। आमीन!

दुआ के बारे में यह नियम भी याद रखना चाहिए जो दुआ के लिए अति आवश्यक है कि दुआ करने वाला धैर्य और स्थिरता से काम ले और कभी भी नाउम्मीद न हो बल्कि विश्वास और उम्मीद रखे कि अल्लाह तआला अवश्य उसकी रहनुमाई करेगा। ऐसा न हो कि दिल में पहले से एक विचार जमा लिया जावे और फिर दुआ के लिए हाथ उठाए जाएँ या केवल रस्म के तौर पर कुछ वाक्य मुख से निकाल दिए जाएँ। बल्कि चाहिए कि जिस तरह बच्चा तकलीफ के समय तमाम दुनिया की तरफ से आँखें बन्द करके अपनी माँ की छाती पर अपना सिर रख देता है। उसी प्रकार सच्चे दर्द और सच्ची तड़प के साथ दुआ करने वाला अपने रब्ब के सामने अपना मस्तक रगड़े और उसी प्रकार ख़ुदा की चौखट पर गिरा रहे यहाँ तक कि ख़ुदाई नूर उसके मार्ग को रोशन कर दे। अब हम मूल विषय की ओर आते हैं।

मसीह का अवतरण
और
महदी का प्रकटन

क़ुर्आन और हदीस में मसीह और महदी के सम्बन्ध में भविष्यवाणी

सबसे पहला प्रश्न यह है कि क्या सचमुच हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने मसीह व महदी के प्रकट होने की भविष्यवाणी की है ?

इस सन्दर्भ में यह स्मरण रखना चाहिए कि यह बात उन सच्चाइयों और निशानियों में से है जिसका इन्कार नहीं किया जा सकता। बल्कि इस पर तो सारी उम्मते मुहम्मदिया पूर्ण रूप से सहमत है कि अन्तिम युग में मुसलमानों में मसीह-व-महदी प्रकट होंगे और उनके द्वारा इस्लाम अपनी गिरी हुई हालत से उठकर दुनिया में फिर छा जाएगा और फिर उसका यह प्रभुत्व क़यामत तक रहेगा।

यह भविष्यवाणी क़ुर्आन शरीफ में भी मौजूद है और सहीह हदीसों में भी स्पष्ट रूप से पाई जाती है। उदाहरण के तौर पर मसीह के प्रादुर्भाव की भविष्यवाणी क़ुर्आन शरीफ में सूर: नूर की आयत इस्तिख़्लाफ़ में की गई है। जहाँ ख़ुदा तआला फ़रमाता है :-

وَعَدَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْكُمْ وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَيَسْتَخْلِفَنَّهُمْ فِي الْأَرْضِ كَمَا اسْتَخْلَفَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۔

(सूरह नूर 24:56)

अर्थात ''अल्लाह तआला का वादा है कि वह नेक और अच्छे

कर्म करने वाले मुसलमानों में से उसी प्रकार ख़लीफ़ा खड़े करेगा जिस तरह उसने उनसे पहले (मूसा की उम्मत में) खड़े किए थे।''

हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की उम्मत का वर्णन सूर: मुज़्ज़म्मिल में मिलता है, जहाँ फ़रमाया :-

إِنَّآ أَرۡسَلۡنَآ إِلَيۡكُمۡ رَسُولٗا شَٰهِدًا عَلَيۡكُمۡ كَمَآ أَرۡسَلۡنَآ إِلَىٰ فِرۡعَوۡنَ رَسُولٗا ۔

(सूरह मुज़्ज़म्मिल 73:16)

अर्थात् ''हे लोगो! हमने उसी प्रकार और उसी रूप में तुम्हारी ओर रसूल भेजा है जिस तरह कि मूसा को फिरऔन की ओर भेजा था।''

मानो अल्लाह तआला ने इस आयत में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को हज़रत मूसा का समरूप ठहराया है। अत: इससे ज्ञात होता है कि सूर: नूर की आयत इस्तिख्लाफ़ में 'मिन् क़ब्लिकुम' से तात्पर्य हज़रत मूसा अलहिस्सलाम की उम्मत है। जब हम मूसा अलैहिस्सलाम की उम्मत के खलीफाओं की ओर दृष्टि डालते हैं तो पाते हैं कि उसमें हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के बाद बहुत से खलीफ़े क़ायम किए गए जो तौरात की ख़िदमत के लिए आते थे और अन्त में हज़रत मूसा के तेरह-चौदह सौ वर्ष के पश्चात् हज़रत मसीह नासरी (ईसा मसीह) का प्रादुर्भाव हुआ जो हज़रत मूसा की उम्मत में आने वाले ख़लीफ़ाओं में सबसे श्रेष्ठ थे और मानो वह मूसा की उम्मत के ख़ातमुल ख़ुलफ़ा थे। इसलिए जब ख़लीफाओं के सम्बन्ध में उम्मते मुहम्मदिया की तुलना मूसा की उम्मत के ख़लीफ़ाओं के साथ बयान की गई है और उसी प्रकार इस उम्मत में भी ख़लीफों के होने का वचन दिया गया है। इसलिए आवश्यक है कि इस उम्मत में भी ख़ातमुलख़ुलफ़ा मसीह नासरी के स्वभाव पर प्रकट हो जो इस उम्मत का ख़ातमुलखुलफ़ा हो। अतएव सिद्ध हुआ कि आयत-ए-इस्तिख्लाफ़ में जहाँ मुसलमानों में साधारण ख़लीफों का वादा है वहाँ विशेषरूप से एक उच्च शान वाले ख़लीफ़ा के होने का भी वादा है। जो हज़रत मसीह नासरी का समरूप होगा और मसीह-ए-मुहम्मदी

कहलाएगा और लगभग उसी युग के अन्तराल से प्रकट होगा जिस तरह कि हज़रत मूसा के बाद मूसवी मसीह प्रकट हुआ।

इसी तरह हदीस में आता है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया है कि :-

وَالَّذِیْ نَفْسِیْ بِیَدِہٖ لَیُوْشِکَنَّ اَنْ یَّنْزِلَ فِیْکُمُ ابْنُ مَرْیَمَ حَکَمًا عَدْلًا فَیَکْسِرُ الصَّلِیْبَ وَیَقْتُلُ الْخِنْزِیْرَ وَیَضَعُ الْجِزْیَۃَ۔

(صحیح بخاری مطبع مجتبائی کتاب بدء الخلق باب نزول عیسیٰ بن مریم)

अर्थात मुझे उस हस्ती की क़सम है जिसके हाथ में मेरी जान है कि तुम में अवश्यमेव मसीह इब्नि मरियम अवतरित होगा जो हकम व अदल (अर्थात न्यायक) बनकर तुम्हारे मतभेदों का निर्णय करेगा और वह सलीब[1] को तोड़कर रख देगा और खिंज़ीर[2] को कत्ल करेगा और लड़ाई (अर्थात धार्मिक लड़ाइयाँ - अनुवादक) को समाप्त कर देगा।

इसी तरह अन्य बहुत सी हदीसों में भी मसीह के अवतरण का उल्लेख पाया जाता है।

दूसरा विषय महदी के प्रकट होने का है जिसके बारे में क़ुर्आन शरीफ में आता है :-

هُوَ الَّذِیْ بَعَثَ فِی الْاُمِّیّٖنَ رَسُوْلًا مِّنْهُمْ یَتْلُوْا عَلَیْهِمْ اٰیٰتِهٖ وَیُزَکِّیْهِمْ وَیُعَلِّمُهُمُ الْکِتٰبَ وَالْحِکْمَۃَ وَاِنْ کَانُوْا مِنْ قَبْلُ لَفِیْ ضَلٰلٍ مُّبِیْنٍ۔ وَآخَرِیْنَ مِنْهُمْ لَمَّا یَلْحَقُوْا بِهِمْ۔

(सूरह जुमा 62:3,4)

अर्थात अल्लाह ही है जिसने अपना रसूल अरब वासियों में पैदा किया है। जो उनके सामने ख़ुदा की आयतें पढ़ता है और उनको पवित्र करता है और उनको किताब और हिकमत सिखाता है जबकि वे विभिन्न प्रकार की पथभ्रष्टताओं में लिप्त थे। यह अल्लाह का रसूल

---

1. अर्थात सलीबी विचारधारा - अनुवादक
2. अर्थात सूअर प्रवृत्ति - अनुवादक

एक बाद में आने वाली जमाअत की भी तरबियत करेगा जो अभी तक पैदा नहीं हुई।

इस जगह अल्लाह तआला ने रूपक के तौर पर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की एक दूसरे रूप में भी प्रकटन की भविष्यवाणी की है। क्योंकि स्पष्ट है कि किसी बाद में आने वाली जमाअत की तरबियत आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम उसी रंग में कर सकते हैं कि जब आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का कोई प्रतिरूप पैदा हो। जिसका प्रादुर्भाव मानो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का प्रादुर्भाव हो और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से फैज़ (अर्थात ज्ञान रूपी लाभ) पाकर आपके पगचिन्हों पर आपकी उम्मत का सुधार करे और यही महदी है। अत: हदीसों में लिखा है कि जब यह आयत आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पर अवतरित हुई तो सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम ने आप से पूछा कि हे अल्लाह के रसूल! यह "आख़रीन" कौन हैं ? इस पर आपने अपने एक सहाबी सलमान फ़ारसी के कन्धे पर हाथ रखकर फ़रमाया कि यदि ईमान सुरैया सितारे पर भी चला गया अर्थात दुनिया से बिल्कुल समाप्त हो गया तो फिर भी इन फारस के लोगों में से एक व्यक्ति उसको वहाँ से उतार लाएगा और उसे दुनिया में फिर क़ायम कर देगा। (देखो बुखारी, तफ्सीर सूर: जुमा)

तात्पर्य यह है कि क़ुर्आन शरीफ के अन्दर सूर: जुमा की इस आयत में हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के एक प्रतिरूप के प्रादुर्भाव की भविष्यवाणी की गई है और वही महदी है। इसी तरह हदीसों में भी भारी संख्या में महदी के बारे में भविष्यवाणियाँ मौजूद हैं। उदाहरण के तौर पर किताब अबू दाऊद में एक हदीस है कि :-

لولم يبقَ من الدّنيا الّا يومٌ لطوّل الله ذٰلك اليوم حتّٰى يبعث
فيه رَجُلًا منّى اومن اهل بيتى يواطئ اسمهٗ اسمى واسم ابيه اسم
ابى يملأ الارض قسطًا وعدلًا كما مُلِئَتْ ظلمًا وجورًا۔

(ابوداؤد جلد ۲ كتاب المهدى)

अर्थात दुनिया की उम्र में से एक दिन भी शेष होगा तो अल्लाह तआला उस दिन को लम्बा कर देगा, यहाँ तक कि वह उसमें मुझमें से या मेरे अहले बैत (अर्थात अनुयायियों) में से एक व्यक्ति पैदा करेगा जिसका नाम मेरे नाम के अनुसार होगा और उसके बाप का नाम मेरे बाप के नाम के अनुसार होगा। वह दुनिया को अदल और इन्साफ से भर देगा जिस तरह कि वह उससे पहले अत्याचार और अनाचार से भरी हुई होगी।

इस हदीस में भी यही इशारा है कि आने वाला महदी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का प्रतिरूप होगा। मानो कि आध्यात्मिक रूप से उसका आना आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ही का आना होगा।

तात्पर्य यह है कि यह बात सर्वसम्मत है और मुसलमानों का बच्चा-बच्चा इसे जानता है कि इस्लाम में मसीह और महदी के प्रकट होने की भविष्यवाणी की गई है। अतएव आजकल पूरे मुस्लिम जगत में बड़ी बेसब्री से मसीह व महदी की प्रतीक्षा की जा रही है और अपनी उन्नति की सारी उम्मीदों को उनके आगमन के साथ सम्बद्ध समझा गया है। इसके अतिरिक्त क़ुर्आन करीम और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जहाँ मसीह व महदी की भविष्यवाणी की थी वहाँ उनसे सम्बन्धित कुछ लक्षणों का भी वर्णन किया था। अब हमारा कर्तव्य है कि हम देखें कि वे लक्षण ख़ुदा के कानून के अनुसार हज़रत मिर्ज़ा साहिब के प्रादुर्भाव में पूरे हुए हैं या नहीं, परन्तु इससे पूर्व दो बड़ी भ्रान्तियों का निवारण आवश्यक है जो आमतौर पर मसीह व महदी के बारे में मुसलमानों के अन्दर पाई जाती हैं। क्योंकि जब तक वे दूर न हों तब तक हज़रत मिर्ज़ा साहिब का दावा हर मुसलमान के निकट सरसरी तौर पर भी ध्यान देने योग्य नहीं ठहरता। वे दो भ्रान्तियाँ निम्नलिखित हैं।

प्रथम - हज़रत मसीह नासरी के जीवन और मृत्यु का विषय।

द्वितीय - मसीह मौऊद और महदी एक ही व्यक्ति है या दो अलग-अलग व्यक्ति हैं।

आजकल मुसलमानों में पूर्णत: यह भ्रम व्याप्त है कि हज़रत मसीह नासरी इसी भौतिक काया के साथ आसमान पर जीवित मौजूद हैं और वे ही अन्तिम युग में उतरेंगे। द्वितीय यह कि मसीह और महदी दो अलग-अलग व्यक्ति हैं। इन भ्रान्तियों के कारण बहुत से मुसलमान हज़रत मिर्ज़ा साहिब के दावा की ओर ध्यान नहीं देते। इसलिए पहले हम इन्हीं भ्रान्तियों को दूर करते हैं। अल्लाह हमें इसका सामर्थ्य दे।

हज़रत मसीह नासरी आसमान पर नहीं उठाए गए

इस सन्दर्भ में पहला प्रश्न यह है कि क्या हज़रत मसीह नासरी इस भौतिक शरीर के साथ आसमान पर ज़िन्दा मौजूद हैं ? इसके जवाब में अच्छी तरह याद रखना चाहिए कि क़ुर्आन और सहीह हदीसों से कदापि यह साबित नहीं होता कि हज़रत मसीह नासरी अपने भौतिक शरीर के साथ आसमान पर ज़िन्दा उठाए गए या यह कि वह अब तक जीवित मौजूद हैं। अत: क़ुर्आन शरीफ फ़रमाता है :-

فِيهَا تَحْيَوْنَ وَفِيهَا تَمُوتُونَ

(सूरह आराफ़ 7:26)

अर्थात हे लोगो! तुम धरती पर ही ज़िन्दगी के दिन बिताओगे और धरती पर ही तुम्हारी मौत होगी।

स्पष्ट है कि दुनिया में इन्सान पर दो ही ज़माने आते हैं। एक ज़िन्दगी का ज़माना दूसरा ज़िन्दगी के बाद मौत का ज़माना और इन दोनों ज़मानों को ख़ुदा तआला ने ज़मीन के साथ विशिष्ट कर दिया है अर्थात यह क़ानून बना रखा है कि यह दोनों ज़माने मनुष्य ज़मीन पर ही गुजारेगा। अब प्रश्न उठता है कि हज़रत मसीह नासरी मनुष्य होने के बावजूद किस तरह आसमान पर अपनी ज़िन्दगी के दिन गुज़ारने

लग गए। क्या उन्हें आसमान ले जाते समय ख़ुदा तआला अपने उपरोक्त निर्णय को भूल गया।

अत: सिद्ध हुआ कि हज़रत मसीह नासरी आसमान पर कदापि नहीं उठाए गए बल्कि उन्होंने दूसरे लोगों की तरह ज़मीन पर ही अपनी ज़िन्दगी के दिन बिताए।

फिर क़ुर्आन शरीफ में अल्लाह तआला आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से कहता है :-

قُلْ سُبْحَانَ رَبِّيْ هَلْ كُنْتُ إِلَّا بَشَرًا رَّسُوْلًا ۔

(सूरह बनी इस्राईल 17:94)

अर्थात हे रसूल! कुफ्फार जो तुझ से यह चमत्कार मांगते हैं कि तू उनको आसमान पर चढ़कर दिखा दे तो तू इसके जवाब में उन से कह दे कि पवित्र है मेरा रब्ब इससे कि वह अपने नियम के विरुद्ध करे। मैं तो केवल एक मनुष्य रसूल हूँ।

इसमें आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम स्पष्ट शब्दों में फ़रमाते हैं जिसके स्पष्टीकरण की आवश्यकता नहीं कि मैं मनुष्य होने के कारण आसमान पर इस भौतिक शरीर के साथ नहीं जा सकता। तो फिर मनुष्य होते हुए मसीह नासरी किस तरह आसमान पर चले गए ? क्या उनका आसमान पर ज़िन्दा चले जाना उनको मनुष्य होने से कोई ऊँची हस्ती नहीं साबित करता ? अतएव इस आयत के होते हुए कौन मुसलमान यह कहने की हिम्मत कर सकता है कि हज़रत मसीह आसमान पर जीवित उठाए गए ? स्पष्ट है कि मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जो कि सब रसूलों में सर्वश्रेष्ठ हैं वे आसमान पर जीवित इस भौतिक शरीर के साथ जाने के लिए केवल अपने मनुष्य होने को ही रोक के रूप में बयान करते हैं[1] तो मसीह

1. इस जगह स्वाभाविक रूप से यह प्रश्न पैदा होता है कि जब क़ुर्आन करीम में अल्लाह तआला स्पष्ट शब्दों में नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के आसमान पर जीवित भौतिक शरीर के साथ जाने को आपके

जो नि:सन्देह आप से दर्जा में छोटा था वह किस तरह आसमान पर जा पहुँचा ? अफसोस! मुसलमान मसीह को आसमान पर बिठाकर न केवल अपने नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तौहीन कर रहे हैं बल्कि एक ख़ुले-ख़ुले झुठे अक़ीदा में ईसाइयों के भी मददगार बन रहे हैं। किसी ने सच कहा है :-

من از بیگانگاں ہرگز نہ نالم
کہ بامن ہرچہ کرد آں آشنا کرد

मनुष्य होने के कारण निषिद्ध ठहराता है तो फिर "मेराज" के समय पर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम किस तरह आसमान पर चले गए ? इसके जवाब में अच्छी तरह स्मरण रखना चाहिए कि यह बिल्कुल असत्य है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मेराज में भौतिक शरीर के साथ आसमान पर गए थे। बल्कि सत्य यह है कि मेराज एक बहुत ही सूक्ष्म प्रकार का कश्फ़ (तन्द्रावस्था) थी जो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को उनके भविष्य की तरक्कियों के सम्बन्ध में दिखाया गया जो अपने समय पर प्रकट हुईं और हो रही हैं। स्वयं पूर्व इस्लामी विद्वानों के एक बड़े गिरोह ने यह माना है कि मेराज में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम भौतिक शरीर के साथ नहीं गए। बल्कि वह एक बहुत ही सूक्ष्म प्रकार की तन्द्रावस्था थी जिसमें आप को आसमानों की सैर कराई गई। हदीस में लिखा है हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने फ़रमाया कि मेराज की रात आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का पवित्र शरीर ज़मीन से अलग नहीं हुआ। इसी प्रकार बहुत से बड़े बड़े इस्लामी विद्वानों ने भी लिखा है कि मेराज भौतिक शरीर के साथ नहीं हुआ। जिससे स्पष्ट ज्ञात होता है कि मेराज एक सूक्ष्म प्रकार की तन्द्रावस्था थी जिसमें आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को आसमान पर ले जाकर आपकी भविष्य में होने वाली अद्वितीय तरक़्क़ियों का नज़ारा दिखाया गया और हदीस में यह शब्द भी आते हैं कि ''सुम्मा इस्तैक़ज़ा'' अर्थात मेराज के नज़ारा के बाद आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जाग उठे (बुख़ारी किताबुत्तौहीद) जो इस बात का पक्का सुबूत है कि मेराज भौतिक शरीर के साथ नहीं हुआ था। - इसी से सम्बन्धित

आश्चर्य है कि इन खुली-खुली आयतों के बावजूद आजकल मुसलमान ऐसे ग़लत अक़ीदे पर जमे हुए हैं। क़ुर्आन शरीफ में कहीं नहीं लिखा कि हज़रत ईसा जीवित इस भौतिक शरीर के साथ आसमान की ओर उठाए गए हैं, यदि कोई व्यक्ति हमें यह दिखा दे तो हम ख़ुदा की कृपा से सबसे पहले मानने को तैयार हैं। परन्तु सारे क़ुर्आन शरीफ में एक भी आयत ऐसी नहीं पाओगे जिससे हज़रत मसीह का ज़िन्दा भौतिक शरीर के साथ आसमान पर जाना साबित हो। क़ुर्आन शरीफ में मसीह के बारे में رَفَعَهُ اللّٰهُ اِلَيْهِ (अर्थात अल्लाह ने मसीह को अपनी तरफ उठा लिया) के शब्दों का प्रयोग होना इस बात का कदापि प्रमाण नहीं कि वे जीवित भौतिक शरीर के साथ आसमान पर उठाए गए। क्योंकि "रफा" से तात्पर्य आध्यात्मिक मर्तबे का बढ़ाना है न कि शारीरिक। जैसा कि बलअम् बाऊर के सन्दर्भ में अल्लाह तआला फ़रमाता है :-

وَلَوْ شِئْنَا لَرَفَعْنٰهُ بِهَا وَلٰكِنَّهٗٓ اَخْلَدَ اِلَى الْاَرْضِ۔

(सूरह आराफ़ 7:177)

अर्थात यदि हम चाहते तो अपने निशानों के द्वारा उसका रफा (उसके आध्यात्मिक मर्तबे को बढ़ाते) करते लेकिन वह ज़मीन की तरफ झुक गया।

अब इस जगह सब मानते हैं कि यहाँ रफा से आध्यात्मिक रफा तात्पर्य है न कि शारीरिक। हालाँकि यहाँ तो ज़मीन का विपरीत वर्णन भी मौजूद है। तो फिर क्यों जानबूझकर हज़रत ईसा के बारे में इस शब्द को भौतिक शरीर के साथ उठाने के बारे में लिया जावे ? मसीह के अन्दर वह कौन सी बात है कि जब किसी दूसरे के सम्बन्ध में रफा का शब्द प्रयुक्त हो तो उससे अभिप्राय आध्यात्मिक रफा लिया जाय और जब मसीह के बारे में यही शब्द आए तो तुरन्त उसका अर्थ भौतिक शरीर के साथ उठाने के हो जाएँ। इसके अतिरिक्त हज़रत मसीह के बारे में क़ुर्आन शरीफ की एक दूसरी आयत में यह स्पष्टीकरण भी

आता है कि उनका रफा (उत्थान) ऐसा था जो मृत्यु के बाद हुआ (देखो सूर: आले इमरान रुकू : 6) और स्पष्ट है कि मृत्यु के बाद का रफा आध्यात्मिक रूप से हुआ करता है न कि भौतिक रूप से।

फिर ध्यान दो कि अल्लाह तआला ने यहाँ यह नहीं फ़रमाया कि मसीह को आसमान की ओर उठाया गया बल्कि केवल यह फ़रमाया कि अल्लाह ने उसे अपनी ओर उठा लिया। अब स्पष्ट है कि अल्लाह तआला हर जगह मौजूद है केवल आसमान के अन्दर सीमित नहीं। इसलिए उसकी ओर उठाए जाने का अर्थ आसमान की ओर उठाए जाने का किस तरह हो सकता है ? उसकी ओर उठाए जाने का अर्थ तो निश्चय ही आध्यात्मिक रफा के ही होंगे क्योंकि जब ख़ुदा हर जगह विद्यमान है और सब कुछ देख रहा है तो किसी दशा में उसकी ओर शारीरिक रफा मन्सूब नहीं किया जा सकता और यदि मसीह का अल्लाह की ओर रफा शारीरिक रूप से माना जावे तो यह एक निरर्थक बात होगी जिसका यह अर्थ होगा कि हज़रत मसीह जहाँ थे उन्हें वहीं रहने दिया गया। क्योंकि ख़ुदा हर जगह विद्यमान है। अत साबित हुआ कि यहाँ शारीरिक रफा तात्पर्य नहीं बल्कि आध्यात्मिक रफा है।

फिर एक हदीस में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं :-

اذا تواضع العبد رفعه الله الى السماء السابعة۔

(کنز العمال جلد ۲ صفحہ ۲۵)

अर्थात जब कोई व्यक्ति अल्लाह के लिए मेहमान नवाज़ी करता है और विनम्रता अपनाता है तो अल्लाह तआला उसे सातवें आसमान की ओर उठा लेता है।

अब क्या इस जगह भी भौतिक शरीर के साथ आसमान की ओर उठाए जाने का अर्थ है ? यदि ऐसा है तो (नऊज़बिल्लाह) ख़ुदा का यह वादा ग़लत निकला। क्योंकि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और बाद के मुसलमानों में से हज़ारों लाखों नेक लोग

ख़ुदा के लिए मेहमान नवाज़ी करते रहे हैं परन्तु उनमें से कोई एक भी व्यक्ति आसमान की ओर भौतिक शरीर के साथ जीवित रूप में नहीं उठाया गया। अत: सिद्ध हुआ कि इस जगह यह तात्पर्य नहीं कि मेहमान नवाज़ी करने वाले ज़िन्दा भौतिक शरीर के साथ आसमान की ओर उठाए जाएँगे। बल्कि केवल यह अभिप्राय है कि अल्लाह तआला ऐसे लोगों के मर्तबे बुलन्द करेगा और उनको आध्यात्मिक उत्थान प्राप्त होगा और यही वह अर्थ है जो इस जगह हमारे विरोधी उलमा भी स्वीकार करते हैं। हालाँकि यहाँ तो आसमान का शब्द भी साथ लगा हुआ है। तो फिर क्यों हज़रत मसीह के बारे में "रफा इलाल्लाह" (अल्लाह की ओर उठाने) से यह तात्पर्य लिया जाय कि वह ज़िन्दा भौतिक शरीर के साथ आसमान पर उठा लिए गए।

ईसा मसीह नासरी अलैहिस्सलाम का देहान्त

हमने ख़ुदा के फ़ज़्ल से क़ुर्आन और हदीसों से साबित कर दिया है कि मसीह अलैहिस्सलाम कदापि जीवित रूप से भौतिक शरीर के साथ आसमान की ओर नहीं उठाए गए। बल्कि उन्होंने ख़ुदा के निर्णय के अनुसार धरती पर ही अपना जीवन बिताया और धरती पर ही रहे। अब मैं ख़ुदा के फ़ज़्ल से यह साबित करता हूँ कि हज़रत मसीह आसमान की ओर नहीं उठाए गए बल्कि वह मृत्यु भी पा चुके हैं। यद्यपि हमारा यह काम नहीं कि मसीह की मृत्यु को सिद्ध करें। क्योंकि सब लोग जानते हैं कि संसार नश्वर है। जो व्यक्ति पैदा होता है वह मरेगा भी। जैसा कि क़ुर्आन शरीफ फ़रमाता है :-

كُلُّ نَفۡسٍ ذَآئِقَةُ الۡمَوۡتِ۔

(सूरह अल-अनकबूत 29:58)

अर्थात हर आदमी के लिए मौत निश्चित है लेकिन चूँकि लोगों में यह अक़ीदा फैला हुआ है कि हज़रत मसीह नासरी अब तक जीवित

मौजूद हैं। इसलिए इस ग़लती का निवारण भी आवश्यक है। अत: क़ुर्आन शरीफ में ख़ुदा तआला फ़रमाता है :-

وَمَا مُحَمَّدٌ إِلَّا رَسُوْلٌ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِ الرُّسُلُ أَفَإِنْ مَّاتَ أَوْ قُتِلَ انْقَلَبْتُمْ عَلٰى أَعْقَابِكُمْ۔

(सूरह आले इमरान 3:145)

अर्थात मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम केवल अल्लाह के एक रसूल हैं और उनसे पहले जितने रसूल हुए हैं वे सब मृत्यु पा चुके हैं। अब यदि मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम भी उनकी तरह मृत्यु पा जाएँ या क़त्ल हो जाएँ तो क्या तुम इस्लाम छोड़कर अपनी एड़ियों के बल फिर जाओगे ?

इस आयत में अल्लाह तआला ने मसीह के मृत्यु पा जाने पा पक्का फैसला कर दिया है। क्योंकि स्पष्ट रूप से फर्मा दिया है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से पहले जितने रसूल हुए हैं वे सब मृत्यु पा चुके हैं।

मगर कहा जाता है कि "खला" (خلا) का शब्द जो इस आयत में प्रयुक्त हुआ है उसका अर्थ मरना ही नहीं होता बल्कि जगह छोड़ जाने और गुज़र जाने के भी होते हैं और चूँकि जो व्यक्ति आसमान पर चला जावे वह भी जगह छोड़ जाता और गुज़र जाता है। इसलिए ज़रूरी नहीं कि यहाँ मृत्यु हो जाने का अर्थ लिया जावे। हम कहते हैं कि बहुत खूब! जब शब्दकोष हमें यह बताता है कि ख़ला का अर्थ मृत्यु पा जाने के भी हैं और जगह छोड़ जाने और गुज़र जाने के भी हैं तो इन दोनों अर्थों में से किसी एक का चयन करने के लिए हमें चाहिए कि आयत को देखें और उस पर ध्यान दें कि आयत के वर्णन किन अर्थों का चयन कर रहे हैं ? क्या केवल जगह छोड़ जाने के या मृत्यु के द्वारा इस संसार से गुज़र जाने के ? क्योंकि "खला" (गुज़र जाने) के दो अर्थ ही हैं जो शब्दकोष हमें बताता है अर्थात जगह छोड़ जाना या मृत्यु पा जाना। विरोधियों के अर्थों पर तो हमें प्रमाण लाने की

आवश्यकता नहीं। परन्तु इस बात के सबूत में कि ख़ला का अर्थ मृत्यु पा जाने के भी हैं। शब्दकोष की प्रसिद्ध पुस्तक ताजुल उरूस में देख लो, जहाँ लिखा है خلا فلانٌ اذا مات अर्थात जब ''ख़ला फुलानुन'' कहा जाए तो उसका यह अर्थ होता है कि अमुक व्यक्ति मृत्यु पा गया। अब हम बहस वाली आयत पर नज़र डालते हैं तो देखते हैं कि प्रसंग और सन्दर्भ स्पष्ट रूप से हमारे अर्थ का समर्थन करता है। ख़ुदा फ़रमाता है

قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِ الرُّسُلُ اَفَإِنْ مَّاتَ اَوْ قُتِلَ۔

अर्थात मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से पहले जितने भी रसूल हुए हैं वे मृत्यु पा चुके हैं तो क्या यदि मुहम्मद रसूलुल्लाह भी मृत्यु पा जाएँ या क़त्ल कर दिए जाएँ तो तुम इस्लाम से फिर जाओगे ? इस आयत में ये शब्द कि اَفَإِنْ مَّاتَ اَوْ قُتِلَ स्पष्ट रूप से बता रहे हैं कि पिछले नबी या तो स्वाभाविक मृत्यु के द्वारा मृत्यु पाते रहे या क़त्ल के द्वारा इस नश्वर संसार को छोड़ते रहे हैं। अर्थात उनका दुनिया को छोड़ना इन्हीं दो तरीकों पर होता रहा है। अब यदि पहले नबियों में से कोई एक नबी भी आसमान की ओर उठाया गया होता या उपरोक्त वर्णित तरीकों के अतिरिक्त किसी अन्य ढंग से किसी नबी का गुज़र जाना घटित होता तो अल्लाह तआला अवश्य इस जगह उस विधि का वर्णन करता या कम से कम मसीह की अपवादी दशा ही बयान कर दी जाती। लेकिन ऐसा नहीं किया गया बल्कि ख़ुदा ने केवल स्वाभाविक मृत्यु और कत्ल वाली दो ही दशाओं का वर्णन किया है। जिससे स्पष्ट है कि इस आयत में ''खला'' का अर्थ या तो स्वाभाविक मृत्यु से मरने का लिया जाएगा या क़त्ल के द्वारा इस नश्वर संसार के छोड़ जाने का। चूँकि दूसरी जगह अल्लाह तआला ने हज़रत मसीह के बारे में क़त्ल से इन्कार किया है (देखो सूर: निसा रुकू-22) इसलिए साबित हुआ कि मसीह की मृत्यु स्वाभाविक रूप से हुई। व्याख्याकारों ने भी इस जगह ख़ला का अर्थ मृत्यु पा जाने का

ही किया है। अत: आयत की व्याख्या में वे लिखते हैं कि ويخلو كما خلوا بالموت او القتل۔ आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम भी उसी प्रकार इस नश्वर संसार को छोड़ जाएँगे जिस तरह कि दूसरे नबी स्वाभाविक मृत्यु के द्वारा या क़त्ल के द्वारा दुनिया को छोड़ गए। (उदाहरणत: देखो तफ्सीर क़न्वी अलल् बैज़ावी, जिल्द 3, व तफ्सीर ख़ाजिन जिल्द 1)

इस आयत का अर्थ और भी अधिक स्पष्ट हो जाता है जब हम इसे एक मशहूर ऐतिहासिक घटना की रोशनी में देखते हैं। अत: सही बुखारी में लिखा है कि जब आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मृत्यु पा गए तो तो हज़रत उमर रज़ि. और कुछ दूसरे सहाबा अपने दिल में यह गुमान करते थे कि अभी कुछ काम होने वाले शेष रह गए हैं, इसलिए आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को अभी तक जीवित ही समझते थे। बल्कि हज़रत उमर तो अपने इस विचार पर इतने अडिग थे कि उन्होंने म्यान से तलवार खींच ली और कहा कि यदि कोई व्यक्ति यह कहेगा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मृत्यु हो गई है तो मैं उसकी गर्दन उड़ा दूँगा उस समय हज़रत अबू बकर रज़ि. ने हज़रत उमर को पुकार कर कहा على رسلك ايّها الحالف अर्थात हे क़सम खाने वाले! ज़रा सब्र कर।

फिर आप ने सारे सहाबा किराम को संबोधित करके कहना शुरू किया और यही आयत पढ़ी कि :-

وَمَا مُحَمَّدٌ اِلَّا رَسُوْلٌ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِ الرُّسُلُ...الخ۔

अर्थात मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम तो केवल ख़ुदा के एक रसूल हैं उनसे पहले जितने रसूल गुज़रे हैं वे सब मृत्यु पा चुके हैं तो क्या यदि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की भी मृत्यु हो जाए तो तुम अपनी एड़ियों के बल फिर जाओगे ? रिवायत आती है कि इस आयत के सुनने से हज़रत उमर रज़ि. सदमे से लड़खड़ाकर ज़मीन पर गिर पड़े। क्योंकि उन्होंने देखा कि उनका प्यारा आक़ा भी

केवल अल्लाह का एक रसूल था। अतएव जिस तरह इससे पहले सारे रसूल मृत्यु पा गए उसी प्रकार अवश्य था कि वह भी इस अटल दरवाज़े से गुज़रता। अब प्रश्न यह है कि यदि कोई पिछला नबी उस समय तक जीवित होता तो हज़रत अबू बकर की इस दलील पर कि सारे पहले नबी मृत्यु पा चुके हैं इसलिए आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की भी मृत्यु होनी थी, सहाबा किराम अवश्य ऐतिराज़ करते। विशेषकर हज़रत उमर रज़ि. और उनके विचार से सहमतगण अवश्य बोल उठते कि यह दलील सही नहीं मगर सारे सहाबा ने हज़रत अबू बकर के साथ सहमत होकर इस दलील की पुष्टि कर दी। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बाद जिस विषय पर सहाबा किराम का सबसे पहला इज्माअ (सहमति) हुआ वह यही था कि पहले के सारे नबी जिनमें हज़रत मसीह नासरी भी शामिल हैं मृत्यु पा चुके हैं। अब खूब सोचो कि यदि पहले नबियों में एक नबी भी जीवित समझा जाय तो हज़रत अबू बकर की यह दलील जिस पर सहाबा ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बाद सबसे पहला इज्माअ (सहमति) किया, व्यर्थ ठहरती है। अत: साबित हुआ कि हज़रत मसीह जो ख़ुदा के नबियों में से एक नबी थे मृत्यु पा चुके हैं।

फिर एक जगह अल्लाह तआला फ़रमाता है :-

يَا عِيسَىٰ إِنِّي مُتَوَفِّيكَ وَرَافِعُكَ إِلَيَّ وَمُطَهِّرُكَ مِنَ الَّذِينَ كَفَرُوا
وَجَاعِلُ الَّذِينَ اتَّبَعُوكَ فَوْقَ الَّذِينَ كَفَرُوا إِلَىٰ يَوْمِ الْقِيَامَةِ۔

(सूरह आले इमरान 3:56)

अर्थात हे ईसा! मैं ही तुझे मौत दूँगा और तुझे अपनी ओर उठाऊँगा और काफिरों के ऐतिराज़ों से तुझे पाक करूँगा और तेरे अनुयायियों को तेरे झुठलाने वालों पर क़यामत तक विजय दूँगा।

अब देख लो इस आयत में स्पष्ट वर्णन मौजूद है कि मसीह की मृत्यु मसीह के रफा से पहले होगी। क्योंकि "मुतवफ्फीका" को "राफिउका" से पहले बयान किया गया है अर्थात पहले मृत्यु होगी

और फिर रफा होगा, और स्पष्ट है कि मृत्यु के बाद का रफा रूहानी हुआ करता है न कि शारीरिक और यदि यह कहो कि इस जगह पहला शब्द बाद में आएगा अर्थात आयत के शब्द आगे पीछे हो गए हैं तो अकारण ख़ुदा की वाणी में आगे का पीछे कहकर फतवा जारी कर देना यहूदियों की तरह रद्दोबदल करने से कम नहीं। आगे पीछे करने के लिए कोई ठोस दलील होनी चाहिए। दूसरे इस आयत का सन्दर्भ और प्रसंग ऐसा है कि वह किसी प्रकार शब्दों के आगे पीछे करने को सहन ही नहीं कर सकता। अर्थात यदि मुतवफ्फीका का शब्द इस जगह से उठा लिया जाए तो फिर इस आयत में उसे किसी दूसरी जगह रखने पर अर्थ सही नहीं होते। अत: क़ुर्आन शरीफ की असली तरतीब को स्वीकार करके मृत्यु को रफा से पहले अवश्य मानना पड़ेगा और यही अभिप्राय है।

फिर एक जगह अल्लाह तआला फ़रमाता है :-

وَإِذْ قَالَ اللّٰهُ يَا عِيْسَى ابْنَ مَرْيَمَ أَأَنْتَ قُلْتَ لِلنَّاسِ اتَّخِذُوْنِي وَأُمِّيَ إِلٰهَيْنِ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ؕ قَالَ سُبْحَانَكَ مَا يَكُوْنُ لِيْ أَنْ أَقُوْلَ مَا لَيْسَ لِيْ بِحَقٍّ ؕ إِنْ كُنْتُ قُلْتُهُ فَقَدْ عَلِمْتَهُ ؕ تَعْلَمُ مَا فِيْ نَفْسِيْ وَلَا أَعْلَمُ مَا فِيْ نَفْسِكَ ؕ إِنَّكَ أَنْتَ عَلَّامُ الْغُيُوْبِ۔ مَا قُلْتُ لَهُمْ إِلَّا مَا أَمَرْتَنِيْ بِهٖ أَنِ اعْبُدُوا اللّٰهَ رَبِّيْ وَرَبَّكُمْ ۚ وَكُنْتُ عَلَيْهِمْ شَهِيْدًا مَّا دُمْتُ فِيْهِمْ ۚ فَلَمَّا تَوَفَّيْتَنِيْ كُنْتَ أَنْتَ الرَّقِيْبَ عَلَيْهِمْ ؕ وَأَنْتَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ شَهِيْدٌ۔ (सूरह मायद: 5:117)

अर्थात जब ख़ुदा ने कहा हे ईसा इब्नि मरियम! क्या तूने लोगों से कहा था कि अल्लाह को छोड़कर मुझे और मेरी माँ को दो ख़ुदा मान लो। तो ईसा ने जवाब दिया कि हे ख़ुदा तेरी हस्ती पवित्र है। मुझे शोभा नहीं देता कि वह बात कहूँ जिसका मुझे अधिकार नहीं। यदि मैंने कोई ऐसी बात कही है तो तू उसे जानता है क्योंकि तू जानता है जो मेरे दिल में है और मैं नहीं जानता जो तेरे दिल में है। तू नि:सन्देह

सारी छुपी हुई बातों को जानने वाला है। मैंने उन्हें उसके अतिरिक्त और कुछ नहीं कहा जिसका तूने मुझे आदेश दिया था और वह यह कि उसकी उपासना करो जो मेरा और तुम्हारा दोनों का पालनहार है। और मैं उनकी हालत को देखता रहा जब तक कि मैं उनके मध्य रहा। लेकिन जब हे ख़ुदा तूने मुझे मृत्यु दे दी तो फिर तू ही उनका निगरान था और तू हर एक चीज़ को देखने वाला है।

यह आयत स्पष्ट शब्दों में हज़रत मसीह की मृत्यु का पता दे रही है। परन्तु अफसोस है कि मुसलमान उन्हें फिर भी आसमान पर ज़िन्दा बिठाए हुए हैं। इस आयत में मसीह की मृत्यु के बारे में जो स्पष्टीकरण है इससे बढ़कर स्पष्टीकरण सोच में भी नहीं आ सकता। परन्तु अफसोस! कि इसमें भी हमारे विरोधी मौलवी भ्रम पैदा करने की कोशिश करते हैं। उदाहरणत: कहते हैं मसीह के साथ ख़ुदा का यह सवाल व जवाब क़यामत के दिन होगा और चूँकि क़यामत से पहले हर हाल में हज़रत मसीह मृत्यु पा चुके होंगे। इसलिए यह आयत इस बात पर दलील नहीं हो सकती कि हज़रत मसीह सचमुच आज से पहले मृत्यु पा चुके हैं। इस भ्रम के जवाब में याद रखना चाहिए कि चाहे यह सवाल और जवाब क़यामत ही के दिन से सम्बद्ध समझा जाए फिर भी यह आयत स्पष्टरूप से मसीह की मृत्यु साबित कर रही है। क्योंकि मसीह के शब्द यह हैं :-

كُنْتُ عَلَيْهِمْ شَهِيْدًا مَّا دُمْتُ فِيْهِمْ فَلَمَّا تَوَفَّيْتَنِيْ كُنْتَ اَنْتَ الرَّقِيْبَ عَلَيْهِمْ۔

अर्थात मैं उन लोगों को देखता रहा जब तक कि मैं उनमें रहा लेकिन जब हे ख़ुदा! तूने मुझे मृत्यु दे दी तो फिर तू ही उनको देखने वाला था। इन शब्दों में हज़रत मसीह केवल दो ज़मानों का वर्णन करते हैं जिनमें से वे एक के बाद दूसरे गुज़रे। पहला ज़माना वह है जब वह अपने अनुयायियों के बीच मौजूद थे जैसा कि مَا دُمْتُ فِيْهِمْ के शब्दों से स्पष्ट है और दूसरा ज़माना मृत्यु के बाद का है जो

فَلَمَّا تَوَفَّيْتَنِي (फलम्मा तवफ्फैतनी) के शब्दों में बयान किया गया है। अब यदि पहले ज़माना अर्थात अनुयायियों के मध्य जीवन व्यतीत करने वाले ज़माने के बाद मसीह पर यदि मृत्यु के अलावा आसमान पर उठाए जाने का ज़माना आया होता तो मौजूदा जवाब की जगह मसीह को यूँ कहना चाहिए था कि مَادُمْتُ فِيهِمْ فَلَمَّا رَفَعْتَنِي إِلَى السَّمَاءِ حَيًّا. अर्थात मैं अपने अनुयायियों को देखता रहा जब तक कि मैं उन में रहा लेकिन जब हे ख़ुदा! तूने मुझे ज़िन्दा आसमान की तरफ उठा लिया तो फिर तू ही उन्हें देखने वाला था। पर मसीह का जवाब यह नहीं इसलिए साबित हुआ कि अनुयायियों के मध्य रहने वाले ज़माने के बाद जो ज़माना मसीह पर आया वह मृत्यु ही का ज़माना था न कि कोई अन्य ज़माना। सोचो कि जो जवाब मसीह ने दिया है वह स्पष्ट बता रहा है कि वह चीज़ जो मसीह के पहले ज़माना अर्थात अनुयायियों के मध्य जीवन बिताने वाले ज़माने के तुरन्त बाद आने वाली या दूसरे शब्दों में उस ज़माने का क्रम तोड़ने वाली या नया दौर शुरू करने वाली चीज़ आसमान पर जाना हो तो ''मा दुम्तो फ़ीहिम फ़लम्मा तवफ़्फ़ैतनी'' वाला जवाब स्पष्ट रूप से ग़लत ठहरता है। फिर यह बात भी ध्यान देने योग्य है कि ख़ुदा तआला के सवाल के जवाब में हज़रत मसीह इस बात से अनभिज्ञता प्रकट करते हैं कि उनके अनुयायी उनको और उनकी माँ को ख़ुदा के तौर पर पूजने लग गए। जैसा कि इन शब्दों से स्पष्ट है कि :-

مَا قُلْتُ لَهُمْ إِلَّا مَا أَمَرْتَنِي بِهِ أَنِ اعْبُدُوا اللَّهَ رَبِّي وَرَبَّكُمْ ۚ وَكُنْتُ عَلَيْهِمْ شَهِيدًا مَا دُمْتُ فِيهِمْ ۖ فَلَمَّا تَوَفَّيْتَنِي كُنْتَ أَنْتَ الرَّقِيبَ عَلَيْهِمْ ۚ

अर्थात ''हे ख़ुदा! मैं तो अपने अनुयायियों को वही कहता रहा जो तूने मुझे आदेश दिया था और वह यह कि उस ख़ुदा की इबादत करो जो मेरा और तुम्हारा दोनों का पालनहार है और मैं उन्हें देखता रहा जब तक मैं उनमें रहा। लेकिन जब हे ख़ुदा! तूने मुझे मृत्यु दे दी

तो फिर उसके बाद तू ही उनको देखने वाला था।'' हज़रत मसीह के इस जवाब से स्पष्ट रूप से ज़ाहिर है कि वह अपने अनुयायियों के बिगड़ जाने के संबंध में अपनी अनभिज्ञता प्रकट करके अपना बरी होना प्रकट कर रहे हैं। जिसका दूसरे शब्दों में यह अर्थ है कि ईसाई लोग हज़रत मसीह की मृत्यु के बाद पथभ्रष्ट हुए। अत: अब हमने देखना यह है कि क्या ईसाई लोग पथभ्रष्ट हो चुके हैं या नहीं। यदि वे पथभ्रष्ट नहीं हुए तो सम्भव है कि हज़रत मसीह जीवित होंगे लेकिन यदि वे पथभ्रष्ट हो चुके हैं और अवश्य हो चुके हैं तो मानना पड़ेगा कि हज़रत मसीह भी मृत्यु पा चुके हैं। क्योंकि क़ुर्आन शरीफ स्पष्टरूप से फ़रमाता है कि मसीह की मृत्यु ईसाइयों के पथ भ्रष्ट होने से पहले हुई है। अब देखो यह आयत कितनी स्पष्टता के साथ मसीह की मृत्यु साबित कर रही है। यह सवाल व जवाब क़यामत से पहले हो या क़यामत के बाद हमें इससे कोई मतलब नहीं। परन्तु मसीह की मृत्यु हर हाल में मसीहियों के पथभ्रष्ट होने से पहले हुई है और चूँकि मसीही लोग नि:सन्देह मसीह की वास्तविक शिक्षा को छोड़ चुके हैं और मसीह को ख़ुदा मानने लग गए हैं। बल्कि वे तो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के मुबारक युग से भी पहले से इस झूठे अक़ीदे पर क़ायम हैं। जैसा कि क़ुर्आन शरीफ़ फ़रमाता है :-

لَقَدْ كَفَرَ الَّذِيْنَ قَالُوْٓا اِنَّ اللّٰهَ ثَالِثُ ثَلٰثَةٍ ۘ

(सूरह मायद: 5:74)

अर्थात वे लोग नि:सन्देह काफिर हैं जिन्होंने कहा कि ख़ुदा तीन में से एक है। अत: सिद्ध हुआ कि हज़रत मसीह कम से कम आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के मुबारक युग से पहले मृत्यु पा चुके हैं। और यही अभिप्राय है।

इस आयत से यह भी स्पष्ट है कि मसीह का समरूप अर्थात मसीह मौऊद जिसका प्रकटन आख़िरी दिनों में निर्धारित है, वह हज़रत ईसा नहीं हैं। क्योंकि यदि यह माना जाय कि हज़रत ईसा ही क़यामत

से पहले नाज़िल होंगे तो फिर यह भी मानना पड़ेगा कि वह क़यामत से पहले अपनी उम्मत के बिगाड़ से भी परिचित हो जाएँगे और उन्हें ज्ञान हो जाएगा कि मेरी उम्मत मुझे ख़ुदा बना रही है तो इस दशा में वह क़यामत के दिन किस तरह अज्ञानता प्रकट कर सकते हैं ? क्योंकि मसीह की ओर से यह नऊज़बिल्लाह एक झूठ होगा यदि वे जानते बूझते हुए ख़ुदा के सामने अपनी अज्ञानता प्रकट करें। अत: सिद्ध हुआ कि वह क़यामत से पहले दोबारा कदापि नाज़िल नहीं होंगे। अब अगर असम्भव होने के बावजूद मान भी लिया जाए कि हज़रत मसीह आसमान पर चले गए हैं तो फिर भी यह आयत मसीह नासरी के पुन: नुज़ूल के रास्ते में एक ऐसा भारी पत्थर है जिसे हिलाया नहीं जा सकता। क्योंकि हर हाल में यह स्पष्ट है कि हज़रत मसीह क़यामत के दिन ख़ुदा के सामने अपनी उम्मत के पथभ्रष्ट हो जाने के सम्बन्ध में अज्ञानता प्रकट करेंगे। अत: यह सिद्ध हुआ कि क़यामत के दिन से पहले वह अपनी उम्मत को बिगाड़ और पथभ्रष्टता की हालत में कभी नहीं देखेंगे। लेकिन हम बता आए हैं कि यदि वह दोबारा नाज़िल हों तो क़यामत से पहले ही उनको अपनी उम्मत के बिगड़ जाने का ज्ञान हो जाएगा। विशेष रूप से जब कि मसीह मौऊद का बड़ा काम ही सलीब को तोड़ना है तो इस हालत में अनभिज्ञता का प्रकटन कैसा ? अत: सिद्ध हुआ कि यदि असम्भव होने के बावजूद हज़रत मसीह आसमान पर चले भी गए हैं तो फिर भी आने वाला मसीह नि:सन्देह रूप से दूसरा है और मसीह नासरी वहीं आसमान पर मृत्यु पा गए होंगे। क्योंकि एक मनुष्य का आसमान पर होना उसे मृत्यु से नहीं बचा सकता जो क़ुरआनी शिक्षा के अनुसार हर मनुष्य के लिए निश्चित है।

अब रही तवफ़्फ़ी शब्द की बहस, जो इस आयत में प्रयुक्त हुआ है। जिसका अर्थ हमारे विरोधी पूरा-पूरा उठा लेने के करते हैं। अत: इसके सम्बन्ध में अच्छी तरह से याद रखना चाहिए कि अरबी भाषा के अनुसार जब ख़ुदा कर्ता हो और कोई मनुष्य कर्म हो तो तवफ़्फ़ी

का अर्थ मृत्यु देने के अतिरिक्त दूसरा कोई नहीं होता, यह हमारा दावा है जिसे हम हर तरह सिद्ध करने को तैयार हैं। हज़रत मिर्ज़ा साहिब ने बहुत बड़ा इनाम रखा और विरोधी मौलवियों को बार-बार चैलेन्ज दिया कि वे किसी जगह यह दिखा दें कि जब ख़ुदा कर्ता हो और मनुष्य कर्म हो तो तवफ़्फ़ी का अर्थ मृत्यु देने के अतिरिक्त दूसरे भी हो सकते हैं। परन्तु कोई ऐसा उदाहरण नहीं प्रस्तुत किया गया। आज हम इस चैलेन्ज को दोहराते हैं देखिए कोई जवाब मिलता है या नहीं ? "ताजुल उरूस" जो अरबी शब्दकोष की सबसे बड़ी पुस्तक है, उसमें लिखा है -

توفّاہ اللہ عزّوجلّ اذا قبض نفسہ

अर्थात जब हम यह कहें कि ''तवफ्फाहुल्लाहु'' तो इसका अर्थ यह होता है कि अल्लाह ने उसको मृत्यु दे दी। फिर यह भी लिखा है कि ''तुवफ़्फ़ा फुलानुन इजा माता'' अर्थात जब कोई मर जाए तो कहते हैं ''तुवफ़्फ़ा फ़ुलानुन'' (अर्थात अमुक व्यक्ति मर गया - अनुवादक) अत: यह सच्ची बात है कि तवफ़्फ़ी का अर्थ (जब ख़ुदा कर्ता हो और मनुष्य कर्म हो) केवल मृत्यु देना होता है। हाँ यह अवश्य है कि नींद में भी एक समय सीमा तक रूह क़ब्ज़ होती है इसलिए तवफ़्फ़ी का शब्द कभी-कभी नींद के बारे में भी प्रयोग कर लिया जाता है पर चूँकि नींद के समय रूह का क़ब्ज़ करना अस्थायी और अधूरा होता है इसलिए असल और स्थायी अर्थ तवफ़्फ़ी का मृत्यु देने के ही हैं। इसीलिए अरबी में यह नियम है कि जब तवफ़्फ़ी शब्द को नींद के बारे में प्रयोग करना हो तो उसके साथ कोई ऐसा प्रसंग लाते हैं जिससे स्पष्ट हो जाता है कि यहाँ स्थायी रूप से रूह क़ब्ज़ करना अभिप्राय नहीं जो मृत्यु के समय की जाती है, बल्कि नींद के समय की रूह क़ब्ज़ करना तात्पर्य है। जैसा कि क़ुर्आन शरीफ में अल्लाह तआला फ़रमाता है :-

هُوَ الَّذِیۡ یَتَوَفّٰىکُمۡ بِالَّیۡلِ

(सूरह अनआम 6:61)

अर्थात ख़ुदा ही है जो रात के समय तुम्हारी रूहों को क़ब्ज़ करता है यहाँ तवफ़्फ़ी का शब्द नींद में क़ब्ज़ की जाने वाली रूह के लिए प्रयोग हुआ है क्योंकि रात का प्रसंग साथ लगा हुआ है। लेकिन मृत्यु के समय जो रूह क़ब्ज़ की जाती है उसके लिए तवफ़्फ़ी शब्द के साथ किसी प्रसंग की आवश्यकता नहीं होती। अत: ख़ुदा तआला फ़रमाता है :-

إِمَّا نُرِيَنَّكَ بَعْضَ الَّذِي نَعِدُهُمْ أَوْ نَتَوَفَّيَنَّكَ۔

(सूरह मोमिन 40:78)

अर्थात हे नबी! हम जो काफिरों को अज़ाब से डरा रहे हैं। उनमें से कुछ तेरे जीवन में ही तुझे दिखा देंगे या तुझे मृत्यु दे देंगे। और तेरे बाद उन डराने वाली भविष्यवाणियों को पूरा करेंगे। फिर फ़रमाया :-

رَبَّنَا أَفْرِغْ عَلَيْنَا صَبْرًا وَّتَوَفَّنَا مُسْلِمِينَ۔

(सूरह आराफ़ 7:127)

अर्थात हे हमारे रब्ब! हमें धैर्य की पूर्ण सामर्थ्य प्रदान कर और हमें इस दशा में मृत्यु दे कि हम तेरे आज्ञाकारी बन्दे हों।

इन दोनों आयतों में तवफ़्फ़ी का शब्द मृत्यु देने के अर्थों में प्रयुक्त हुआ है। इसीलिए कोई अन्य प्रसंग साथ नहीं है। इमाम इब्निहज़्म ने भी तवफ़्फ़ी के शब्द की व्याख्या में यही लिखा है कि इससे या तो नींद अभिप्राय होती है या मौत, और साथ ही व्याख्या की है कि चूँकि हज़रत ईसा के विषय में नींद अभिप्राय नहीं हो सकती इसलिए अनिवार्य रूप से मौत का ही अर्थ करना पड़ेगा। (देखो अलमुहल्ला जिल्द 1, पृष्ठ 23)

इसके अलावा इस आयत पर ध्यान देने से पता लगता है कि यहाँ तवफ़्फ़ी का शब्द मृत्यु देने के अर्थों में प्रयुक्त हुआ है। क्योंकि हज़रत ईसा फ़रमाते हैं :-

كُنْتُ عَلَيْهِمْ شَهِيدًا مَّا دُمْتُ فِيهِمْ فَلَمَّا تَوَفَّيْتَنِي

अर्थात मैं उनको देखता रहा जब तक मैं उनके मध्य रहा। परन्तु

जब हे ख़ुदा तूने मेरी रूह क़ब्ज़ कर ली... इति। अब इस जगह **''मा दुम्तो फीहिम''** का वर्णन इस बात पर स्पष्ट गवाह है कि यहाँ मृत्यु वाला रूह क़ब्ज़ करना अभिप्रेत है। जिसके परिणाम स्वरूप हज़रत ईसा अपने अनुयायियों के मध्य से उठ गए और उनके मध्य न रहे क्योंकि शब्द ''मा दुम्तो फीहिम'' और ''फ़लम्मा तवफ़्फ़ैतनी'' एक दूसरे के मुक़ाबले में प्रयुक्त हुए हैं। अत: यहाँ नींद वाला क़ब्ज़ रूह अभिप्रेत नहीं हो सकता। क्योंकि स्पष्ट है कि नींद वाला क़ब्ज़-ए-रूह ''मा दुम्तो फीहिम'' के मुकाबले पर नहीं होता बल्कि वह जीवनकाल के अन्दर ही शामिल होता है। मगर यहाँ ''तवफ़्फ़ैतनी'' शब्द को ''मा दुम्तो'' शब्द के मुकाबले पर रखा गया है। इसलिए साबित हुआ कि यहाँ तवफ़्फ़ी का अर्थ केवल मृत्यु देना है। जिसके परिणामस्वरूप हज़रत मसीह अपने अनुयायियों को सदैव के लिए छोड़ गए। अत: तवफ़्फ़ी के शब्द पर अड़ना पहले दर्जा की हठधर्मी है। फिर आश्चर्य यह है कि जब तवफ़्फ़ी का यही शब्द किसी दूसरे व्यक्ति के लिए प्रयोग हो तो उसका अर्थ मृत्यु देने के किया जाता है, लेकिन ज्यों ही यह शब्द हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के सम्बन्ध में प्रयोग हो तो तुरन्त उसका अर्थ आसमान पर उठा लेने के हो जाते हैं। जिससे पूर्णत: स्पष्ट है कि हज़रत ईसा के मामले में ईसाइयों के अक़ीदा से प्रभावित होकर केवल अन्धविश्वास से उनकी विचारधारा को अपनाया जा रहा है।

फिर देखो यही शब्द :-

كُنْتُ عَلَيْهِمْ شَهِيْدًا مَّا دُمْتُ فِيْهِمْ فَلَمَّا تَوَفَّيْتَنِيْ

जो मसीह ने प्रयोग किए हैं या क़यामत के दिन प्रयोग करेंगे, यही हमारे आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम भी प्रयोग करेंगे। अत: सहीह बुखारी जिल्द 3 किताबुत्तफ़सीर में लिखा है कि एक दिन आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि क़यामत के दिन जब मैं हौजे कौसर पर खड़ा हूँगा तो अचानक कुछ लोग मेरे सामने आएँगे जिन्हें फरिश्ते धकेले लिए जा रहे होंगे उन्हें देखकर मैं पुकार

उठूँगा कि ये मेरे सहाबा हैं ये मेरे सहाबा हैं। इस पर मुझे जवाब मिलेगा कि :-

انك لا تدری ما احدثوا بعدك انّھم لم یزالوا مرتدّین علیٰ اعقابھم۔

अर्थात आप नहीं जानते कि इन लोगों ने आप के बाद क्या रंग बदला ये तो आपके बाद अपनी एड़ियों के बल फिर गए और मुर्तद हो गए। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम फ़रमाते हैं कि उस समय मैं वही कहूँगा जो ख़ुदा के नेक बन्दे ईसा इब्नि मरियम ने कहा कि :-

اقول کما قال العبد الصالح عیسیٰ ابن مریم کُنتُ عَلَیۡہِمۡ شَہِیۡدًا مَّا دُمۡتُ فِیۡہِمۡ ۚ فَلَمَّا تَوَفَّیۡتَنِیۡ.....الخ

अर्थात "मैं उन्हें देखता रहा जब तक कि मैं उनके बीच रहा। लेकिन जब हे ख़ुदा! तूने मुझे मृत्यु दे दी तो फिर उसके बाद तू ही उन्हें देखने वाला था।"

इस हदीस से दो प्रमाण निकलते हैं एक तो यह कि जिस रंग में और जिन अर्थों में अपनी उम्मत के बिगड़ जाने के बारे में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम अपनी अज्ञानता प्रकट करेंगे उसी तरह हज़रत मसीह भी करेंगे दूसरे यह कि तवफ़्फ़ी का अर्थ आसमान की ओर उठा लेने या सुला देने के नहीं हैं बल्कि मृत्यु देने के हैं। क्योंकि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने अपने संबंध में तवफ़्फ़ी का शब्द प्रयोग करके इस शब्द के अर्थों का निर्धारण कर दिया है। इसलिए इमाम बुख़ारी इस हदीस को बुख़ारी की किताबुत्तफ्सीर में लाए हैं। अब जबकि क़ुर्आन शरीफ से यह बात स्पष्ट हो गई कि हज़रत मसीह मृत्यु पा चुके हैं तो अब हम देखते हैं कि इस विषय के बारे में हदीस क्या कहती है। अत: आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम फ़रमाते हैं :-

اِنَّ عیسی ابن مریم عاش عشرین و مائة سنة

(طبرانی و کنزالعمال جلد ۶ عن حضرت فاطمہؓ)

अर्थात ईसा इब्नि मरियम एक सौ बीस वर्ष जीवित रहे। देखो यह हदीस कितनी स्पष्टता से हज़रत मसीह की मृत्यु का पता दे रही है। फिर एक दूसरे अवसर पर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया :-

لو کان موسیٰ و عیسیٰ حیّین لما وسعهما الّا اتّباعی۔

(ابن کثیر جلد ۲ صفحہ ۲۴۶)

अर्थात यदि मूसा और ईसा इस समय जीवित होते तो उन्हें भी मेरा अनुसरण के बिना चारा न होता।

सुब्हानल्लाह इससे बढ़कर मसीह की मृत्यु के बारे में और क्या स्पष्टता होगी कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने स्पष्ट शब्दों में फ़रमाँ दिया कि यदि हज़रत मसीह इस समय जीवित होते तो मेरे अनुसरण के बिना उन्हें भी चारा न होता। और दूसरी हदीस में उनकी आयु भी बता दी जिसे पूरी हुए शताब्दियाँ बीत चुकी हैं।[1] इन सब सबूतों से जो इस जगह क़ुर्आन शरीफ और हदीसों से दिए गए हैं। यह बात सूर्य की तरह स्पष्ट हो जाती है कि हज़रत मसीह दूसरे मनुष्यों की भाँति मृत्यु पा चुके हैं। अब असंभव होने के बावजूद यदि मान भी लें कि कोई हदीस या क़ुरआनी आयत ऐसी हो भी जिसमें हमारे मुखालिफों के निकट इस बात की ओर इशारा पाया जाता हो कि हज़रत मसीह अभी तक ज़िन्दा हैं तो क़ुर्आन शरीफ के बताए हुए सिद्धान्त के अनुसार हमें चाहिए कि ऐसी आयत या हदीस का वह अर्थ न करे जो स्पष्ट आयतों और सहीह हदीसों के विरुद्ध हों। बल्कि हमारा कर्तव्य है कि समस्त अस्पष्ट बातों को स्पष्ट बातों के

1. हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की मृत्यु की एक यह भी स्पष्ट दलील है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उन्हें मेराज की रात मृत्यु पाए हुए नबियों के साथ देखा – इसी से

अधीन लावें। अन्यथा नऊज़ुबिल्लाह यह मानना पड़ेगा कि ख़ुदा के कलाम में कमी है। खूब ध्यान दो कि जब क़ुर्आन शरीफ की आयतें और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की हदीसें स्पष्ट और साफ-साफ शब्दों में बता रही हैं कि हज़रत मसीह मृत्यु पा चुके हैं तो इस विषय पर अन्य जितनी भी आयतें और हदीसें हों उन सबको इनके अधीन लाना चाहिए। पर इन्शाअल्लाह हमें इस बात की आवश्यकता ही न होगी क्योंकि क़ुर्आन की कोई आयत ऐसी नहीं है जिसमें यह बताया गया हो कि हज़रत मसीह अब तक जीवित मौजूद हैं। यदि कोई है तो उसे प्रस्तुत किया जाए। सारा क़ुर्आन शरीफ देख लो एक आयत भी ऐसी नहीं पाओगे जिसमें हयात-ए-मसीह का वर्णन हो।[1] हाँ

1. हमारे विरोधी निम्नलिखित आयत :-

وَاِنۡ مِّنۡ اَهۡلِ الۡكِتٰبِ اِلَّا لَيُؤۡمِنَنَّ بِهٖ قَبۡلَ مَوۡتِهٖ (सूरह निसा 4:160)

और

اِنَّهٗ لَعِلۡمٌ لِّلسَّاعَةِ (सूरह अज्ज़ुख़रुफ़ 43:62)

से मसीह नासरी अलैहिस्सलाम का जीवित होना साबित करने की व्यर्थ कोशिश किया करते हैं। लेकिन जो व्यक्ति इन आयतों पर इनके प्रसंग और सन्दर्भ को ध्यान में रखकर सोचेगा। उसे ज्ञात हो जाएगा कि इन आयतों का मसीह के जीवित होने से दूर का भी सम्बन्ध नहीं। क्योंकि पहली आयत में केवल यह बताया गया है कि समस्त एहल-ए-किताब अपनी मौत से पहले यही समझेंगे कि मसीह को क़त्ल कर दिया गया था। क्योंकि इस आयत से पहले उनकी इसी सोच का वर्णन किया गया है। जैसा कि फ़रमाया وَقَوۡلِهِمۡ اِنَّا قَتَلۡنَا الۡمَسِيۡحَ हाँ मौत के बात अवश्य उन पर वास्तविकता स्पष्ट हो जाएगी। इसका सबूत यह भी है कि ''क़बल मौतिही'' का दूसरा उच्चारण बहुवचन के रूप में ''क़ब्ला मौतिहिम'' बयान किया गया है (देखो इब्नि जरीर जिल्द 6) जो इस बात का स्पष्ट प्रमाण है कि इस जगह मौत से मसीह की मौत अभिप्राय नहीं बल्कि अहले किताब की अपनी मौत तात्पर्य है और दूसरी आयत को भी मसीह के ज़िन्दा होने की धारणा से कोई सम्बन्ध नहीं। क्योंकि इसमें या तो प्रतिरूप के तौर पर मसीह के पुन: प्रादुर्भाव की ओर संकेत है जो

इसके विरुद्ध कई ऐसी हदीसें हैं जिनमें स्पष्ट रूप से मसीह की मृत्यु की ओर इशारा पाया जाता है।

मसीह (अलैहि.) के जीवित होने के अक़ीदे पर कभी सहमति नहीं हुई

अब सवाल उठता है कि जब क़ुर्आन शरीफ और हदीसें स्पष्ट रूप से मसीह की मृत्यु पर गवाही दे रही हैं तो उनके जीवित होने की ग़लत आस्था पर किस तरह सारी उम्मत की सहमति हो गयी ? इसके जवाब में याद रखना चाहिए कि यह बिल्कुल गलत है कि इस झूठी आस्था पर कभी सारी उम्मत की सहमति बनी है। पूर्वकालीन इस्लामी विद्वानों में अनेक सदाचारी ऐसे हुए हैं जिन्होंने स्पष्ट रूप से मसीह की मृत्यु को स्वीकार किया है और सहाबा किराम भी इसी आस्था पर क़ायम थे। चुनाँचि हज़रत इब्नि अब्बास रज़ि. जो रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के चचेरे भाई थे और जिनके लिए रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने दुआ भी की थी कि इनको क़ुर्आन शरीफ की विशेष सूझ-बूझ प्रदान हो। उन्होंने भी "मुतवफ़्फ़ीका" का अर्थ मुमीतुका बयान करके अपनी आस्था को स्पष्ट रूप से प्रकट कर दिया कि मसीह मृत्यु पा चुके हैं। (बुखारी किताबुत्तफ्सीर)

क़यामत के निकट होने का एक सर्वमान्य निशान है या हज़रत मसीह नासरी के अस्तित्व को उनके बिन बाप पैदा होने के कारण क़यामत की दलील के रूप में प्रस्तुत किया गया है। जैसा कि अगले वाक्य ''फ़ला तम्तरून्न बिहा'' में संकेत पाया जाता है। अत: इन दोनों आयतों में से कोई भी हज़रत मसीह नासरी का जीवित होना सिद्ध नहीं करती, और यही अभिप्राय है।

फिर इमाम बुखारी रह. जो हदीसों के व्याख्याकारों के सर्वमान्य इमाम हैं उन्होंने अपनी सहीह (बुखारी) में इस रिवायत को दर्ज करके अपनी ओर से भी इस पर मुहर लगा दी है और अपनी आस्था की ओर संकेत कर दिया है।

सहाबा रज़ि. के बाद ताबेईन की जमाअत है वह भी मसीह की मृत्यु की क़ाइल थी। अत: मज्मउल बहार (मज्मउल बहार जिल्द 1, पृष्ठ 286) में लिखा है कि :-

والاکثران عیسیٰ علیہ السلام لم یمت وقال مالک مات۔

अर्थात मौजूदा ज़माने के अधिकतर लोग यह समझते हैं कि हज़रत ईसा मृत्यु नहीं पाए। लेकिन इमाम मालिक कहा करते थे कि वह मृत्यु पा चुके हैं। इस उदाहरण में एक और बात भी ध्यान देने योग्य है और वह यह है कि मज्मउल बहार के लेखक यह नहीं कहते कि सारी उम्मत की यह आस्था है कि हज़रत ईसा मृत्यु नहीं पाए बल्कि केवल यह कहते हैं कि अधिकतर लोगों की यह आस्था है। मानो उनके ज़माने तक भी यह विचारधारा इतनी व्यापक नहीं हुई थी कि सारी उम्मत की विचारधारा कहला सकती। फिर इमाम इब्नि हज़्म के बारे में लिखा है कि :-

وتمسّک ابن حزمٍ بظاھر الایۃ وقال بموتہٖ۔

"अर्थात इमाम इब्नि हज़्म ने आयत के बाह्य अर्थों से दलील देते हुए हज़रत मसीह की मृत्यु सिद्ध की है" चुनाँचि इब्नि हज़्म ने अपनी मशहूर किताब "अल्मुहल्ला" में स्पष्ट रूप से लिखा है कि हज़रत ईसा मृत्यु पा चुके हैं। (अलमुहल्लाह, जिल्द 1, पृष्ठ 23)

इब्नि हज़्म कोई साधारण व्यक्ति नहीं थे बल्कि एक उच्चकोटि के इमाम थे। इसी प्रकार मोतज़ला फ़िर्क़ा का भी यही अक़ीदा है कि हज़रत मसीह मृत्यु पा चुके हैं। (मज्मउल बयान, जिल्द 1, आयत फ़लम्मा तवफ़्फ़ैतनी के अन्तर्गत)

ये थोड़े से नाम हमने केवल उदाहरण के तौर पर लिखे हैं। इनके

अतिरिक्त और भी बहुत से ऐसे बुजुर्ग हुए हैं जिन्होंने हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम की मृत्यु को माना है और अधिकतर पुराने उलमा ऐसे हुए हैं जिनसे इस विषय में कोई राय वर्णित नहीं है। अत: हम नहीं कह सकते कि वे किस आस्था पर कायम थे बल्कि हम उन पर सुधारणा रखते हैं कि वे भी क़ुर्आन की शिक्षा के अनुसार मसीह की मृत्यु के क़ाइल होंगे। फिर यह भी देखना चाहिए कि सबसे पहला इज्माअ (सहमति) जो सहाबा किराम का हुआ, वह इसी बात पर था कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से पहले जितने भी नबी हुए हैं वे सब मृत्यु पा चुके हैं और सहाबा किराम के ज़माने के बाद तो उम्मते मुहम्मदिया इतनी अधिकता के साथ दूर-दूर के देशों में फैल गई कि सहाबा के बाद के ज़माना में किसी विषय के बारे में इज्माअ का दावा करना ही असम्भव है। इसलिए इमाम अहमद बिन हम्बल फरमाते हैं कि जो व्यक्ति किसी विषय के बारे में इज्माअ का दावा करे वह झूठा है। (देखो मुसल्लमुस्सबूत वग़ैरह कुतुबउसूल) अत: यह बात बिल्कुल ग़लत है कि इस झूठी आस्था पर उम्मते मुहम्मदिया का कभी इज्माअ रहा है। बल्कि सत्य यह है कि यदि किसी अक़ीदे पर उम्मत की सहमति हुई है तो वह मसीह की मृत्यु का ही अक़ीदा है। जैसा कि वर्णन किया जा चुका है। हाँ यह सत्य है कि कई शताब्दियों से मसीह नासरी के आसमान पर (भौतिक शरीर के साथ – अनुवाद) जीवित रहने की धारणा आमतौर पर मुसलमानों के अन्दर प्रचलित है। परन्तु यह बात हमारे विरुद्ध कदापि कोई तार्किक दलील नहीं, क्योंकि कभी-कभी गलत धारणाएँ फैल जाया करती हैं। देखो आज मुसलमानों के 72 फ़िर्क़े हो रहे हैं जिनमें आपस में काफी मतभेद है। अब स्पष्ट है कि वे सब के सब तो सच्चे हो नहीं सकते। क्योंकि यदि सच्चे हों तो महत्वपूर्ण विषयों में मतभेद नहीं हो सकता। मतभेद से स्पष्ट है कि कुछ ग़लत अक़ीदे मुसलमानों के अन्दर आ गए हैं। ये ग़लत अक़ीदे कहाँ से आ गए ? क़ुर्आन शरीफ और हदीस ने तो नि:सन्देह सही

अक़ीदे ही बयान किए हैं। फिर इनके होते हुए ग़लत अक़ीदे कैसे आ गए ? इस सवाल का जो जवाब हमारे विरोधी देंगे वही हमारी ओर से भी समझ लें। लेकिन अब वास्तविक उत्तर भी सुन लीजिए।

मसीह के जीवित होने का अक़ीदा इस्लाम में कहाँ से आया

हर व्यक्ति जानता है कि जब इस्लाम की उन्नति का युग था उस समय ईसाई लोग फौज दर फौज इस्लाम में दाखिल हुए और यह एक स्वाभाविक बात है कि मनुष्य अपने विचारें को धीरे-धीरे छोड़ता है। कहावत मशहूर है कि राम-राम निकलते-निकलते ही निकलेगा और अल्लाह का नाम दाख़िल होते होते ही होगा। इसी से अनुमान लगा लो कि ये लोग जो हज़ारों लाखों की संख्या में इस्लाम में दाख़िल होते थे यद्यपि बुनियादी तौर पर इस्लाम की सच्चाई को मानकर ही मुसलमान बनते थे। परन्तु चूँकि विचारों में तुरन्त पूर्ण परिवर्तन नहीं हो जाता और व्याख्यात्मक विषयों में लोग कुछ ईसाई विचारधारा अपने साथ लाते थे जिनका एक दिन में दिल से निकल जाना सम्भव न था। उन लोगों के दिलों से मसीह नासरी की बेतुकी मुहब्बत शिर्क के स्थान से तो नि:सन्देह गिर गई थी, लेकिन अभी पूर्णत: दिल से नहीं निकली थी। इसलिए क़ुर्आन शरीफ और हदीसों में जहाँ कहीं मसीह का वर्णन आया वहाँ उन लोगों ने स्वभावत: टिप्पणियाँ लिख दीं और कुछ मुसलमान भी धीरे-धीरे उन विचारों से प्रभावित हो गए। यही कारण है कि हमारे कुछ भूतपूर्व व्याख्याकार क़ुर्आन शरीफ की व्याख्या करते हुए व्यर्थ में इस्राईली क़िस्से कहानियाँ बयान करने लग जाते हैं।

मुर्दों का वापिस न लौटना

जैसा कि क़ुर्आन शरीफ में हज़रत मसीह के बारे में आता है कि उन्होंने मुर्दे ज़िन्दा किए। इसका स्पष्टत: यह अर्थ था कि जो आध्यात्मिक रूप से मुर्दा थे उनके अन्दर मसीह ने आध्यात्मिक जीवन की रूह फूँकी और यही वह काम है जिसके लिए अवतार पैदा होते हैं। अत: ऑंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के बारे में क़ुर्आन शरीफ़ में लिखा है कि :-

يَا أَيُّهَا الَّذِيْنَ آمَنُوا اسْتَجِيْبُوْا لِلّٰهِ وَلِلرَّسُوْلِ إِذَا دَعَاكُمْ لِمَا يُحْيِيْكُمْ۔

(सूरह अनफ़ाल 8:25)

अर्थात हे मोमिनो! तुम अल्लाह की आवाज़ पर कान धरो और रसूल की भी बात मानो जब वह तुम्हें जीवित करने के लिए बुलाए।

अब देखो ऑंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के बारे में किस तरह स्पष्ट तौर पर जीवित करने का शब्द आया है परन्तु यहाँ निर्विवाद रूप से आध्यात्मिक ज़िन्दगी ही तात्पर्य ली जाती है। लेकिन जब मसीह के बारे में यही शब्द आता है तो वहाँ शारीरिक मुर्दों को जीवित करना समझ लिया जाता है और यह सब कुछ मसीही विचारधारा के लोगों के प्रभाव का नतीजा है। हालाँकि क़ुर्आन शरीफ की स्पष्ट शिक्षा के अनुसार शारीरिक मुर्दों का इसी दुनिया में ज़िन्दा हो जाना असम्भव है। जैसा कि फ़रमाया :-

وَمِنْ وَّرَآئِهِمْ بَرْزَخٌ إِلٰى يَوْمِ يُبْعَثُوْنَ۔

(सूरह अल मोमिनून 23:101)

अर्थात जो लोग मर जाते हैं उनके और इस दुनिया के मध्य क़यामत तक के लिए एक रोक पैदा कर दी जाती है।

इसी तरह अगर किसी जगह हज़रत मसीह के बारे में ''ख़लक़'' अर्थात पैदा करने का शब्द आ गया तो उसे हमारे कुछ व्याख्याकारों ने

ज़ाहिरी अर्थों में मान लिया। यद्यपि ऐसे शब्द रूपक के तौर पर प्रयुक्त होते हैं। यही हाल नुज़ूले मसीह के विषय में हुआ। ईसाई धर्म में पहले से हज़रत ईसा के दोबारा आने की ख़बर मौजूद थी जिसे ईसाई लोग स्वयं मसीह का आना समझते थे। जब यह लोग इस्लाम में आए तो इन्होंने इस्लाम में एक मसीह के आने की ख़बर पाई जिससे उन्होंने तत्काल यह समझ लिया कि हो न हो यह वही समाचार है जो पहले से ईसाइयत में मौजूद है संयोगवश आगे शब्द नुज़ूल का भी मिल गया। बस फिर क्या था वे इस ख्याल पर पक्के तौर पर जम गए कि स्वयं इस्राईली मसीह ही अन्तिम दिनों में अवतरित होगा। बाद में जो उनके अनुगामी आए उनमें इतनी हिम्मत कहाँ थी कि पूर्वजों के विरुद्ध कोई बात मुँह में लाते। क़ुर्आन खोलकर देखो, प्रारम्भ से जन साधारण का यही कहना रहा है कि :-

بَلْ نَتَّبِعُ مَا أَلْفَيْنَا عَلَيْهِ آبَاءَنَا۔

(सूरह अल-बक़र: 2:171)

अर्थात हम तो उसी रास्ते पर चलेंगे जिस पर हमारे बाप-दादे चलते आए हैं। भले ही वे ग़लत और असत्य पर हों।

मौऊद मसीह (अर्थात आने वाले मसीह) को इसी उम्मत में से होना था

यहाँ तक हमने ख़ुदा के फ़ज़्ल से यह साबित किया है कि क़ुर्आन शरीफ और हदीस की दृष्टि से यह बात पूर्णत: सिद्ध हो चुकी है कि हज़रत मसीह नासरी आसमान पर जीवित नहीं उठाए गए बल्कि मृत्यु पा चुके हैं। मसीह के जीवित उठाए जाने की बात बाद में मुसलमानों के अन्दर दाखिल हुई, वर्ना सहाबा किराम ने तो अपने सबसे पहले इज्माअ में यह फैसला कर दिया था कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि

व सल्लम से पहले जितने नबी हुए हैं वे सब मृत्यु पा चुके हैं। अब मैं यह बताता हूँ कि क़ुर्आन शरीफ और हदीस से यह बात भी साबित है कि जिस मसीह का वादा दिया गया है वह इसी उम्मत में से होगा। क़ुर्आन शरीफ़ में अल्लाह तआला फ़रमाता है :-

وَعَدَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْكُمْ وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَيَسْتَخْلِفَنَّهُمْ فِي الْاَرْضِ كَمَا اسْتَخْلَفَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ وَلَيُمَكِّنَنَّ لَهُمْ دِيْنَهُمُ الَّذِي ارْتَضٰى لَهُمْ۔

(सूरह नूर 24:56)

अर्थात अल्लाह तआला वादा करता है उन लोगों से, जो तुम में से पक्का ईमान लाए और नेक कर्म किए कि वह अवश्यमेव उन्हें दुनिया में ख़लीफ़ा बनाएगा जिस तरह कि उसने उन लोगों को ख़लीफ़ा बनाया जो उनसे पहले गुज़र चुके और वह उनके उस धर्म को जो ख़ुदा ने उनके लिए पसन्द किया है, दुनिया में क़ायम कर देगा।

इस आयत में अल्लाह तआला मुसलमानों से वादा करता है कि वह उनमें उसी तरह आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के उत्तराधिकारी (ख़लीफ़ा) बनाएगा, जिस तरह उसने बनी इस्राईल में से हज़रत मूसा अलैहि. के ख़लीफ़े बनाए और उनके द्वारा धर्म को बल प्रदान करेगा। अब यह स्पष्ट है कि हज़रत मूसा के बाद अल्लाह तआला ने बनी इस्राईल में बहुत से खलीफे भेजे जो तौरात की ख़िदमत करते थे हज़रत मूसा के ख़लीफ़ाओं का यह सिलसिला हज़रत मसीह नासरी के अस्तित्व में अपनी पूर्णता और अन्त को पहुँच गया। मुसलमानों को भी इसी प्रकार के ख़लीफ़ाओं का वादा दिया गया था और जिस तरह मूसा के सिलसिला का अन्तिम ख़लीफ़ा इस्राईली मसीह हुआ, ठीक उसी तरह यह मुक़द्दर था कि अन्तिम दिनों में मुसलमानों में भी एक मसीह भेजा जाएगा जो इस्लामी ख़लीफ़ाओं के सिलसिला के दायरा को पूरा करने वाला और कमाल तक पहुँचाने वाला होगा। अर्थात इस तरह उन दोनों सिलसिलों में अल्लाह तआला

ने समानता बयान की है जो कि अरबी शब्द ''कमा'' से स्पष्ट है। अब बुद्धिजीवी जानते हैं कि समानता कुछ अन्तर भी चाहती है। अत: सिद्ध हुआ कि मुहम्मदी सिलसिला का मसीह अर्थात आख़िरी ख़लीफ़ा मूसवी सिलसिला के मसीह से अलग वजूद रखेगा यद्यपि वह उसका प्रतिरूप होगा परन्तु वह हू-बहू वही नहीं होगा बल्कि उससे अलग एक व्यक्ति होगा।

इसके अतिरिक्त अल्लाह तआला ने इस आयत में ''मिनकुम'' (अर्थात तुम में से) का शब्द रखकर सारे झगड़े की जड़ काट दी और साफ बता दिया कि मुसलमानों में जो ख़लीफ़े होंगे वे मुसलमानों में से होंगे और कोई व्यक्ति बाहर से नहीं आएगा। तो अब फिर यह कितना अत्याचार है कि अपनी ज़िद पूरी करने के लिए मुहम्मदी सिलसिला का आख़िरी और सबसे महान ख़लीफ़ा बनी इस्राईल में से पैदा किया जाना समझा जावे और इस तरह ख़ुदा के वादे को जो उसने ''मिन्कुम'' के शब्द में किया है, रद्दी की तरह फेंक दिया जाए। फिर यही नहीं बल्कि हदीस भी स्पष्ट रूप से बतला रही है कि मसीह मौऊद उम्मते मुहम्मदिया में से ही होगा और इसी उम्मत का एक व्यक्ति होगा बाहर से नहीं आएगा। अत: आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम फ़रमाते हैं :-

كَيْفَ اَنْتُمْ اِذَا نَزَلَ ابْنُ مَرْيَمَ فِيْكُمْ وَاِمَامُكُمْ مِنْكُمْ۔

(بخاری و مسلم بحوالہ مشکٰوۃ باب نزول عیسیٰ بن مریم)

अर्थात हे मुसलमानो! क्या ही अच्छा हाल होगा तुम्हारा, जब तुम में इब्नि मरियम अवतरित होगा और वह तुम्हीं में से तुम्हारा इमाम होगा।

यह हदीस स्पष्ट शब्दों में बता रही है कि जिस मसीह के आने का वादा दिया गया है वह मुसलमानों में से ही एक व्यक्ति होगा जैसा कि मिन्कुम के शब्द से स्पष्ट है बेशक आने वाले को इब्नि मरियम के नाम से याद किया गया है परन्तु मिन्कुम का शब्द पुकार-पुकार कर

कह रहा है कि यह इब्नि मरियम वह नहीं है जो पहले गुज़र चुका है। बल्कि हे मुसलमानों! यह तुम्हीं में से एक व्यक्ति होगा। आगे चलकर आपको यह बताया जाएगा कि इब्नि मरियम के शब्द प्रयोग करने में क्या रहस्य था किन्तु अभी पाठक इतना समझ लें कि क्या मिन्कुम के शब्द ने मसीह नासरी के दोबारा आने के अक़ीदे को जड़ से काटकर नहीं रख दिया ? हाय अफसोस! हज़रत खात्मुन्नबीयीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम स्पष्ट शब्दों में भविष्यवाणी कर रहे हैं कि मसीह मौऊद इसी उम्मत में से होगा। लेकिन मुसलमान मसीह नासरी की मुहब्बत में शिर्क के इस स्तर तक पहुँच चुके हैं कि व्यर्थ में अपने सुधार के लिए इस्राईली क़ौम के पैरों पर गिर रहे हैं। ख़ुदा इस क़ौम पर रहम करे कि यह ख़ैरुल उम्मत होकर कहाँ आ गिरी।

तात्पर्य यह कि मसीह मौऊद के बारे में ''इमामु कुम मिन्कुम'' के शब्द कहकर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने सारे झगड़े का फैसला कर दिया है और भ्रम व सन्देह की कोई गुंजाइश नहीं छोड़ी। आपकी ममता को देखिए कि स्पष्ट शब्दों में बता देने के बावजूद कि आने वाला मसीह मेरी उम्मत में से ही एक व्यक्ति होगा आप इस विषय पर खामोश नहीं रहे बल्कि और स्पष्ट कर दिया और फ़रमाया :-

رأیتُ عیسیٰ و موسیٰ فامّا عیسیٰ فَاَحْمَرُ جَعْدٌ عریض الصّدر
وامّاموسیٰ فَادمُ جَسِیْمٌ سَبُطُ الشَّعْرِ کَاَنَّہٗ مِنْ رّجَالِ الزُّطّ۔

(بخاری جلد ۲، کتاب بدء الخلق)

अर्थात मैंने कश्फ (तन्द्रावस्था) में ईसा और मूसा अलैहिमुस्सलाम दोनों को देखा। ईसा तो सुर्ख रंग के थे और उनके बाल घुँघराले थे और सीना चौड़ा था और मूसा गेहुँए रंग के थे और भारी शरीर वाले थे और ऐसा प्रतीत होता था मानो कोई व्यक्ति ''ज़ुत'' क़बीला में से है।

इस हदीस में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने हज़रत ईसा इब्नि मरियम का यह हुलिया बयान किया है कि वह सुर्ख रंग के

थे और उनके बाल घुँघराले थे यह इस बात का सबूत है कि यहाँ ईसा से तात्पर्य गुज़रे हुए ईसा हैं स्वयं इसी हदीस में मौजूद है और वह यह है कि उनको एक गुज़रे हुए नबी अर्थात मूसा अलैहिस्सलाम के साथ बयान किया गया है। पाठकगण हज़रत मसीह नासरी के इस हुलिया को अच्छी तरह से याद रखें।

फिर एक और हदीस में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम फ़रमाते हैं :-

بینما انا نائم اطوف بالکعبۃ فاذا رجلٌ اٰدَمُ سَبُطُ الشَعر ینطف
اویھراق رأسہ ماء فقلت من ھٰذا قالوا ابن مریم ---الخ

(بخاری کتاب الفتن باب ذکر الدّجّال)

अर्थात मैंने स्वप्न में देखा कि मैं काबा का तवाफ़ (परिक्रमा) कर रहा हूँ उस समय अचानक एक व्यक्ति मेरे सामने आया जो गेहुँए रंग का था और उसके बाल सीधे और लम्बे थे, मैंने पूछा यह कौन है तो मुझे बताया गया कि यह मसीह इब्नि मरियम है। इस हदीस में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम आने वाले मसीह का यह हुलिया बयान करते हैं कि वह गेहुँए रंग का होगा और उसके बाल सीधे और लम्बे होंगे। इस बात का सबूत कि इस हदीस में इब्नि मरियम से आखिरी युग में प्रकट होने वाला मसीह तात्पर्य है, यह है कि इसी हदीस में दज्जाल का भी वर्णन है। अर्थात आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम फ़रमाते हैं कि मैंने उसी मौके पर दज्जाल को भी देखा। अत: स्पष्ट हुआ कि यह मसीह वह है जो दज्जाल के विरोध में प्रकट होगा। अब मामला बिलकुल साफ़ है कि हज़रत मसीह नासरी जो बनी इस्राईल की तरफ़ भेजे गए वह सुर्ख रंग के थे और उनके बाल घुंगराले थे लेकिन आने वाला मसीह जो दज्जाल के मुकाबले पर प्रकट होगा उसका हुलिया यह बयान किया गया है कि उसका रंग गेहुँआ होगा और बाल सीधे और लम्बे होंगे। दोनों हुलियों में अन्तर स्पष्ट है किसी व्याख्या की आवश्यकता नहीं। कहाँ सुर्ख रंग और

कहाँ गेहुँआ रंग, कहाँ घुँघराले बाल और कहाँ सीधे और लम्बे। इससे बढ़कर स्पष्टीकरण क्या होगा ? दोनों मसीहों के हुलिए पाठकगणों के सामने रख दिए गए हैं और ये हुलिए भी हज़रत अफ़्ज़लुल रुसुल ख़ात्मुन्नबीयीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के बयान किए हुए हैं। पाठकगण स्वयं फैसला कर लें कि क्या इन दोनों हुलियों में एक आदमी की शक्ल नज़र आती है ? जिसे ख़ुदा ने आँखें दी हों वह तो कदापि दोनों को एक नहीं कह सकता। हज़रत मिर्ज़ा साहिब क्या खूब फ़रमाते हैं कि :-

موعودم وبحلیۂ ماثور آمدم
حیف است گر بدیدہ نہ بینند منظرم
رنگم چوں گندم است وبمو فرق بیّن است
زانساں کہ آمد است دراخبار سرورم
ایں مقدمم نہ جائے شکوک است و التباس
سیّد جُدا کندز مسیحائے احمرم

अर्थात मैं ही मसीह मौऊद हूँ और मैं ही आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के बताए हुए हुलिए के अनुसार आया हूँ। तो अब अफसोस है उस आँख पर जो मुझे नहीं पहचानती। मेरा रंग गेहुँआ है और बालों में भी मुझे उस व्यक्ति से स्पष्ट अन्तर प्राप्त है। जिसका उल्लेख आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की हदीस में आता है। इसलिए अब मेरे विषय में भ्रम और सन्देह की कोई गुंजाइश नहीं रही। क्योंकि हमारे आक़ा व सरदार ने स्वयं मुझे सुर्ख रंग वाले मसीह से अलग कर दिया है।

नुज़ूल (अवतरण) की वास्तविक्ता

उपरोक्त प्रमाणों से यह बात सूर्य समान स्पष्ट हो जाती है कि आने वाला मसीह अतीत के मसीह नासरी से बिल्कुल अलग व्यक्तित्व

रखता है देखो क़ुर्आन गवाही दे रहा है कि इस्लाम के समस्त ख़लीफ़े मुसलमानों में से ही होंगे। हदीस बयान कर रही है कि मसीह मौऊद इसी उम्मत में से एक व्यक्ति है और फिर नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने दोनों मसीहों के अलग-अलग हुलिए हमारे सामने रखकर और अधिक किसी व्याख्या की आवश्यकता नहीं छोड़ी, तो अब शक की क्या गुंजाइश रही ? पर एक भ्रम अवश्य शेष रहता है कि जब मसीह मौऊद को इसी उम्मत में से होना था तो फिर उसके बारे में **नुज़ूल** और **इब्नि मरियम** के शब्द क्यों प्रयोग किए गए ? नुज़ूल का शब्द स्पष्ट करता है कि मसीह मौऊद आसमान से नाज़िल होगा और इब्नि मरियम का शब्द बताता है कि हज़रत मसीह नासरी स्वयं आएँगे। अत: इसके लिए अच्छी तरह याद रखना चाहिए कि प्रथम तो किसी मरफ़ूअ मुत्तसिल सही हदीस में नुज़ूल के साथ समाअ (आसमान) का शब्द प्रयुक्त नहीं हुआ जिससे कि आसमान से उतरने का अर्थ लिया जाय। इसके अतिरिक्त नुज़ूल के अर्थों पर अधिक ध्यान नहीं दिया गया। अरबी भाषा में नुज़ूल का अर्थ ''प्रकट होना और आना'' के भी हैं। उदाहरण के तौर पर क़ुर्आन शरीफ में अल्लाह तआला फ़रमाता है :-

قَدْ أَنزَلَ اللّٰهُ إِلَيْكُمْ ذِكْرًا ۔ رَّسُوْلًا يَتْلُوْا عَلَيْكُمْ آيَاتِ اللّٰهِ۔

(सूरह तलाक़ 65:11,12)

अर्थात अल्लाह तआला ने तुम्हारी ओर एक याद कराने वाला रसूल उतारा है जो तुम पर अल्लाह की आयतें पढ़ता है।

इस आयत में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के बारे में नुज़ूल का शब्द प्रयोग हुआ है। हालाँकि सब जानते हैं कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम आसमान से नहीं उतरे थे, बल्कि इसी ज़मीन में पैदा हुए थे।

दूसरी जगह क़ुर्आन शरीफ़ फ़रमाता है :-

وَأَنْزَلْنَا الْحَدِيْدَ فِيْهِ بَأْسٌ شَدِيْدٌ وَّمَنَافِعُ لِلنَّاسِ۔

(सूरह अल-हदीद 57:26)

अर्थाम हमने लोहा उतारा है जिसमें लड़ाई का बड़ा सामान है और उसमें लोगों के लिए दूसरे भी बहुत से फ़ायदे हैं।

लीजिए लोहा भी असामान से उतर रहा है! इन आयतों से स्पष्ट है कि नुज़ूल शब्द का अर्थ सदैव शाब्दिक रूप से ऊपर से उतरने का नहीं होता, बल्कि अनेक बार नुज़ूल का शब्द उस वस्तु के बारे में प्रयोग किया जाता है जो ख़ुदा की ओर से लोगों को एक नेमत और रहमत के रूप में दी जाती है। इसलिए नुज़ूल शब्द से यह नतीजा निकालना कि मसीह आसमान से उतरेगा एक बहुत बड़ी ग़लती है। फिर क्या पाठकों ने यह नहीं सुना कि अरबी भाषा में मुसाफिर को नज़ील कहते हैं और जिस जगह ठहरा जाए वह मंज़िल कहलाती है। इसके अतिरिक्त कई हदीसों में मसीह के बारे में ''बअस'' (भेजा जाना) और ''खुरूज'' (निकलना) के शब्द भी आए हैं। अत: इस दशा में जो अर्थ ''बअस'' ''खुरूज और ''नुज़ूल'' तीनों शब्दों में पाया जाता है वही आशय समझा जाएगा।

इब्नि मरियम के नाम में हिकमत (रहस्य)

अब रहा इब्नि मरियम के नाम का प्रश्न, तो इस बारे में अच्छी तरह समझ लो कि भविष्य में पैदा होने वाले अवतारों के नाम जो किसी नबी के द्वारा बताए जाते हैं वे आमतौर पर किसी गूढ़ सत्यता की ओर संकेत करने वाले होते हैं, इसलिए उन्हें सदैव बाह्य या सरसरे अर्थों पर चस्पाँ करना सही नहीं होता। बल्कि सामान्यत: उनके प्रयोग में यह उद्देश्य होता है कि वह आने वाले मौऊद (कथित) और उसके नाम के मध्य किसी गहरे और गूढ़ प्रेम एवं लगाव को प्रकट करें। जैसे कि इस्राईली क़ौम को यह वादा दिया गया था कि मसीह के पैदा होने से पहले हज़रत इलियास अलैहिस्सलाम प्रकट होंगे, जो हज़रत मसीह नासरी से लगभग साढ़े आठ सौ वर्ष पहले गुज़र चुके थे। जिनके बारे

में यहूदियों में यह अक़ीदा था कि वह आसमान की ओर उठाए गए हैं। (सलातीन बाब 2, आयत 11) इस पर यहूदियों ने इलियास(अ) के नुज़ूल से यह समझा कि वह इलियास नबी जो गुज़र चुका, वही स्वयं दोबारा नाज़िल होगा और उसके बाद मसीह आएगा। इसलिए जब हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ने मसीह होने का दावा किया तो यहूदियों ने साफ इन्कार कर दिया और कहा कि हमारी किताबों में तो लिखा ह कि मसीह से पहले इलियास नाज़िल होगा। लेकिन चूँकि अभी तक इलियास नहीं आया इसलिए हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम का दावा सच्चा नहीं हो सकता। इसका जवाब हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ने यह दिया कि इलियास के आने की जो भविष्यवाणी की गई थी उससे व्यक्तिगत रूप से इलियास का आना अभिप्राय न था बल्कि वह एक ऐसे नबी के आने की भविष्यवाणी थी जो इलियास के स्वभाव पर उसका प्रतिरूप बनकर आना था और वह आ चुका, जो वही यह्या अलैहिसस्लाम है जिसकी आँखें हो देखे (मती बाब 11, आयत 14) लेकिन बाह्य अर्थों पर जमे रहने वाले यहूदी इसी बात पर अड़े रहे कि स्वयं इलियास अलैहिस्सलाम को नाज़िल होना चाहिए, और इसी कारण से वे नजात से वंचित रह गए। (मती बाब 17)

इस उदाहरण से यह बात बिल्कुल स्पष्ट हो जाती है कि भविष्यवाणियों में जो नाम आने वाले अवतारों के बताए जाते हैं उनका हमेशा बाह्य रूप में होना आवश्यक नहीं होता। बल्कि वे प्राय: किसी रहस्य की ओर संकेत करके प्रयुक्त किए जाते हैं। उदाहरणत: कहाँ इलियास नबी का आसमान से उतरना और कहाँ यह्या नबी का ज़मीन में पैदा होना। मगर हज़रत मसीह यह्या को ही इलियास ठहरा रहे हैं। क्योंकि वह इलियास के स्वभावों पर आया था। यह उदाहरण इस बात को भी स्पष्ट कर रहा है कि ख़ुदा के कलाम में जब किसी पहले नबी के आसमान से उतरने की भविष्यवाणी हो तो उससे यह तात्पर्य नहीं होता कि वही नबी आसमान के पर्दों को फाड़ता हुआ ज़मीन पर उतरेगा।

बल्कि इससे उसके किसी सादृश्य का आना वांछित होता है। अत: मालूम हुआ कि मसीह के बारे में जो यह कहा गया है कि वह नाज़िल होगा तो इससे स्वयं मसीह का आसमान से नाज़िल होना तात्पर्य नहीं बल्कि मसीह के सदृश किसी व्यक्ति का पैदा होना अभिप्राय है। जैसा कि इलियास नबी के आसमान से नाज़िल होने से इलियास के सदृश एक व्यक्ति अर्थात यह्या का पैदा होना अभिप्राय था।

सारांशत: ईसा इब्नि मरियम के ज़ाहिरी नाम पर अड़ना और केवल ईसा नाम की वजह से आने वाले मसीह का इन्कार कर देना भयानक विनाश की राह है जिससे बचना अनिवार्य है। क्योंकि नाम हमेशा ज़ाहिर में पाए जाने ज़रूरी नहीं होते बल्कि उनके अन्दर अर्थों की यथार्थता छुपी हुई होती है।

एक और मिसाल जो बहस के अधीन विषय को और भी स्पष्ट कर देती है यह है कि क़ुर्आन शरीफ की सूर: सफ़्फ़ में लिखा है कि हज़रत ईसा ने एक ऐसे रसूल की ख़बर दी थी जो उनके बाद आएगा और उसका नाम अहमद होगा। (सूर: सफ़्फ़ रुकूअ 1) अब हमारे विरोधी मुसलमान सब मानते हैं कि यह भविष्यवाणी आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पैदा होने से पूरी हो चुकी है। लेकिन हर एक जानता है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का असली नाम मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम था न कि अहमद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम। यह सत्य है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने नुबुव्वत के दावे के बाद यह फ़रमाया कि मैं अहमद भी हूँ। लेकिन दावा के बाद इस नाम को अपनी ओर मन्सूब करना विरोधी पर किसी प्रकार दलील नहीं ठहर सकती। विरोधी पर तो दलील तब ठहर सकती है जब यह साबित किया जावे कि सचमुच आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के बुज़ुर्गों की तरफ से यह नाम आपका रखा गया था या यह कि दावा से पहले आप इस नाम से पुकारे जाते थे। लेकिन किसी सहीह हदीस से यह साबित नहीं कि

आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम दावा से पहले कभी इस नाम से पुकारे गए हों या किसी बुज़ुर्ग ने बचपन में आपका यह नाम रखा हो। इसलिए इस सन्देह का इसके अतिरिक्त और क्या जवाब हो सकता है कि यह कहा जावे कि आपके अन्दर सिफ्ते अहमदियत पायी जाती थी और यह कि आसमान पर आपका नाम अहमद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम भी था जैसा कि आसमान पर यह्या का नाम इलियास भी था ? इन दो मिसालों से यह बात अच्छी तरह स्पष्ट हो जाती है कि भविष्यवाणियों में जो नाम बताए जाते हैं वे अनिवार्यत: प्रत्यक्ष रूप में पाए जाने ज़रूरी नहीं होते बल्कि साधारणत: वे गुणवाचक नाम होते हैं और किसी आन्तरिक वास्तविकता की ओर संकेत करने के लिए प्रयोग किए जाते हैं। इसमें भेद यह है कि ख़ुदा को चीज़ों की वास्तविकता से लगाव है उनके ज़ाहिरी नामों से लगाव नहीं। लोग नि:सन्देह रूप से पहचान के लिए ज़ाहिरी नामों का लिहाज़ रखते हैं। परन्तु ख़ुदा की दृष्टि में असली नाम गुणवाचक नाम ही होता है न कि ज़ाहिरी नाम।

अब प्रश्न उठता है कि फिर वह कौन सा रहस्य है जिसके कारण ख़ुदा ने आने वाले मसीह को इब्नि मरियम के नाम से नामित किया है? इसके जवाब में कई बातें प्रस्तुत की जा सकती हैं। जिन सबका इस छोटी सी पुस्तक में लिखना विस्तार का कारण बन जाएगा। इसलिए कुछ मोटे-मोटे रहस्यों को ही बयान करके खत्म करता हूँ।

प्रथम यह कि आने वाला मसीह ईसा के गुणों और स्वभावों पर आना था। जिस तरह हज़रत इलियास के गुणों और स्वभावों पर हज़रत यह्या आए। अत: जिस तरह हज़रत यह्या के आने से हज़रत इलियास के आने का वादा पूरा हुआ उसी तरह मसीह के किसी प्रतिरूप के आने से हज़रत मसीह के आने का वादा पूरा होना था। इसलिए इस समानता के कारण मसीह मौऊद का नाम इब्नि मरियम रखा गया।

द्वितीय रहस्य यह है कि जिस तरह मसीह नासरी मूसवी सिलसिला के ख़ातमुल ख़ुलफ़ा थे उसी तरह मुहम्मदी मसीह को मुहम्मदी सिलसिला का ख़ातमुल ख़ुलफ़ा होना था।

तृतीय बड़ा रहस्य यह है कि क़ुर्आन शरीफ और हदीसों से स्पष्ट है कि आख़री ज़माने के लिए यह निश्चित था कि इसमें ईसाइयत ज़ोर पकड़ेगी और सलीबी विचारधारा अपने चरम पर होगी। इसलिए मसीह मौऊद का बड़ा काम यह रखा गया कि ''यक्सिरुस्सलीब'' अर्थात मसीह मौऊद सलीबी विचारधारा के ज़ोर को तोड़ देगा। इसमें रहस्य यह है कि जब किसी नबी की क़ौम में फ़साद फैल जाता है तो फिर नैतिकता के तौर पर उसी नबी का कर्तव्य होता है कि वह उस फसाद को दूर करे। जैसे कि यदि किसी हुकूमत में फसाद फैल जाए तो बाहर की हुकूमतों का काम नहीं होता कि वे उस फसाद को दूर करें बल्कि ख़ुद उसी हुकूमत का कर्तव्य होता है कि वह उसे दूर करे। इसलिए चूँकि आख़िरी ज़माने के मौऊद का एक सबसे बड़ा काम यह था कि वह सलीबी मज़हब के फसाद को दूर करेगा। इसलिए हज़रत ईसा के रंग-ढंग में आने वाले का नाम ईसा इब्नि मरियम और मसीह रखा गया। बल्कि आख़िरी युग के लिए तो यह भी मुक़द्दर था कि वह बहुत बड़े फसाद का युग होगा और सारी क़ौमों में फसाद फैल जाएगा। ऐसे समय के लिए आवश्यकता थी कि सब धर्मों के प्रवर्तकों के प्रतिरूप प्रकट होते जिनका आना स्वयं उन प्रवर्तकों का आना समझा जाता और जो अपनी अपनी उम्मतों का सुधार करते। लेकिन चूँकि बहुत से सुधारकों का एक ही समय में दुनिया में पैदा होना फसाद को दूर करने के बजाए फसाद की ज्वाला को और भी भड़का देता। चूँकि अब इस्लाम के प्रकटन ने समस्त आध्यात्मिक पानी अपने अन्दर खींच लिया है और अब कोई आध्यात्मिक सुधारक इस्लाम के अलावा किसी कौम में प्रकट नहीं हो सकता। इसलिए यह निश्चित पाया कि आध्यात्मिक दृष्टि से समस्त नबियों के प्रतिरूपों

को एक ही अस्तित्व में इस्लाम के अन्दर पैदा किया जावे। अत: उस आने वाले सुधारक का नाम यह रखा गया है कि वह सारी क़ौमों का सुधार करे। मानो उस आने वाले सुधारक का काम दो बड़े भागों में विभाजित हो गया। (1) उम्मते मुहम्मदिया का सुधार (2) शेष सारी क़ौमों का सुधार।

चूँकि इस्लाम के अतिरिक्त शेष क़ौमों के सुधार के कामों में सबसे बड़ा काम हज़रत मसीह नासरी की उम्मत का सुधार और उसके ग़लत अक़ीदों को रद्द करना था। जैसा कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के बयान किए हुए शब्द यक्सिरुस्सलीब से स्पष्ट है जो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उस आने वाले सुधारक के बारे में कहे। इसलिए इस दृष्टिकोण से आने वाले को विशेषरूप से ईसा इब्नि मरियम की उपाधि दी गई। अत: हज़रत मिर्ज़ा साहिब फ़रमाते हैं :-

چوں مرانورے پئے قومِ مسیحی دادہ اند
مصلحت را ابن مریم نامِ من بنہادہ اند

अर्थात चूँकि मुझे मसीही क़ौम के सुधार के लिए विशेष नूर (प्रकाश) प्रदान किया गया है इसलिए इस रहस्य से मेरा नाम भी इब्नि मरियम रखा गया है।

इसके अपेक्षाकृत दूसरी क़ौमों के सुधार की दृष्टि से केवल -

وَاِذَا الرُّسُلُ اُقِّتَتْ

(सूरह अल-मुरसलात 77:12)

के शब्द प्रयोग किए गए हैं अर्थात आख़िरी ज़माने में तमाम् रसूल (प्रतिरूप के रूप में एक ही अस्तित्व में) एकत्र किए जाएँगे।

परन्तु दूसरी ओर उम्मते मुहम्मदिया के सुधार का काम भी एक अति महत्वपूर्ण काम था। इसलिए इस पहलू की दृष्टि से आने वाले का नाम मुहम्मद और अहमद भी रखा गया। क्योंकि उम्मते मुहम्मदिया के सुधार के काम में उस मौऊद (अर्थात कथित अवतार) ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का प्रतिबिम्ब और प्रतिरूप होना था।

(मसीह नासरी की मृत्यु के विषय पर यदि विस्तारपूर्वक जानकारी प्राप्त करना हो तो विनीत की लिखी हुई पुस्तक अल् हुज्जतुल बालिग़ा देखें)

मसीह मौऊद और महदी एक ही वजूद के दो नाम हैं

हज़रत मसीह नासरी की मृत्यु और उससे सम्बन्ध रखने वाले सवालों की संक्षिप्त बहस के बाद अब हम दूसरे सवाल को लेते हैं। और वह यह है कि क्या मसीह मौऊद और महदी एक ही वजूद के दो नाम हैं या कि अलग-अलग ? इसलिए जानना चाहिए कि यद्यपि आजकल मुसलमानों में आमतौर पर यह विचार पाया जाता है कि मसीह और महदी दो अलग-अलग वजूद हैं। लेकिन यदि समझ से काम लिया जावे तो साबित हो जाता है कि यह बात ग़लत है और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के कथन के विरुद्ध है। परन्तु इस बहस में पड़ने से पहले संक्षेप में यह बता देना आवश्यक है कि महदी के बारे में मुसलमानों की ओर से क्या-क्या विचार व्यक्त किए जाते हैं। इसलिए स्पष्ट हो कि महदी से सम्बन्धित वर्णनों में इतना मतभेद और विरोधाभास है कि पढ़ने वाले की बुद्धि चक्कर में पड़ जाती है और फिर मतभेद भी केवल एक बात में नहीं बल्कि लगभग हर एक बात में मतभेद हैं। उदाहरण के तौर पर महदी की नस्ल के बारे में ही इतने मतभेद हैं कि ख़ुदा की पनाह। एक गिरोह कहता है कि महदी हज़रत फ़ातिमा रज़ि. की औलाद में से होगा और उस गिरोह की भी आगे तीन शाखें हो जाती हैं कुछ कहते हैं कि वह इमाम हसन रज़ि. की औलाद से पैदा होगा और कुछ कहते हैं कि इमाम हुसैन रज़ि. की औलाद से होगा और तीसरी शाख का दावा है कि महदी इमाम हसन रज़ि. और हुसैन रज़ि दोनों की औलाद से होगा। अर्थात यदि माँ हसनी होगी तो बाप हुसैनी होगा या यदि बाप हसनी होगा तो

माँ हुसैनी होगी। फिर एक और गिरोह है जो यह कहता है कि महदी फातिमा की औलाद से नहीं बल्कि हज़रत अब्बास रज़ि. की औलाद से होगा और कुछ कहते हैं कि महदी हज़रत उमर रज़ि. की औलाद में से होगा। फिर कुछ हदीसें हमें बताती हैं कि महदी के लिए किसी विशेष क़ौम की शर्त नहीं। बल्कि उसके लिए केवल यह शर्त है कि वह आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की उम्मत में से होगा। इसके अलावा महदी और उसके बाप के नाम के बारे में भी मतभेद है। कुछ हदीसें उसके बाप का नाम मुहम्मद बताती हैं और कुछ अहमद और कुछ ईसा। सुन्नियों के निकट बाप का नाम अब्दुल्लाह होगा लेकिन शिया कहते हैं कि हसन होगा। इसी प्रकार महदी के ज़ाहिर होने की जगह के बारे में भी मतभेद है। फिर इसी तरह इस बात में भी मतभेद है कि महदी कितने साल दुनिया में काम करेगा। तात्पर्य यह कि महदी के बारे में लगभग हर एक बात में मतभेद है। और फिर आश्चर्य यह कि विभिन्न गिरोह अपने दावे के समर्थन में हदीसें ही प्रस्तुत करते हैं। (देखो हिजजुल किरामा लेखक नवाब सिद्दीक़ हसन ख़ान साहिब)।

अत: ऐसी हालत में महदी के बारे में जो हदीसें पाई जाती हैं। उन सब को सही नहीं माना जा सकता। यही कारण है कि इमाम बुख़ारी और इमाम मुस्लिम ने अपनी सहीह हदीसों में महदी के बारे में कोई अध्याय नहीं बनाया। क्योंकि उन्होंने उन हदीसों में से किसी को भी विश्वासयोग्य नहीं समझा। इसी तरह बाद में आने वाले कुछ उलमाओं ने भी महदी के बारे में वर्णित तमाम् हदीसों को कमज़ोर ठहरा दिया और स्पष्टरूप से लिखा है कि महदी के बारे में जितने भी कथन हैं उनमें से कोई कथन भी सुस्पष्ट नहीं।

अब स्वाभाविक तौर पर यह सवाल पैदा होता है कि इस मतभेद का कारण क्या है ? तो जहाँ तक हमने सोचा है इसका कुछ कारण तो यह है कि यद्यपि एक महदी का विशेष रूप से आने का वादा दिया

गया है पर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने सामान्यत: कई महदियों की भी ख़बर दी थी जिन्होंने विभिन्न समयों में विभिन्न परिस्थितियों के अन्तर्गत प्रकट होना था। इसलिए उन वर्णनों में मतभेद का होना आवश्यक था। केवल ग़लती यह हुई कि आमलोग इन वर्णनों को एक ही व्यक्ति के बारे में समझने लग गए। जबकि वे विभिन्न लोगों के बारे में थीं। इसके अतिरिक्त यह भी बिल्कुल सच है और हमारा अनुभव इस पर गवाह है कि हर एक क़ौम और फ़िर्क़ा की यह सोच होती है कि सारी भलाई अपनी ही तरफ मन्सूब कर ले। इसलिए जब आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने यह भविष्यवाणी की कि मेरी उम्मत में से एक महदी पैदा होगा तो बाद में सब क़बीलों और फ़िर्क़ों में यह इच्छा पैदा हुई कि जिस महदी के आने का वादा दिया गया है वह हम में से ही पैदा हो, पर सब लोग पाकबाज़ और परहेज़गार नहीं हुआ करते। कुछ ने ऐसी हदीसें गढ़ लीं जिनसे यह लगे कि महदी इन्हीं की क़ौम से होगा। यही कारण है कि महदी से सम्बन्धित हदीसों में इतनी अधिक गड़बड़ हुई है। लेकिन वे हदीसें जो महदी को किसी विशेष क़ौम से नहीं बतातीं बल्कि केवल यह बताती हैं कि वह उम्मते मुहम्मदिया में से एक व्यक्ति है। वे अवश्य इस योग्य हैं कि उन्हें स्वीकार किया जावे। क्योंकि उन्हें मनगढ़ंत ठहराने का कोई कारण नहीं। क्योंकि महदी के बारे में किसी को क्या ज़रूरत थी कि वह यह हदीस बताता कि महदी उम्मते मुहम्मदिया का एक व्यक्ति होगा हाँ जो हदीसें महदी को किसी विशेष क़ौम के साथ सम्बन्धित करती हैं उनके बारे में अवश्य यह सन्देह हो सकता है कि वे बाद में गढ़ ली गई हैं।

इसलिए इस मतभेद को ध्यान में रखते हुए हमारा यह कर्तव्य होना चाहिए कि हम महदी को किसी विशेष क़ौम से न ठहरावें, बल्कि सारांशत: केवल इस बात पर ईमान रखें कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने एक ऐसे महदी की भविष्यवाणी की है जो आप

सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की उम्मत में से आखिरी युग में होगा इसी में हमारी भलाई है और यही समझ-बूझ का रास्ता है। क्योंकि यदि हम यह आस्था रखें कि महदी हज़रत फ़ातिमा की औलाद से पैदा होगा और अन्ततः वह अब्बास रज़ि. की नस्ल से पैदा हो जाए तो हमारी यह आस्था हमारे रास्ते में बड़ी रोक बन जाएगी और हम महदी पर ईमान लाने से वंचित रह जाएँगे। इसी तरह यदि हम यह आस्था रखें कि महदी अब्बास रज़ि. की नस्ल से होगा लेकिन वह हज़रत फातिमा की नस्ल से पैदा हो जाए या हज़रत उमर रज़ि. की नस्ल से ज़ाहिर हो जाए तो हम उस पर ईमान लाने से वंचि रह जाएँगे। इसलिए और नहीं तो कम से कम अपना ईमान बचाने के लिए ही हमें चाहिए कि महदी को किसी विशेष क़ौम से न ठहरायें। बल्कि केवल यह ईमान रखें कि महदी उम्मते मुहम्मदिया में से प्रकट होगा और मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के सेवकों और अनुयायियों में से होगा और बस। ऐसी आस्था रखते हुए हम पूर्णतः अमन में होंगे और यदि ऑंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने वास्तव में महदी को किसी विशेष क़ौम ही से ठहराया है तो फिर भी कोई हर्ज नहीं होगा। क्योंकि अंश हर हाल में कुल के अन्दर शामिल होता है।

एक और बात भी याद रखने योग्य है और वह यह कि यद्यपि महदी के नाम और उसके बाप के नाम के बारे में मतभेद है लेकिन फिर भी अधिक प्रबल आस्था यही रही है कि महदी का नाम मुहम्मद होगा और महदी के बाप का नाम अब्दुल्लाह होगा और वस्तुतः इसके समर्थन में जो कथन हैं वे भी सुस्पष्ट नहीं। लेकिन उसूले रिवायत की दृष्टि से दूसरे कथनों से फिर भी अधिक महत्व रखते हैं। इसलिए यदि हम इस कथन को प्राथमिकता दें तो न्याय से परे नहीं। लेकिन इस दशा में भी हज़रत मिर्ज़ा साहिब के दावा पर कोई ऐतराज़ नहीं हो सकता। क्योंकि सूरः जुमा की आयत ''व आख़रीन मिन्हुम'' से पता लगता है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम आख़िरी

ज़माना में एक और क़ौम की भी रूहानी तरबियत करेंगे। जिसका यह अर्थ है कि आख़री ज़माना में आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का एक प्रतिरूप पैदा होगा जो आपके रंग में रंगीन होकर एक जमाअत की तरबियत करेगा इसलिए हम कहते हैं कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने महदी मौऊद का नाम मुहम्मद और उसके बाप का नाम अब्दुल्लाह इस लिए बयान फ़रमाया ताकि इस अभिप्राय की ओर संकेत हो कि महदी कोई स्थाई हैसियत नहीं रखता है बल्कि वह आपका वही प्रतिरूप है जिसकी सूर: जुमा में भविष्यवाणी की गई है। मानो महदी के नाम के बारे में मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह के शब्द प्रयोग करने से यह बताना उद्देश्य न था कि उसका नाम व पता बताया जावे बल्कि यह बताना उद्देश्य था कि मानो महदी की पैदाइश मेरी ही पैदाइश है। और महदी का वजूद मानो मेरा ही वजूद है और आपके शब्द भी इसी ओर इशारा करते हैं। क्योंकि हदीस में यह नहीं आया कि महदी का नाम मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह होगा बल्कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के शब्द यह हैं -

يواطئ اسمهٗ اسمی واسم ابیہ اسم ابی۔

अर्थात महदी का नाम मेरा नाम होगा और महदी के बाप का नाम मेरे बाप का नाम होगा। अत: आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का यह कहने का ढंग ही आपके इरादा को प्रकट कर रहा है।

दूसरी बात यह है कि महदी के वंश के बारे में अधिक सही बात यही है कि वह अहले बैत में से होगा और शेष बातें इसकी तुलना में कम दर्जा की हैं मगर इसे भी सही मानने में कोई हर्ज नहीं है। क्योंकि हम देख चुके हैं कि जब ''आख़रीन मिन्हुम'' वाली आयत उतरी तो सहाबा के पूछने पर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने सलमान फारसी की पीठ पर हाथ रखकर फ़रमाया था कि :-

لو کان الایمان عند الثریّا لنالہ رجل من ھٰؤلاء

(بخاری کتاب التفسیر تفسیر، سورۃ جمعہ)

अर्थात यदि ईमान दुनिया से उठकर सुरैया सितारे पर भी चला गया तो फिर भी इन फारसी मूल के लोगों में से एक आदमी उसे वहाँ से उतार लाएगा। अर्थात आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने महदी को सलमान रज़ि. की क़ौम से ठहराया जो फारसी मूल के थे। अब दूसरी तरफ हम देखते हैं कि अहज़ाब के युद्ध के अवसर पर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने इसी सलमान रज़ि. के बारे में कहा कि :-

سَلْمَانُ مِنَّا اَهْلَ الْبَيْتِ۔

(طبرانی کبیر ومستدرک حاکم)

अर्थात सलमान हम अहले बैत में से हैं। इसलिए महदी के बारे में अहले बैत का शब्द भी हज़रत मिर्ज़ा साहिब के दावा के विरुद्ध नहीं बल्कि समर्थक है और यह एक सूक्ष्म रहस्य है जो भूलना नहीं चाहिए। मानो महदी मौऊद फारसी मूल का भी रहा, जैसा कि सहीह हदीस से साबित है और अहले बैत से भी हो गया। जैसा कि तमाम् कथन बताते हैं।

इसके अतिरिक्त हम देखते हैं कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने मसीह व महदी के बारे में फ़रमाया है कि :-

يُدْفَنُ مَعِيَ فِيْ قَبْرِيْ۔

(مشکوٰۃ کتاب الفتن باب نزول عیسیٰ بن مریم)

अर्थात ''वह मेरे साथ मेरी क़ब्र में दफन होगा।''

इससे भी इसी आध्यात्मिक एकरंगी की ओर इशारा अभीष्ट था। अन्यथा नऊज़बिल्लाह यह समझना कि किसी दिन आप (स.अ.व) की क़ब्र उखाड़ी जाएगी और उसमें मसीह व महदी को दफन किया जाएगा एक मूर्खता और बेशर्मी का विचार है। जिसे कोई सच्चा और ग़ैरतमन्द मुसलमान एक क्षण के लिए भी स्वीकार नहीं कर सकता। अत: सही यही है कि इन तमाम् हदीसों में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने इस बात की ओर संकेत किया है कि महदी आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का सादृश्य होगा और उसका

प्रादुर्भाव मानों आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का प्रादुर्भाव होगा।

इस परिचयात्मक टिप्पणी के बाद हम ख़ुदा के फ़ज़्ल से यह साबित करते हैं कि महदी और मसीह अलग-अलग वजूद नहीं हैं बल्कि एक ही व्यक्ति के दो नाम हैं, जो दो भिन्न-भिन्न हैसियतों के कारण उसे दिए गए हैं। पहली बात जो हमें यह बताती है कि मसीह और महदी एक हैं वह महदी शब्द का भावार्थ है और यह भी कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने महदी के शब्द को व्यक्ति वाचक संज्ञा के रूप में प्रयोग नहीं किया। बल्कि एक गुणवाचक नाम के तौर पर प्रयोग किया है। महदी का अर्थ है हिदायत पाया हुआ, और कुछ हदीसों से पता लगता है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने इस शब्द को कुछ उन लोगों के लिए भी प्रयोग किया है जो महदी मौऊद नहीं हैं। उदाहरण के तौर पर अपने उत्तराधिकारियों (ख़लीफ़ों) के बारे में आपने फ़रमाया कि :-

الخلفاء الراشدين المھدیّین۔

(ابوداؤد، ترمذی)

अर्थात मेरे ख़ुलफा महदी हैं। इससे ज्ञात हुआ कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के तमाम् खुलफ़ा ही महदी हैं। इसलिए मसीह मौऊद चूँकि सर्वमान्य तौर पर रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के ख़लीफ़ों में प्रतिष्ठित मर्तबा रखता है। इसलिए वह सबसे बड़ा महदी हुआ और वही जो सबसे बड़ा महदी है वही महदी मौऊद है। क्योंकि जब नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के कथनानुसार आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के सब ख़लीफे महदी हैं तो अनिवार्यरूप से महदी मौऊद वही होगा। जो उन में से विशेष रूप से मौऊद है। अत: साबित हुआ कि यद्यपि और लोग भी महदी हों पर उनमें जो विशेषरूप से मौऊद है वही महदी है।

फिर हदीस में लिखा है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम फ़रमाया करते थे :-

كَيْفَ تهلك اُمّة انا اوّلها و عيسى ابن مريم اٰخرها۔

(كنزالعمال جلد۷، صفحه ۲۰۳)

अर्थात ''किस तरह विनष्ट होगी वह उम्मत जिसके प्रारम्भ में मैं और अन्त में ईसा इब्नि मरियम है।''

फिर फ़रमाया :-

خير هٰذه الامّة اولها و اٰخرها اوّلها فيهم رسول الله و اٰخرُها فيهم عيسى بن مريم وبين ذلك فيج اعوج ليسوا منّى ولستُ منهم۔ (كنزالعمال جلد۷، صفحه ۲۰۲)

अर्थात ''इस उम्मत में बेहतरीन लोग वे हैं जो इसके प्रारम्भ और अन्त में हैं। प्रारम्भ वालों में स्वयं रसूले ख़ुदा हैं और आख़िर वालों में ईसा इब्नि मरियम हैं और दोनों के मध्यकाल में टेढ़ी चाल चलने वाले लोग हैं जो मुझ में से नहीं और न मैं उन में से हूँ।''

अब यदि वह महदी जिसका आख़री ज़माने में आने का वादा दिया गया है। मसीह से अलग व्यक्ति है तो चाहिए था कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम मसीह और महदी दोनों के बारे में वर्णन करते कि वे दोनों आख़री ज़माने में ज़ाहिर होकर मेरी उम्मत की निगरानी करेंगे मगर ऐसा नहीं किया गया बल्कि केवल मसीह का नाम लिया गया जिससे स्पष्ट है कि मसीह और महदी एक ही हैं इसलिए केवल मसीह का नाम बोल देने को काफी समझा गया। ग़ौर करना चाहिए जैसा कि बयान किया जाता है कि यदि महदी ने इमाम होना था और मसीह को मुक़्तदी (अनुयायी) तो क्या यह आश्चर्य की बात नहीं कि उम्मत की हिफ़ाज़त का वर्णन करते हुए आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व

सल्लम ने मुक़्तदी (अनुयायी) का वर्णन तो कर दिया मगर इमाम को बिल्कुल ही छोड़ दिया। फिर देखो दूसरी हदीस में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम केवल दो गिरोहों[1] को सीधे रास्ते पर चलने वाले और अच्छे लोग बतलाते हैं। एक वे जिन्होंने स्वयं आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से शिक्षा पायी और दूसरे मसीह मौऊद के अनुयायी। लेकिन महदी के अनुयायियों की तरफ संकेत तक भी नहीं करते बल्कि स्पष्ट रूप से बताते हैं कि इन दोनों क़ौमों के मध्य ''फ़ैजे आवज'' अर्थात पथभ्रष्ट लोग हैं। अत: साबित हुआ कि महदी मसीह से अलग वजूद नहीं रखता बल्कि वही है जिसे केवल दो हैसियतों के कारण दो नाम दिए गए हैं।

फिर इससे भी बढ़कर यह कि हदीसों में जो काम मसीह मौऊद का बताया गया है लगभग वही काम महदी का बताया गया है यह भी इस बात का सबूत है मसीह और महदी एक ही हैं। इसके अतिरिक्त मसीह और महदी के हुलिए भी हदीसों में एक बताए गए हैं। (मुस्नद अहमद बिन हम्बल) अत: वह दो किस तरह हो सकते हैं ? फिर हदीस में यह भी आता है कि यदि एक सच्चा ख़लीफ़ा मौजूद हो और उस समय कोई दूसरा व्यक्ति ख़लीफ़ा होने का दावा करे तो उसे

1. इन्हीं दो गिरोहों की ओर क़ुर्आन शरीफ सूर: जुमा में संकेत करता है जहाँ ख़ुदा तआला फ़रमाता है :-

هُوَ الَّذِی بَعَثَ فِی الْأُمِّيِّينَ رَسُولًا مِّنْهُمْ يَتْلُوا عَلَيْهِمْ آيَاتِهِ وَيُزَكِّيهِمْ وَيُعَلِّمُهُمُ الْكِتَابَ وَالْحِكْمَةَ وَإِنْ كَانُوا مِنْ قَبْلُ لَفِی ضَلَالٍ مُّبِينٍ۔ وَآخَرِينَ مِنْهُمْ لَمَّا يَلْحَقُوا بِهِمْ۔

अर्थात ''ख़ुदा ही है जिसने अरबों में एक रसूल उन्हीं में से पैदा किया जो ख़ुदा की आयतें उन पर पढ़ता है और उनको पाक करता है और उन्हें किताब और हिकमत दिखाता है। हालाँकि वे इससे पहले खुली-खुली पथभ्रष्टता में पड़े हुए थे और बाद में आने वाली एक दूसरी क़ौम भी है जिसकी यह रसूल (अपने एक प्रतिरूप के द्वारा) रूहानी तरबियत करेगा। - इसी से सम्बन्धित

क़त्ल कर दो, अर्थात युद्ध की स्थिति हो तो मुक़ाबला करके उसे मार दो या उसे मुर्दों की तरह समझकर उससे पूर्णत: नाता तोड़ लो। अब इस शिक्षा के होते हुए एक समय में दो ख़लीफ़ों का वजूद कैसे मान लिया जावे ? इस्लामी शिक्षानुसार एक समय में एक ही इमाम होता है और शेष उसके अधीन होते हैं। अत: यह भी इस बात का प्रमाण है कि मसीह और महदी अलग-अलग वजूद नहीं होंगे। बल्कि ये दो नाम एक ही व्यक्ति के हैं जो आख़िरी दिनों में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलहि वसल्लम का ख़लीफ़ा होगा। यहाँ तक तो हमने प्रमाणों से काम लिया, लेकिन अब हम एक ऐसी हदीस प्रस्तुत करते हैं जिसमें आँहज़रत सल्लल्लाहो अलहि व सल्लम ने स्पष्टरूप से फ़रमाया है कि मसीह और महदी एक ही व्यक्ति है। आप फ़रमाते हैं कि :-

لا المھدی الا عیسیٰ ابن مریم۔

(ابن ماجہ باب شدۃ الزمان)

अर्थात ''हज़रत ईसा के अतिरिक्त और कोई महदी मौऊद नहीं है।''

देखो कैसे स्पष्ट शब्दों में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलहि व सल्लम ने इस झगड़े का फैसला कर दिया है कि मसीह और महदी अलग-अलग नहीं हैं। बल्कि मसीह मौऊद के अतिरिक्त दूसरा कोई महदी मौऊद नहीं। जो व्यक्ति आँहज़रत सल्लल्लाहो अलहि व सल्लम पर ईमान लाता है वह तो इन शब्दों के सामने सिर झुका देगा। लेकिन जिसके दिल में टेढ़ापन है वह हज़ारों कुतर्क निकालेगा। मगर हमें इससे काम नहीं। हमारे मुख़ातिब केवल वे लोग हैं जो रूहानी पाठशाला में यह सबक़ सीख चुके हैं कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलहि व सल्लम के सामने अपना सिर रख देना असल सौभाग्य है।

फिर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की एक और हदीस भी है जो स्पष्ट शब्दों में मसीह मौऊद ही को इमाम महदी बताती है। आप फ़रमाते हैं :-

يُوْشِكُ مَنْ عَاشَ فِيْكُمْ اَنْ يَّلْقٰى عِيْسَى ابْنَ مَرْيَمَ اِمَامًا مَهْدِيًّا
وَحَكَمًا عَدْلًا فَيَكْسِرُ الصَّلِيْبَ وَيَقْتُلُ الْخِنْزِيْرَ......الخ

(مسند احمد بن حنبل جلد ٢ صفحه ٤١١)

अर्थात ''जो तुम में से उस समय जीवित रहा वह ईसा बिन मरियम को पाएगा जो इमाम महदी होंगे और हकम् अदल होंगे और सलीब को तोड़ेंगे और ख़िन्जीर को क़त्ल करेंगे।''

देखो इस हदीस में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने किस तरह स्पष्ट शब्दों में बताया है कि हज़रत ईसा ही इमाम महदी होंगे। मगर आश्चर्य है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलहि व सल्लम के आदेश को मानने के कारण आज हमें काफिर और मुर्तद कहा जाता है और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के आदेश को रद्दी की तरह फेंक दिया जाता है। अफसोस! सद अफसोस!!

ऊपर लिखे हुए प्रमाणों से यह बात सूर्य के प्रकाश की भाँति सिद्ध है कि मसीह और महदी एक ही वजूद के दो नाम हैं। किन्तु अब यह प्रश्न उठता है कि जब आँहज़रत सल्लल्लाहो अलहि व सल्लम ने स्पष्ट शब्दों में बता दिया कि महदी मा'हूद मसीह मौऊद से अलग वजूद नहीं है। तो फिर मुसलमान यह किस तरह मानने लग गए कि मसीह और महदी अलग-अलग वजूद हैं ? तो इसका जवाब यह है कि आम मुसलमानों का यह अक़ीदा है कि मसीह नासरी आसमान पर ज़िन्दा उठा लिए गए थे और आख़िरी दिनों में पुन: ज़मीन पर उतरेंगे। इसके विपरीत महदी के बारे में यह सर्वमान्य अक़ीदा है कि वह उम्मते मुहम्मदिया में से ही पैदा होगा। अत: जब तक मुसमलान इस ग़लत अक़ीदे पर क़ायम हैं कि मसीह नासरी ही आसमान से उतरेंगे, उस समय तक यह बिल्कुल असम्भव है कि वे मसीह व महदी को एक वजूद मानें। हाँ यदि वे मसीह के बारे में सही अक़ीदे पर क़ायम हो जाएँ और अतीत के मसीह नासरी को मृत मान लें तब उनके लिए मसीह मौऊद और महदी को एक वजूद मान लेना बहुत

आसान हो जाएगा। लेकिन धरती में पैदा होने वाले और आसमान से उतरने वाले को वे एक नहीं मान सकते। यह बात कि एक व्यक्ति को दो भिन्न-भिन्न नाम देने में क्या हिकमत थी ? यह हम ऊपर बयान कर चुके हैं पुनरावृत्ति की आवश्यकता नहीं। सारांशत: यह कि आने वाले ने विभिन्न उद्देश्यों के अन्तर्गत आना था। जिनमें से सलीब को तोड़ना और उम्मते मुहम्मदिया का सुधार ये दो बड़े उद्देश्य दृष्टिगत थे। इसलिए सलीब भंजक होने की दृष्टि से वह ईसा मसीह कहलाया और उम्मते मुहम्मदिया का सुधारक होने की दृष्टि से मुहम्मद महदी का नाम पाया।

कुछ लोग कहते हैं कि हदीसों में जो यह लिखा है कि मसीह के उतरने से पहले महदी दुनिया में मौजूद होगा और इमामत कराएगा और मसीह उसका अनुसरण करेगा इत्यादि इत्यादि, इससे ज्ञात होता है कि महदी मसीह से अलग वजूद है। पर यह तर्क भी सही नहीं। क्योंकि जब ठोस तर्कों से यह बात साबित हो गई कि मसीह के ज़माने में कोई दूसरा महदी नहीं हो सकता तो यह बातें अपने बाह्य अर्थों की दृष्टि से स्वीकार योग्य न रहीं। इसलिए अवश्य इनके कोई ऐसे अर्थ करने पड़ेंगे जो अन्य स्पष्ट हदीसों के विपरीत न हों। जब इस बात को ध्यान में रखकर देखा जाए तो कोई सन्देह नहीं रहता। वह इस तरह कि महदी होने की हैसियत के लिहाज़ से आने वाला मौऊद (कथित अवतार - अनुवादक) आँहज़रत सल्लल्लाहो अलहि व सल्लम का सदृश और प्रतिरूप है और मसीह की हैसियत के लिहाज़ से वह मसीह इब्नि मरियम का सदृश और प्रतिरूप है। इसलिए इस बात में क्या सन्देह है कि उसकी महदी होने की विशेषता उसकी मसीह होने की विशेषता से बढ़कर है। अत: इस आशय को पात्रता के रूप में इस रंग में बयान किया गया कि मानो महदी इमाम होगा और मसीह मुक़्तदी (अनुयायी)। अर्थात आने वाले मौऊद की महदी होने की पदवी उसके मसीह होने की पद्वी से

आगे-आगे होगी और उसके मसीह होने का गुण उसके महदी होने के गुण का अनुसरण करेगा और महदी के पहले मौजूद होने से यह तात्पर्य है कि यह मौऊद सुधारक (कथित अवतार - अनुवादक) अपने महदी होने की हैसियत से पहले ज़ाहिर होगा और मसीह होने का दावा बाद में करेगा। अत: ख़ुदा की करामात ने हज़रत मिर्ज़ा साहिब से पहले केवल चौदहवीं शताब्दी के मुजद्दिद-ए-आज़म होने का दावा करवाया जो महदी होने का पद है और फिर इसके कई वर्ष बाद मसीह मौऊद होने का दावा हुआ। जिसकी आँखें हों देखे।

उपरोक्त वर्णन से यह बात साबित हो गई कि प्रथम - महदी से सम्बन्धित हदीसों का असमान मतभेद प्रकट कर रहा है कि या तो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने विभिन्न महदियों की भविष्यवाणियाँ की थीं जो दुर्भाग्य से एक ही व्यक्ति के बारे में समझ ली गईं अथवा इस बारे में कुछ हदीसें ग़लत और मनगढ़त हैं और वस्तुत: यह दोनों बातें अपनी-अपनी जगह पर सही हैं।

द्वितीय यह बात साबित हो गई कि मसीह मौऊद के ज़माने में कोई अलग महदी नहीं होगा। बल्कि मसीह और महदी का वादा एक ही वजूद में पूरा होगा। इसके बाद महदी के बारे में केवल एक ही बात हल योग्य रह जाती है जिसका सम्बन्ध यद्यपि यहाँ चल रही बहस से नहीं है। लेकिन चूँकि महदी मौऊद की पहचान के रास्ते में वह एक बड़ी रोक है और उसके दूर हो जाने के बाद कोई दूसरा सन्देह शेष नहीं रहता इसलिए महदी से सम्बन्धित संक्षिप्त बहस को इसी जगह पूरी करने के लिए इस शंका का समाधान भी यहीं लिखा जाता है।

यह प्रश्न खूनी महदी से सम्बन्ध रखता है कि क्या महदी मौऊद तलवार के साथ प्रकट होगा और काफिरों का वध करेगा या यह कि वह शान्तिदूत के रूप में प्रकट होगा और लोहे की तलवार के साथ नहीं बल्कि दलीलों की तलवार से इस्लाम को विजयी करेगा। हमारे युग में मुसलमानों में आम विचारधारा यह है कि महदी काफिरों से

तलवार से युद्ध करेगा यहाँ तक कि जिज़्या (टैक्स) भी स्वीकार नहीं करेगा, या तो सब काफिरों को मुसलमान होना पड़ेगा या वे सब तलवार से मौत के घाट उतार दिए जाएँगे। हमारे विचार में यह एक अत्यन्त झूठी और इस्लाम को बदनाम करने वाली विचारधारा है।

महदी तलवार से जिहाद नहीं करेगा

इस बहस के लिए सबसे आवश्यक और सैद्धान्तिक बात यह है कि हम क़ुर्आन शरीफ की शिक्षा पर गहन दृष्टि डालें और देखें कि क्या वह धार्मिक विषयों में तलवार उठाने की आज्ञा देता है या नहीं? अर्थात क्या इस्लामी शिक्षा के अनुसार यह उचित है कि लोगों को बलपूर्वक मुसलमान बनाया जाये। यदि इस्लाम हमें आज्ञा देता है कि लोगों को बलपूर्वक मुसलमान बनाओ तो नि:सन्देह इस विषय पर ग़ौर करना हमारा कर्तव्य है कि क्या महदी इस्लाम के लिए तलवार उठाएगा या केवल सुलह से काम लेगा। लेकिन यदि इस्लामी शिक्षा हमें स्पष्ट तौर पर यह बताए कि धर्म के विषय में अत्याचार ठीक नहीं और तलवार से लोगों को मुसलमान बनाना अनुचित है तो इसके साथ ही ख़ूनी महदी का विषय भी अपने आप समाप्त हो जाएगा। क्योंकि जब अत्याचार उचित ही नहीं तो ऐसा सुधारक किस तरह आ सकता है जो लोगों को बलपूर्वक मुसलमान बनाए। जब क़ुर्आन शरीफ पर दृष्टि डालते हैं तो वहाँ स्पष्ट रूप से लिखा हुआ पाते हैं कि :-

لَآ اِكْرَاهَ فِى الدِّيْنِ قَدْ تَّبَيَّنَ الرُّشْدُ مِنَ الْغَيِّ

(सूरह अल-बक़र: 2:257)

अर्थात ''धर्म के विषय में कोई ज़ोर ज़बरदस्ती नहीं होनी चाहिए'' क्योंकि सन्मार्ग और कुमार्ग में अन्तर अच्छी तरह स्पष्ट हो चुका है। इस आयत में अल्लाह तआला ने स्पष्ट कह दिया

है कि धर्म के विषय में ज़ोर ज़बरदस्ती करना ठीक नहीं। चूँकि क़ुर्आन शरीफ हर एक दावा के साथ प्रमाण भी देता है इसलिए उसके साथ ही फ़रमाया कि ज़बरदस्ती इसलिए उचित नहीं कि सन्मार्ग और कुमार्ग पूर्णत: स्पष्ट है और हर एक व्यक्ति जो निष्पक्ष होकर चिन्तन करे वह सन्मार्ग को समझ सकता है और स्पष्ट है कि बलप्रयोग की आवश्यकता उसी जगह पड़ती है जहाँ शिक्षा में कोई कमी हो और अपनी विशेषता के बल पर लोगों के दिलों में घर न कर सके। पर क़ुर्आन शरीफ की शिक्षा तो ऐसी स्पष्ट और खुली-खुली है कि थोड़ा सा भी ध्यान देने से इन्सान सच्चाई को पा सकता है। इसलिए इसके मनवाने के लिए बलप्रयोग करना किसी प्रकार से भी उचित नहीं समझा जा सकता। इसके अतिरिक्त सोचो कि तलवार के बल पर लोगों को मुसलमान बनाने का यह अर्थ है कि हम स्पष्ट शब्दों में यह स्वीकार करते हैं कि (नऊज़बिल्लाह) इस्लाम झूठा है या इस्लाम में यह विशेषता नहीं कि वह अपनी विशेषता के बल पर लोगों को अपनी सच्चाई मनवा सके तभी तो बल प्रयोग की ज़रूरत पड़ सकती है।

फिर यह भी देखना चाहिए कि ज़बरदस्ती का असर केवल मनुष्य के जिस्म तक सीमित होता है इसके द्वारा मनुष्य की आत्मा और विचारों पर काबू नहीं पाया जा सकता। धर्म दिल के विचारों से सम्बन्ध रखता है हालाँकि कर्म भी उसके अन्दर शामिल हैं मगर कर्मों के लिए यह आवश्यक है कि वे दिल की प्रेरणा से पैदा हों। यदि वे किसी बाह्य असर के द्वारा हों और दिल उनके साथ सहमत न हो तो ऐसे कर्म कदापि धर्म का हिस्सा नहीं समझे जा सकते बल्कि उनका धर्म से कोई भी सम्बन्ध नहीं। उदाहरण के रूप में ख़ुदा के लिए सिज्दा करना नेक कामों में से है लेकिन अगर कोई व्यक्ति बाज़ार में चलता हुआ ठोकर खाकर मुँह के बल जा गिरे, चाहे उसकी ज़ाहिरी सूरत सज्दा करने वाले की सी हो लेकिन धर्म की परिभाषा में वह ख़ुदा के लिए सज्दा

करने वाला नहीं समझा जाएगा। क्योंकि उस सज्दा के साथ दिल की प्रेरणा और इरादा सम्मिलित नहीं। बल्कि यह दशा केवल किसी बाहरी असर से पैदा हो गई है। इसलिए वे ज़ाहिरी गतिविधियाँ ही धर्म में शामिल समझी जा सकती हैं जो दिल के इरादे से हों। यही कारण है कि सरवरे काइनात सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया है कि (بخاری) اِنَّمَا الْاَعْمَالُ بِالنِّيَّاتِ अर्थात सच्चे कर्म वही हैं जिनके साथ दिल की नीयत शामिल हो अगर नीयत नहीं तो कर्म भी बेकार। अतएव साबित हुआ कि यह पूर्णत: असम्भव है कि बलपूर्वक किसी को इस्लाम में या किसी अन्य धर्म में दाखिल किया जाए। क्योंकि मज़हब तो कहते ही हैं उस कार्य पद्धति को जिसके साथ ज़ुबान का इक़रार और दिल का समर्थन हो, और यह दोनों बातें ज़बरदस्ती करने से पैदा नहीं हो सकतीं। अत: ज्ञात हुआ कि बल प्रयोग के द्वारा किसी व्यक्ति को किसी धर्म में दाख़िल कर लेना बौद्धिक रूप से असम्भव है। इसलिए ख़ुदावन्द करीम ने फ़रमाया है :-

اَنَّمَا عَلٰى رَسُوْلِنَا الْبَلٰغُ الْمُبِيْنُ۔

(सूरह मायद: 5:93)

''हमारे रसूल का तो केवल यह काम है कि लोगों तक हमारा पैग़ाम खोलकर पहुँचा देवे।'' आगे मानना या न मानना लोगों का काम है इससे रसूल को कोई मतलब नहीं। रसूल का काम केवल अच्छे ढंग से अपने पैग़ाम को पहुँचा देना है बस।

एक और दलील से भी बल प्रयोग की धारणा गलत सिद्ध होती है और वह यह कि इस्लाम ने दोग़लेपन को अति नफरत योग्य कर्म ठहराया है और दोगले की सज़ा को काफिर से भी अधिक सख़्त रखा है। जैसा कि क़ुर्आन शरीफ़ फ़रमाता है।

اِنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ فِى الدَّرْكِ الْاَسْفَلِ مِنَ النَّارِ۔

(सूरह अन-निसा 4:146)

अर्थात ''मुनाफिक (दोग़ले) लोग दोज़ख़ (नर्क) के कठोरतम

हिस्से में डाले जाएँगे'' स्पष्ट है कि ज़बरदस्ती के नतीजे में मुनाफिक पैदा होता है न कि सच्चा मोमिन। फिर इस्लाम ज़बरदस्ती की इजाज़त किस तरह दे सकता है ?

अब यहाँ एक और सवाल पैदा होता है और वह यह कि जब क़ुर्आन शरीफ खुले शब्दों में तलवार के द्वारा लोगों को इस्लाम के अन्दर दाखिल करने से मना करता है और धार्मिक विषयों में ज़बरदस्ती की इजाज़त नहीं देता तो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने क्यों तलवार उठाई ? यह एक सवाल है जो इस अवसर पर अवश्य दिल में पैदा होता है। इसका सही जवाब पाने के लिए हमें चाहिए कि क़ुर्आन शरीफ की इस आयत पर नज़र डालें। जिसमें सबसे पहले मुसलमानों को तलवार उठाने की इजाज़त दी गई थी। ख़ुदा तआला फ़रमाता है :-

أُذِنَ لِلَّذِيْنَ يُقَاتَلُوْنَ بِأَنَّهُمْ ظُلِمُوْا وَإِنَّ اللّٰهَ عَلٰى نَصْرِهِمْ لَقَدِيْرٌ ۔ الَّذِيْنَ
أُخْرِجُوْا مِنْ دِيَارِهِمْ بِغَيْرِ حَقٍّ إِلَّا أَنْ يَقُوْلُوْا رَبُّنَا اللّٰهُ وَلَوْلَا دَفْعُ اللّٰهِ
النَّاسَ بَعْضَهُمْ بِبَعْضٍ لَّهُدِّمَتْ صَوَامِعُ وَبِيَعٌ وَصَلَوَاتٌ وَمَسَاجِدُ
يُذْكَرُ فِيْهَا اسْمُ اللّٰهِ كَثِيْرًا ۔ (सूरह अल-हज 22:40, 41)

अर्थात ''उन लोगों को लड़ने की आज्ञा दी जाती है जिनके ख़िलाफ़ काफ़िरों की तरफ से तलवार उठाई गई। क्योंकि उन पर ज़ुल्म किया गया है और नि:सन्देह अल्लाह उनकी मदद पर समर्थ है। हाँ वही पीड़ित जो अपने घरों से निकाले गए बिना किसी उचित कारण के, केवल इस आधार पर कि उन्होंने कहा कि हमारा रब्ब अल्लाह है। अगर अल्लाह तआला लोगों को प्रतिरक्षात्मक युद्ध की इजाज़त देकर एक दूसरे के हाथ से न रोके तो फिर मठ और गिरजे और पूजास्थल और मस्जिदें जिनमें ख़ुदा का नाम अधिकता के साथ लिया जाता है वे सब एक दूसरे के हाथों ध्वस्त कर दिए जाएँ।

यह वह पवित्र आयत है जिसने सबसे पहले मुसलमानों को

काफिरों के मुकाबले पर लड़ने की इजाज़त दी। अब देख लो कि इस आयत में अल्लाह तआला ने कितनी स्पष्टता से लड़ाई का कारण बयान फ़रमाया है जो यह है कि फितना (उपद्रव) दूर होकर धार्मिक आज़ादी पैदा हो और यह भी स्पष्ट तौर पर फ़रमाया दिया कि मुसलमानों ने पहल नहीं की। बल्कि जब काफिरों ने उनके विरुद्ध तलवार उठाई और उन पर तरह-तरह के अत्याचार किए और उन्हें उनके घरों से निकाल दिया। तब शरारत को रोकने के लिए अल्लाह तआला ने उन्हें इजाज़त दी कि तुम भी उन ज़ालिम काफिरों के ख़िलाफ़ तलवार उठाओ। तेरह साल तक मुसलमानों ने सब्र से काम लिया और बड़े धैर्य से हर प्रकार की तकलीफ़ों को सहन किया अन्ततः मक्का छोड़कर मदीना की तरफ हिजरत की ताकि किसी तरह मक्का के काफिरों की शरारतों से अमन में आ जाएँ। परन्तु ये लोग फिर भी मुसलमानों को तकलीफ देने से न रुके बल्कि मदीने पर भी जाकर चढ़ाई की। तब हर तरह मजबूर होकर मुसलमानों को भी तलवार उठानी पड़ी। अतः यह एक बहुत बड़ा झूठ है कि मुसलमानों ने लोगों को ज़बरदस्ती मुसलमान बनाने के लिए तलवार उठाई। बल्कि सच तो है कि उन्होंने मुसीबतों के बर्दाश्त करने का वह नमूना दिखाया कि इतिहास उसकी मिसाल प्रस्तुत नहीं कर सकता। अतः इससे बढ़कर क्या ज़ुल्म होगा कि इस्लाम पर ज़ोर ज़बरदस्ती और अत्याचार का आरोप लगाया जाए।

मुसलमानों ने तो इस्लाम के प्रारम्भिक काल में जो कुछ किया वह शरारतों को खत्म करने के लिए किया और इस बात के लिए किया कि धार्मिक आज़ादी क़ायम हो जाए और लोग जिस मज़हब को सही समझें उसे खुल्लम-खुल्ला स्वीकार करें। हाँ निःसन्देह बाद में जब प्रारम्भिक लड़ाइयों के परिणामस्वरूप एक इस्लामी हुकूमत क़ायम हो गई तो कभी कभी मुसलमानों को राजनैतिक उद्देश्यों के अन्तर्गत भी लड़ाई करनी पड़ीं या कभी-कभी उनको इसलिए

तलवार उठानी पड़ी ताकि वे ऐसे देशों में इस्लाम के प्रचार का रास्ता खोलें जिनमें धार्मिक आज़ादी नहीं थी जिस के कारण इस्लाम के प्रचार का दरवाज़ा बन्द था और लोगों को इस्लाम स्वीकार करने से ज़बरदस्ती रोका जाता था। लेकिन सहाबा ने कभी भी किसी व्यक्ति को ज़बरदस्ती मुसलमान नहीं बनाया। अत: क्या यह आश्चर्य की बात नहीं कि महदी की पैदाइश का उद्देश्य ही यह समझा जाता है कि वह तमाम् दुनिया को ज़बरदस्ती मुसलमान बनाएगा। क्या ऐसे महदी का आना इस्लाम के लिए गौरव का कारण हो सकता है ? नहीं, कदापि नहीं, बल्कि गौरव का स्थान तो यह है कि इस्लाम को प्रमाणों के दम पर और आध्यात्मिक आकर्षण के द्वारा तमाम् धर्मों पर विजयी साबित किया जाए। इस्लाम की विशेषताएँ लोगों के सामने रखी जाएँ और यह बताया जाए कि इस्लाम ही वह ज़िन्दा मज़हब है जो अपनी सच्चाई के इतने प्रमाण रखता है कि यदि ख़ुदा का डर दिल में रखकर इस पर ग़ौर किया जाए तो सम्भव ही नहीं कि इन्सान पर उसकी सच्चाई छुपी रहे।

उपरोक्त प्रमाणों से यह बात सूर्य समान स्पष्ट हो जाती है कि इस्लामी शिक्षा की दृष्टि से कदापि कोई ऐसा महदी नहीं आएगा जो आते ही लड़ना शुरू कर दे और लोगों को ज़बरदस्ती मुसलमान बनाता फिरे। ध्यान देने का स्थान है कि क्या महदी इस्लामी शिक्षा का पाबन्द नहीं होगा ? क्या उसके ज़माने में इस्लामी शरीअत निरस्त हो जाएगी ? जब ऐसा नहीं है और महदी को इस्लाम के सेवक के रूप में ही प्रकट होना है तो फिर इस्लाम की इस स्पष्ट शिक्षा के बावजूद कि धर्म के विषय में बलप्रयोग उचित नहीं, वह काफिरों के खिलाफ़ क्यों तलवार उठाएगा ? यदि वह ऐसा करेगा तो नि:सन्देह वह सुधारक नहीं होगा। बल्कि इस्लाम की शिक्षा को बिगाड़ने वाला ठहरेगा और फ़साद को दूर करने के बजाए स्वयं फसाद का कारण बन जाएगा।

फिर यह बात भी ध्यान देने योग्य है कि जब यह बात साबित हो चुकी कि मसीह और महदी एक ही व्यक्ति के दो नाम हैं। तो महदी

किस तरह तलवार उठा सकता है ? जबकि मसीह के बारे में स्पष्ट शब्दों में आता है कि वह धार्मिक लड़ाइयों को स्थगित कर देगा। जैसा कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया है कि :-

وَالَّذِیْ نَفْسِیْ بِیَدِہٖ لَیُوْشِکَنَّ اَنْ یَّنْزِلَ فِیْکُمْ اِبْنُ مَرْیَمَ حَکَمًا عَدْلًا فَیَکْسِرُ الصَّلِیْبَ وَیَقْتُلُ الْخِنْزِیْرَ وَیَضَعُ الْجِزْیَۃَ۔

(بخاری مجتبائی مولوی احمد علی صاحب والی جلد ۲ باب نزول عیسیٰ بن مریم و نیز فتح الباری جلد ۶)

अर्थात मुझे उस हस्ती की क़सम है जिसके हाथ में मेरी जान है कि वह समय आने वाला है कि जब तुम में इब्नि मरियम हकम और अदल के तौर पर नाज़िल होगा। वह सलीब को तोड़ेगा और सूअर को क़त्ल करेगा और लड़ाई स्थगित कर देगा।

देखो इस हदीस ने कितनी स्पष्टता के साथ बता दिया है कि लोगों को ज़बरदस्ती मुसलमान बनाना तो दूर की बात महदी तो लड़ाइयों के सिलसिला को बन्द करने वाला होगा। मगर हमारे मुसलमान भाई फिर भी क़ुर्आन शरीफ की शिक्षा के विरुद्ध जंगजू महदी की राह देख रहे हैं।

इन समस्त प्रमाणों से स्पष्ट है कि कोई जंगजू महदी नहीं आएगा। बल्कि यदि कोई आएगा तो शान्ति और सुलह से काम करने वाला आएगा।

लेकिन यहाँ एक भ्रम पैदा होता है और वह यह है कि जब इस्लाम, धर्म के विषय में बल प्रयोग की शिक्षा नहीं देता और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने किसी ख़ूनी महदी की ख़बर नहीं दी तो मुसलमानों में यह धारणा कहाँ से पैदा हो गई ? तो इसका उत्तर यह है कि दुर्भाग्यवश लोगों का यह तरीक़ा है कि वे भविष्यवाणियों के बाह्य शब्दों पर जम जाते हैं और उनके रहस्य और मूल बिन्दु को छोड़ देते हैं। उदाहरण के तौर पर पाठकों से यह बात छिपी नहीं है कि बनी इस्राईल क़ौम से यह वादा था कि जब उन में मसीह प्रकट होगा

तो वह एक बड़े यहूदी साम्राज्य की नींव डालेगा (ज़करिया 9/10) लेकिन जब मसीह नासरी ने मसीह होने का दावा किया तो यहूदियों ने देखा कि वह एक कमज़ोर और बेसहारा आदमी है जिसने किसी साम्राज्य की नींव नहीं डाली। बल्कि शान्ति के साथ रोमी सरकार के अन्तर्गत अपनी पैग़म्बरी का प्रचार करने लग गया। ज़रा यहूदियों की हताशा का अनुमान लगाओ। वे एक ऐसे व्यक्ति की प्रतीक्षा कर रहे थे जिसने उन्हें बादशाहत के सिंहासन पर बिठाना था और एक बड़े यहूदी साम्राज्य का संस्थापक होना था। लेकिन जब मसीह आया तो उसने क्या किया ? स्वयं उसी के शब्दों में सुनिए :-

लोमड़ियों के लिए गुफाएँ और हवा के पक्षियों के लिए बसेरे हैं पर आदम के बेटे के लिए जगह नहीं जहाँ अपना सिर धरे। (मती बाब 8 आयत 20)

ठीक उसी तरह मुसलमान एक जंगजू महदी की प्रतीक्षा कर रहे हैं जो क़ाफ़िरों को कत्ल करेगा और एक बड़े इस्लामी साम्राज्य की नींव डालेगा। लेकिन जिस तरह बनी इस्राईल की सारी आशाओं पर पानी फिर गया उसी तरह इनके साथ भी होगा क्योंकि ख़ुदा और रसूल के वादा के ख़िलाफ़ आशाएँ रखकर कोई व्यक्ति मनोकामना को नहीं पहुँच सकता।

वस्तुत: बात यह है कि भविष्य में आने वाले सुधारक के आध्यात्मिक मर्तबा और उसकी तरक़्क़ियों और लोगों के विरोध का पूरा नक्शा लोगों के दिलों पर ज़माने के लिए कभी-कभी यौद्धिक परिषाओं को रूपक के तौर पर प्रयोग किया जाता है। परन्तु लोग अज्ञानता के कारण ऐसे वाक्यों के बाह्य अर्थों पर जम जाते हैं और फिर उनके अनुसार दावेदार को नापते हैं तब वे और भी अन्धे हो जाते हैं और वे एक ज़ाहिरी बादशाह के प्रकटन में अपना लाभ देखते हैं। एक शान्ति से काम करने वाला सुधारक क्या बना सकता ? वह न तो

उनकी आर्थिक दशा ठीक कर सकता है और न ही राजनैतिक दृष्टि से उनकी हालत संवार सकता है। परन्तु एक जंगजू नबी बड़ी आसानी से उनकी खाली जेबों को भर सकता है और उनको देश में बादशाह बना सकता है इसलिए उनको क्या ज़रूरत पड़ी है कि उन हरे भरे बागों से निकलकर कंटीले रास्तों में क़दम रखें। लेकिन वे इतना नहीं सोचते कि अल्लाह तआला की तरफ से आने वाले सुधारकों का असल काम आध्यात्मिक सुधार है। इसलिए अगर वे आते ही तलवार उठा लें तो उनके पैदा होने का उद्देश्य ही समाप्त हो जाता है।

अत: महदी माहूद के सम्बन्ध में कुछ हदीसों में पारिभाषिक तौर पर यौद्धिक शब्दों का प्रयोग किया जाना इस बात को प्रकट नहीं करता कि महदी एक दुनियावी जरनैल की भाँति प्रकट होगा। बल्कि उनसे केवल यह तात्पर्य है कि महदी का प्रादुर्भाव सोच से बढ़कर चमत्कारों के साथ होगा और वह इस्लाम की सच्चाई में ऐसे अकाट्य तर्क प्रस्तुत करेगा जिनसे विरोधियों पर मानों मौत आ जाएगी इसके अतिरिक्त इनका कोई दूसरा अर्थ नहीं, चाहो तो मानो।[1]

अब हम उन दो ग़लतफहमियों को दूर कर चुके हैं जो हज़रत मिर्ज़ा साहिब के दावा के समझने में जन साधारण के लिए एक खतरनाक ठोकर बन रही हैं। अर्थात हम ख़ुदा के फ़ज़्ल से यह साबित कर चुके हैं कि हज़रत मसीह नासरी सशरीर आसमान पर नहीं गए, बल्कि धरती पर ही रहे और धरती पर ही मरे।[2] और वह

1. महदी के बारे में विस्तारपूर्वक जानकारी प्राप्त करने के लिए रीवियू आफ रिलीजन्ज़ क़ादियान जिल्द 7, में मौलवी शेर अली साहिब के निरन्तर लेख देखिए।
2. इस जगह यह याद रहे कि हज़रत मिर्ज़ा साहिब ने ऐतिहासिक दृष्टि से भी यह साबित कर दिया है कि मसीह नासरी सूली पर नहीं मरे बल्कि सूली की घटना से बचकर हिन्दुस्तान की ओर हिजरत करके आ गए थे और अन्तत: कश्मीर में मृत्यु पाई। जहाँ श्रीनगर मुहल्ला ख़ानयार में अब तक उनकी कब्र सुरक्षित है और इस विनीत लेखक ने भी **-जारी**

मसीह जिसके आने का वादा दिया गया था वह इसी उम्मत में से है। अर्थात आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के अनुयायियों में से एक अनुयायी है कोई बाहरी व्यक्ति नहीं है। दूसरे हम यह साबित कर चुके हैं कि मसीह मौऊद के ज़माने में कोई अलग महदी मौऊद नहीं होगा बल्कि मसीह और महदी एक ही व्यक्ति है। केवल भिन्न-भिन्न हैसियतों से दो भिन्न-भिन्न नाम दे दिए गए हैं। इसके अतिरिक्त हमने यह बात भी अच्छी तरह साबित कर दी है कि यह एक ग़लत सोच है कि महदी मौऊद काफ़िरों से तलवार से लड़ाई करेगा और दुनिया में अकारण खून की नहरें बहाएगा। बल्कि सच यह है कि उसकी तलवार तर्कों (प्रमाणों) की तलवार होगी और उसका युद्ध रूहानी युद्ध होगा। वह शान्ति के साथ काम करेगा और प्रमाणों के बल पर इस्लाम को विजयी करेगा।

इन बातों को समाप्त करने के बाद अब हम असल बहस को प्रारंभ करते हैं और वह यह है कि हज़रत मिर्ज़ा साहिब का जो यह दावा है कि मैं मसीह मौऊद और महदी माहूद हूँ यह दावा कहाँ तक सही और ठीक साबित होता है। (महान ख़ुदा की सहायता के बिना मुझे कोई सामर्थ्य नहीं)

उसे देखा है (देखो हज़रत मिर्ज़ा साहिब की रचना मसीह हिन्दुस्तान में, राज़-ए-हक़ीक़त और हज़रत मुफ़्ती मुहम्मद सादिक़ साहिब की रचना ''क़ब्र-ए-मसीह''।

मसीह व महदी की निशानियाँ

पहले हम निशानियों का वर्णन करते हैं अर्थात क़ुर्आन और हदीस से मसीह व महदी माहूद से सम्बन्धित जिन निशानियों का पता चलता है उनके अनुसार हज़रत मिर्ज़ा साहिब के दावा को परखते हैं :-

वर्णित निशानियों के बारे में एक ग़लतफ़हमी का निवारण

मसीह मौऊद की निशानियों के बारे में बहुत से वर्णन मिलते हैं। इस विषय में कुछ लोगों को एक बहुत बड़ी ग़लती लगी है। जिसने इस विषय में एक भयानक तूफान पैदा कर दिया है और वह ग़लती यह है कि क़यामत के निकट होने के सम्बन्ध में हदीसों में जो निशानियाँ बयान हुई हैं उन सब को मसीह के आने की निशानियाँ समझ लिया गया है जो एक खुली-खुली ग़लती है। क्योंकि प्रथमत: यह आवश्यक नहीं कि जो निशानियाँ क़यामत या "साअत" की बयान की गई हैं वही मसीह मौऊद की भी निशानियाँ हों। नि:सन्देह स्वयं मसीह मौऊद को "साअत" अर्थात क़यामत की निशानी कहा गया है लेकिन यह कदापि अनिवार्य नहीं कि क़यामत की सब निशानियाँ मसीह मौऊद के ज़माने में ही प्रकट हों। बल्कि सम्भव है कि बिल्कुल क़यामत के निकट प्रकट हों। यद्यपि मसीह मौऊद स्वयं क़यामत की निशानी है लेकिन क़यामत की तमाम निशानियों को मसीह मौऊद के समय में ढूँढना बहुत बड़ी ग़लती है। क्योंकि वे उसकी निशानियाँ नहीं बल्कि सिर्फ क़यामत के निकट समय की निशानियाँ हैं। जिनमें से संभव है कि कुछ क़यामत के बिल्कुल

निकट प्रकट हों।

दूसरे यह कि जहाँ-जहाँ हदीसों में "साअत" या क़यामत का शब्द आया है वहाँ हर जगह कुछ लोग उससे क़यामते कुबरा (अर्थात महाप्रलय) समझने लग जाते हैं। जो एक ख़तरनाक ग़लती है। वास्तविकता यह है कि साअत और क़यामत का शब्द अरबी भाषा में क़यामते कुबरा (महाप्रलय) के लिए विशिष्ट नहीं है। बल्कि यह शब्द हर बड़े परिवर्तन के लिए भी प्रयोग किया जाता है। इस दृष्टि से ख़िलाफ़ते राशिदा के ज़माने के युद्ध भी साअत (प्रलय) थे। हज़रत इमाम हुसैन की शहादत भी एक साअत थी। बनू उमैया की बर्बादी भी एक साअत थी। बग़दाद और बनू अब्बास की तबाही भी एक क़यामत और साअत थी। स्पेन से मुसलमानों को निकालना भी एक साअत थी और इसी तरह इस्लामी इतिहास के सबसे बड़े-बड़े परिवर्तन और क्रान्तियाँ साअतें हैं और नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की हदीसों में जो साअत की निशानियाँ बताई गई हैं वे सब महाप्रलय के बारे में नहीं हैं बल्कि कुछ इन बीच में होने वाले प्रलयों के बारे में भी हैं। अर्थात कोई हदीस किसी प्रलय के बारे में है तो कोई किसी और प्रलय के बारे में, और कुछ निशानियाँ महाप्रलय के बारे में हैं। यह एक ऐसी स्पष्ट सच्चाई है कि जो व्यक्ति थोड़ी सी भी समझ से काम ले और इस्लाम के इतिहास पर भी ध्यान दे, वह इसका इन्कार नहीं कर सकता। क्योंकि कुछ निशानियाँ इस्लाम के मध्यकाल के प्रलयों में प्रकट होकर इस सच्चाई पर व्यवहारिक रूप से मुहर लगा चुकी हैं। इन परिस्थितियों में हमारा सबसे पहला कर्तव्य यह होना चाहिए कि हम ध्यानपूर्वक उन निशानियों का पता लगाएँ जो मसीह व महदी के ज़माना या अस्तित्व की विशिष्ट निशानियाँ हैं।

मसीह व महदी की दस मोटी-मोटी निशानियाँ

क़ुर्आन शरीफ और हदीसों से मसीह मौऊद व महदी माहूद की जो मोटी-मोटी निशानियाँ साबित होती हैं जिन्हें लगभग हर मुसलमान थोड़ा बहुत जानता है जिनमें से कुछ निम्नलिखित हैं :-

1. मसीह मौऊद का ज़माना ऐसा होगा जिसमें यातायात के साधन बहुत विकसित हो जाएँगे और मानो सारी दुनिया एक देश बन जाएगी। नए-नए प्रकार की सवारियाँ निकल आएँगी और ऊँट की सवारी त्याग दी जाएगी और किताबों पत्रिकाओं अखबारों इत्यादि का प्रकाशन अत्यधिक संख्या में होगा। भौतिक ज्ञानों की उन्नति होगी और कई नए और गुप्त ज्ञान प्रकट हो जाएँगे और नदियों और समुद्रों को फाड़ फाड़कर नहरें बनाई जाएँगी और यातायात के साधनों में असाधारण तरक़्क़ी होगी इत्यादि इत्यादि।

2. वह ज़माना ऐसा होगा कि सलीबी मज़हब (ईसाई धर्म) उसमें बड़े ज़ोरों पर होगा।

3. उस ज़माने में दज्जाल निकलेगा। जिसका उपद्रव दुनिया के सारे अगले और पिछले उपद्रवों से बड़ा होगा।

4. उस ज़माने में याजूज माजूज (तात्पर्य यूरोप और अमेरिका व रूस) अपने पूरे ज़ोर में ज़ाहिर होंगे और संसार के अच्छे-अच्छे भागों पर काबू पा लेंगे और कौमें एक-दूसरे के विरुद्ध उठेंगी।

5. धर्म के लिए वह ज़माना एक बड़े उपद्रव का ज़माना होगा और हर तरफ भौतिकता और नास्तिकता छायी हुई होगी। उस ज़माने में इस्लाम बहुत कमज़ोर हालत में होगा और मुस्लिम उलमा की हालत बहुत शर्मनाक होगी और इस्लाम में बहुत से मतभेद पैदा हो जाएँगे और अक़ीदे बिगड़ जाएँगे और लोगों के कर्म खराब हो जाएँगे और ईमान दुनिया से उठ जाएगा और बाह्य तौर पर भी इस्लाम चारों ओर से दुश्मनों के हमलों से घिरा होगा।

6. मसीह मौऊद के ज़माने में रमज़ान के महीने में निर्धारित तिथियों में चाँद और सूरज दोनों को ग्रहण लगेगा।

7. उसके ज़माने में दाब्बतुल अर्ज़ (अर्थात ज़मीनी कीड़ा तात्पर्य प्लेग) निकलेगा।

8. मसीह मौऊद दमिश्क से पूर्व की ओर एक सफेद मिनार पर उतरेगा।

9. उसका हुलिया यह होगा कि वह गेहुएँ रंग का होगा और उसके बाल सीधे और लम्बे होंगे।

10. मसीह मौऊद सलीब को तोड़ेगा और खिंजीर (सूअर) को क़त्ल करेगा और दज्जाल को मार देगा और इस्लाम को विजयी करेगा और उसके ज़माने में सूरज पश्चिम से चढ़ेगा और मसीह मौऊद तमाम् आन्तरिक एवं बाह्य मतभेदों में हकम व अदल बनकर सच्चा-सच्चा निर्णय करेगा और खोया हुआ ईमान दुनिया में फिर से क़ायम कर देगा और लोगों को बहुत अधिक (रूहानी) धन देगा, परन्तु दुनिया उसके धन को स्वीकार नहीं करेगी। (देखो क़ुरआन मजीद, हदीसें व तफ़्सीरें)

ये वे दस बड़ी-बड़ी निशानियाँ हैं जो मसीह मौऊद व महदी माहूद और उसके ज़माना के बारे में क़ुरआन शरीफ़ और आँहरत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की हदीसों से साबित होती हैं।

अब हम इन दस निशानियों को अलग-अलग सामने रखकर हज़रत मिर्ज़ा साहिब की सच्चाई को परखते हैं ताकि सच और झूठ में अन्तर स्पष्ट होकर सत्याभिलाषी को फैसले की राह मिले।

पहली निशानी:- यह निशानी क़ुरआन शरीफ़ की उन आयतों से पता चलती है जहाँ ख़ुदा तआला फ़रमाता है कि :-

وَإِذَا الْعِشَارُ عُطِّلَتْ۔ (सूरह तकवीर 81:5)

وَإِذَا الْبِحَارُ سُجِّرَتْ۔ (सूरह तकवीर 81:7)

وَإِذَا الصُّحُفُ نُشِرَتْ۔ (सूरह तकवीर 81:11)

وَإِذَا النُّفُوسُ زُوِّجَتْ۔ (सूरह तकवीर 81:8)

अर्थात क़यामत के निकट होने और मसीह मौऊद के पैदा होने की यह निशानी है कि उस ज़माने में ऊँटनियों की सवारी समाप्त हो जाएगी अर्थात नई-नई और अच्छी एवं तेज़ रफ़्तार सवारियाँ निकल आने के कारण ऊँटनियों की सवारी छोड़ दी जाएगी और नदी एवं समुद्र फाड़े जाएँगे अर्थात उनको फाड़-फाड़कर नहरें बनाई जाएँगी और पुस्तकें एवं पत्र पत्रिकाएँ बड़ी संख्या में प्रकाशित होंगी। अर्थात छापाखानों का आविष्कार होकर अखबारों, पत्र-पत्रिकाओं और किताबों के प्रकाशन का काम बहुत फैल जाएगा और भिन्न-भिन्न देशों के लोग आपस में घुल-मिल जाएँगे अर्थात साधनों की इतनी अधिकता होगी कि पुराने ज़मानों की तरह ऐसा नहीं रहेगा कि कौमें अलग-अलग रहें बल्कि मेल-जोल की अधिकता के कारण सारी दुनिया मानो एक ही देश हो जाएगी।

इसके समर्थन में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की एक हदीस भी है, फ़रमाते हैं :-

لیُترکنّ القلاصُ فلا یُسعٰی علیہا۔

(صحیح مسلم جلد 2)

अर्थात ऊँटनियाँ छोड़ दी जाएँगी और उन पर सवारी न की जाएगी।

फिर एक दूसरी जगह क़ुरआन शरीफ़ में अल्लाह तआला फ़रमाता है :-

اَخۡرَجَتِ الۡاَرۡضُ اَثۡقَالَهَا۔

(सूरह अल-ज़िलज़ाल 99:3)

अर्थात आख़िरी ज़माने में ज़मीन अपने तमाम छुपे हुए बोझ निकाल कर बाहर फेंक देगी और भौतिक ज्ञानों की अधिकता होगी।'' इत्यादि इत्यादि।

अब देख लो कि इस ज़माने में यह निशानी कितनी स्पष्टता से पूरी हुई है। नई-नई सवारियाँ जैसे रेल, मोटर, जहाज़, हवाई जहाज़ फिर

डाक तार विभाग, बेतार बर्क़ी एवं टेलीफोन और टेलीविज़न, रेडियो, नहरें और फिर अधिकता के साथ किताबों, पत्रिकाओं तथा अखबारों का प्रकाशन, फिर छापाखानों, टाइप व शार्ट हैन्ड के आविष्कार इत्यादि ने किस तरह सारी दुनियाँ को एक कर रखा है और धर्म के प्रसार के काम को कैसा आसान कर दिया है, और रेल एवं मोटर ने ऊँटनियों इत्यादि को व्यवहारिक दृष्टि से बेकार कर रखा है। अरब के देश में भी रेल पहुँच चुकी है संभव है कि मक्का और मदीना के बीच भी जहाँ तक लम्बी यात्रा का सम्बन्ध है रेल जारी होकर ऊँटनियों से सफर को बिल्कुल समाप्त कर दे जैसा के अधिकतर दूसरी जगहों में उसने कर दिया है। वस्तुत: यह निशानी इस ज़माने में इस स्पष्टता के साथ पूरी हुई है कि किसी बुद्धिमान के निकट किसी प्रकार का कोई सन्देह शेष नहीं रहता। इस पर अल्लाह की बहुत बहुत प्रशंसा इसी तरह इस ज़माने में भौतिक ज्ञानों की भी जो अधिकता है उसका उदाहरण किसी पहले युग में नहीं मिलता।

स्मरण रखना चाहिए कि अवश्य था कि मसीह मौऊद के प्रादुर्भाव के लिए ऐसा ही ज़माना चुना जाता। क्योंकि मसीह मौऊद का ज़माना धर्म के प्रसार व प्रचार का ज़माना है। अत: उसके ज़माने में प्रकाशन के सामानों का उपलब्ध होना बहुत आवश्यक था ताकि वह और उसकी जमाअत सरलतापूर्वक प्रचार-व-प्रसार का कर्तव्य अदा कर सके।

दूसरी निशानी:- मसीह मौऊद के ज़माने की दूसरी पहचान यह बताई गई थी कि उस ज़माने में सलीबी मज़हब का बड़ा ज़ोर होगा, अर्थात ईसाई बड़े ज़ोरों पर होंगे। क़ुरआनी संकेतों के अलावा हदीस शरीफ़ में भी मसीह मौऊद के काम के बारे में स्पष्ट रूप से पाया जाता है कि يكسر الصّليب (देखो बुख़ारी व अन्य हदीस की किताबें) अर्थात ''मसीह मौऊद सलीब को तोड़ देगा।'' जिससे पूरी तरह साबित होता है कि वह ऐसे ज़माने में आएगा कि उस समय सलीबी

मज़हब बड़े ज़ोर में होगा। तभी तो वह उसके मुकाबले में उठकर उसको तोड़ेगा। वर्ना ईसाइयत का वजूद तो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के ज़माने में भी था मगर आप स.अ.व. के बारे में कसर-ए-सलीब का शब्द नहीं आया। अत: सिद्ध हुआ कि सलीब के तोड़ने से अभिप्राय यह है कि पहले सलीबी मज़हब ज़ोरों पर हो और फिर कोई व्यक्ति उसका ज़ोर तोड़कर उसे इस्लाम के मुकाबले पर पराजित कर दे। अब देख लो कि इस ज़माने में सलीबी मज़हब का कितना ज़ोर है यहाँ तक कि चारों ओर उसी मज़हब के अनुयायी दिखाई देते हैं और उन्होंने सारी दुनिया में अपने मज़हब के प्रचार व प्रसार का एक बड़ा जाल फैला रखा है। अत: सिद्ध हुआ कि यही वह ज़माना है जिसमें मसीह मौऊद को अवतरित होना चाहिए। कस्रे सलीब की व्याख्या के सन्दर्भ में हम आगे चलकर बहस करेंगे। इस जगह केवल यह बताना उद्देश्य है कि मसीह मौऊद के ज़माने की यह एक निशानी बयान की गई थी कि उस समय ईसाई मज़हब का ज़ोर होगा। अत: यह ज़माना इस निशानी को पूरी तरह प्रकट कर चुका है और यही तात्पर्य था।

तीसरी निशानी:- मसीह मौऊद की तीसरी निशानी यह बयान की गई है कि उस ज़माने में दज्जाल का खुरूज होगा। हदीस शरीफ में लिखा है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने सहाबा रज़ि. को संबोधित करके फ़रमाया कि :-

مامن نبيٍّ الاقد انذر اُمّته الاَعُور الكذاب اَلَا اِنّه اعُور و انّ
ربّكم ليس باعُور۔ مكتوبٌ بين عينيه كٓ۔ فٓ۔ رٓ۔ وفِی روایة
وانّه يجيئُ معه بمثل الجنة والنّار فالّتى يقول انّها الجنّة هى
النّار۔ وَفِی رواية انّ الدّجّال يخرج وانّ معه ماءً ونارًا فامّا
الّذى يراه الناسُ ماءً فنار تحرق واما الّذى يراهُ النّاس نارًا
فماءٌ باردٌ وعذبٌ۔ وانّ الدّجّال ممسوحُ العين عليها ظفرةٌ
غليظةٌ مكتوبٌ بين عينيه كافرٌ يقرَأهُ كُلُّ مؤمن كاتب وغير

کاتب۔ وفی روایۃٍ انّ الدّجال اعور العین الیمنٰی فمن ادرکہ منکم فلیقرأ علیہ فواتح سورۃ الکھف فانھا جوارکم من فتنتہ۔ وفی روایۃٍ ویامُرُ السّماءَ فَتَمْطُرُ وَیأمر الارض فتنبُتُ ویمرّ بالخربۃ فیقول لھا اخرجی کنوزک فتتبعہ کنوزھا۔ وفی روایۃٍ یقول الدّجّال ارأیتم ان قتلتُ ھذا ثم احییتہٗ ھل تشکون فی الامر فیقولون لافیقتلہ ثم یحییہٖ وَفی روایۃٍ ان معہ جبل خبزٍ ونھرماءٍ۔ وفی روایۃٍ یخرج الدّجّال علٰی حمارٍ اقمَرَ ما بین اُذنیہِ سبعون باعاً (मिशकात किताबुल फितन)

अर्थात कोई नबी ऐसा नहीं गुज़रा जिसने अपनी उम्मत को दज्जाल (एक आँख वाले अति झूठे) से न डराया हो। सचेत और होशियार होकर सुन लो कि वह एक आँख वाला है मगर तुम्हारा रब्ब एक आँख वाला नहीं। उस काना दज्जाल की दोनों आँखों के मध्य ''क फ र'' लिखा होगा और एक रिवायत में है कि वह अपने साथ स्वर्ग और नर्क की मिसाल लाएगा। मगर जिस चीज़ को स्वर्ग कहेगा वह वस्तुत: नर्क होगी और एक रिवायत में है कि दज्जाल निकलेगा और उसके साथ पानी और आग होंगे। परन्तु वह चीज़ जो लोगों को पानी दिखाई देगी वह वस्तुत: जलाने वाली आग होगी और वह चीज़ जिसे लोग आग समझेंगे वह ठण्डा और मीठा पानी होगा और दज्जाल की एक आँख बैठी हुई होगी और उस पर खून की एक बड़ी गाँठ सी होगी और उसकी आँखों के मध्य काफिर लिख हुआ होगा जिसे हर मोमिन पढ़ सकेगा चाहे व लिखा पढ़ा हो या न हो और एक रिवायत में है कि दज्जाल दायीं आँख से काना होगा। अत: जब तुम में से कोई उसे पाए तो उस पर सूर: कहफ की प्रारम्भिक आयतें पढ़ें, क्योंकि सूर: कहफ़ की प्रारम्भिक आयतें उसके फितने से तुम्हें बचाने वाली होंगी और एक रिवायत में है कि दज्जाल आसमान (अर्थात बादल) को हुक्म देगा कि पानी बरसा तो वह बरसाएगा और धरती को हुक्म देगा कि उगा तो वह उगाएगी और वीरान जगह पर से गुज़रेगा और उसे हुक्म देगा कि

अपने खज़ाने बाहर निकाल, तो उसके खज़ाने बाहर निकलकर उसके पीछे हो लेंगे और एक रिवायत में है कि दज्जाल लोगों से कहेगा कि देखो यदि मैं इस व्यक्ति को क़त्ल कर दूँ और फिर जीवित कर दूँ तो क्या तुम मेरे काम में शक करोगे ? लोग कहेंगे नहीं, फिर वह उसे मार देगा और फिर दोबारा ज़िन्दा कर देगा और एक रिवायत में है कि उसके साथ रोटियों का एक बड़ा पहाड़ होगा और पानी की एक बड़ी नहर होगी। और एक रिवायत में है कि दज्जाल एक चमकदार गधे पर ज़ाहिर होगा और वह गधा ऐसा होगा कि उसके दो कानें के बीच सत्तर हाथ की दूरी होगी।''

यह दज्जाल का विवरण है जो मैंने हदीस मिश्कात के विभिन्न वर्णनों से संक्षिप्त रूप से एकत्र करके एक जगह लिख दिया है। अब हमको देखना यह है कि यह दज्जाल कौन है और वह प्रकट हो गया है कि नहीं ?

सर्वप्रथम हमें दज्जाल के शब्द पर विचार करना चाहिए ताकि ज्ञात हो कि अरबी भाषा में इस शब्द का क्या अर्थ है।

अत: जानना चाहिए कि अरबी भाषा में दज्जाल का शब्द छ: अर्थों में व्याप्त है।

1. दज्जाल का अर्थ कज़्ज़ाब अर्थात ''बहुत झूठा'' है।

2. दज्जाल का अर्थ ढक लेने वाली चीज़ के हैं। जैसा कि अरबी में कहते हैं कि ''दज्लुल बईर'' अर्थात उसने ऊँट के शरीर पर मेंहदी को इस तरह मला कि कोई जगह खाली न रही। अत: ताजुल उरूस शब्दकोष में लिखा है कि दज्जाल इसी रूट से निकला है। क्योंकि वह ज़मीन को इस तरह ढक लेगा जिस तरह मेंहदी सारे शरीर को ढक लेती है।

3. दज्जाल का अर्थ धरती पर भ्रमण करने वाला भी है। अत: कहते हैं कि دجل الرجل اذا قطع نواحِیَ الارض سیراً۔ अर्थात ''दजलुर्रजुल'' के शब्द उस समय प्रयोग करते हैं जब किसी ने सारी धरती का भ्रमण

कर लिया हो।

4. दज्जाल का अर्थ ''बहुत धनवान और खज़ानों वाला'' भी है। क्योंकि दज्जाल सोने को भी कहते हैं।

5. दज्जाल उस एक बड़े गिरोह को भी कहते हैं जो अपने लोगों की बहुतात से सम्पूर्ण धरती को ढक ले।

6. दज्जाल उस गिरोह को भी कहते हैं जो व्यापार के मालों को उठाए फिरे। (देखो ताजुल उरूस इत्यादि)

ये सारे अर्थ शब्दकोष की अत्यन्त प्रमाणित और मशहूर किताब ताजुल उरूस में लिखे हैं। इन अर्थों की दृष्टि से दज्जाल के अर्थ यह हुए :-

''एक बहुसंख्य क़ौम जिसका व्यवसाय-व्यापार हो और अपने व्यापार का सामान दुनिया में उठाए फिरे और जो बहुत मालदार और खज़ानों वाली हो और सारे संसार पर भ्रमण और यात्रा कर रही हो और हर जगह पहुँची हुई हो और मानो कोई जगह उससे बची न हो और धार्मिक दृष्टि से वह एक बहुत झूठी आस्था पर क़ायम हो।''

अब इस विवरण के साथ उस विवरण को मिलाओ जो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की हदीस में बयान हुआ है। जिसका सारांश ऊपर उल्लेख कर दिया गया है। तो बेधड़क प्रकृति यह निर्णय करती है कि दज्जाल से पश्चिमी देशों की ईसाई कौमें तात्पर्य हैं। जो इस ज़माने में सारे विश्व में छा रही हैं और जिनमें उपरोक्त सारे लक्षण स्पष्ट रूप से पाए जाते हैं। उनका एक आँख का होना, उनका भौतिकता में पूर्णरूप से डूब जाना है जिसने उनकी धर्म (आध्यात्मिकता) की आँख को बन्द कर रखा है। हाँ भौतिकता की आँख खूब खुली और चमकदार है। उनकी आँखों के मध्य काफिर का शब्द लिखा होने से तात्पर्य उनका मसीह के ख़ुदा मानने का ख़ुला-ख़ुला झूठा अक़ीदा है। जिसे हर सच्चा मोमिन चाहे व पढ़ा लिखा हो या अनपढ़ जान सकता है और उनका धरती और आसमान में कब्ज़ा करना और ख़ज़ाने

निकालना और ज़िन्दा करना और मारने इत्यादि से उनके नए-नए ज्ञान और विज्ञान इत्यादि की शक्तियों एवं राजनैतिक प्रभुत्व की ओर रुपक के तौर पर इशारा है। अन्यथा वास्तविक रूप से तो ये सब शक्तियाँ अल्लाह के हाथ में हैं और उनको अल्लाह के अतिरिक्त किसी दूसरे से सम्बन्धित करना कुफ्र है। दज्जाल के साथ स्वर्ग और नर्क के होने से यह तात्पर्य है कि जो व्यक्ति उनके साथ हो जाता है और उनकी बात मानता है और उनके धर्म को स्वीकार करता है वह ज़ाहिरी तौर पर एक स्वर्ग में दाखिल हो जाता है। जबकि वास्तव में वह नर्क होता है। और जो व्यक्ति उनके बुरे विचारों से अलग रहता है उसको ज़ाहिरी तौर पर एक नर्क की तरह कष्ट सहन करना पड़ता है जबकि वस्तुत: वह स्वर्ग होता है और उनके साथ रोटियों के पहाड़ और पानी की नहर का होना तो एक खुली-खुली चीज़ है जिसके व्याख्या की आवश्यकता नहीं, और दज्जाल का गधा जिसके दो कानों के मध्य की दूरी सत्तर गज़ है, से तात्पर्य असली गधा नहीं बल्कि रेल है जो पुराने ज़माने के सवारी वाले गधों की क़ायम मुक़ाम है और गधे के कानों से तात्पर्य ड्राईवर और गार्ड हैं जो रेल के दोनों किनारों पर तैनात होते हैं और कानों की बीच की दूरी से मानो रेल की लम्बाई तात्पर्य है जो औसतन सत्तर हाथ की हुआ करती है। अब देखो यह सारी बातें किस तरह पश्चिमी क़ौमों में पाई जाती हैं और यह जो कहा गया है कि दज्जाल आख़िरी ज़माने में निकलेगा तो इससे यह तात्पर्य है कि यद्यपि वह पहले से मौजूद होगा जैसा कि कई हदीसों में भी संकेत मिलता है। परन्तु पहले वह मानो अपने देश तक तक ही सीमित होगा। लेकिन क़यामत के निकट वह पूरे ज़ोर के साथ बाहर निकलेगा और संसार पर छा जाएगा। अत: ठीक उसी तरह हुआ कि पश्चिमी क़ौमें पहले अपने देश में सोई पड़ी थीं परन्तु अब जाग कर पूरे विश्व में छा गई हैं।

यह कहना कि दज्जाल को तो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने एक अकेले व्यक्ति के रूप में देखा था फिर वह एक

जमाअत के रूप में किस तरह माना जा सकता है। यह एक व्यर्थ भ्रम है क्योंकि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने ये दृश्य कश्फ और स्वप्न की स्थिति में देखे थे। जैसा कि हदीस बुखारी के शब्द :-

بینما انا نائمٌ اطوف بالکعبۃِ۔

(بخاری جلد دوم طبع مصری صفحہ171)

अर्थात ''मैंने सोते हुए स्वप्न में काबा शरीफ का तवाफ़ (परिक्रमा) करते हुए देखा।''

से स्पष्ट है, और स्पष्ट है कि स्वप्न सामान्यतया स्पष्टीकरण योग्य होता है। उसमें कई बार एक व्यक्ति दिखाया जाता है परन्तु तात्पर्य एक समूह होता है। उदाहरण के तौर पर सूर: यूसुफ में उल्लेख है कि मिश्र के अज़ीज़ ने सात वर्षीय सूखे के बारे में सात दुबली गायें देखीं। जिसका स्वप्न फल जैसा कि हज़रत यूसुफ अलैहि. ने स्वयं बयान किया है जो यह था कि एक गाय एक साल के तमाम् चौपायों बल्कि समस्त जीवधारियों के क़ायम मुक़ाम थी और उसका दुबला होना सूखे को दर्शाता था, और सात दुबली गायों का होना सात वर्ष तक के सूखे को दर्शाता था। मानो एक गाय तमाम् पशुओं के क़ायममुक़ाम के तौर पर दिखाई गई। इसी तरह आँहज़त सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को दज्जाल का दृश्य एक आदमी के रूप में दिखाया गया जो स्वप्नों की चित्रात्मक भाषा के ठीक अनुकूल है। बहर हाल हमारे इस दावे के प्रमाण, कि दज्जाल से तात्पर्य एक अकेले व्यक्ति नहीं, बल्कि एक बहुसंख्य गिरोह अभीष्ट है जो इस ज़माने में मसीही क़ौम की दशा में प्रकट हुआ, यह हैं :-

1. शब्दकोष में दज्जाल एक बड़ी जमाअत को कहते हैं, अत: वह एक अकेले व्यक्ति नहीं हो सकता।

2. जो उपद्रव दज्जाल की ओर मंसूब किए गए हैं और जो शक्तियाँ उसमें बताई गई हैं उनका एक अकेले व्यक्ति में पाया जाना बुद्धि के अनुसार असंभावित बातों में से है।

3. दज्जाल का विवरण जिन शब्दों में बयान किया गया है उस पर ध्यान देने से स्पष्ट ज्ञात होता है कि इस भविष्यवाणी में अलंकारिक तौर पर लाक्षणिक और रूपक शब्दों का समावेश है। अन्यथा दज्जाल में कई ख़ुदाई ताक़तें माननी पड़ती हैं।

4. दज्जाल से सम्बन्धित समस्त लक्षण व्यवहारिक रूप से ईसाई क़ौमों में पाए जाते हैं।

5. दज्जाल का फसाद सबसे बड़ा फ़साद बताया गया है और इधर हम देखते हैं कि ईसाई क़ौमों के भौतिकवाद और फलसफा (दर्शन) ने जो फित्ना आजकल पैदा कर रखा है। ऐसा फित्ना धर्म और ईमान के लिए न पहले कभी हुआ है और न भविष्य में कल्पना की जा सकती और सूर: फ़ातिहा के अध्ययन से भी सबसे बड़ा फ़ित्ना ईसाइयत का ही फित्ना साबित होता है।

6. आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने इब्नि सय्याद के सम्बन्ध में जो मदीना का एक यहूदी लड़का था और बाद में मुसलमान हो गया, दज्जाल होने का सन्देह किया था, बल्कि हज़रत उमर रज़ि. ने तो आप स.अ.व. की इस बात पर आप स.अ.व. के सामने क़सम खाई थी कि यही दज्जाल है और आप स.अ.व. ने उसको रद्द नहीं किया। (देखें मिश्कात बाब क़िस्सा इब्नि सय्याद)

हालाँकि इब्नि सय्याद में दज्जाल के सम्बन्ध में वर्णित लक्षणों में से बहुत से बिल्कुल दिखाई नहीं देते थे। जिससे पूर्णत: सिद्ध होता है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम और सहाबा किराम भी इस भविष्यवाणी को लाक्षणिक रूप में समझते थे और सारे लक्षणों का प्रत्यक्ष एवं भौतिक तौर पर पाया जाना कदापि आवश्यक नहीं समझते थे।

7. आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया है कि दज्जाल के फित्ने से बचने के लिए सूर: कहफ़ की प्रारम्भिक आयतें पढ़नी चाहिए। (देखो मिश्कात)। अत: अब हम उक्त सूर: की

प्रारम्भिक आयतों पर नज़र डालते हैं तो वहाँ ईसाइयों के ग़लत विचारों के खण्डन के अतिरिक्त दूसरा कोई वर्णन नहीं पाते। अत: सूर: कहफ की प्रारम्भिक आयतें निम्नलिखित हैं :-

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ الَّذِیۡۤ اَنۡزَلَ عَلٰی عَبۡدِہِ الۡکِتٰبَ وَلَمۡ یَجۡعَلۡ لَّہٗ عِوَجًا ۔ قَیِّمًا لِّیُنۡذِرَ بَاۡسًا شَدِیۡدًا مِّنۡ لَّدُنۡہُ وَیُبَشِّرَ الۡمُؤۡمِنِیۡنَ الَّذِیۡنَ یَعۡمَلُوۡنَ الصّٰلِحٰتِ اَنَّ لَہُمۡ اَجۡرًا حَسَنًا ۔ مَّاکِثِیۡنَ فِیۡہِ اَبَدًا ۔ وَّیُنۡذِرَ الَّذِیۡنَ قَالُوا اتَّخَذَ اللّٰہُ وَلَدًا ۔ مَا لَہُمۡ بِہٖ مِنۡ عِلۡمٍ وَّلَا لِاٰبَآئِہِمۡ ؕ کَبُرَتۡ کَلِمَۃً تَخۡرُجُ مِنۡ اَفۡوَاہِہِمۡ ؕ اِنۡ یَّقُوۡلُوۡنَ اِلَّا کَذِبًا ۔ فَلَعَلَّکَ بَاخِعٌ نَّفۡسَکَ عَلٰۤی اٰثَارِہِمۡ اِنۡ لَّمۡ یُؤۡمِنُوۡا بِہٰذَا الۡحَدِیۡثِ اَسَفًا ۔ اِنَّا جَعَلۡنَا مَا عَلَی الۡاَرۡضِ زِیۡنَۃً لَّہَا لِنَبۡلُوَہُمۡ اَیُّہُمۡ اَحۡسَنُ عَمَلًا ۔ وَاِنَّا لَجٰعِلُوۡنَ مَا عَلَیۡہَا صَعِیۡدًا جُرُزًا ۔ (सूरह अल-कहफ़ 18:2-9)

अर्थात ''ख़ुदा ने अपने रसूल पर एक किताब उतारी है... यह किताब उन लोगों को डराने और सचेत करने के लिए उतरी है जो ख़ुदा का एक बेटा मानते हैं। यह बहुत बड़े फित्ना की बात और सरासर झूठ है।'' इत्यादि इत्यादि।

अब इससे बढ़कर इस बात का क्या सबूत होगा कि दज्जाल से तात्पर्य मसीही क़ौमें हैं जिन्होंने इस ज़माने में विशेष तौर पर ज़ोर पकड़ा है और सारी दुनिया पर छा गई हैं और इस दज्जाल की धोखेबाज़ी इनका भौतिकवाद और दर्शन और झूठे अक़ीदे हैं। जिसकी आँखें हो देखे। हज़रत मिर्ज़ा साहिब ने अपने विरोधी मौलवियों को सम्बोधित करके एक जगह क्या खूब लिखा है कि नादानों! तुम दज्जाल को दुनिया का एक अनोखा व्यक्ति समझकर उसकी प्रतीक्षा कर रहे हो। मगर यहाँ तुम्हारी आँखों के सामने वे भयानक फित्ने और उपद्रव प्रकट हो रहे हैं कि तुम्हारे काल्पनिक दज्जाल के बाप को भी याद न होंगे। अत: समझो और सोचो।

8. मुस्लिम की एक हदीस में लिखा है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो

अलैहि व सल्लम के तमीमदारी नामक एक सहाबी ने कश्फ या स्वप्न की स्थिति में दज्जाल को गिरजे में बँधा हुआ देखा था और उसने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को यह बात भी सुनाई थी। फिर आप स.अ.व. ने यह बात लोगों को भी सुनवाई थी।

(मुस्लिम जिल्द 2, बाब खुरूज दज्जाल)

अत: अब देख लो कि गिरजे से निकलने वाली कौन सी क़ौम है।

चौथी निशानी:- चौथी निशानी यह है कि याजूज माजूज अपनी पूरी ताक़त से ज़ाहिर होंगे और दुनिया के अधिकतर और अच्छे-अच्छे भागों पर अपना कब्ज़ा कर लेंगे और क़ौमें एक दूसरे के ख़िलाफ़ उठेंगी। अत: क़ुरआन शरीफ में लिखा है कि :-

حَتّٰٓى إِذَا فُتِحَتْ يَأْجُوجُ وَمَأْجُوجُ وَهُم مِّن كُلِّ حَدَبٍ يَنسِلُونَ۔

(सूरह अल-अम्बिया 21:97)

फिर एक दूसरी जगह लिखा है कि :-

وَتَرَكْنَا بَعْضَهُمْ يَوْمَئِذٍ يَمُوجُ فِي بَعْضٍ وَنُفِخَ فِي الصُّورِ فَجَمَعْنَاهُمْ جَمْعًا۔

(सूरह अल-कहफ़ 18:100)

अर्थात ''जब याजूज माजूज खोले जाएँगे और वे हर ऊँची जगह से दौड़ते हुए आएँगे और क़ौमें एक दूसरे के खिलाफ़ उठेंगी और उस समय एक सुर (बिगुल) फूँका जाएगा जो उन सबको एकत्र कर लेगा।''

इसी तरह हदीस में लिखा है :-

يبعث الله ياجوج و ماجوج وَهُمْ مِنْ كُلِّ حَدَبٍ يَنسِلُونَ۔

(मिशकात)

अर्थात ''आख़िरी ज़माने में अल्लाह तआला याजूज माजूज को इस दशा में निकालेगा कि वे हर ऊँची जगह से दौड़ते फिरेंगे।''

अब जानना चाहिए कि याजूज और माजूज से अंग्रेज़ और रूस तात्पर्य हैं जैसा कि बाइबिल में भी विस्तारपूर्वक इनका उल्लेख पाया जाता है (देखो किताब हिज़क़ील व मुकाशफ़ा) और याजूज माजूज के

प्रभावशाली लक्षण भी इसी ओर संकेत करते हैं और अंग्रेज़ों के साथ उत्तरी अमेरिका के लोग भी शामिल हैं क्योंकि वे वस्तुत: उन्हीं का हिस्सा हैं। पहले यह क़ौमें कमज़ोर हालत में थीं। फिर ख़ुदा ने इनको तरक़्क़ी दी और इन्होंने दुनिया के अधिकतर हिस्सा को घेर लिया और बहुत ताक़तवर हो गये और इनकी यह सारी तरक़्क़ी मौजूदा ज़माने में हुई है पहले यह स्थिति न थी और इनका और दूसरी क़ौमों का एक-दूसरे के खिलाफ़ खड़े होना एक खुली-खुली बात है जिसकी व्याख्या की आवश्यकता नहीं और सुर (बिगुल) फूँकने से तात्पर्य मसीह मौऊद का प्रादुर्भाव है क्योंकि ख़ुदा के पैग़म्बर भी एक सुर अर्थात बिगुल की तरह होते हैं। जिनके द्वारा ख़ुदा दुनिया में अपनी आवाज़ को बुलन्द करता है और फिर उनके द्वारा लोगों को एक केन्द्र बिन्दु पर इकट्ठा कर देता है। अत: अब भी अगर अल्लाह ने चाहा ऐसा ही होगा बल्कि हो रहा है लेकिन जिस तरह पहली रात का चाँद अधिकतर लोगों को दिखाई नहीं देता उसी तरह हर परिवर्तन प्रारम्भ में अधिकतर लोगों को दिखाई नहीं देता। लेकिन धीरे-धीरे बढ़ते हुए चाँद की तरह चमकता जाता है। अत: ध्यानपूर्वक सोचो!

पाँचवीं निशानी:- पाँचवीं निशानी यह बताई गयी थी कि मसीह मौऊद के ज़माने में इस्लाम की हालत बहुत कमज़ोर होगी और अधर्म का बोलबाला होगा। मुसलमान यहूदियों की तरह हो जाएँगे और उनके उलमा (धर्मगुरुओं) की हालत बहुत खराब हो जाएगी और मुसलमानों में बहुत से मतभेद पैदा हो जाएँगे और ईमान दुनिया से उठ जाएगा, इत्यादि इत्यादि। अत: आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम फ़रमाते हैं :-

لَتَتَّبِعُنَّ سُنَنَ مَنْ قَبْلَكُمْ شِبْرًا بِشِبْرٍ وَذِرَاعًا بِذَرَاعٍ حَتّٰى
لَوْدَخَلُوْا جُحْرَضَبٍّ لَتَبِعْتُمُوْهُمْ۔ قِيْلَ يَارَسُوْلَ اللهِ اَلْيَهُوْدُ
وَالنَّصَارٰى۔ قَالَ فَمَنْ وَفِيْ رِوَايَةٍ يَذْهَبُ الصّٰلِحُوْنَ وَيَبْقٰى

حُفَالَةً كَحُفَالَةِ الشَّعِيْرِ اَوِالتَّمْرِ لَايُبَالِيْهِمُ اللهُ بَالَةً ۔ وَفِيْ رِوَايَةٍ قَالَ رَسُوْلُ اللهِ صَلْعَمَ يُوْشِكُ الْاُمَمُ اَنْ تَدَاعٰى عَلَيْكُمْ كَمَا تَدَاعَى الْاٰكِلَةُ اِلٰى قَصْعَتِهَا ۔ قَالَ قَائِلٌ وَمِنْ قِلَّةٍ نَحْنُ يَوْمَئِذٍ قَالَ بَلْ اَنْتُمْ يَوْمَئِذٍ كَثِيْرٌ وَلٰكِنَّكُمْ غُثَاءٌ كَغُثَاءِ السَّيْلِ وَلَيَنْزِعَنَّ اللهُ مِنْ صُدُوْرِ عَدُوِّكُمُ الْمَهَابَةَ مِنْكُمْ وَلَيَقْذِفَنَّ فِيْ قُلُوْبِكُمُ الْوَهْنَ ۔ قَالَ قَائِلٌ يَارَسُوْلَ اللهِ وَمَا الْوَهْنُ ۔ قَالَ حُبُّ الدُّنْيَا وَكَرَاهِيَةُ الْمَوْتِ ۔ وَفِيْ رِوَايَةٍ قَالَ يَكُوْنُ بَعْدِىْ اَئِمَّةٌ لَّا يَهْتَدُوْنَ بِهُدَاىَ وَلَا يَسْتَنُّوْنَ بِسُنَّتِىْ وَسَيَقُوْمُ فِيْهِمْ رِجَالٌ قُلُوْبُهُمْ قُلُوْبُ الشَّيٰطِيْنِ فِيْ جُثْمَانِ اِنْسٍ ۔ وَفِيْ رِوَايَةٍ عُلَمَاءُهُمْ شَرٌّ مَنْ تَحْتَ اَدِيْمِ السَّمَاءِ ۔ وَفِيْ رِوَايَةٍ وَيَرْفَعُ الْعِلْمُ وَيَكْثُرُ الْجَهْلُ وَيَكْثُرُ الزِّنَا وَيَكْثُرُ شُرْبُ الْخَمْرِ ۔ وَفِيْ رِوَايَةٍ تَفْتَرِقُ اُمَّتِىْ عَلٰى ثَلَاثٍ وَسَبْعِيْنَ فِرْقَةٍ كُلُّهُمْ فِى النَّارِ اِلَّا وَاحِدَةً وَهِىَ الْجَمَاعَةُ ۔ وَفِيْ رِوَايَةٍ لَوْ كَانَ الْاِيْمَانُ عِنْدَ الثُّرَيَّا لَنَالَهُ رَجُلٌ مِّنْ اَهْلِ فَارِسَ ۔ (مشکوٰۃ کتاب الفتن والشراط الساعۃ وغیرہ)

अर्थात हे मुसलमानो! तुम निश्चय ही अपने से पहले गुज़री हुई क़ौमों के पदचिन्हों पर पूरी तरह चलोगे। यहाँ तक कि यदि कोई पहली क़ौम गोह के बिल में भी दाखिल हुई होगी तो तुम भी ऐसा ही करोगे। सहाबा ने पूछा कि, हे अल्लाह के रसूल! क्या पहली क़ौमों से यहूदी और ईसाई तात्पर्य हैं ? तो आप स.अ.व. ने फ़रमाया वे नहीं तो और कौन ? इसके अतिरिक्त एक हदीस में लिखा है कि सदाचारी लोग गुज़र जाएँगे और केवल भूसा रह जाएगा। जिस तरह जौ या खजूर का भूसा होता है और अल्लाह ऐसे लोगों की बिल्कुल परवाह न करेगा। एक वर्णन में इस तरह है कि :- निकट है कि तुम्हारे विरुद्ध दूसरी क़ौमें एक दूसरे को मदद के लिए बुलाएँ जिस तरह खाने वाला अपने बर्तन की तरफ दूसरों को दावत देता है। अर्थात तुम दूसरों की खुराक

बन जाओगे और वे एक दूसरे को तुम पर दावत देंगे। एक व्यक्ति ने पूछा हे अल्लाह के रसूल! क्या हम उस दिन थोड़े होंगे ? और उस थोड़े होने के कारण हमारा यह हाल होगा ? फ़रमाया नहीं बल्कि उस दिन तुम बड़ी संख्या में होगे, लेकिन उस झाग की तरह होगे जो सैलाब के बाद एक बरसाती नाले के किनारे पर पायी जाती है। अर्थात बिल्कुल रद्दी और लाभहीन हालत में होगे और अल्लाह तुम्हारे दुश्मनों के दिलों से तुम्हारा रौब मिटा देगा और तुम्हारे दिलों में कमज़ोरी डाल देगा। सहाबा ने पूछा कि कमज़ोरी से क्या तात्पर्य है ? तो आप स.अ.व. ने फ़रमाया दुनिया की मुहब्बत और मौत का डर, अर्थात डरपोक होने के कारण नेक कामों से रुक जाना। एक हदीस में यह है कि मेरे बाद एक ज़माने में ऐसे उलमा पैदा होंगे जो मेरी हिदायत से हिदायत प्राप्त न करेंगे और मेरे तरीके पर नहीं चलेंगे और मेरी उम्मत में ऐसे लोग पैदा होंगे जिनके दिल शैतानों के दिल होंगे पर शरीर आदमियों के से होंगे। एक हदीस में है कि मेरी उम्मत के उलमा की यह हालत होगी कि वे आसमान के नीचे सबसे बदतरीन लोग होंगे। एक हदीस में यह है कि ज्ञान उठ जाएगा और अज्ञानता बढ़ जाएगी और व्यभिचार एवं शराबखोरी की अधिकता होगी। एक हदीस में यह है कि मसीह मौऊद के ज़माने में मुसलमानों की हालत ऐसी होगी कि संख्या में तो बहुत होंगे परन्तु दिल टेढ़े होंगे अर्थात न ईमान ठीक होगा न कर्म। एक हदीस में है कि मेरी उम्मत 73 (तिहत्तर) फ़िर्क़ों में बंट जाएगी और सब नर्क की राह पर होंगे सिवाय एक के, और वह जमाअत वाला फ़िर्क़ा होगा। एक हदीस में है कि ईमान दुनिया से उठ जाएगा अगर वह सुरय्या पर भी चला गया अर्थात दुनिया से बिल्कुल समाप्त हो गया तो फिर भी एक फारसी मूल का व्यक्ति उसे वापिस उतार लाएगा।''

यह वह नक्शा है जो सरवरे क़ाइनात सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने अपनी उम्मत के इस आख़िरी गिरोह का खींचा है जिसमें

मसीह मौऊद का पैदा होना मुक़द्दर (निर्णीत) है। अब पाठकगण स्वयं देख लें कि क्या इस ज़माने में मुसलमानों की हालत धार्मिक दृष्टि से इस नक्शे के अनुसार है या नहीं ? हम दावे के साथ कहते हैं कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के बाद कोई ऐसा ज़माना नहीं आया कि जब मुसलमानों की हालत धार्मिक दृष्टि से ऐसी गिरी और खराब हुई हो जो इस ज़माने में है और यह एक ऐसी स्पष्ट बात है जिस पर किसी प्रमाण के प्रस्तुत करने की आवश्यकता नहीं। कर्मों में आलसी होने के अलावा आस्थाओं में भी वह अन्धेर है कि मुसलमानों के 72 (बहत्तर) फ़िर्क़े हो रहे हैं जो एक-दूसरे से अक़ीदों में घोर विरोधी हैं और तो और ख़ुद ख़ुदा तआला की विशेषताओं के बारे में भी बड़ा मतभेद हो रहा है। फिर ईमान का यह हाल है कि 99% (निन्यानवे प्रतिशत) मुसलमान ऐसे हैं जिनके दिलों से ईमान पूर्ण रूप से उठ चुका है।

वे मुँह से तो कहते हैं कि ख़ुदा है पर वस्तुत: दिल में ख़ुदा के इन्कारी हैं और अन्दर ही अन्दर नास्तिकता का शिकार हो चुके हैं। केवल दिखावटी तौर पर मुँह से कहते हैं कि ख़ुदा है लेकिन ज़रा कुरेद कर पूछो तो साफ मालूम होता है कि वे ख़ुदा की हस्ती के बारे में सैकड़ों भ्रमों में फँसे हुए हैं। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के कल्याणकारी अस्तित्व के बारे में भी उनका ईमान किसी ठोस तर्क की चट्टान पर क़ायम नहीं। बल्कि केवल भावनात्मक रंग का है और मौत के बाद ज़िन्दा किए जाना, पुरस्कार एवं दण्ड, फ़रिश्तों का अस्तित्व इत्यादि को तो बिल्कुल ही काल्पनिक ठहरा दिया गया है।

फिर इबादत की वे राहें जिन पर चलने से पहलों ने ख़ुदा की चौखट तक पहुँच हासिल की थी नफरत और हेयदृष्टि से देखी जाती हैं। शिर्क, जिसके ख़िलाफ़ सारा क़ुरआन भरा पड़ा है मुसलमानों की चाल-चलन से खुला-खुला ज़ाहिर हो रहा है। रुपयों से मुहब्बत की जाती है और उस पर पूरा भरोसा किया जाता है। जो केवल ख़ुदा

तआला पर करना चाहिए। कब्रों पर जाकर सज्दे किए जाते हैं। मद्यपान, व्यभिचार, जुआ और हरामख़ोरी अपने चरम पर है। ब्याज जिसके बारे में कहा गया है कि उसे लेने एवं देने वाला ख़ुदा तआला से लड़ाई करने के लिए तैयार हो जाए माँ के दूध की तरह समझा गया है। मुसलमानों की सारी हुकूमतें कमज़ोर होकर खोखली हो चुकी हैं और मसीही हुकूमतें उनको अपना शिकार समझती हैं। दूसरी ओर इस्लाम का अस्तित्व स्वयं बाहरी हमलों का इतना अधिक शिकार हो रहा है कि मानो ऐसे लगता है कि यह आज नहीं या कल नहीं। नबियों के सरदार हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पर अत्यन्त गन्दे आरोप लगाए जाते हैं। आप स.अ.व. की पवित्र धर्म पत्नियों को नाना प्रकार के आरोपों का निशाना बनाया जाता है। और इस्लामी शिक्षा को अत्यन्त घिनावने रूप में प्रस्तुत करके उस पर हँसी उड़ाई जाती है। सलीबी धर्म पूरे ज़ोर पर है और नास्तिकता अपने आपको खूबसूरत शक्ल में प्रस्तुत कर रही है। तात्पर्य यह कि इस्लाम की नैय्या एक ऐसे भयंकर तूफान के अन्दर घिरी हुई है कि जब तक ख़ुदा का हाथ उसके बचाने के लिए न बढ़े, उसका किनारे पर पहुँचना असम्भावित बातों में से है। उलमा, जिनका कर्तव्य था कि ऐसे समय में इस्लाम की मदद के लिए खड़े होते, गहरी नींद में सोते हैं बल्कि इससे भी बढ़कर यह कि वे स्वयं हज़ारों दुराचारों में लिप्त हैं और उनके ईमानों की हालत इतनी खराब हो चुकी है कि चन्द पैसों के लिए ईमान बेचने को तैयार हो जाते हैं। यह सारी परिस्थितियाँ पुकार-पुकार कर कह रही हैं कि यही वह ज़माना है जिससे आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने हमें डराया था और यही वह समय है जिसमें इस्लाम के महान सुधारक मसीह व महदी का आना मुक़द्दर है। क्योंकि यदि इतनी बड़ी आवश्यकता के समय भी अल्लाह तआला की ओर से कोई सुधारक प्रकट न हो तो फिर नऊज़बिल्लाह ख़ुदा का वह वादा ग़लत ठहरता है कि मैं क़ुरआन और इस्लाम की रक्षा करूँगा

और दीन की खिदमत के लिए ख़लीफे और सुधारक खड़े करता रहूँगा।

छठी निशानी:- मसीह व महदी की छठी निशानी यह बयान की गई थी कि उसके ज़माने में निर्धारित तिथियों में चाँद और सूरज को ग्रहण लगेगा। अत: इमाम मुहम्मद बाक़र रज़ि. से रिवायत है कि :-

اِنّ لمهدينا اٰيَتَيْنِ لم تكونا منذخلق السّمٰوٰت والارض ينكسف القمر لاوّل ليلة من رمضان وتنكسف الشّمس فى النصف منه۔

(دار قطنى جلد اوّل صفحه 188)

अर्थात हमारे महदी के लिए दो निशान निर्धारित हैं और जब से धरती और आकाश पैदा हुए हैं ये निशान किसी दूसरे अवतार के समय में प्रकट नहीं हुए। उनमें से एक यह है कि महदी माहूद के ज़माने में रमज़ान के महीने में चाँद को उसकी पहली रात में ग्रहण लगेगा (अर्थात तेरहवीं तिथि में क्योंकि चाँद के ग्रहण के लिए ख़ुदा के विधान में तेरहवीं चौदहवीं और पन्द्रहवीं तिथियाँ निर्धारित हैं जैसा कि विशेषज्ञों से छुपा नहीं) और सूरज को उसके बीच के दिन में ग्रहण लगेगा (अर्थात उसी रमज़ान के महीने में अट्ठाईसवीं तिथि को क्योंकि सूर्य ग्रहण के लिए क़ानूने क़ुदरत में सत्ताईस, अट्ठाईस और उनत्तीस तिथियाँ निर्धारित हैं)।

अब सारी दुनिया जानती है कि 1311 हिजरी अर्थात 1894 ई. में यह निशान पूरी स्पष्टता के साथ पूरा हो चुका है। अर्थात 1311 हिजरी के रमज़ान में चाँद को उसकी रातों में से पहली रात में अर्थात तेरहवीं तिथि को ग्रहण लगा तथा उसी महीने में सूर्य को उसके दिनों में से बीच के दिन अर्थात अट्ठाईस तारीख को ग्रहण लगा और यह निशान दो बार प्रकट हुआ। पहले पृथ्वी के इस गोलार्द्ध में फिर अमेरिका में और दोनों बार इन्हीं तिथियों में हुआ जिनकी ओर हदीस इशारा करती है। और निशानी केवल हदीस ही ने नहीं बताई। बल्कि क़ुरआन शरीफ ने भी इसकी ओर इशारा किया है। जैसा कि फ़रमाया :-

وَخَسَفَ الْقَمَرُ وَجُمِعَ الشَّمْسُ وَالْقَمَرُ۔

(सूरह अल-क़यामः 75:9,10)

अर्थात "चाँद को ग्रहण लगेगा और उस ग्रहण में सूरज भी चाँद के साथ शामिल होगा। अर्थात उसे भी उसी महीने में ग्रहण लगेगा।"

अब देखो किस स्पष्टता के साथ यह निशानी पूरी होकर हमें बता रही है कि यही वह समय है जिसमें महदी का प्रादुर्भाव होना चाहिए क्योंकि उसके प्रादुर्भाव की जो निशानी थी वह पूरी हो चुकी है।

कुछ लोग ऐतराज़ करते हैं कि यह हदीस मरफ़ूअ नहीं (अर्थात आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम तक नहीं पहुँचती) बल्कि हज़रत इमाम मुहम्मद बाक़र तक पहुँच कर रुक जाती है। दूसरे यह कि चाँद ग्रहण रमज़ान की पहली रात में और सूरज ग्रहण रमज़ान के मध्य में बयान किया गया है। जबकि वस्तुतः चाँद का ग्रहण तेरहवीं और सूरज का ग्रहण अट्ठाईसवीं तिथि में हुआ था। इन आरोपों का जवाब यह है कि निःसन्देह यह हदीस देखने में मौक़ूफ़ है। लेकिन मुहद्दसीन के उसूल के अनुसार यह रिवायत उच्चस्तर की है। फिर यह भी तो देखो कि रावी (वर्णन करने वाला) कौन है ? क्या वह आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के परिवार का चमकता हुआ मोती नहीं ? और यह बात भी सब लोग जानते हैं कि सामान्य तौर पर नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के परिवार वालों का यह तरीका था कि अपनी व्यक्तिगत प्रतिष्ठा के कारण वे हदीस के सिलसिला को नाम-बनाम आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम तक पहुँचाना ज़रूरी नहीं समझते थे। यह आदत उनकी मशहूर और परिचित है बहरहाल यह हदीस हमने नहीं बनाई, बल्कि आज से तेरह सौ साल पहले की है।

दूसरे ऐतराज़ का जवाब यह है कि चाँद को महीने की पहली तिथि में और सूरज को मध्य में ग्रहण लगना, ख़ुदा की सुन्नत और कानूने क़ुदरत के ख़िलाफ है। क़ानूने क़ुदरत ने जो ख़ुदा का बनाया

हुआ क़ानून है चाँद के ग्रहण को चाँद के महीने की तेरहवीं चौदहवीं और पन्द्रहवीं में और सूरज के ग्रहण को सत्ताईसवीं अट्ठाईसवीं और उन्तीसवीं में सीमित कर दिया है।

अत: पहली तारीख से आशय इन तारीखों में से पहली तथा बीच की तारीख से आशय इन तारीखों में से बीच की तारीख है न कि स्पष्ट तौर पर महीने की पहली और मध्य की तारीख अभिप्रेत हैं। इसका सबूत यह भी है कि महीने की शुरू की रातों का चाँद अरबी भाषा में ''हिलाल'' कहलाता है मगर हदीस में क़मर का शब्द है। जिससे साफ स्पष्ट है कि यहाँ प्रारम्भिक रात अभिप्रेत नहीं। इसके अलावा हमेशा से मुसलमान उलमा इन तारीखों के बारे में यही व्याख्या करते रहे हैं जो हमने इस जगह की है। अत: इस ज़माने में भी मौलवी मुहम्मद लखूके वाले ने इस निशान के प्रकट होने से पहले लिखा था कि :-

تیرھویں چند ستیہویں سورج گرہن ہو سی اس سالے
اندر ماہ رمضانے لکھیا ایہہ ایک روایت والے

(अनुवाद - अर्थात इस साल रमज़ान के महीने में तेरहवीं को चाँद ग्रहण और सत्ताईसवीं को सूर्य ग्रहण होगा, ऐसा एक रिवायत करने वाले ने लिख दिया है। - अनुवादक)

इस छन्द में मौलवी साहिब ने ग़लती से अट्ठाईसवीं तारीख की जगह सत्ताईसवीं तारीख लिख दी है। परन्तु फिर भी उसूल वही अपनाया है जो हमने ऊपर बयान किया है और सबसे बड़ी बात यह है कि घटनाओं ने भी इस बात पर पुष्टि की मुहर लगा दी है कि पहली तिथि से तेरहवीं तारीख और बीच की तिथि से अट्ठाईसवीं तारीख तात्पर्य है।

तात्पर्य यह कि यह निशान ऐसे स्पष्ट तौर पर पूरा हुआ है कि किसी बहाने और तर्क-वितर्क की गुंजाइश शेष नहीं रही। अत: विश्वसनीय सूत्रों से सुना गया है कि जब यह निशान पूरा हुआ तो

कुछ मौलवी साहिबान अपनी जाँघों पर हाथ मारते थे और कहते थे कि ''अब दुनिया गुमराह होगी अब दुनिया गुमराह होगी।'' यह भी عُلَمَآءُهُمْ شَرٌّ مَنْ تَحْتَ اَدِيْمِ السَّمَآءِ (अर्थात मसीह मौऊद के समय में उलमा दुनिया के सबसे बुरे लोग होंगे) का स्पष्ट प्रमाण है कि इधर ख़ुदा का निशान प्रकट हो रहा है और उधर मौलवी साहिबान को यह ग़म खाए जा रहा है कि यह निशान क्यों प्रकट हुआ ? क्योंकि लोग इससे हमारे फन्दे से निकलकर मिर्ज़ा साहिब को मानने लग जाएँगे। अफ़सोस सद् अफसोस!! हे मौलवियों के अभागे गिरोह! तुमने ख़ुदा के बहुत से सीधे-सादे लोगों को गुमराह कर दिया। तुम्हारे बहकावे में आकर लोगों ने देखते हुए भी न देखा तथा सुनते हुए भी न सुना एवं समझते हुए भी न समझा। ख़ुदा से डरो कि एक दिन उसके सामने खड़े किए जाओगे।

सातवीं निशानी:- सातवीं निशानी यह बताई गई थी कि मसीह मौऊद के जमाने में दाब्बतुल अर्ज़ (ज़मीनी कीड़ा) निकलेगा। जो लोगों को काटेगा और मोमिन और काफिर में फ़र्क़ कर देगा और मुल्क में चक्कर लगाएगा। अत: क़ुआन शरीफ में भी इसका उल्लेख मौजूद है। जहाँ ख़ुदा तआला फ़रमाता है :-

وَإِذَا وَقَعَ الْقَوْلُ عَلَيْهِمْ أَخْرَجْنَا لَهُمْ دَابَّةً مِّنَ الْأَرْضِ تُكَلِّمُهُمْ أَنَّ النَّاسَ كَانُوا بِآيَاتِنَا لَا يُوقِنُونَ۔

(सूरह अल-नमल 27:83)

अर्थात ''जब (मसीह मौऊद के भेजने से) ख़ुदा का कथन उन पर पूरा हो जाएगा तो हम ज़मीन में से एक कीड़ा निकालेंगे जो लोगों को काटेगा और उन्हें ज़ख़्मी करेगा। यह इसलिए होगा कि लोग ख़ुदा के निशानों पर ईमान नहीं लाएँगे।''

फिर हदीसों में भी अधिकता के साथ क़यामत के निकट प्रकट होने वाली निशानियों में से दाब्बतुल अर्ज़ (ज़मीनी कीड़ा) का वर्णन मिलता है। (देखो बुख़ारी और मुस्लिम) और यह बयान किया गया

है कि मसीह मौऊद के ज़माने में एक कीड़ा निकलेगा जो मुल्क में चक्कर लगाएगा और मोमिनों और काफिरों में फ़र्क़ करता जाएगा।

अब देख लो कि प्लेग (महामारी) ने हज़रत मिर्ज़ा साहिब के ज़माने में ज़ाहिर होकर इस निशानी को किस स्पष्टता के साथ पूरा कर दिया है। यह बात सर्वमान्य है कि प्लेग की बीमारी एक कीड़े से पैदा होती है और दाब्बतुल अर्ज़ का अर्थ भी एक ज़मीनी कीड़ा है। अत: क़ुरआन शरीफ में एक दूसरी जगह आता है :-

دَآبَّةُ الْاَرْضِ تَاْكُلُ مِنْسَاَتَهٗ

(सूरह सबा 34:15)

अर्थात एक ज़मीनी कीड़ा हज़रत सुलैमान की लाठी को खाता था।

इस जगह समस्त व्याख्याकार दाब्ब: का अर्थ कीड़ा करते हैं। अत: कोई कारण नहीं कि मसीह मौऊद के ज़माने में ज़ाहिर होने वाले दाब्बतुल अर्ज़ से तात्पर्य कीड़े के अतिरिक्त कोई दूसरा अर्थ लिया जाए और दूसरी रिवायतों (वर्णनों) में जो इस दाब्ब: की निशानियाँ बयान हुई हैं वे लक्षण और रूपक के तौर पर हैं और सत्य यही है कि प्लेग ही दाब्बतुल अर्ज़ है जिसने मसीह मौऊद के समय में ज़ाहिर होकर सच और झूठ में अन्तर कर दिया है। नि:सन्देह उसने इन्कार करने वालों के माथे पर एक निशान लगाया और मानने वालों के माथे पर भी एक निशान लगाया और इस तरह दोनों गिराहों को चिन्हित कर दिया। यह एक खुली-खुली सच्चाई है कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ज़माने में अहमदिया जमाअत की जो बढ़ोत्तरी प्लेग के द्वारा हुई वह दूसरे किसी माध्यम से नहीं हुई। इस महामारी ने हज़रत मिर्ज़ा साहिब के विरोधियों को चुन-चुनकर लिया और दूसरी ओर हज़रत मिर्ज़ा साहिब और आपके मानने वाले उसके दुष्प्रभाव से मानो बिल्कुल सुरक्षित रहे। अतएव यही वे सफेद और काले निशान हैं जो दाब्बतुल अर्ज़ (ज़मीनी कीड़े) ने लगाए हैं। जिन दिनों मुल्क में महामारी का ज़ोर था उन दिनों कभी-कभी एक-एक दिन में कई-

कई सौ आदमियों की बैत की चिट्ठियाँ हज़रत मिर्ज़ा साहिब के पास पहुँचती थीं और लोग दीवानों की तरह आपकी ओर दौड़े आते थे। यह एक अजीब दृश्य है कि प्रारम्भ के कुछ सालों में अहमदियों की संख्या कुछ सौ से अधिक नहीं हुई लेकिन प्लेग अर्थात दाब्बतुल अर्ज़ (ज़मीनी कीड़ा) के निकलने अर्थात् सन् 1900 ई. के बाद से देखते ही देखते अहमदिया जमाअत की संख्या हज़ारों में नहीं बल्कि लाखों तक पहुँच गई। अत: यह सब अल्लाह की महानता है।

यह कहना कि प्लेग में कुछ अहमदी भी मर गए यह एक मूर्खतापूर्ण आरोप है क्योंकि प्रथम तो तुलनात्मक दृष्टि डालनी चाहिए कि अहमदियों और ग़ैर अहमदियों में प्लेग की घटनाओं में क्या अनुपात रहा है ? द्वितीय यह कि क्या आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की लड़ाइयों में मुसलमान शहीद नहीं हुए थे ? हलाँकि ये लड़ाइयाँ काफिरों के लिए ख़ुदा का एक प्रकोप थीं। अत: देखना यह चाहिए कि प्लेग के द्वारा किस जमाअत की बढ़ोत्तरी हुई और किस को नुकसान पहुँचा है तथा जो इक्का-दुक्का घटनाएँ अहमदियों में हुई हैं वे शहादतें हैं जो ख़ुदा ने हमारे कुछ भाइयों को दी हैं। परन्तु फिर भी जमाअत की अगुवाई करने वाले और विशेष सम्माननीय और निकटस्थ लोग प्लेग के दुष्प्रभाव से पूर्णत: बचे रहे। लेकिन विरोधियों में से अनेक लोग जो विरोध करने में चरम पर थे इस महामारी का शिकार हो गए और सबसे बड़ी बात यह है कि इस महामारी ने अहमदिया जमाअत को एक असाधारण तरक़्क़ी दी और दुश्मनों की संख्या कम हुई और हमारी संख्या बढ़ी। अत: दाब्बतुल अर्ज़ (ज़मीनी कीड़ा) ज़ाहिर होकर अपना काम कर गया। अब चाहे ख़ुदा के सामने रोओ और चिल्लाओ और सज्दों में दुआएँ करके अपनी नाकें घिसो, कोई दूसरा दाब्बतुल अर्ज़ (ज़मीनी कीड़ा) तुम्हारी इच्छा के अनुसार ज़ाहिर नहीं होगा। क्योंकि जो ज़ाहिर होना था वह हो चुका। हाँ तुम्हारे दिमाग़ों में मूर्खता और ख़ुदपसन्दी का एक कीड़ा अवश्य छुपा है जो

तुम्हें खा रहा है ख़ुदा करे कि वह भी निकले ताकि तुम्हें कुछ चैन आवे।

आठवीं निशानी:- आठवीं निशानी यह है कि ''मसीह मौऊद दमिश्क़ से पूर्व की ओर एक सफेद मिनार के पास अवतरित होगा।'' अत: आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम फ़रमाते हैं :-

يَنۡزِلُ عِيۡسَى ابۡنُ مَرۡيَمَ عِنۡدَ الۡمَنَارَةِ الۡبَيۡضَاءِ شَرۡقِيَّ دِمَشۡق۔

(کنز العمال جلد، صفحہ ۲۲)

अर्थात मसीह मौऊद दमिश्क़ के पूर्व की ओर सफेद मिनारे के पास अवतरित होगा।

इस निशानी के बारे में सर्वप्रथम यह याद रखना चाहिए कि यह साबित हो चुका है कि मसीह मौऊद आसमान से नहीं उतरेगा बल्कि वह इसी उम्मत का एक व्यक्ति है इसलिए मिनार पर अवतरित होने का यह अर्थ नहीं हो सकता कि मसीह मौऊद सचमुच आसमान से किसी मिनारे पर उतरेगा और फिर मिनारे से नीचे उतरेगा। द्वितीय यह कि इस हदीस में यह नहीं कहा गया कि मिनारे के ऊपर से उतरेगा बल्कि शब्द यह हैं कि मिनारे के पास उतरेगा अर्थात वह ऐसी हालत में उतरेगा कि सफेद मिनारा उसके पास होगा और इन दोनों में बड़ा अन्तर है। इसके बाद जानना चाहिए कि क़ादियान, हिन्दुस्तान के पंजाब प्रान्त में है जो हज़रत मिर्ज़ा साहिब का वतन है और दमिश्क से ठीक पूर्व दिशा में स्थित है। अर्थात वह दमिश्क के ठीक पूर्व की ओर उसी अक्षाँश पर स्थित है जिसमें कि दमिश्क है। इसलिए दमिश्क से पूर्व वाली बात में तो कोई सन्देह न रहा। अब रहा मिनारा का शब्द, तो इस से तात्पर्य यह है कि मसीह मौऊद का अवतरण ऐसे ज़माने में होगा कि उस समय संचार के साधनों और मेलजोल की अधिकता अर्थात रेल, जहाज़, डाक, तार व छापाखाना इत्यादि की व्यवस्था होने के कारण प्रचार व प्रसार का काम ऐसा आसान होगा कि मानो यह व्यक्ति एक मिनारे पर खड़ा होगा और उसकी आवाज़ दूर-दूर तक पहुँचेगी और उसकी रौशनी बहुत जल्द दुनिया में फैल जाएगी,

जैसा कि मिनारे की विशेषता होती है और यह तात्पर्य नहीं कि मसीह मौऊद का अवतरण मिनारे के ऊपर से होगा। बल्कि तात्पर्य यह है कि मसीह मौऊद इस हालत में अवतरित होगा कि सफेद मिनारा उसके पास होगा अर्थात धर्म प्रसार के अच्छे-अच्छे साधन उसे उपलब्ध होंगे। तथा इन शब्दों में 'पूरब' के शब्द में यह भी संकेत हो सकता है कि मसीह मौऊद का सूरज अपनी पूर्वी क्षितिज से अच्छे हालात के अन्तर्गत उदय होगा और उसकी किरणें जल्द-जल्द सारी दुनिया में फैल जाएँगी। इसके अतिरिक्त मिनार के शब्द से यह भी तात्पर्य हो सकता है कि जिस तरह एक चीज़ जो ऊँचाई पर हो वह सब को दिखाई पड़ती है और दूर-दूर के रहने वाले भी उसे देख लेते हैं उसी तरह मसीह मौऊद का क़दम भी एक मिनारे पर होगा और वह ऐसे रोशन और स्पष्ट प्रमाणों के साथ प्रकट होगा कि यदि लोग स्वयं अपनी आंखें बन्द न कर लें और उसकी रोशनी को देखने से मुँह न फेर लें तो वह अवश्य तमाम् देखने वालों को नज़र आ जाएगा क्योंकि वह एक उच्च स्थान पर होगा। अत: यह भविष्यवाणी रूपक के तौर पर एक गूढ़ कथन पर आधारित है जिसकी वास्तविकता को समझा नहीं गया।

मिनारा के साथ सफेद का शब्द बढ़ाने में भी एक रहस्य है और वह यह है कि यद्यपि हर मिनारा दूर से दिखाई देता है लेकिन यदि वह सफेद हो तो फिर तो विशेष रूप से वह अधिक चमकता और देखने वालों को अपनी ओर खींचता है या सफेद का शब्द इस ओर संकेत करता है कि मसीह मौऊद की महानता निष्कलंक होगी अर्थात यह नहीं होगा वह किसी सांसारिक प्रतिष्ठा इत्यादि के कारण एक उच्च स्थान पर होगा बल्कि उसकी प्रतिष्ठा विशेष रूप से आध्यात्मिक होगी और इसी पवित्र स्थिति में वह लोगों को दिखाई देगा। लेकिन शर्त यह है कि लोग ईर्ष्या-द्वेष और अन्धकार को पसन्द करने के कारण अपनी आँखें खुद न बंद करें। इसका

स्पष्ट उदाहरण इस प्रकार है कि यदि कोई व्यक्ति अपनी कोठरी की खिड़कियाँ बन्द करके अन्दर बैठ जाए तो सूरज चढ़ने के बावजूद उसके कमरे के अन्दर अन्धेरा ही रहेगा। पर इसमें सूरज का कोई दोष नहीं। इसी प्रकार यदि कोई व्यक्ति अपने दिल की खिड़कियाँ बन्द कर ले तो आध्यात्मिक सूर्य उसे किस प्रकार रोशनी (ज्ञान) पहुँचा सकता है ? हज़रत मिर्ज़ा साहिब इस निशानी के पूरा होने का अपनी कविता में इस प्रकार उल्लेख करते हैं :-

از کلمۂ منارہ شرقی عجب مدار
چوں خود ز مشرق است تجلّی نیّرم

अर्थात "वर्णनों में जो मश्रिक़ी मिनारा का उल्लेख मिलता है उसके कारण आश्चर्य में मत पड़ो। क्योंकि मेरे सूर्य का उदय भी पूरब ही से हुआ है।"

नौवीं निशानी:- नौवीं निशानी यह है कि हदीस में मसीह मौऊद का निर्धारित हुलिया बताया गया है अत: आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम फ़रमाते हैं :-

بينما انا نائمٌ اطوف بالكعبةِ فاذا رجلٌ آدم سبط الشعر ينطف اويهراق رأسه ماءً قلت من هٰذا قالوا بنُ مريم ثم ذهبتُ التفت فاذا رجلٌ جسيم احمر جعُد الرّأس اعور العين كانّ عينه عنبةٌ طافيةٌ فقلت من هذا قالوا هٰذا الدّجال۔ (صحيح بخاری جلد دوم کتاب بدء الخلق)

फ़िर फ़रमाते हैं :-

ينزل عند المنارة البيضاء شرقی دِمشق بين مهرودتين واضعًا كفّيه علٰی اجنحة ملَكَين اذا طَأطَأ رأسهٗ قطر واذا رفعهٗ تحدّر منه مثل جمانٍ كاللؤلوءِ فلا يحلّ لكافر يجد من ريح نفسهٖ الامات۔ (صحيح مسلم جلد ثانی)

मैंने स्वप्न में देखा कि मैं काबा की परिक्रमा (तवाफ़) कर रहा हूँ कि अचानक एक आदमी मेरे सामने आया। उसका रंग गेहुँआ था

और बाल सीधे और लम्बे थे और उसके सिर से पानी की बूँदें टपकती थीं। मैंने पूछा यह कौन है ? तो मुझे बताया गया कि यह इब्नि मरियम है फिर इसके बाद मैंने एक भारी भरकम शरीर वाले आदमी को देखा जो लाल रंग का था और उसके बाल घुंघराले थे और वह एक आँख से काना था मानो कि उसकी एक आँख अंगूर के दाने की तरह फूली हुई थी, मुझे बताया गया कि यह दज्जाल है।

एक दूसरी हदीस में इस तरह लिखा है कि मसीह मौऊद दमिश्क से पूरब की ओर सफेद मिनारे के पास इस हाल में अवतरित होगा कि वह दो पीली चादरों में लिपटा हुआ होगा और अपने दोनों हाथ दो फरिश्तों के कन्धों पर रखे हुए होगा। जब वह अपना सिर झुकाएगा तो उससे पानी की बूँदें गिरेंगी और जब सिर को उठाएगा तो उससे मोती झड़ेंगे और हर काफिर जिस तक उसकी साँस पहुँचेगी मर जाएगा।''

यह वह हुलिया है जो हदीसों में मसीह मौऊद का बयान हुआ है। अब देख लो कि किस स्पष्टता के साथ यह हुलिया हज़रत मिर्ज़ा साहिब में पाया जाता है। दुनिया जानती है कि आपका रंग गेहुआँ था, आपके बाल रेशम की भाँति नरम, सीधे और लम्बे थे और सीधे भी ऐसे कि एक-एक बाल रेशम के तार की तरह अलग-अलग नज़र आता था। इसके अतिरिक्त आप दो पीली चादरों में लिपटे हुए अवतरित हुए थे अर्थात आप को दो बीमारियाँ लगी हुई थीं और मसीह होने के दावा से लेकर मरते दम तक लगी रहीं। अत: हज़रत मिर्ज़ा साहिब फ़रमाते हैं :-

''दो रोग मुझे लगे हुए हैं एक शरीर के ऊपरी भाग में और दूसरा शरीर के निचले भाग में। ऊपरी भाग में सिर दर्द है और निचले भाग में कसरते पेशाब की बीमारी है और यह दोनों बीमारियाँ उसी ज़माने से हैं जिस ज़माने में मैंने अपने अवतार होने का दावा प्रकाशित किया है मैंने इनके लिए दुआएँ भी कीं किन्तु नकारात्मक जवाब मिला।

(हक़ीक़तुल वह्यी पृष्ठ 307)

यह बात कि स्वप्नों की दुनिया में पीले कपड़े से तात्पर्य बीमारी होती है। यह एक ऐसी स्पष्ट बात है कि किसी व्याख्या की आवश्यकता नहीं (देखो तातीरुल अनाम जिल्द 2, पृष्ठ 41) हदीस के शेष विषयों के बारे में कि मसीह मौऊद के दम से काफिर मरेंगे और सिर से बूँदे और मोती झड़ेंगे इत्यादि। इसके बारे में हम निशानियों के वर्णन के अन्त में एक नोट लिखेंगे क्योंकि ये बातें हुलिया का हिस्सा नहीं बल्कि आम निशानियों का हिस्सा हैं।

मसीह के अवतरण के सम्बन्ध में एक महान भविष्यवाणी

अब जबकि हज़रत ईसा मसीह नासरी की मृत्यु और मसीह व महदी के अवतरण की निशानियों की बहस पूरी हो चुकी है इसलिए अगली बहस (अर्थात दसवीं निशानी का वर्णन) प्रारम्भ करने से पहले हज़रत मिर्ज़ा साहिब का एक दृष्टान्त लिखना आवश्यक है जिसमें हज़रत मिर्ज़ा साहिब ने मसीह नासरी की मृत्यु और अवतरण के अक़ीदा के बारे में एक महान भविष्यवाणी की है। आप फ़रमाते हैं :-

''हे तमाम् लोगो! सुन रखो कि यह उस ख़ुदा की भविष्यवाणी है जिसने धरती और आसमान बनाया। वह अपनी इस जमाअत को समस्त देशों में फैला देगा और तर्क एवं प्रमाण की दृष्टि से सब पर उनको विजयी करेगा... याद रखो कि कोई आसमान से नहीं उतरेगा। हमारे सब विरोधी जो अब जीवित मौजूद हैं वे सब मरेंगे और कोई उनमें से मरियम के बेटे ईसा को आसमान से उतरते नहीं देखेगा तथा फिर उनकी सन्तान जो शेष रहेगी वह भी मरेगी और उनमें से कोई ईसा पुत्र मरियम को आसमान से उतरते नहीं देखेगा और फिर औलाद

की औलाद मरेगी और वह भी मरियम के बेटे को आसमान से उतरते नहीं देखेगी। तब ख़ुदा उनके दिलों में घबराहट डालेगा कि ज़माना सलीब के ग़ल्बा (अर्थात ईसाइयत के ज़ोर) का भी बीत गया और दुनिया दूसरे रंग में आ गई मगर मरियम का बेटा अभी तक आसमान से न उतरा। तब सब बुद्धिजीवी अचानक इस अक़ीदा (आस्था) से मुँह फेर लेंगे और अभी तीसरी शताब्दी आज के दिन से नहीं पूरी होगी कि ईसा की प्रतीक्षा करने वाले क्या मुसलमान और क्या ईसाई सब निराश और बद्ज़न होकर इस झूठे अक़ीदा को छोड़ देंगे और दुनिया में एक ही धर्म होगा और एक ही पेशवा। मैं तो एक बीज बोने के लिए आया हूँ। अत: मेरे हाथ से वह बीज बोया गया अब यह बढ़ेगा और फूलेगा और कोई नहीं जो इसको रोक सके।'' (तज़्किरतुश्शहादतैन, पृष्ठ 65 ,64)

दसवीं निशानी:- मसीह मौऊद का काम - मसीह मौऊद की दसवीं निशानी यह बताई गई थी कि वह सलीब को तोड़ेगा और ख़िन्ज़ीर (सूअर) को मारेगा तथा दज्जाल को क़त्ल करेगा और इस्लाम को दूसरे धर्मों पर विजयी करेगा। यहाँ तक कि (इस्लाम का) सूरज पश्चिम से चढ़ेगा और मसीह मौऊद सारे मतभेदों में सच्चा-सच्चा निर्णय करेगा और खोया हुआ ईमान फिर संसार में क़ायम करेगा और बड़ी प्रचुरता के साथ धन लुटाएगा, मगर लोग उसके धन को स्वीकार नहीं करेंगे। अत: हदीसों में लिखा है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया :-

والله لينزلنّ ابنُ مريم حكمًا عادلاً فليكسرنّ الصليب
وليقتلنّ الخنزير وليضعن الجزية وليتركن القلاص فلا يسعٰى
عليها ولتذهبنّ الشحناء والتباغض والتحاسد وليدعون الى
المال فلا يقبلهٗ احد۔ (مسلم كتاب الايمان)

وفى رواية يفيض المال حتّٰى لا يقبله احد۔ (بخارى)

और दज्जाल के क़त्ल के बारे में एक रिवायत है, जिसका फ़ारसी

अनुवाद यह है कि :-

دجّال چوں نظر بعیسیٰ کند بگدازد۔ چنانچہ نمک در آب بگدازد و بگریزد۔ (حجج الکرامہ مصنّفہ نواب صدیق حسن خان آف بھوپال سر گردہ فرقہ اہل حدیث)

अनुवाद - दज्जाल जब ईसा पर नज़र डालेगा तो ख़ुद पिघल जाएगा, जैसे नमक पानी में पिघल जाता है और भाग जाएगा। (अनुवादक)

فیطلبہ حتّٰی یدرکہ بباب لُدّ فیقتلہ۔ (مسلم) **وَفی روایۃٍ وتطلع الشمس من مغربھا۔** (مشکوٰۃ)

وفی روایۃٍ لو کان الایمانُ عند الثریا لنالہ رجلٌ من ھٰؤلاء (ای ابناء فارس) (بخاری)

وقال اللہ تعالیٰ هُوَ الَّذِی أَرْسَلَ رَسُولَهُ بِالْهُدٰى وَدِينِ الْحَقِّ لِيُظْهِرَهُ عَلَى الدِّينِ كُلِّهِ وَلَوْ كَرِهَ الْمُشْرِكُونَ۔

(सूरह तौबा 9:33)

अर्थात ''ख़ुदा की क़सम तुम में इब्नि मरियम अवश्य अवतरित होगा और वह तुम्हारे मतभेदों में सच्चा-सच्चा फैसला करेगा (अर्थात रिवायतों, अक़ीदों और कार्यों इत्यादि में जो मतभेद पैदा हो चुके होंगे उनमें मसीह मौऊद सच्चा-सच्चा फैसला करेगा) और वह अवश्य सलीब को तोड़ेगा और ख़िन्ज़ीर को क़त्ल करेगा जिज़्या (अर्थात सुरक्षा कर) को समाप्त कर देगा। इसकी व्याख्या में बुखारी की एक रिवायत में है कि वह जंग को स्थगित कर देगा और उसके ज़माने में सवारी की ऊँटनियाँ छोड़ दी जाएँगी अर्थात उन पर बैठकर लम्बी-लम्बी यात्राएँ नहीं की जाएँगी (और उसके मानने वालों में) छल-कपट, दुश्मनी एवं ईर्ष्या समाप्त हो जाएगी और मसीह मौऊद लोगों को माल की ओर बुलाएगा किन्तु कोई उसके माल को क़बूल नहीं करेगा और एक रिवायत में इस तरह है कि जब दज्जाल उसे देखेगा तो इस तरह पिघलना शुरू हो जाएगा जिस तरह कि पानी में नमक

पिघलता है और दज्जाल उससे भागेगा लेकिन मसीह मौऊद उसका पीछा करके बाब-ए-लुद्द के पास उसे आ पकड़ेगा और उसे क़त्ल कर देगा और उसके ज़माने में सूरज पश्चिम की तरफ से उदय होगा और ईमान अगर दुनिया से इस तरह समाप्त हो जाएगा कि मानो सुरैया सितारे पर चला गया तो फिर भी एक मर्दे कामिल जो फ़ारसी मूल का होगा उसे पुन: दुनिया में उतार लाएगा (अर्थात यही मसीह मौऊद खोए हुए ईमान को दुनिया में पुन: क़ायम करेगा)। क़ुरआन में अल्लाह तआला फ़रमाता है कि अल्लाह ही है जिसने अपना रसूल हिदायत और सच्चे धर्म के साथ भेजा है ताकि वह उसे तमाम् दूसरे धर्मों पर विजयी करके दिखाए। इस आयत को व्याख्याकारों ने मसीह मौऊद के ज़माने से सम्बन्धित माना है और स्पष्टत: लिखा है कि यह वादा मसीह मौऊद के ज़माने में पूरा होगा।''

मसीह मौऊद की निशानियों में से यह दसवीं निशानी है और वस्तुत: यह सारी निशानियों की बुनियाद है। क्योंकि इसमें मसीह मौऊद का काम बताया गया है और एक आध्यात्मिक सुधारक की सबसे बड़ी पहचान उसके काम से ही हुआ करती है। इसलिए हमने इस निशानी की बहस को एक अलग अध्याय के रूप में वर्णन करना उचित समझा है। वस्तुत: अगर यह साबित हो जाए कि हज़रत मिर्ज़ा साहिब अलैहि ने वह काम कर दिखाया है और रसूलों की सुन्नत के अनुसार उसका बीजारोपण कर दिया है जो मसीह मौऊद के हाथ से होना निर्धारित था तो फिर किसी शक और सन्देह की गुंजाइश नहीं रहेगी और इसके बाद किसी दूसरे काल्पनिक मसीह व महदी की प्रतीक्षा व्यर्थ होगी। क्योंकि अगर झूठ के तौर पर यह मान भी लिया जाए कि हज़रत मिर्ज़ा साहिब मसीह मौऊद नहीं हैं, फिर भी यदि आप अलैहिस्सलाम के द्वारा मसीह मौऊद और महदी माहूद का निर्धारित काम वस्तुत: पूरा हो गया है तो फिर उस असली (जो कि हमारे निकट काल्पनिक है) मसीह व महदी का पैदा किया जाना केवल एक व्यर्थ कार्य होगा जो ख़ुदा जैसी

हिकमत से परिपूर्ण हस्ती से कदापि उम्मीद नहीं की जा सकती। परन्तु इस बहस को प्रारम्भ करने से पहले कुछ प्रारम्भिक बातों का बयान कर देना आवश्यक है जो नीचे लिखी जाती है।

सबसे पहला प्रश्न यह है कि सलीब तोड़ने से क्या तात्पर्य है। तो हर एक बुद्धिमान सोच सकता है कि सलीब तोड़ने से तात्पर्य यह तो कदापि नहीं हो सकता कि मसीह मौऊद ज़ाहिरी सलीब की लकड़ी को तोड़ता फिरेगा और मानो उसका जन्म ही इस उद्देश्य से होगा कि सारी उम्र सलीब की लकड़ी को तोड़ता फिरे क्योंकि सर्वप्रथम यह बात ख़ुदा के एक भेजे हुए रसूल की शान से परे है कि वह केवल एक लकड़ी को तोड़ने के लिए पैदा किया जाय। दूसरे यह कि ऐसा काम कोई सच्चा फायदा भी नहीं दे सकता। क्या सलीब की लकड़ी के तोड़े जाने से मसीह परस्ती मिट सकती है ? या इससे सारी दुनिया की सलीब की लकड़ियाँ समाप्त हो जाएंगीं और मसीही लोग फिर दोबारा सलीब नहीं बना सकेंगे ? खूब याद रखो कि जब तक ईसाइयत की ग़लत विचारधाराओं का ज़ोर मौजूद है सलीब क़ायम है। केवल उसकी लकड़ी को तोड़कर ख़ुश होना एक बचकाना काम है जो दुश्मनों की डाँट-डपट पाने के अतिरिक्त और कोई फायदा नहीं दे सकता। सलीब केवल इस दशा में टूट सकती है कि मसीही लोगों के दिलों को जीत करके सलीबी मज़हब का ज़ोर तोड़ दिया जाए और ठोस प्रमाणों से उसका झूठ होना साबित कर दिया जाए। इस तरह अवश्य सलीब की ज़ाहिरी लकड़ी भी टूट जाएगी। क्योंकि जब दुनिया सलीबी अक़ीदों से मुँह फेर लेगी तो नि:सन्देह सलीब स्वयं तोड़कर फेंक दी जाएगी और यह भी याद रखना चाहिए कि यह सोचना कि किसी ज़माने में ईसाई मज़हब दुनिया से बिल्कुल मिट जाएगा एक गलत सोच है क्योंकि क़ुरआन शरीफ की स्पष्ट आयत :-

وَاَغْرَيْنَا بَيْنَهُمُ الْعَدَاوَةَ وَالْبَغْضَاءَ اِلٰى يَوْمِ الْقِيَامَةِ۔

(सूरह अल-मायद: 5:15)

(अर्थात हमने ईसाइयों और यहूदियों के बीच क़यामत तक दुश्मनी भड़का रखी है।) से साबित है कि ईसाई धर्म क़यामत तक रहेगा। इसलिए सलीब तोड़ने का यह मतलब भी नहीं हो सकता कि ईसाई धर्म बिल्कुल ही मिट जाएगा। बल्कि इससे यह तात्पर्य है कि उसका ज़ोर टूट जाएगा और उसका प्रभुत्व भी समाप्त हो जाएगा और दुनिया के प्रभावी धर्मों में गिने जाने के बजाय कमज़ोर और परास्त धर्मों में गिना जाने लगेगा।

दूसरा प्रश्न यह है कि - दज्जाल के क़त्ल से क्या तात्पर्य है ? अत: इस सम्बन्ध में भी जब यह साबित हो चुका है कि दज्जाल किसी एक व्यक्ति का नाम नहीं बल्कि ईसाई क़ौमों और उस क़ौम के पादरियों का नाम है तो यह सोचना व्यर्थ है कि दज्जाल के कत्ल से इन लोगों की सामूहिक हत्या अभिप्राय है। बल्कि दज्जाल के कत्ल से वस्तुत: यह तात्पर्य है कि मसीह क़ौमें और उनके ग़लत धार्मिक विचार और उनके भौतिकवाद और उनके झूठे दर्शन का प्रभुत्व मिट्टी में मिला दिया जाएगा। इस जगह यह एक विशेष बात याद रखने योग्य है कि दज्जाल से केवल ईसाइयत ही तात्पर्य नहीं क्योंकि यह तो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के ज़माने में भी मौजूद थी और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के साथ उसका मुकाबला भी हुआ और उसे पराजय भी मिली। अत: यदि ईसाइयत की झूठी विचारधारा और उसके मददगार, दज्जाल हैं तो यह दज्जाल तो आप स.अ.व. के सामने भी आया और आप स.अ.व. ने उसे पराजित भी किया। जबकि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम फ़रमाते हैं कि दज्जाल को केवल मसीह मौऊद क़त्ल करेगा और यह भी फ़रमाते हैं कि यदि दज्जाल मेरे ज़माने में निकला तो मैं उसका मुक़ाबला करूँगा। जिससे स्पष्ट है कि वह आपके ज़माने में नहीं निकला। इसलिए दज्जाल से बहरहाल वह चीज़ मुराद लेनी होगी जो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के ज़माने में नहीं निकली। वह क्या है ? वह ईसाइयत की झूठी विचारधारा

का यही विश्वव्यापी प्रभुत्व और उसका सारी दुनिया में फैल जाना है और मसीही क़ौमों की तरक़्क़ी के साथ जो भौतिकवाद के फित्ने पैदा होकर पूरी दुनिया पर एक भयंकर बाढ़ की तरह छा गए हैं वे भी दज्जाल हैं और झूठी विचारधाराएँ भी दज्जाल हैं जो गुमराही के ज़माने में मुसलमानों के अन्दर प्रचलित होकर ईसाई अवधारणाओं की मदद का कारण बनी हैं। उदाहरण के तौर पर ईसा मसीह का भौतिक शरीर के साथ अब तक जीवित रहना और उनको आसमान की ओर उसी भौतिक शरीर के साथ जीवित उठाया जाना और उम्मते मुहम्मदिया के सुधार के लिए मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को छोड़कर ख़ुदा का मसीह को बचाकर रखना और सारे नबियों में केवल मसीह ही का शैतान के स्पर्श से बचे रहना और उसका पक्षियों को पैदा करना, मुर्दों को जीवित करना इत्यादि इत्यादि सारे दज्जाली झूठ का हिस्सा हैं। ये वे चीज़ें हैं जो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के ज़माने में नहीं थीं। अर्थात न तो उस समय ईसाइयत के झूठे विचारों का ग़ल्बा था जो सारी दुनिया पर छा गया हो और न उसकी नई-नई विद्याओं के नतीजे में उसका खतरनाक भौतिकवाद था और न ही धर्म की राह में भयंकर फित्ने पैदा हुए थे और न स्वयं मुसलमानों के विचार बिगड़कर ईसाइयत के मददगार बने थे। अत: यही बातें और इन बातों के समर्थक असली दज्जाल हैं जो इस ज़माने में अपने पूरे ज़ोर के साथ निकले हैं। इसलिए दज्जाल के क़त्ल से भी इसी दज्जाल का कत्ल तात्पर्य है। अर्थात दज्जाल के क़त्ल से ईसाइयत के उस ख़तरनाक ग़ल्बा (प्रभुत्व) और उसके समर्थकों का पूर्णत: खण्डन तात्पर्य है जो इस ज़माने में ज़ाहिर हुए हैं। अल्हम्दु लिल्लाह कि हज़रत मिर्ज़ा साहिब के द्वारा इस क़त्ल के आसार प्रकट हो रहे हैं और दज्जाल को वे चोटें लग चुकी हैं और लग रही हैं जो उसे कदापि ज़िन्दा न छोड़ेंगी और निश्चित समझो कि उसकी मरणासन्न अवस्था है बल्कि विवेकियों और बुद्धिमानों के निकट तो वह मुर्दों में शामिल

हो चुका है जिसकी आंखें हों देखे।

तीसरा प्रश्न यह है कि - दज्जाल के पिघलने से क्या तात्पर्य है ? तो इसका जवाब यह है कि ख़ुदा तआला मसीह मौऊद को ऐसा रौब और ऐसी आध्यात्मिक शक्ति प्रदान करेगा कि उसके सामने दज्जाल मानो स्वत: ही पिघलना शुरू हो जाएगा और उसके हाथ-पैर ढीले पड़ जाएँगे और मसीह मौऊद के सामने मैदान में निकलने से डरेगा और ख़ुदा तआला मसीह मौऊद के ज़माने में ऐसी गुप्त शक्तियों को हरकत में लाएगा जो दज्जाल का अन्दर ही अन्दर अन्त कर देंगी। जैसा कि आगे चलकर बयान किया जाएगा उसके भी आसार प्रकट हो रहे हैं।

चौथा प्रश्न यह है कि – बाब-ए-लुद्द से क्या तात्पर्य है ? अत: जानना चाहिए कि हदीसों के कुछ व्याख्याकार यह कहते हैं कि लुद्द एक जगह का नाम है जो दमिश्क के पास है यह केवल उनका विचार है आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से इस कथन का कोई स्पष्टीकरण वर्णित नहीं। जब आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने बाब-ए-लुद्द का कोई निर्धारण नहीं किया तो हमें यह अधिकार है कि हम बौद्धिक रूप से इसकी कोई व्याख्या करें। इसलिए हम कहते हैं ''लुद्द'' एक अरबी शब्द है जो ''अलद'' का बहुवचन है जिसका अर्थ है ''वाद-विवाद और लड़ाई झगड़ा करने वाला'' जैसा कि क़ुरआन शरीफ में आया है कि وَهُوَ اَلَدُّ الۡخِصَامِ (अर्थात वह सब झगड़ने वालों से अधिक झगड़ालू है।) फिर फ़रमाया قَوۡمًا لُّدًّا (अर्थात झगड़ालू कौम)

अत: शाब्दिक रूप से बाब-ए-लुद्द का यह अर्थ हुआ कि ''झगड़ा और लड़ाई करने वालों का द्वार'' इस दृष्टि से नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की हदीस का यह अर्थ बनता है कि मसीह मौऊद दज्जाल को वाद-विवाद और लड़ाई झगड़ा करने वालों के द्वार पर क़त्ल करेगा अर्थात दज्जाल मसीह मौऊद से भागेगा पर

अन्तत: वाद-विवाद करने वालों के द्वार के पास मसीह मौऊद उसे आ दबाएगा और उसे क़त्ल कर देगा। अब इस स्पष्टीकरण के बाद कोई सन्देह शेष नहीं रहता। क्योंकि इस कथन का स्पष्ट रूप से यह अर्थ है कि दज्जाल मसीह मौऊद के सामने आने से भागेगा। लेकिन मसीह मौऊद उसका पीछा करेगा और अन्त में तर्क-वितर्क और शास्त्रार्थ के मैदान में उसे आ दबाएगा और उसे मार डालेगा अर्थात उसका क़त्ल तलवार का क़त्ल न होगा बल्कि तर्कों और प्रमाणों की दृष्टि से होगा। और यही आशय है।

पाँचवा प्रश्न - समाधान योग्य यह है कि माल (धन) की ओर बुलाने से क्या तात्पर्य है ? इसका जवाब बड़ा आसान है कि माल से तात्पर्य आध्यात्मिक ज्ञान है जो मसीह मौऊद ने दुनिया के सामने प्रचुरता के साथ प्रस्तुत किया है लेकिन लोगों ने उसे क़बूल नहीं किया। इसके अतिरिक्त इस ओर भी इशारा है कि मसीह मौऊद अपने विरोधियों के लिए बड़े-बड़े इनाम निर्धारित करेगा ताकि वे उसके सामने आवें और उसका मुक़ाबला करके इनाम प्राप्त करें पर कोई विरोधी उसके सामने निकलकर इनाम का हक़दार न बनेगा। अर्थात आशय यह है कि मसीह मौऊद अपने विरोधियों के सामने माल प्रस्तुत करेगा पर कोई उसे न लेगा। दुनियादारों की तरह माल देना तो रूहानी (आध्यात्मिक) लोगों के लिए कोई ख़ूबी की बात नहीं।

उपरोक्त बयानों की दृष्टि से मसीह मौऊद व महदी माहूद का काम सारांशत: निम्नलिखित शाखों में विभाजित दिखाई देता है :-

1. आन्तरिक मतभेदों में उचित एवं न्यायसंगत फैसला करना।

2. इस्लाम पर दूसरी क़ौमों की तरफ से जो आरोप लगाए जाते हैं उनको दूर करना। विशेषरूप से मसीहियत और भौतिकवाद की झूठी विचारधाराओं के ज़ोर को मलियामेट करना और इस्लाम को समस्त अन्य धर्मों पर विजयी कर दिखाना और उसके प्रचार-प्रसार को दुनिया के कोने-कोने तक पहुँचाना और विशेषरूप से पश्चिमी देशों अर्थात

यूरोप और अमेरिका इत्यादि को अपने प्रचार के द्वारा विजय करना।

3. खोए हुए ईमान को पुन: दुनिया में कायम करना।

ये वे तीन महत्वपूर्ण कार्य हैं जो मसीह मौऊद के लिए निर्धारित हैं और ख़ुदा की कृपा से हज़रत मिर्ज़ा साहिब ने इन कामों को इस सुन्दरता से किया है और आप अलैहिस्सलाम के बाद आप के खलीफ़ा (उत्तराधिकारी) (जो कि वस्तुत: आपके अन्दर शामिल हैं) कर रहे हैं कि निष्पक्ष दुश्मन को भी स्वीकार किए बिना चारा नहीं।

मसीह मौऊद का पहला काम

मसीह मौऊद का पहला काम मुसलमानों के आन्तरिक मतभेदों के बारे में न्यायक बनकर निर्णय करना था। अत: इस सन्दर्भ में जानना चाहिए कि इस ज़माने में मुसलमानों के आन्तरिक मतभेद निम्नलिखित प्रकारों पर आधारित हैं :-

1. ख़ुदा तआला की विशेषताओं से सम्बन्धित मतभेद।

2. फ़रिश्तों के बारे में मतभेद।

3. पैग़म्बरों के आने के बारे में मतभेद।

4. पुनर्जन्म, प्रतिफल, दण्ड और जन्नत-दोज़ख़ (स्वर्ग-नर्क) के बारे में मतभेद।

5. अच्छी-बुरी तक़्दीर के विषय में मतभेद।

6. ख़िलाफ़त-ए-राशिदा के बारे में मतभेद।

7. क़ुरआन व हदीस के मर्तबा के बारे में मतभेद।

8. अहले हदीस व अहले फ़िक़्क़ा के बारे में मतभेद।

9. ज्ञान से सम्बन्धित विषयों के बारे में मतभेद।

10. फ़िक़्क़ा से सम्बन्धित विषयों के बारे में मतभेद।

ये वे दस प्रकार के मतभेद हैं जिन्होंने इस ज़माने में इस्लामी जगत में एक अन्धेर मचा रखा था और आपस की तू-तू मैं-मैं के

कारण मुसलमानों में ऐसी-ऐसी बातें पैदा हो गई थीं जिन्होंने इस्लाम को दुनिया में बदनाम कर दिया था और दुश्मन को इस्लाम पर आरोप लगाने का एक बहुत बड़ा अवसर मिल गया था और बुद्धिजीवी मुसलमान इस बात से तंग आकर बचने की कोई राह न देखकर इस्लाम की हालत पर खून के आँसू बहाते थे और कई कमज़ोर ईमान वाले तो इस्लाम को छोड़ रहे थे। ऐसे भयानक तूफान के समय में अल्लाह तआला ने अपने वादा के अनुसार हज़रत मिर्ज़ा साहिब को हकम व अदल (न्यायक) बनाकर पैदा किया। जिन्होंने आते ही अपना सफेद झण्डा ऊँचा कर दिया और पुकार कर कहा कि इधर आओ कि ख़ुदा ने मुझे तुम्हारे मदभेदों में हकम (न्यायक) बनाकर भेजा है। आओ, कि मैं तुम्हारे मतभेदों में सच्चा-सच्चा न्याय करूँगा। इसके बाद आप उस रूहानी अदालत की कुर्सी पर बिराजमान हो गए और न्याय का काम प्रारम्भ हुआ।

सबसे पहला मतभेद यह था कि आमतौर पर मुसलमानों में यह अक़ीदा प्रचलित हो चुका था कि ख़ुदा पुराने ज़माने में नि:सन्देह अपने बन्दों से बातें करता था लेकिन अब नहीं करता, मानो वह सुनता तो है परन्तु बोलता नहीं। आप अलैहिस्सलाम ने निर्णय किया और बौद्धिक एवं उद्धृत (उदाहृत) प्रमाणों से पूरी तरह साबित कर दिया कि ख़ुदा के बारे में ऐसा सोचना घोर अधर्म है कि उसकी बोलने की शक्ति अब समाप्त हो गई है। आपने बताया कि अगर ख़ुदा बोलता नहीं तो इस्लाम भी एक मुर्दा मज़हब है और इसका दारोमदार भी दूसरे धर्मों की तरह केवल क़िस्से कहानियों पर रह जाता है जो एक सच्चे प्रेमी और सत्याभिलाषी की प्यास को कदापि बुझा नहीं सकते और आपने साबित किया कि इस्लाम, क़ुरआन और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का मधुर फल हमेशा जारी है जैसा कि क़ुरआन मजीद ने बताया है कि لَهُمُ الْبُشْرٰى فِى الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا वह फल यही है कि सच्चा अनुसरण करने वाले को ख़ुदा अपना निजी प्रेम प्रदान करता

है और उसे उसके सामर्थ्यानुसार अपने संवाद और संबोधन से इसी दुनिया में सौभाग्य प्रदान करता है। आप अलैहिस्सलाम ने अपने निजी अनुभव से इस विषय को चमकते हुए सूर्य समान साबित कर दिया। (देखो आप अलैहिस्सलाम की रचनाएँ बराहीन अहमदिया, नुसरतुल हक़्क़, नुज़ूलुल मसीह, हक़ीक़तुल वह्यी इत्यादि)

दूसरा मतभेद ख़ुदा के बारे में यह था कि जब तक ख़ुदा ने किसी के बारे में अज़ाब (प्रकोप) का निर्णय न किया हो उस समय तक तो वह नि:सन्देह कृपा कर सकता है परन्तु अज़ाब के फैसले के बाद वह तौबा और क्षमायाचना पर भी अज़ाब के फैसले को बदल कर कृपा अवतरित नहीं कर सकता बल्कि वह (नऊज़ुबिल्लाह) विवश है कि अपने पहले निर्णय के अनुसार व्यवहार करे। आपने इस विषय को भी बौद्धिक और उदाहृत दोनों प्रकार से स्पष्ट किया और साबित कर दिया कि यह झूठा अक़ीदा ख़ुदा की सम्पूर्ण शक्ति और उसकी अपार कृपा दोनों के उलट है। (देखो हज़रत मिर्ज़ा साहिब की रचनाएँ, अन्वारुल इस्लाम, अन्जाम-ए-आथम, नुज़ूलुल मसीह, हक़ीक़तुल वह्यी, इत्यादि)

इसीलिए ख़ुदा तआला फ़रमाता है कि -

وَاللّٰهُ غَالِبٌ عَلٰۤى اَمۡرِهٖ (सूरह यूसुफ 12:22)

फिर ख़ुदा के बारे में यह मतभेद था कि मानो उसने बनी इस्राईल और बनी इस्माईल (अर्थात इस्राईल और इस्माईल के वंशजों) के अतिरिक्त किसी दूसरी क़ौम में पैग़म्बर नहीं भेजा और अपनी कृपा दृष्टि हेतु इन्हीं दो गिरोहों को विशिष्ट कर लिया। मगर आपने प्रमाणों के साथ इस विचारधारा को झूठी साबित किया और बौद्धिक एवं उद्धृत (उदाहृत) प्रमाणों से यह साबित कर दिया कि हर क़ौम ने ख़ुदा के संवाद और संबोधन से हिस्सा पाया है और हर क़ौम में उसके पैग़म्बर आते रहे हैं। जैसा कि क़ुरआन फ़रमाता है कि -

اِنۡ مِّنۡ اُمَّةٍ اِلَّا خَلَا فِيۡهَا نَذِيۡرٌ (35:25 सूरह फातिर)

(अर्थात हर क़ौम में अवतार भेजे गए हैं। अनुवादक)

अत: आपने हिन्दुओं के कृष्ण, बौद्ध धर्म के गौतम बुद्ध चीन वालों के कन्फ्यूशियस और पारसियों के ज़रतुश्त की पैग़म्बरी को भी स्वीकार किया और अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों में एक क्रान्ति की हालत पैदा कर दी। (देखो हज़रत मिर्ज़ा साहिब का लेक्चर बिच्छूवाली लाहौर, चश्मा-ए-मा'रिफ़त, पैग़ाम-ए-सुलह)

फिर ख़ुदा के इल्हाम के बारे में यह मतभेद था कि ख़ुदा का इल्हाम शब्दों में नहीं होता बल्कि केवल एक भाव मन में डाला जाता है। मानो वे अच्छे या सुन्दर विचार जो दिल में पैदा होते हैं वही इल्हाम हैं। आप ने इस विचार को ग़लत साबित कर दिया और क़ुरआन की शिक्षा, बौद्धिक प्रमाण और अनुभव के आधार पर साबित किया कि यद्यपि ख़ुदा का सांकेतिक (अर्थात सूक्ष्म और अस्पष्ट) आदेश भी ख़ुदा के आदेश की एक क़िस्म है पर अधिक श्रेष्ठ और अधिक सुरक्षित आदेश शब्दों के द्वारा अवतरित होता है और क़ुरआनी वह्यी भी इसी प्रकार में शामिल थी। (देखो बराहीन अहमदिया, नुज़ूलुल मसीह इत्यादि)

फिर ख़ुदा की क़ुबूलियत-ए-दुआ की विशेषता के बारे में यह मतभेद था कि कुछ मुसलमान यह समझने लग गए थे कि दुआ केवल एक इबादत है अन्यथा यह नहीं होता कि किसी की दुआ के कारण ख़ुदा अपने निर्णय या इरादा को बदले। आपने इस विचार को प्रमाणों से गलत साबित किया और क़ुरआनी शिक्षा, घटनाओं और अनुभव के ठोस प्रमाण से इसका झूठा होना साबित किया। (देखो हज़रत मिर्ज़ा साहिब की रचनाएँ आइना कमालात-ए-इस्लाम व बरकातुद्दुआ)

फिर ख़ुदा के बारे में यह मतभेद था कि मानो वह अपने कुछ भक्तों को अपने अधिकार दे देता है और फिर उसके ये भक्त भी स्थाई तौर पर ख़ुदा की तरह ख़ुदाई शक्तियाँ दिखाने लगते हैं। इस विचारधारा ने इस्लाम में बहुत सी झूठी बातों और क़िस्सों से भरे कागज़ों का एक पुलिन्दा खड़ा कर दिया था। आपने इसको प्रमाणों के साथ ग़लत

साबित किया। (देखो हज़रत मिर्ज़ा साहिब की डायरियाँ इत्यादि)

फिर ख़ुदा के बाद फ़रिश्तों के बारे में भी बहुत से मतभेद थे जैसे यह कि उनका तत्व क्या है और क्या-क्या काम हैं और वे किस तरह काम करते हैं ? और उनकी आवश्यकता क्या है इत्यादि इत्यादि ? आपने बड़ी तर्कपूर्ण बहसों के साथ इन सूक्ष्म विषयों पर प्रकाश डाला और इस विषय में एक सच्ची-सच्ची राह दिखलाई। (देखो हज़रत मिर्ज़ा साहिब की रचनाएँ तौज़ीह मराम, आईना कमालात-ए-इस्लाम और हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी की रचनाएँ मलाइकतुल्लाह इत्यादि)

फिर पैग़म्बरी के सिलसिला के बारे में मतभेद था कि हर प्रकार की नुबुव्वत आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पर ख़त्म हो गई है और अब कोई व्यक्ति चाहे वह आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से ही फ़ैज़ (वरदान) पाने वाला और आप की ही शरीअत (धर्म विधान) का सेवक हो नबी नहीं हो सकता। आपने प्रमाणों के साथ साबित किया कि खात्मुन्नबीयीन का वह अर्थ नहीं जो समझा गया है और पैग़म्बरी का सिलसिला बन्द होने से यह तात्पर्य नहीं कि अब किसी प्रकार का भी नबी नहीं आ सकता। क्योंकि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के बाद केवल शरीअत वाली नुबुव्वत का द्वार बन्द हुआ है। बिना शरीअत वाली और प्रतिरूपक नुबुव्वत का द्वार बन्द नहीं हुआ। यदि नुबुव्वत के सारे प्रकार बन्द और समाप्त समझे जाएँ तो इसका अर्थ यह होगा कि नऊज़बिल्लाह (ख़ुदा की पनाह) आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का अस्तित्व मुसलमानों से एक बड़ी रहमत और ख़ुदा के इनाम छीनने का कारण बना है। अत: आप ने तर्क और बुद्धि से इस विषय का झूठा होना साबित किया। (देखो हज़रत मिर्ज़ा साहिब की रचनाएँ एक ग़लती का इज़ाला, तोहफ़ा गोलड़विया, नुज़ूलुल मसीह, हक़ीक़तुल वह्यी इत्यादि)

फिर नबियों और रसूलों के बारे में यह ख़तरनाक मतभेद था कि

मसीह नासरी के अतिरिक्त कोई नबी निष्पाप और शैतान के स्पर्श से अछूता नहीं, मानो सब नबी गुनहगार हैं। आप ने ठोस प्रमाणों से इस विचार को ग़लत साबित किया और बड़े ठोस लेखों द्वारा इस विषय में वास्तविकता को स्पष्ट किया। (देखो हज़रत मिर्ज़ा साहिब का लेख इस्मत-ए-अम्बिया जो रीवियू आफ़ रिलीजन्ज़ में है और नूरुल क़ुरआन आदि)

फिर नबुवत के अर्थ के बारे में अर्थात यह कि नबी क्या होता है? और नबी के मुक़ाम से क्या आशय है बहुत ही गलत विचार पैदा हो गए थे। आपने उनको प्रमाणों के साथ स्पष्ट किया। (देखो हक़ीक़तुल वह्यी)

फिर मौत के बाद की ज़िन्दगी और प्रतिफल एवं दण्ड और जन्नत और दोज़ख़ (स्वर्ग और नर्क) की वास्तविक्ता के बारे में अजीब-अजीब प्रकार के विचार पैदा हो गए थे जिनके कारण दूसरों को इस्लाम पर आरोप लगाने का बहुत अवसर मिल गया था। जन्नत और दोज़ख की वास्तविक्ता के बारे में तो ऐसे-ऐसे विचार प्रकट किए गए थे कि ख़ुदा की पनाह! आप ने उसके बारे में बहुत सूक्ष्म और तर्कपूर्ण लेख लिखे और क़ुरआन एवं हदीस से असल सच्चाई को स्पष्ट किया। जिसका परिणाम यह हुआ कि दुश्मन भी जो पहले आरोप लगाता था उन लेखों की सराहना करने लगा। (देखो ''इस्लामी उसूल की फिलास्फी'' इत्यादि)

फिर तक़दीर का विषय सदैव से बहस का अखाड़ा रहा है और इसमें मतभेदों की कोई सीमा नहीं रही। आप ने इसे ऐसा स्पष्ट किया कि अब एक बच्चा भी इसे समझ सकता है। (यह विषय आपकी विभिन्न रचनाओं में खण्ड-खण्ड के रूप में वर्णित हुआ है उदाहरण के तौर पर देखो चश्मा मारिफत, जंगे मुक़द्दस और एक स्थान पर पूरी बहस के लिए देखें ''तक़दीर-ए-इलाही'' लेखक हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह सानी)

फिर ख़िलाफ़ते राशिदा के बारे में सुन्नियों और शियों के मतभेद प्रकाशित और मशहूर हैं इनमें आप ने सच्चा निर्णय किया। (देखो हज़रत मिर्ज़ा साहिब की रचनाएँ ''सिर्रुल ख़िलाफ़ा और हुज्जतुल्लाह'' इत्यादि और आपके सहाबी हज़रत मौलवी अब्दुल करीम साहिब की रचना ''ख़िलाफ़ते राशिदा'')

फिर क़ुरआन और हदीस के मुक़ाम व मर्तबा के बारे में, अर्थात इन दोनों में से कौन दूसरे पर न्यायक है, ऐसे विचार प्रकट किए गए हैं कि उन्हें सुनकर एक मुसलमान का बदन काँप उठता है। मुसलमानों के एक फ़िर्क़ा ने क़ुरआन को पीठ के पीछे डाल दिया है और हदीस के आगे एक बुत (अर्थात बेजान) की तरह गिर गए थे। आपने इन विषयों पर बड़ी-बड़ी बुद्धिपरक और सूक्ष्म बहसें कीं और एक तरफ तो सुन्नत को हदीस से अलग विषय साबित किया और दूसरी ओर क़ुरआन, सुन्नत और हदीस का अलग-अलग मुक़ाम व मर्तबा प्रमाणों और तर्कों से निर्धारित किया। (देखो अल्हक़ लुधियाना, रीवियू बर मुबाहिसा चकड़ालवी, कश्ती नूह, इत्यादि)

फिर अहले फ़िक़्क़ा और अहले हदीस के मतभेद और आपस की खींचतानियाँ मशहूर हैं। आप ने प्रमाणों को प्रस्तुत करके दोनों को उनकी ग़लती से आगाह किया। तथा दोनों की जो-जो खूबियाँ थीं उनको भी स्पष्ट किया और इफ़रात-तफ़रीत (अति एवं अल्प) के मध्य संतुलित मार्ग प्रशस्त किया। (देखो फ़तावा अहमदिया इत्यादि)

फिर मोजेज़ात की वास्तविक्ता और चमत्कारों एवं करामात के दर्शन (तत्वज्ञान) के बारे में पदार्थवादियों (नास्तिकों) और अहले हदीस और हनफ़ियों में मतभेदों की कोई सीमा न थी। आपने इस विषय पर वे व्यापक और तर्कपूर्ण बहसें कीं कि किसी मतभेद की गुंजाइश न छोड़ी। (देखो सुर्मा चश्म आर्या, बराहीन अहमदिया, चश्मा मारिफत हक़ीक़तुल वह्यी इत्यादि)

फिर जिहाद का विषय एक भयानक रूप धारण कर गया था।

जिससे इस्लाम पर एक बद्नुमा धब्बा लगता था कि मानो इस्लाम धार्मिक विषयों में बलप्रयोग की शिक्षा देता है। आपने खुले-खुले प्रमाणों के साथ इसे स्पष्ट किया और لَآ اِكْرَاهَ فِي الدِّيْنِ (अर्थात धर्म में कोई ज़ोर-ज़बरदस्ती नहीं) के नियमों के अनुसार सच्ची-सच्ची राह दिखलाई। (देखो रिसाला जिहाद, हक़ीक़तुल महदी, चश्मा मा'रिफ़त, जंगे मुक़द्दस)

फिर नबियों के परोक्षज्ञान के बारे में काल्पनिक धारणा और उसका फलसफा चर्चाओं का विषय होने के बावजूद घोर अन्धकार में पड़ा हुआ विषय था। आपने लेखों और प्रवचनों से इस पर मानो एक सूरज चढ़ा दिया। (देखो अन्जाम-ए-आथम, अन्वारुल इस्लाम, हक़ीक़तुल वह्यी इत्यादि)

फिर फ़िक़्क़ा के विषयों में तो मतभेदों की कोई सीमा ही न थी। आपने कुछ निम्नकोटि के मतभेदों को तो रहने दिया और इसको उम्मत के लिए एक रहमत बताया और कुछ में प्रमाणों को प्रस्तुत करके सही-सही राह बतलाई। (देखो आपकी डायरियाँ और फतावा अहमदिया इत्यादि)

यह कुछ मतभेदों की संक्षिप्त सूची है जो मुसलमानों में पैदा हो चुके थे। जिनके बारे में हज़रत मिर्ज़ा साहिब ने न्यायक होकर निर्णय किया। यदि मुसलमानों के मतभेद और उन पर हज़रत मिर्ज़ा साहिब का निर्णय पूर्णत: बयान किया जाय तो एक मोटी किताब बन जाए। इसलिए यहाँ पर केवल कुछ बड़े-बड़े मतभेद उदाहरण के तौर पर संक्षिप्त रूप से बयान किए गए हैं।

इस जगह यदि कोई व्यक्ति यह सन्देह करे कि मतभेदों के बारे में तमाम् उलमा अपनी-अपनी राय प्रकट करते ही आए हैं हज़रत मिर्ज़ा साहिब ने इस विषय में क्या कुछ बढ़ाया है ? तो यह एक व्यर्थ भ्रम होगा। क्योंकि राय का प्रकट करना और बात है और न्यायक होकर किसी बात का निर्णय कर देना बिल्कुल और बात है। राय तो एक

बच्चा भी प्रकट कर सकता है मगर हज़रत मिर्ज़ा साहिब ने जिस ढंग से मुसलमानों के मतभेदों का निर्णय किया है वह अपने अन्दर कुछ महत्वपूर्ण विशेषताएँ रखता है। जिनसे आपके न्यायक होने पर बहुत बड़ी रोशनी पड़ती है। और वे विशेषताएँ निम्नलिखित हैं :-

1. आपने किसी विषय में किसी पक्ष का पक्षपाती बन कर राय नहीं दी बल्कि हमेशा एक न्यायक के तौर पर राय दी है। इसलिए आपके निर्णय ईर्ष्या-द्वेष के विषैले असर से बिल्कुल पवित्र हैं और यह एक बहुत बड़ी विशेषता है। जो व्यक्ति आपके निर्णयों को देखेगा वह यह महसूस करने पर मजबूर होगा कि आप का हर निर्णय न्यायपूर्ण और निष्पक्ष है।

2. आपने केवल राय ही प्रकट नहीं की बल्कि बौद्धिक एवं उदाहृत दोनों पहलुओं से प्रमाणों का एक सूरज चढ़ा दिया है और सत्याभिलाषियों के लिए किसी मतभेद की गुंजाइश नहीं छोड़ी। जिस बात पर भी आपने क़लम उठाई उसका सदैव के लिए एक ऐसा निर्णय कर दिया है जो एक पहाड़ की तरह अपनी जगह से हिलाया नहीं जा सकता और कोई उदारचित्त व्यक्ति उसकी सच्चाई का लोहा माने बग़ैर नहीं रह सकता और हर फैसले के लिए ऐसे उसूल क़ायम किए हैं कि इन्कार करने वालों के लिए भागने की कोई जगह नहीं छोड़ी।

3. आपने ख़ुदाई शक्तियों और निशानों के ज़ोर से अपनी हर बात क़ायम की है अर्थात केवल बुद्धि और विवरण ही से अपनी बात साबित नहीं की बल्कि इन्कार करने वाले के विरोध पर ख़ुदा के समर्थन के निशान दिखा-दिखाकर अपने फ़ैसलों पर ख़ुदा की मुहर लगा दी है। इसलिए कहाँ यह फैसले और कहाँ मौलवियों की बहसें।

چہ نسبت خاک را با عالم پاک۔

(आसमानी लोगों की दुनियादार लोगों से क्या तुलना। - अनुवादक)

मसीह मौऊद का दूसरा काम

मसीह मौऊद का दूसरा काम दूसरी कौमों द्वारा इस्लाम पर लगाए गए आरोपों का खण्डन करना और दूसरे धर्मों के सम्मुख इस्लाम को विजयी कर दिखाना था और इस्लाम के प्रचार को फैलाकर इस्लाम के नाम पर सारी दुनिया को और विशेषत: पश्चिमी देशों को विजय करना था। यह काम भी जिस कुशलता और विशेषता से हुआ और हो रहा है वह अपनी मिसाल आप ही है। सबसे पहले हम उन बातों को लेते हैं जो मुसलमानों की अपनी ग़लती से इस्लाम के अन्दर पैदा हुईं और दूसरे धर्मों को इस्लाम पर आरोप लगाने का बड़ा अवसर दे दिया। ये वे आन्तरिक मतभेद थे जिनके कारण इस्लाम के चमकदार चेहरे पर धूल छा गई थी। अत: इसके बारे में संक्षेप में बयान किया जा चुका है कि किस तरह हज़रत मिर्ज़ा साहिब ने वह धूल साफ की है। अब केवल वे बातें बयान करना शेष हैं जो विशेष तौर पर मसीह नासरी के बारे में मुसलमानों में पैदा हो गयी थीं और जिनके कारण दज्जाल को इतना बल मिल गया कि वह इस्लामी कैम्प में से कई लाख आदमी निकाल कर ले गया। इन बातों का विवरण यह है कि :-

1. मसीह नासरी के बारे में मुसलमानों की यह धारणा थी कि वह विधाता के विधान के विपरीत इसी भौतिक काया के साथ आसमान पर चले गए और मौत से बचे रहे जबकि नबियों के सरताज मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम मिट्टी में दफ़न हैं।

2. यह धारणा कि मसीह नासरी सृष्टि की उत्पत्ति किया करते थे अतएव कई पक्षी उन्हीं के पैदा किए हुए हैं जबकि किसी दूसरे मनुष्य में यह सामर्थ्य नहीं पाया गया।

3. यह धारणा कि मसीह नासरी वास्तविक मुर्दे जीवित किया करते थे और वह इस तरह कि वे मुर्दे को कहते थे उठ और वह क़ब्र से उठकर उनके साथ हो लेता था। अत: इस तरह उन्होंने हज़ारों मुर्दे

ज़िन्दा किए। परन्तु किसी दूसरे नबी को यह सामर्थ्य नहीं दिया गया।

4. यह धारणा कि मसीह नासरी का वह महान स्थान है कि जब दज्जाल का फ़ित्ना पैदा होगा, जो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के कथनानुसार सब फित्नों से बड़ा फित्ना है, तो उनके अतिरिक्त दूसरे किसी मनुष्य में इस फित्ने को मिटाने की शक्ति न होगी, न मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम में और न किसी अन्य नबी में। इसी लिए केवल मसीह नासरी ही इस काम के लिए मौत से सुरक्षित रखे गए। क्योंकि सम्भवत: ख़ुदा को भी उन जैसा कोई दूसरा सुधारक बनाने की ताक़त न थी।

5. यह धारणा कि मसीह नासरी के अतिरिक्त कोई नबी शैतान के स्पर्श से अछूता नहीं। न (नऊज़ुबिल्लाह) मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम और न कोई दूसरा। सब किसी न किसी गुनाह के दोषी हुए हैं, और नहीं हुआ तो केवल यही मरियम सिद्दीक़ा का अजीबोगरीब बेटा।

ये वे पाँच खतरनाक विचार हैं जो मुसलमानों में मसीह नासरी के बारे में पैदा हो गए थे और जिन्होंने मसीहियत को बहुत अधिक ताक़त दे दी थी। स्पष्ट है कि इन विचारों के होते हुए मुसलमान ईसाइयों के हाथ में एक आसान शिकार थे। अत: ईसाइयों ने इसी दाँव पेंच से कई लाख मुसलमान ईसाई बना लिए और मुसलमान बेचारे उनके सामने मानो बिल्कुल असहाय थे।

अत: एक बार की घटना है कि एक वरिष्ठ ईसाई पादरी लाहौर में प्रवचन दे रहा था और यही बातें मुसलमानों के विरुद्ध बखान कर रहा था उसके श्रोतागण जिनमें कुछ मौलवी भी थे खौफ के मारे सहमे जा रहे थे और वह ईसाइयत का बहादुर सपूत उन बातों को बयान करके बादल की तरह गरज रहा था। संयोगवश हमारे एक प्रिय मित्र मुफ़्ती मुहम्मद सादिक़ साहिब जो आज से कुछ साल पहले अमेरिका में हमारे प्रचारक रह चुके हैं, वहाँ पहुँचे और पादरी साहिब से संबोधित

होकर कहने लगे कि पादरी साहिब! आप ये क्या बातें कहते हैं ? हम तो इन बातों को नहीं मानते और न ये क़ुरआन और हदीस से साबित हैं बल्कि हम तो मसीह को केवल अल्लाह का एक नबी मानते हैं जो अपनी आयु पूरी करके मृत्यु पा गया और उसमें कोई ऐसी विशेष बात न थी जो दूसरे नबियों में न हो बल्कि कई दूसरे नबी उससे बढ़े हुए हैं इत्यादि इत्यादि। पादरी ने मुफ़्ती साहिब की यह बातें सुनी तो कहने लगा, 'ज्ञात होता है कि तुम क़ादियानी हो हम तुमसे बात नहीं करता' और यह कह कर उसने अपना भाषण बन्द कर दिया।

अब देखो यह धारणाएँ कितनी खतरनाक हैं हज़रत मिर्ज़ा साहिब ने इन सब को झूठी और ग़लत सिद्ध कर दिया और क़ुरआन एवं हदीसों से साबित किया कि ये सब विचार बाद की मिलावट हैं जिसकी क़ुरआन और हदीसों में कोई भी जड़ नहीं। इस तरह आपने एक ही बार में दज्जाल की एक टाँग तोड़ दी। क्योंकि दज्जाल की दो टाँगें थीं। एक टाँग तो मुसलमानों के बिगड़े हुए विचार थे जिनके कारण उसे सहारा मिल गया था और इस्लाम के विरुद्ध काम करना बहुत आसान हो गया था और दूसरी टाँग स्वयं दज्जाल के अपने झूठे विचार थे। जिनके बलपर वह एक सैलाब की तरह उमड़ा चला आता था। तात्पर्य यह कि दूसरे धर्मों की ओर से इस्लाम के विरुद्ध जो आरोप लगाए जा रहे थे उनका एक बड़ा भाग स्वयं मुसलमानों के अपने बिगड़े हुए विचारों पर आधारित था। अत: उन झूठे विचारों का तर्कपूर्ण ढंग से पूर्णतया शुद्धीकरण हो जाने से दूसरी क़ौमों की ओर से लगाए जाने वाले आरोपों का एक भाग बिल्कुल भंग हो गया।

यह एक बहुत बड़ी सेवा थी जो मिर्ज़ा साहिब ने की और यह एक बहुत बड़ा एहसान है जो मिर्ज़ा साहिब ने मुसलमानों पर किया। आप के इस काम से मुसलमानों को दो बड़े फ़ायदे पहुँचे।

प्रथम यह कि इन झूठे और गन्दे विचारों के कारण स्वयं मुसलमानों की हालत बड़ी बद्तर हो रही थी और इन विचारधाराओं

ने उनके ईमान की शह्तीर (कड़ी) को घुन लगा रखा था। अतएव इन विचारधाराओं के दूर करने से मुसलमानों की हालत संवर गई और उनका ईमान नष्ट होने से बच गया।

द्वितीय यह कि इन अक़ीदों के कारण इस्लाम दूसरे धर्मों के भयानक आरोपों का निशाना बना हुआ था अर्थात मुसलमानों की इन झूठी विचारधाराओं के कारण भले ही वे साधारण थीं या विशेष, मसीह नासरी के बारे में काफिरों को इस्लाम पर आरोप लगाने का एक बहुत बड़ा अवसर हाथ आ गया था। चूँकि मुसलमान इन झूठे विचारों को अपने दीन-धर्म का अंग समझते थे और स्वत: ही क़ुरआन और हदीस से उनका अनुमान लगाते थे। इसलिए हालत और भी बद्तर हो गई थी। क्योंकि इस दशा में नुकसान केवल मुसलमानों का ही नहीं हो रहा था बल्कि इस्लाम पर भी एक काला धब्बा लगता था। पर इन विचारों के झूठा साबित होने से इस्लाम इस प्रकार के समस्त आरोपों से पूर्णत: सुरक्षित हो गया इस पर ख़ुदा की कोट कोटि प्रशंसा।

मसीह मौऊद के इस काम का दूसरा पहलू यह था कि स्वयं दूसरे धर्मों पर हमलावर होकर उन्हें पराजित किया जाये। अत: यह काम भी बड़ी कुशलता और विशेषता से हुआ और हो रहा है। हिन्दुस्तान (इस जगह विभाजन से पहले का हिन्दुस्तान तात्पर्य है) धर्मों का गढ़ रहा है संसार का दूसरा कोई ऐसा देश नहीं जिसमें इतने धर्म इतने ज़ोर से पाए जाते हों जैसा कि यहाँ पाए जाते हैं। फिर हिन्दुस्तान भी विशेषकर पंजाब प्रान्त धर्मों का केन्द्र है। ईसाइयों का यहाँ ज़ोर है, आर्यों का यहाँ ज़ोर है, सिक्खों का यहाँ ज़ोर है, ब्रह्म समाज का यहाँ ज़ोर है, देवसमाज का यहाँ ज़ोर है तात्पर्य यह कि कोई ऐसा धर्म नहीं जो ज़िन्दगी के कुछ आसार अपने अन्दर रखता हो और फिर पंजाब उससे खाली हो। इसलिए पंजाब ही इस बात के लिए उचित था कि मसीह मौऊद इसमें पैदा किया जाए ताकि सारे धर्म उसके साथ अपना ज़ोर आज़मा कर देख सकें और वह सारे धर्मों का मुक़ाबला करके उनको

पराजित कर सके। अब जानना चाहिए कि हज़रत मिर्ज़ा साहिब ने इन सब धर्मों पर दोनों रूप से अकाट्य एवं निर्णायक बहस की अर्थात पहले बुद्धि और उदाहृत प्रमाणों से उनका झूठा होना साबित किया। द्वितीय ख़ुदाई निशानों और रूहानी ताक़तों के द्वारा उन्हें पराजित करके इस्लाम को विजयी कर दिखाया।

हज़रत मिर्ज़ा साहिब का ईसाइयत से मुक़ाबला

पहले हम ईसाइयत का वर्णन करते हैं क्योंकि कई दृष्टिकोण से इसका पहले अधिकार है। अत: जानना चाहिए कि ईसाइयत की बुनियाद तीन सिद्धान्तों पर है :-

प्रथम तस्लीस – अर्थात यह धारणा कि ख़ुदा के तीन अक़्नूम (मूल तत्व) हैं। (1) बाप, जो आमतौर पर ख़ुदा कहलाता है। (2) बेटा, अर्थात मसीह नासरी जो मनुष्य के रूप में संसार में आया। (3) रुहुल क़ुदुस जो मानो बेटे और बाप के बीच माध्यम है।

ईसाइयों के निकट यह तीन ख़ुदा अलग-अलग स्वतन्त्र ख़ुदा हैं। परन्तु फिर भी ईसाइयों की धारणा के अनुसार ख़ुदा तीन नहीं हैं बल्कि एक ही ख़ुदा है।

द्वितीय – ईसाइयत का दूसरा अक़ीदा उलूहियते मसीह (अर्थात मसीह को ख़ुदा मानना) है। अर्थात यह धारणा कि मसीह नासरी जो संसार में अवतरित हुआ वह यद्यपि मनुष्य के वेश में उतरा था परन्तु वस्तुत: वह ख़ुदा अर्थात ख़ुदा का बेटा था और ख़ुदा ने उसे इसलिए भेजा था कि वह अपने बलिदान से मानवजाति को पाप से मुक्ति दे।

तृतीय इस धर्म का मूल अक़ीदा कफ़्फ़ारा: है – अर्थात यह कि मसीह नासरी ने सूली पर मरना जो मूसवी शरीअत (धर्मशास्त्र) के अनुसार एक लानती (धिक्कृत) मौत थी मानवजाति के लिए बर्दाश्त की। इस तरह से उन समस्त लोगों के पाप जो उसके सूली पर मरने

पर ईमान लाए उसने अपने सिर पर उठा लिए और वह इस लानत के बोझ के नीचे तीन दिन तक दबा रहा उसके बाद वह ज़िन्दा होकर फिर पहले की तरह अपने बाप के दाएँ हाथ पर आसमान पर जा बैठा।

इन बुनियादी धारणाओं के बारे में ईसाइयों का यह अक़ीदा भी है कि बिना बदल के रहम अर्थात तौबा और क्षमायाचना पर गुनाह माफ़ करना ख़ुदा की विशेषता, न्यायशक्ति के विपरीत है और यह कि इन्सान को गुनाह का तत्व आदम और हव्वा से विरासत में मिला है। अत: कोई मनुष्य पूर्णत: गुनाह से नहीं बच सकता और चूँकि दूसरी ओर गुनाह माफ नहीं होता इसलिए आवश्यक हुआ कि मुक्ति के लिए किसी अन्य दूसरी चीज़ की आवश्यकता पड़े और यह वही कफ़्फ़ार: अर्थात मसीह की सलीबी मौत है। फिर उनका यह भी अक़ीदा है कि शरीअत एक लानत है जिससे हमें मसीह ने आज़ाद कर दिया इत्यादि इत्यादि।

इस प्रारम्भिक नोट के बाद उस महान और पवित्र जंग का वर्णन किया जाता है। जो हज़रत मिर्ज़ा साहिब और ईसाई जगत के मध्य घटित हुई। जिसका परिणाम यह हुआ कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के कथनानुसार सलीब टूट गई और दज्जाल के क़त्ल के आसार ज़ाहिर हो गए। यों तो हज़रत मिर्ज़ा साहिब प्रारम्भ से ही ईसाइयों के साथ इस रूहानी जंग का कुछ न कुछ सिलसिला जारी रखते थे। अत: इस बात की विश्वस्त गवाही मौजूद है कि जब आप बिल्कुल नौजवान थे और स्यालकोट में नौकरी करते थे पादरी बटलर इत्यादि के साथ आपकी धार्मिक बातचीत होती रहती थी और फिर बराहीन अहमदिया का इश्तिहार भी मानो सब ईसाइयों के लिए चैलेन्ज था। मगर विशेषरूप से 1884 ई. में जब बराहीन अहमदिया का चौथा भाग प्रकाशित हुआ तो आपने अंग्रेज़ी और उर्दू में बीस हज़ार की संख्या में एक इश्तिहार छपवाकर प्रकाशित किया और उस इश्तिहार को फैलाने का काम इतना व्यापक तौर पर किया कि

यूरोप के विभिन्न देशों और अमेरिका और दूसरे देशों में भी अधिकता के साथ वितरित किया और तमाम् बड़े-बड़े आदमियों को जिनमें शहंशाह, बादशाह, गणतांत्रिक देशों के अध्यक्ष और राष्ट्र के दूरदर्शी एवं राजनैतिक लीडर और दार्शनिक तथा धार्मिक अगुवा भी शामिल थे इत्यादि को रजिस्ट्री डाक से पत्र भिजवाया, यद्यपि इस इश्तिहार में सब धर्मों के लोग संबोधित थे लेकिन ईसाई धर्म के अनुयायियों में विशेषरूप से वितरित किया गया। इस इश्तिहार में यह बयान किया गया था कि मुझे अल्लाह तआला ने मसीह नासरी के पगचिन्हों पर इस शताब्दी का मुजद्दिद (सुधारक) बनाकर भेजा है और मैं सारी दुनिया को संबोधित करके कहता हूँ कि ख़ुदा तक पहुँचाने वाला धर्म केवल इस्लाम ही है जो व्यक्ति मेरे इस दावे का प्रमाण चाहे वह मुझ से हर तरह तसल्ली करा सकता है और सत्याभिलाषियों को ख़ुदाई निशान भी दिखाए जाएँगे इत्यादि इत्यदि। (देखो तब्लीग़-ए-रिसालत अर्थात मज्मुआ इश्तिहारात हज़रत मिर्ज़ा साहिब जिल्द 1)

इस इश्तिहार के कुछ समय पश्चात ही आपने एक छपा हुआ पत्र भी प्रसिद्ध ईसाई पादरियों, आर्य साहिबों, ब्रह्म साहिबों, नास्तिकों एवं मुख़ालिफ मौलवियों के नाम भेजा और उसमें लिखा कि जो व्यक्ति इस्लाम की सच्चाई में कोई सन्देह करता हो या जिसे मेरे इल्हाम और सुधारक होने के दावे पर शक हो या जो चमत्कार इत्यादि का पूर्णत: इन्कारी हो तो मैं ख़ुदा से वादा पाकर उसे आमन्त्रित करता हूँ कि यदि वह सत्याभिलाषी बनकर एक वर्ष तक मेरे पास क़ादियान में आकर रहेगा तो अवश्य कोई न कोई ख़ुदाई निशान देख लेगा और यदि इस अवधि में कोई चमत्कारी निशान प्रकट न हुआ तो मैं हर्जाना या जुर्माना के तौर पर दो सौ रुपए मासिक की दर से कुल 2400/- (दो हज़ार चार सौ) रुपये नकद ऐसे व्यक्ति के सुपुर्द कर दूँगा। वे जिस तरह चाहें अपनी तसल्ली करा लें। (देखो तब्लीग़-ए-रिसालत)

अब देखो फैसले का यह ढंग कितना सच्चाई पर आधारित था।

पादरी साहिबान अपने में से किसी को चुनकर एक साल के लिए क़ादियान भिजवा देते और कुछ नहीं तो उन्हें अपने मिशन की सहायता के लिए ढ़ाई हज़ार रुपया ही मिल जाता और इस्लाम की पराजय और उनकी विजय अलग होती और कम से कम हज़रत मिर्ज़ा साहिब और उनके श्रद्धालुओं के मुँह तो ज़रूर बन्द हो जाते। मगर अच्छी तरह याद रखो कि झूठ, सच के सामने आने से हमेशा घबराता है। सिवाए इसके कि उसकी मौत उसे खींचकर इधर ले आए और यहाँ तो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने पहले ही यह भविष्यवाणी कर दी थी कि दज्जाल मसीह मौऊद के सामने आने से पानी में नमक की तरह पिघलेगा और उससे भागेगा, फिर वह किस तरह सामने आता ? हज़रत मिर्ज़ा साहिब ने केवल साधारण तहरीक पर ही बस नहीं किया बल्कि व्यक्तिगत रूप से भी कई पादरियों को ग़ैरत दिलाई और ज़ोरदार तहरीकें कीं मगर कोई पादरी सामने न आया। बटाला में जो क़ादियान से केवल ग्यारह-बारह मील की दूरी पर है उस काल में पादरी व्हाइट ब्रेख्ट साहिब मौजूद थे उनको भी बहुत जगाया पर उन्होंने भी करवट न बदली। अब देखो कि यह आरोपी ठहराने वाला कैसा स्पष्ट प्रमाण है जो इस क़ौम पर पूरा हो गया।

अन्तत: सन् 1893 ई. में यह हुआ कि अमृतसर के पादरियों ने इस शर्त के अनुसार तो फैसला मन्ज़ूर न किया, लेकिन मुनाज़रा (शास्त्रार्थ) करना मन्ज़ूर कर लिया। अत: ईसाइयों की ओर से मिस्टर अब्दुल्ला आथम ई.ए.सी. मुनाज़रा करने वाले (शास्त्रार्थकर्ता) और पादरी टामस हावल और पादरी ठाकुरदास इत्यादि उनके सहायक नियुक्त हुए और इस्लाम की ओर से हज़रत मिर्ज़ा साहिब मुनाज़रा करने वाले नियुक्त हुए और अमृतसर में यह मुबाहसा शुरू हुआ। ईसाइयों की ओर से मिस्टर मार्टन क्लार्क जलसा के अध्यक्ष थे और मुसलमानों की ओर से शेख़ ग़ुलाम क़ादिर साहिब फसीह अध्यक्ष थे। पन्द्रह दिन तक यह मुबाहसा चलता रहा। इस मुबाहसा में विजय किस

को मिली? इस प्रश्न के उत्तर में हमें अपनी ओर से कुछ लिखने की आवश्यकता नहीं। मुनाज़रा के जलसे का हाल विस्तारपूर्वक ''जंगे मुक़द्दस'' के नाम से छप चुका है उसके अध्ययन से किसी बुद्धिमान पर यह छिपा नहीं रह सकता कि विजयी कौन रहा और पराजित कौन? परन्तु दो बातें इस मुबाहसा में विशेष रूप से नोट करने योग्य हैं, जो व्यक्ति उन्हें दृष्टि में रखकर इस किताब का अध्ययन करेगा वह एक अनोखा आनन्द पाएगा।

प्रथम यह कि हर धर्म के दावे और प्रमाण के बारे में हज़रत मिर्ज़ा साहिब ने एक अत्यन्त ठोस सिद्धान्त प्रस्तुत किया जो सारे झगड़े की जड़ काट कर रख देता है पर ईसाई साहिबों ने उसकी ओर कोई ध्यान न दिया और न ही वस्तुत: वे ध्यान दे सकते थे क्योंकि ऐसा करने से बिल्कुल असहाय रह जाते। इस सिद्धान्त के बारे में हम आगे चलकर विस्तारपूर्वक लिखेंगे।

दूसरी बात यह है कि जिसे एक बुद्धिमान व्यक्ति महसूस किए बिना नहीं रह सकता कि हज़रत मिर्ज़ा साहिब की ठोस और प्रामाणिक बहस से तंग आकर कई जगह आथम साहिब ने इसके अतिरिक्त अपने लिए भागने की कोई राह नहीं देखी कि मशहूर मसीही अक़ीदा को छोड़कर अपने किसी व्यक्तिगत अक़ीदे की आड़ में पनाह ले लें। अत: कई जगह उनके दावे और दलीलें मशहूर मसीही अक़ीदों से उलट नज़र आती हैं और कई जगह उन्होंने अपना पहलू भी बदला है। अतएव यह भी हज़रत मिर्ज़ा साहिब के विजय पाने का एक स्पष्ट प्रमाण है। अन्यथा यह तो स्पष्ट है कि दुश्मन चाहे कैसा भी निरुत्तर हो जाए, चुप नहीं हुआ करता। अत: यह मुबाहसा इस्लाम के लिए एक उच्चकोटि का सफल मुबाहसा हुआ और मसीहियों को खुली-खुली पराजय मिली। (देखो जंगे मुक़द्दस)

इसके बाद पादरी फ़तह मसीह ने हज़रत मिर्ज़ा साहिब के मुक़ाबले पर मैदान में आना चाहा परन्तु ऐसी मुँह की खाई कि फिर सिर न

उठाया। हाँ अपनी बद्ज़बानी का एक रिकार्ड छोड़ गया। हज़रत मिर्ज़ा साहिब ने उसके ऐतराज़ों की धज्जियाँ उड़ा दीं। (देखो नूरुल क़ुरआन)

इसके बाद फिर किसी पादरी की यह हिम्मत न हुई कि आप के सामने खड़ा होता। परन्तु आपने अपना काम जारी रखा और नूरुल हक़, "सिराजुद्दीन ईसाई के चार सवालों का जवाब" और "किताबुल बरीय:" जैसी अत्यन्त ठोस किताबें लिखीं। इसके अतिरिक्त सन् 1900 ई. में पंजाब के लार्ड बिशप रीवर्नड जार्ज लैफराय लाहौर को चैलेन्ज देकर ईसाइयों पर हुज्जत पूरी की। इस चैलेन्ज में आपकी तहरीक से अहमदियों की एक जमाअत ने बिशप साहिब को एक लिखित अनुरोध पत्र दिया, जिसमें लिखा कि चूँकि आप इस देश में समस्त मसीहियों के मुखिया हैं और आपका उत्तरदायित्व भी है कि सत्याभिलाषियों की संतुष्टि कराएँ और आप एक प्रकार से मुसलमानों को मुबाहसा का चैलेन्ज भी दे चुके हैं इसलिए हम आपको आपके यीसुमसीह की क़सम देकर कहते हैं कि इस अवसर पर पीछे न हटें और सच और झूठ का निर्णय होने दें और इस्लाम और ईसाइयत की सच्चाई के बारे में हज़रत मिर्ज़ा साहिब के साथ लाहौर में एक विधिवत् मुबाहसा करके लोगों पर उपकार करें अत: बड़े ललकार पूर्ण शब्दों में बिशप साहिब को मुबाहसा की ओर बुलाया गया पर बिशप साहिब को मुकाबले में आने की हिम्मत न हुई और उन्होंने बहाने बनाकर बात टाल दी। (देखो रीवियू आफ रिलीजन्ज़ क़ादियान)

इसके बाद सन् 1902 ई. में हज़रत मिर्ज़ा साहिब ने यूरोप और अमेरिका में इस्लाम के व्यापक रूप से प्रचार के लिए एक अंग्रेज़ी पत्रिका रीवियू आफ रिलीजन्ज़ जारी किया और उसमें इस्लाम की सच्चाई और ईसाई विचारधाराओं के खण्डन के सम्बन्ध में ऐसे-ऐसे ठोस और लाजवाब लेख लिखे कि ईसाइयों के दाँत खट्टे कर दिए। कई निष्पक्ष ईसाइयों ने उन लेखों के अद्वितीय होने को स्वीकार भी किया। आपने बुद्धि और प्रमाण से यह सबित कर दिया कि तसलीस

की धारणा स्वयं बाइबिल के विपरीत है और मानवीय प्रकृति उसे दूर से धक्के देती है बुद्धि के भी स्पष्ट विपरीत है। तीन ख़ुदाओं का होना दो हालतों से खाली नहीं या तो वे तीनों अपने-अपने स्थान में व्यापक और पूर्ण हैं अर्थात ख़ुदा की सम्पूर्ण विशेषताएँ अपने अन्दर रखते हैं या फिर वे तीनों व्यक्तिगत रूप से व्यापक और पूर्ण नहीं हैं बल्कि तीनों मिलकर व्यापक और पूर्ण बनते हैं। पहली दशा में तीन ख़ुदाओं का होना एक व्यर्थ कार्य है क्योंकि जब इन तीनों में से हर एक पूर्ण और सर्वगुणसम्पन्न है तो फिर हर एक अलग-अलग इस संसार को चला सकता है। अत: कोई कारण नहीं कि जहाँ एक ख़ुदा काम दे सके वहाँ तीन ख़ुदा काम करें। और यदि वे अलग-अलग सम्पूर्ण नहीं और एक-एक करके इस संसार को चलाने के योग्य नहीं तो इस दशा में वे सब अधूरे हैं और ख़ुदा नहीं हो सकते। इस प्रकार के प्रमाणों से आप ने बौद्धिक तौर से तसलीस की विचारधारा को ग़लत साबित किया और यह भी साबित किया कि इन्जील जिस पर ईसाइयों का सारा दारोमदार है कदापि तसलीस की विचारधारा का समर्थन नहीं करती बल्कि उसकी मूल शिक्षा तौहीद (एकेश्वरवाद) पर क़ायम थी।

इसी तरह उलूहियते मसीह (अर्थात मसीह को ख़ुदा समझना) की विचारधारा पर वे वार किए कि मसीह को ख़ुदा साबित करना तो दरकिनार ईसाइयों को मसीह नासरी का एक बशरे कामिल (पूर्ण इन्सान) साबित करना भी मुश्किल हो गया। फिर कफ़्फ़ारा पर वे लेख लिखे कि स्वयं कई ईसाइयों को स्वीकार करना पड़ा कि वे ठोस लेख लाजवाब हैं। (उदाहरण के तौर पर देखें 'इस्लामी उसूल की फिलास्फी पर रूस के मशहूर काउन्ट टालस्टाय का रीवियू' जिसका वर्णन आगे आता है)

आपने साबित किया कि कफ़्फ़ारा का सिद्धान्त प्रकृति के विरुद्ध है। ज़ैद के ख़ून से बकर के पापों की क्षमा एक ऐसा विचार है जिसे बुद्धि दूर से ही धक्के देती है। आपने साबित किया कि गुनाह केवल

ईमान और पूर्ण विश्वास से ही दूर हो सकता है उसे किसी ख़ूनी क़ुर्बानी की आवश्यकता नहीं और उद्धृत प्रमाणों की दृष्टि से भी आपने इस विचारधारा को झूठी सिद्ध किया। इसी तरह रहम बिना मुबादला (बदल) की बनावटी आस्था की भी धज्जियाँ उड़ा दीं। तात्पर्य यह कि आपने मसीहियत के बारे में बुद्धि और प्रमाण दोनों के अनुसार अत्यन्त ठोस और पूर्णरूपेण बहसें की हैं और उस पर ऐसे ठोस प्रहार किए हैं कि उसका बच पाना मुश्किल है। (देखो हज़रत मिर्ज़ा साहिब की रचनाएँ, बराहीन अहमदिया, जंगे मुक़द्दस, अन्जाम-ए-आथम, नूरुल क़ुरआन, सिराजुद्दीन ईसाई के चार सवालों का जवाब, किताबुल बरीय:, इस्लामी उसूल की फ़िलास्फ़ी, नूरुल हक़, चश्मा मसीही, तब्लीग-ए-रिसालत, रीवियू आफ रिलीजन्ज़ में छपे लेख इत्यादि)

इस उदाहृत और बौद्धिक बहस के अलावा एक और महान कार्य जो आपने किया और मानो ईसाइयत की इमारत को बुनियादों से उखाड़ कर फेंक दिया यह आपकी वह महान ऐतिहासिक खोज है जो आपने सलीब की घटना और मसीह नासरी की क़ब्र के बारे में की है। आपने इन्जील और इतिहास से सूर्य समान स्पष्ट कर दिया है कि :-

प्रथम – मसीह नासरी जिसकी सलीबी मौत पर कफ़्फ़ारा का महल खड़ा किया गया है, वह सलीब पर चढ़ाए तो गए परन्तु वह सलीब पर मरे नहीं बल्कि बेहोशी की हालत में ज़िन्दा ही सलीब से उतार लिए गए और आपने यह बात ऐसे स्पष्ट प्रमाणों के साथ साबित कर दी कि किसी भ्रम और सन्देह की गुंजाइश ही न रही।

द्वितीय – आपने स्पष्ट प्रमाणों के साथ सिद्ध किया कि मसीह नासरी जिन्हें ख़ुदा बनाया गया है मृत्यु पा चुके हैं।

तृतीय – आपने ठोस ऐतिहासिक प्रमाणों से यह बात साबित कर दी कि सलीब की घटना के बाद मसीह अपने देश से हिजरत करके कश्मीर की ओर आ गए थे। फिर आपने अकाट्य प्रमाणों से श्रीनगर

मुहल्ला खानयार में मसीह की क़ब्र भी साबित कर दी।

अब देखो कि यह तीन ठोस खोजें जो आपने ईसाई धर्म के बारे में की हैं कितना महान असर रखती हैं ? और क्या इनके बाद उलूहियते मसीह और कफ़्फ़ार: का कुछ शेष रह जाता है ? हज़रत मसीह यदि सलीब पर नहीं मरे और सलीब से ज़िन्दा उतर आए तो मानो कफ़्फ़ार: खाक में मिल गया फिर अगर मसीह अपनी ज़िन्दगी के दिन गुज़ार कर दूसरे लोगों की तरह मृत्यु पा गए और मिट्टी में दफन हो चुके और उनकी क़ब्र भी मिल गई तो केवल उन्हीं पर नहीं बल्कि उनकी ख़ुदाई पर भी मौत आ गई और मानो वह केवल स्वयं दफन नहीं हुए बल्कि उनकी ख़ुदाई भी दफन हो गई और मसीहियत का सारा जादू धुआँ होकर उड़ने लगा। (देखो 'मसीह हिन्दुस्तान में' और 'राज़-ए-हक़ीक़त' और 'क़ब्रे मसीह' इत्यादि)

फिर हज़रत मिर्ज़ा साहिब ने रूहानी मुक़ाबला के लिए भी ईसाइयों को बुलाया और बार-बार चैलेन्ज दिया कि तुम उन लोगों में से होने का दावा करते हो जो एक राई के दाना के बराबर ईमान रखने पर भी वह कुछ दिखा सकते हैं जो तुम्हारे विचार में मसीह ने दिखाया था, तो अब मेरे मुक़ाबले पर निकलो और अपने ईमान का सबूत दो। मैं मसीह की ख़ुदाई का मुन्किर हूँ। हाँ निःसन्देह वह ख़ुदा के नबियों में से एक नबी था। मगर मुझे ख़ुदा ने उस से बढ़कर दर्जा प्रदान किया है और मैं कफ़्फ़ार: के ख़ूनी अक़ीदा को झूठा समझता हूँ। अब अगर तुम में से किसी को हिम्मत है कि रूहानी विशेषताओं में मेरा मुक़ाबला कर सके तो वह सामने आए और दुआ और रूहानी फायदा पहुँचाने में मेरे साथ मुक़ाबला कर ले फिर देखे कि ख़ुदा किस के साथ है। आप ने लिखा कि क़ुर्आ अन्दाज़ी के द्वारा कुछ भीषण रोगी मुझे दे दो और कुछ तुम ले लो। मैं अपने रोगियों के लिए दुआ करूँगा और अपने ख़ुदा से उनके लिए रोगों से मुक्ति चाहूँगा और तुम अपने रोगियों के लिए अपने मसीह से रोगों से मुक्ति की दुआ माँगना और अपनी

ज़ाहिरी विद्याओं की मदद से उनका इलाज भी करना। फिर हम देखेंगे कि किसका ख़ुदा प्रभुत्व रखने वाला है और कौन विजय पाता है और कौन रुसवा होता है। आपने इस चैलेन्ज को बार-बार दोहराया और इसके बारे में बहुत से इश्तिहार भी दिए और पादरियों को ग़ैरत दिला दिलाकर उभारा और उनके बड़े-बड़े बिशपों को आमंत्रण पत्र भेजे परन्तु किसी को मुक़ाबले में आने की हिम्मत न हुई। (देखो तब्लीग़-ए-रिसालत, रीवियू आफ रिलीजन्ज़, हक़ीक़तुल वह्यी इत्यादि)

क्या इस से बढ़कर और कोई रूहानी मौत हो सकती है जो इस मज़हब को मिली ?

फिर आपने इस महान मुबाहसा (शास्त्रार्थ) के बाद जो सन् 1893 ई. में अमृतसर में ईसाइयों के साथ हुआ था और जंगे मुक़द्दस के नाम से छप चुका है ईसाइयों के शास्त्रार्थकर्ता डिप्टी अब्दुल्ला आथम के बारे में भविष्यवाणी की कि चूँकि उसने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को दज्जाल कहा है और मुझ पर और इस्लाम पर हँसी उड़ाई है और वह एक सरासर झूठे अक़ीदे का मददगार है इसलिए यदि उसने सच की तरफ झुकाव न किया तो वह पन्द्रह महीने में मौत की सज़ा के द्वारा नर्क में गिराया जाएगा। (देखो जंगे मुक़द्दस का आख़िरी लेख)

इस भविष्यवाणी का आथम के दिल पर ऐसा ख़ौफ़ छाया कि वहीं पर उसी सभा में उसने अपनी ज़ुबान मुँह से निकालकर और कानों को हाथ लगाकर कहा कि मैंने तो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को दज्जाल नहीं कहा। हालाँकि वह अपनी किताब ''अन्दरुना बाइबल'' में दज्जाल कह चुका था। फिर उसके बाद ज्यों-ज्यों समयसीमा बीतती गई उसका ख़ौफ़ और बेचैनी बढ़ती गई और वह एक शहर से दूसरे शहर की ओर भागता था और उसे अपने डरावने विचारों में कभी तो नंगी तलवारों वाले दिखाई देते थे और कभी साँप दिखाई देते थे। (देखो बयान मार्टन क्लार्क किताबुल बरीय: सहित)

फिर उसने अपनी क़लम और ज़ुबान को इस्लाम के ख़िलाफ़ लिखने और बकने से बिल्कुल रोक लिया और ज्ञात हुआ है कि उन दिनों में वह अलग बैठकर क़ुरआन शरीफ़ भी पढ़ा करता था यद्यपि उसका डर कम करने के लिए ईसाइयों ने उसके लिए पुलिस के विशेष पहरे का प्रबन्ध भी कर दिया था। लेकिन फिर भी उसका खौफ बढ़ता जाता था। आख़िर उसकी हालत यहाँ तक पहुँच गई कि उनको उसे शराब पिला पिलाकर मदहोश रखना पड़ा। तात्पर्य यह कि हर तरह से उसने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम और इस्लाम की सच्चाई से डरने का इज़्हार किया। जिसके कारण ख़ुदा ने भविष्यवाणी की शर्त के अनुसार समय सीमा के अन्दर उसे नर्क में गिरने से बचा लिया।

लेकिन जैसा कि झूठों की आदत होती है समयसीमा बीतने के पश्चात ईसाइयों ने शोर मचाना शुरू कर दिया कि भविष्यवाणी ग़लत निकली। इस पर हज़रत मिर्ज़ा साहिब ने उनको प्रमाणपूर्वक समझाया कि आथम का बचना भविष्यवाणी के अनुसार हुआ है। क्योंकि यह भविष्यवाणी सशर्त थी अर्थात उसका आशय यह था कि अगर आथम तौबा न करेगा तो पन्द्रह महीने में नर्क में गिराया जाएगा और यदि तौबा करेगा तो इस दशा में बचा रहेगा मानो एक पहलू से उसके मरने और एक पहलू से उसके ज़िन्दा रहने की भविष्यवाणी थी। अतएवं जब उसका डर और उसकी तौबा साबित है तो उसका ज़िन्दा रहना भविष्यवाणी के अनुसार हुआ न कि उलट। परन्तु ईसाइयों ने यह न समझा और न समझना चाहा। इस पर हज़रत मिर्ज़ा साहिब की इस्लामी ग़ैरत जोश में आई और आपने इश्तिहार के द्वारा यह घोषणा की कि यदि आथम इस बात की क़सम खा जाय कि उस पर भविष्यवाणी का डर नहीं छाया रहा और उसने तौबा नहीं की, फिर वह क़सम खाने के बाद एक साल के अन्दर-अन्दर मर न जाए तो मैं उसे एक हज़ार रुपए नक़द इनाम दूँगा और इस दशा में मैं झूठा भी ठहरूँगा और तुम सच्चे साबित होगे और यह रुपया अभी से जिस

मध्यस्थ (पंच) के पास चाहो जमा करवा लो और अपनी तसल्ली कर लो पर आथम साहिब इस बात की ओर न आए।

इस के बाद आपने दूसरा घोषणापत्र दिया कि अगर आथम क़सम खा ले कि मैंने तौबा नहीं की तो हम दो हज़ार रुपया देंगे मगर फिर भी खामोश रहा। इस पर आपने एक तीसरा घोषणापत्र दिया कि अगर आथम क़सम खा ले तो मैं तीन हज़ार रुपया इनाम दूँगा मगर फिर खामोश रहा। फिर आपने चौथा घोषणापत्र दिया कि मैं चार हज़ार रुपया इनाम दूँगा अगर आथम यह क़सम खा ले कि भविष्यवाणी का ख़ौफ़ उसके दिल पर नहीं छाया रहा और उसने सच की ओर झुकाव नहीं किया। आपने लिखा कि अगर तुमने क़सम खा ली तो एक साल में तुम्हारा ख़ात्मा है और इसके साथ कोई शर्त नहीं। लेकिन यदि तुमने क़सम न खाई तो हर बुद्धिमान के निकट सिद्ध हो जाएगा कि तुमने अपनी ख़ामोशी से सच्चाई पर पर्दा डालना चाहा है। इस दशा में यद्यपि मैं एक वर्ष की समय सीमा तो नहीं निर्धारित करता लेकिन यह कहता हूँ कि जल्द तुम्हारा खात्मा है और कोई बनावटी ख़ुदा तुम्हें इस मौत से बचा न सकेगा। फिर इसके बाद आपने 30 दिसम्बर सन् 1895 ई. को एक और घोषणापत्र देकर इस लेख को दोहराया और लिखा कि :-

''मुझे उसी ख़ुदा की क़सम है जिसके हाथ में मेरी जान है कि अगर आथम अब भी क़सम खाना चाहे और इन्हीं शब्दों के साथ जो मैं प्रस्तुत करता हूँ (अर्थात यह कि पन्द्रह महीने की अवधि में उसके दिल पर भविष्यवाणी का डर हावी नहीं हुआ और इस्लाम की सच्चाई का रौब उसके दिल पर नहीं पड़ा और उसने कोई तौबा नहीं की) एक समारोह में मेरे सामने तीन बार क़सम खा ले और हम आमीन (तथास्तु) कहें, तो मैं उसी समय चार हज़ार रुपये उसको दे दूँगा। यदि क़सम की तिथि से एक साल तक वह ज़िन्दा और सलामत रहा तो वह रुपया उसका होगा और फिर इसके बाद यह सारी क़ौमें मुझको जो सज़ा चाहें दें। अगर मुझको तलवार से टुकड़े-टुकड़े भी करें तो

मैं कुछ बहाना न करूँगा और यदि दुनिया की सज़ाओं में से मुझको वह सज़ा दें जो सबसे कठोर है तो मैं इन्कार नहीं करूँगा और स्वयं मेरे लिए इससे बढ़कर कोई रुसवाई नहीं होगी कि मैं उसकी क़सम के बाद जिसका मेरे ही इल्हाम पर आधार है झूठा निकलूँ। (देखो तब्लीग़-ए-रिसालत, जिल्द 4)

प्रिय पाठको! ख़ुदा की क़ुदरत का चमत्कार देखें कि इस आख़िरी घोषणापत्र पर अभी सात महीने नहीं गुज़रे थे कि 27 जुलाई सन् 1896 ई. को आथम हमेशा के लिए दुनिया से मिटा दिया गया। आथम के मरने के बाद भी हज़रत मिर्ज़ा साहिब ने विरोधियों पर तर्क पूर्ण करने के लिए ईसाइयों को ही नहीं बल्कि तमाम् विरोधियों को संबोधित करके लिखा कि :-

''यदि अब तक किसी ईसाई को आथम के उस झूठ पर सन्देह हो तो आसमानी प्रमाण से शक दूर करा ले। आथम तो भविष्यवाणी के अनुसार मृत्यु पा गया। अब वह अपने आपको उसका क़ायम मुक़ाम (प्रतिनिधि) ठहराकर आथम के विषय में क़सम खा ले, अर्थात इस बात की क़सम खा ले कि आथम भविष्यवाणी के तेज से नहीं डरा बल्कि उस पर ये जो हमले हुए थे (अर्थात उसका डर इस लिए था कि मानो हज़रत मिर्ज़ा साहिब की ओर से उसके क़त्ल के लिए कभी तलवारों वाले आदमी भेजे गए और कभी साँप छोड़े गए, कभी कुत्ते सिखाकर भेजे गए इत्यादि इत्यादि नऊज़बिल्लाह) यदि यह क़सम खाने वाला भी एक साल तक बच गया तो देखो मैं इस समय स्वीकार करता हूँ कि मैं अपने हाथ से प्रकाशित कर दूँगा कि मेरी भविष्यवाणी ग़लत निकली। इस क़सम के साथ कोई शर्त न होगी। यह अति स्पष्ट फैसला हो जाएगा और जो व्यक्ति ख़ुदा के निकट असत्य पर है उसका झूठ खुल जाएगा।'' (देखो अन्जाम-ए-आथम, पृष्ठ 15)

परन्तु इस पर भी ईसाइयों का कोई बहादुर सपूत मर्दे मैदान बनकर सामने न आया। अल्लाहु अकबर! यह कितनी बड़ी रुसवाई

और पराजय थी जो इस्लाम के मुकाबले में ईसाइयत को पहुँची। परन्तु जिसके आँख न हो वह कैसे देखे। (पूरी बहस के लिए देखो जंगे मुक़द्दस, अन्वारुल इस्लाम, अन्जाम-ए-आथम इत्यादि)

रुसवाई से भरी आथम की इस मौत ने ईसाई कैम्प में दुश्मनी और ईर्ष्या-द्वेष की भयानक आग भड़का दी। अत: अभी उसकी मौत पर अधिक समय नहीं गुज़रा था कि डाक्टर मार्टन क्लार्क ने जो अमृतसर का एक बहुत मशहूर ईसाई मिशनरी था और अमृतसर के मुबाहसा में भी आथम का सहायक और मददगार रहा था। हज़रत मिर्ज़ा साहिब पर क़त्ल के प्रयास का एक झूठा मुक़द्दमा दायर किया और दावा किया कि मिर्ज़ा साहिब ने अब्दुल हमीद जेहलमी नामक एक व्यक्ति को मेरे क़त्ल के लिए अमृतसर भेजा है और पादरी साहिब महोदय ने डरा धमका और लालच देकर अब्दुल हमीद से अपने मतलब का मुफीद बयान भी दिलवा दिया। लेकिन यह मुक़द्दमा पेश होने से पहले अल्लाह तआला ने हज़रत मिर्ज़ा साहिब को इल्हाम के द्वारा ख़बर दी कि आपके ख़िलाफ एक मुक़द्दमा होने वाला है परन्तु इसका अन्जाम रिहाई है। अतएव आप ने उस इल्हाम को प्रकाशित कर दिया। इसके बाद उस मुक़द्दमे की कार्यवाही शुरू हुई और आर्यों एवं कई मुसलमानों ने उसमें ईसाइयों की मदद की और खुल्लम खुल्ला उनका साथ दिया। आर्य वकीलों ने मार्टन क्लार्क की ओर से मुफ्त मुक़द्दमा की पैरवी की और कई मुसलमान मौलवियों ने बढ़-बढ़कर हज़रत मिर्ज़ा साहिब के ख़िलाफ़ गवाहियाँ दीं। लेकिन अल्लाह तआला ने कप्तान डगलस डिप्टी कमिश्नर गुरदासपुर पर सच्चाई प्रकट कर दी और अन्तत: परिणाम यह हुआ कि अब्दुल हमीद ने कप्तान डगलस के पैरों पर गिर कर इस बात का इक़रार किया कि यह मुक़द्दमा बनावटी है और मुझे पादरियों ने सिखाया था कि इस-इस प्रकार के बयान दो। अत: आप अलैहिस्सलाम अल्लाह तआला के शुभ सन्देश के अनुसार इज़्ज़त के साथ बरी किए गए और ईसाई पादरियों के माथे

पर रुसवाई और पराजय के अलावा झूठ और षड़यन्त्र और क़त्ल के प्रयास का काला धब्बा लग गया और इस्लाम को एक स्पष्ट विजय प्राप्त हुई। (देखो हज़रत मिर्ज़ा साहिब की रचना किताबुल बरीय:)

जब हज़रत मिर्ज़ा साहिब ने देखा कि ईसाइयों में से कोई व्यक्ति दुआ और रूहानी फायदा पहुँचाने के मुकाबला के लिए आगे नहीं आता तो आपने उनको मुबाहला के लिए बुलाया, अर्थात ईसाइयों को आमन्त्रित किया कि यदि तुम्हें अपने मज़हब के सच्चे होने का विश्वास है तो मेरे साथ मुबाहला कर लो अर्थात मेरे मुकाबले पर आकर यह दुआ करो कि हे हमारे ख़ुदा! हम ईसाइयत को सच्चा जानते हैं और इस्लाम को एक झूठा मज़हब समझते हैं और हमारा प्रतिद्वन्दी मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी इस्लाम को सच्चा समझता है और ईसाइयत के अक़ीदों को झूठा ठहराता है। अब हे ख़ुदा! तू जो मामले की सच्चाई को अच्छी तरह से जानता है, तू हम दोनों में सच्चा-सच्चा निर्णय कर और हम में से जो व्यक्ति अपने दावा में झूठा है उसको सच्चे की ज़िन्दगी में एक साल के अन्दर-अन्दर अज़ाब में ग्रस्त कर। इसी तरह हज़रत मिर्ज़ा साहिब ने लिखा कि इसी प्रकार मैं भी दुआ करूँगा और फिर हम देखेंगे कि ख़ुदा किसको अज़ाब में ग्रस्त करता है और किस की प्रतिष्ठा प्रकट होती है। परन्तु अफ़सोस! कि ईसाइयों में से इस मुक़ाबला के लिए भी कोई न निकला। (देखो तब्लीग़-ए-रिसालत)

मिस्टर वाल्टर आंजहानी जो एक अमेरिकन पादरी था जिसने सिलसिला अहमदिया का एक संक्षिप्त इतिहास अंग्रेज़ी भाषा में लिखा है इस चैलेन्ज का वर्णन करके लिखता है कि वस्तुत: ईसाई लोग किसी के बारे में बद्दुआ करने और उसकी मौत का इच्छुक होने के स्थान से ऊँचे हैं क्योंकि वे धार्मिक रूप से किसी की भी तबाही और रुसवाई नहीं चाहते। इसलिए कोई ईसाई मिर्ज़ा साहिब के मुक़ाबले पर नहीं आया। खूब! बहुत खूब!! परन्तु हल योग्य बात यह रह जाती है

कि आथम की तय अवधि पर शहरों में जुलूस निकलवाने और स्वाँग भरने और फिर उसकी मौत पर ग़ुस्से में आकर क़त्ल के प्रयास के झूठे और बनावटी मुक़द्दमे करने और हज़रत मिर्ज़ा साहिब को क़ैद कराके फाँसी दिलवाने या आजीवन काला पानी भिजवाने इत्यादि के लिए तो हे ईसाइयत के दयालु सज्जनो ! तुम तैयार हो और तुम्हारा धर्म तुम्हारे हाथ को नहीं रोकता। मगर इस्लाम और मसीहियत में सच्चा-सच्चा निर्णय कराने के लिए ख़ुदा के समक्ष दुआ के लिए हाथ उठाते हुए तुम्हें अपना धर्म याद आ जाता है!!! तुमने इस्लाम और इस्लाम के संस्थापक के ख़िलाफ़ लेख और भाषण में ज़हर उगलने और गालियों से अपनी किताबों के पन्ने के पन्ने काले कर देने को तो जाइज़ रखा है और इस्लाम को नुकसान पहुँचाने का कोई मौक़ा हाथ से नहीं जाने देते। मगर जहाँ धार्मिक झगड़ों का मुक़द्दमा ख़ुदा की अदालत में प्रस्तुत किया जाता है वहाँ तुम्हें एक गाल पर तमाचा खाकर मारने वाले की तरफ दूसरा गाल फेर देने के विषय पर अमल करने की सूझती है। इन्हीं बातों के कारण तो हदीस में तुम्हारा वह नाम रखा गया, जो रखा गया। फिर यह तो बताओ कि मानो मुबाहला में तो मसीहियत की मुहब्बत की शिक्षा रोक बनी, लेकिन सामने आकर निशान देखने और दिखाने और रोगियों के चंगा होने के लिए आमने-सामने दुआ करने में कौन सी बात रोक थी ?

यह तो एक जुमल: मोअतरिज़ा (कोष्ठकबद्ध वाक्य) था। तात्पर्य यह है कि हज़रत मिर्ज़ा साहिब ने मसीहियों को हर तरह से मुबाहला के लिए बुलाया लेकिन किसी को सामने आने की हिम्मत न हुई पर ख़ुदा को इस रंग में भी इस्लाम की विजय और मसीहियत की पराजय दिखानी मंजूर थी। जैसा कि उन्हीं दिनों अमेरिका में डोई नामक एक व्यक्ति खड़ा हुआ जो मूलत: स्काटलैण्ड का निवासी था उसने देखते ही देखते अपने पास लोगों का एक बड़ा गिरोह जमा कर लिया और

मसीही क़ौम में अपने दजल (झूठ) का झण्डा फहराया और कहा कि मैं मसीह नासरी का रसूल हूँ और मसीह के बहुत ही जल्द आने की शुभसूचना लेकर आया हूँ और कहा कि मेरा यह भी काम है कि मैं इस्लाम को जड़ से मिटाऊँ। यह व्यक्ति प्रथम श्रेणी का इस्लाम का दुश्मन था और मानो ईसाइयत की मुहब्बत में डूबा हुआ था और उसके समर्थन में एक अखबार भी निकाला करता था जिसका नाम ''लीव्ज़ आफ हीलिंग'' (Leaves of Healing) था। उसने अपने उस अख़बार में लिखा कि ''यदि मैं सच्चा नबी नहीं हूँ तो फिर धरती पर कोई ऐसा आदमी नहीं जो ख़ुदा का नबी हो।'' और लिखा कि ''मैं ख़ुदा से दुआ करता हूँ कि वह दिन जल्द आए कि इस्लाम दुनिया से मिट जाए, हे ख़ुदा! तू ऐसा ही कर। हे ख़ुदा! तू इस्लाम को मिटा दे।'' और यह व्यक्ति आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को भी गालियाँ दिया करता था। अत: यह व्यक्ति पूरे ईसाई जगत में इस्लाम की दुश्मनी और उसके सम्बन्ध में गाली-गलौज करने वालों में से पहले नम्बर पर था। जब हज़रत मिर्ज़ा साहिब को इस फित्ने का पता चला तो आपने एक इश्तिहार के द्वारा उसको मुबाहला के लिए बुलाया और यह इश्तिहार अमेरिका और यूरोप के बहुत से अख़बारों में छपवा दिया। अत: उन अख़बारों की सूची हक़ीक़तुल वह्यी और रीवियू आफ रिलीजन्ज़ में प्रकाशित हो चुकी है।

डोई इतना अहंकारी था कि उसने हज़रत मिर्ज़ा साहिब के उस दावते मुबाहला का जवाब तक न दिया बल्कि अपने अख़बार में केवल यह कुछ पंक्तियाँ लिखकर प्रकाशित कर दीं कि :-

''हिन्दुस्तान में एक बेवकूफ मुहम्मदी मसीह है जो मुझे बार-बार लिखता है कि यसु मसीह की क़ब्र कश्मीर में है और लोग मुझे कहते हैं कि तू इस बात का जवाब क्यों नहीं देता और पुन: कहते हैं कि तू उस व्यक्ति का जवाब क्यों नहीं देता (अर्थात उसके दावते मुबाहला का) मगर क्या तुम सोचते हो कि मैं इन मच्छरों और मक्खियों का

जवाब दूँगा। यदि मैं इन पर अपना पाँव रखूँ तो इनको कुचल कर मार डालूँ।'' फिर दूसरे अंक में लिखता है ''मेरा काम यह है कि मैं पूरब पश्चिम उत्तर और दक्खिन से लोगों को एकत्र करूँ और ईसाइयों को इस (इस से डोई का बसाया हुआ शहर सैहून तात्पर्य है) शहर और दूसरे शहरों में आबाद करूँ, यहाँ तक कि वह दिन आ जाए कि मुहम्मदी मज़हब दुनिया से मिटा दिया जाए। हे ख़ुदा! हमें वह समय दिखला।''

इस पर हज़रत मिर्ज़ा साहिब ने एक घोषणापत्र के द्वारा पुनः डोई को संबोधित किया और लिखा कि तुमने मेरी दावते मुबाहला का जवाब नहीं दिया। अब मैं तुम्हें फिर चैलेन्ज देता हूँ कि मेरे मुकाबले में निकल आओ और मैं तुमको सात माह की ढील देता हूँ यदि तुमने इस अवधि में भी जवाब न दिया तो तुम्हारा पीठ दिखाना समझा जाएगा और तुम्हारे शहर सैहून पर जिसको तुमने मसीह नासरी के अवतरण के लिए बसाया है आपदा आएगी और ख़ुदा मेरे द्वारा इस्लाम का प्रभुत्व प्रकट करेगा इत्यादि इत्यादि। यह घोषणापत्र भी अमेरिका के कई अखबारों में छप गया और हमारी पत्रिका रीवियू आफ रिलीजन्ज़ सन् 1903-1902 ई. में उसका वर्णन है और 20 फरवरी सन् 1907 ई. के एक अख़बार में हज़रत मिर्ज़ा साहिब ने घोषणा की कि ''ख़ुदा फ़रमाता है कि मैं एक ताज़ा निशान प्रकट करूँगा जिसमें बहुत बड़ी विजय होगी और वह सारी दुनिया के लिए एक निशान होगा। (देखो हज़रत मिर्ज़ा साहिब की रचना ''क़ादियान के आर्य और हम'')

अब देखो कि ख़ुदा क्या दिखाता है वह डोई जो हज़रत मिर्ज़ा साहिब के मुक़ाबले के समय एक बड़ी ताक़त का मालिक और एक बड़ी जमाअत का अगुवा था और युवराजों की तरह रहता था और अपने देशवासियों और सहधर्मियों में बड़ा प्रतिष्ठित और संभ्रान्त समझा जाता था और बहुत प्रसिद्ध था। अपनी बद्ज़ुबानियों और

हज़रत मिर्ज़ा साहिब की भविष्यवाणियों के बाद उसकी क्या हालत होती है। सुनो और ध्यान दो :-

1. डोई के बारे में यह साबित हो जाता है कि वह शराब पीता है हालाँकि वह शराब के विरुद्ध उपदेश दिया करता था।

2. यह साबित हो जाता है कि वह जारज (अवैध सन्तान) है।

3. उसके अनुयायी उससे बद्ज़न होकर उसके विरुद्ध हो जाते हैं और उसके कई करोड़ रुपयों पर कब्ज़ा करके उसको उसके शहर सैहून से निकाल देते हैं।

4. पचास वर्ष की आयु में जबकि उसका स्वास्थ्य बहुत अच्छा था उस पर लक़्वा गिरता है जो उसे चल फिर न सकने योग्य बना देता है।

5. फिर अन्ततः हज़रत मिर्ज़ा साहिब के आख़िरी घोषणापत्र 20 फ़रवरी सन् 1907 ई. के कुछ ही दिन बाद अर्थात 11 मार्च सन् 1907 ई. को अखबारों में यह समाचार छपता है कि लक्वाग्रस्त और नामुराद डोई इस संसार से गुज़र गया। (डोई से सम्बन्धित भविष्यवाणी के बारे में विस्तारपूर्वक बहस और संबंधित तिथियों के लिए देखो किताब ''डोई का इबरतनाक अंजाम'' लेखक चौधरी खलील अहमद साहिब नासिर मुबल्लिग़ वाशिंगटन, अमेरिका)

देखो यह कितना बड़ा निशान है जो हज़रत मिर्ज़ा साहिब के हाथ पर इस्लाम की सच्चाई और ईसाइयत के खण्डन में प्रकट हुआ और यह निशान भी इस ढंग से प्रकट हुआ कि हज़रत मिर्ज़ा साहिब की भविष्यवाणी की दृष्टि से सारी दुनिया इसकी गवाह बन गई। क्योंकि यूरोप और अमेरिका के बीसों अंग्रेज़ी अखबारों में हज़रत मिर्ज़ा साहिब और डोई के मुकाबले की खबरें प्रकाशित होकर लोगों में व्यापक रूप से फैल चुकी थीं। इससे बढ़कर कस्रे सलीब और क़त्ले दज्जाल क्या होगा ? जिसकी आँखें हो देखे। (देखिए किताब ''हक़ीक़तुल वह्यी'' और ''रीवियू आफ रिलीजन्ज़'' जिल्द 6)

सारांशत: यह कि आप अलैहिस्सलाम ने चार अलग-अलग प्रकार से कस्रे सलीब और कत्ले दज्जाल का काम अंजाम दिया।

प्रथम – वे आन्तरिक मतभेद[1] जिन्होंने इस्लाम को बदनाम कर रखा था और ईसाइयों को इस्लाम के ख़िलाफ़ बहुत दिलेर कर दिया था उनको आपने खुले-खुले प्रमाणों से दूर कर दिया।

द्वितीय – आप ने बुद्धि और प्रमाण से ईसाइयत के बुनियादी सिद्धान्तों का झूठा होना साबित किया और इस बहस में बड़े-बड़े स्पष्ट प्रमाण प्रस्तुत किए और ईसाइयों को एक बड़े मुबाहसा में पराजित किया।

तीसरे – आपने सलीब की घटना और मसीह नासरी की मृत्यु और क़ब्र के सम्बन्ध में ऐतिहासिक खोज प्रस्तुत करके मसीही मज़हब पर वह वार किया जिसने उसको जड़ से काट कर रख दिया।

चौथे – दुआ और रूहानी मुकाबलों और ख़ुदा के बड़े-बड़े निशानों के द्वारा आपने ईसाइयत के मुक़ाबले पर इस्लाम को विजयी कर दिखाया।

समझ-बूझ की इन चार इन्द्रियों की दृष्टि से उस व्यक्ति के अतिरिक्त जो जन्म से ही उल्लू प्रकृति का पैदा हुआ हो कोई एक पल के लिए भी इस्लाम की विजय और मसीहियत की पराजय के बारे में सन्देह नहीं कर सकता और यह सब हज़रत मिर्ज़ा साहिब के द्वारा घटित हुआ।

اللّٰھُمّ صلّ علیہ وعلیٰ مطاعہٖ محمد صلوٰۃً وسلاماً دائمًا بارك وسلم۔

1. जो इस्लाम के अन्दर पैदा हो चुके थे - अनुवादक।

हज़रत मिर्ज़ा साहिब का आर्यों से मुक़ाबला

आर्यों ने पण्डित दयानन्द सरस्वती की अगुवाई में धार्मिक जोश व खरोश से, बेसुध होकर इस्लाम पर आरोपों की बौछार करने के बारे में पादरियों का बचा खुचा झूठा खाया और गाली गलौज में उनसे भी आगे निकल गए। इन लोगों का लेख और भाषण इस्लाम और इस्लाम के संस्थापक की दुश्मनी से लबरेज़ होता है और इन्होंने गालियाँ देने में वह महारत प्राप्त की है कि दूसरी सारी क़ौमों को पीछे छोड़ दिया है। आध्यात्मिकता से उन्हें कुछ लगाव नहीं और अपने मूर्खतापूर्ण विचारों की सीमित चहारदीवारी में ऐसे घिरे हुए हैं कि बाहर का प्रकाश उनकी आँखों को चौंधिया देता है। हज़रत मिर्ज़ा साहिब ने उनके बारे में क्या खूब लिखा है :-

कीड़ा जो दब रहा है गोबर की तह के नीचे ।
उसके गुमाँ में उसका अर्ज़ो समा यही है ।।

उनके अपने धर्म का हाल देखो तो वह किसी भी दृष्टि से मज़हब कहलाने का हक़दार ही नहीं। बल्कि एक दर्शन है जो उनके अपने मस्तिष्कों ने गढ़ रखा है। हाँ एक विशेषता उनमें अवश्य है कि उन्होंने इस्लाम की शिक्षा और आसपास के हालात से प्रभावित होकर मूर्तिपूजा के विरुद्ध हिन्दुओं में अच्छी कोशिश की है जिसमें एक हद तक सफल भी हुए हैं। परन्तु अफसोस कि मूर्तिपूजा से निकालकर उन्होंने अपने आपको एक ऐसे खतरनाक जंगल में डाला है जो अपने खतरनाक नतीजों की दृष्टि से मूर्तिपूजा से कम नहीं और सबसे बुरी बात यह है कि दूसरे धर्मों के प्रतिष्ठित लोगों को बुरा भला कहना उन्होंने अपना जप-तप बना लिया है। इन लोगों का धर्म दो स्तम्भों पर टिका हुआ है :-

प्रथम – यह कि ख़ुदा आत्मा और पदार्थ का स्रष्टा नहीं बल्कि केवल उनको जोड़ तोड़ कर अपना काम चला रहा है अन्यथा यह

चीज़ें वैसी ही अनादि हैं जैसा कि स्वयं ख़ुदा का अस्तित्व है। अर्थात आत्मा और पदार्थ ख़ुदा की तरह आदि काल से हैं और अनन्तकाल तक ख़ुदा के साथ-साथ चले जाएँगे। ख़ुदा तआला न तो उनके बनाने पर समर्थ है और न उनके मिटाने पर। केवल आकृति के हेर फेर से अपना शासन चला रहा है।

दूसरा स्तम्भ इस धर्म का आवागमन है अर्थात यह कि आत्माएँ अपने कर्मों के परिणामस्वरूप भिन्न-भिन्न जन्म भोगती रहती हैं और इस जन्म के चक्कर से कभी पूर्णरूप से मुक्ति नहीं पाती। यदि कोई व्यक्ति अच्छे कर्म करता है, उसे अच्छा जन्म दिया जाता है और बुरे कर्म करने वाला व्यक्ति बुरे जन्म में डाला जाता है परन्तु पूर्णत: कोई आत्मा मुक्ति नहीं पाती। जब से सृष्टि है यही चक्कर चला आया है और इसी तरह चला जाएगा और यदि किसी को मुक्ति अर्थात नजात मिलती भी है तो केवल अस्थायी तौर पर मिलती है और इसके बाद वह आत्मा फिर आवागमन के चक्कर में डाल दी जाती है क्योंकि आर्य साहिबान के विचार में सीमित कर्म का प्रतिफल असीमित नहीं हो सकता।

इसके अतिरिक्त आर्यों का यह अक़ीदा भी है कि ख़ुदा का इल्हाम (आकाशवाणी) केवल आर्यवर्त तक सीमित रहा है दूसरी किसी क़ौम को इसका सौभाग्य प्राप्त नहीं हुआ और उनका अक़ीदा है कि केवल वेद ही वह किताब है जो प्रारम्भ से दुनिया को दी गई और फिर उसे अनन्तकाल तक के लिए हिदायत का स्रोत ठहरा दिया गया और उसके बाद सदैव के लिए इल्हाम का सिलसिला बन्द कर दिया गया और उनका दावा है कि इल्हामी किताब वही हो सकती है जो प्रारम्भ में दी गई हो। फिर उनका यह भी विचार है कि ख़ुदा गुनाह को माफ नहीं करता बल्कि आवश्यक है कि तौबा (पश्चाताप) के बावजूद भी मनुष्य हर कुकर्म की सज़ा पाए। फिर संसार के दाम्पैत्तिक जीवन के बारे में उनका यह विचार है कि जब किसी पुरुष के पुत्र न हो तो उसे

चाहिए कि पुत्र प्राप्ति के लिए अपनी पत्नी को किसी पर पुरुष के साथ संसर्ग कराए और यह कर्तव्य उस समय तक निभाता रहे जब तक कि उसके पुत्रों की संख्या ग्यारह तक न पहुँच जाए। इस विषय को ये लोग नियोग कहते हैं।

यह सार है हिन्दूमत के इस गिरोह के आस्थावानों का जो आजकल आर्य: कहलाता है और जिसका यह दावा है कि हिन्दुओं में से केवल हम ही वेद की असल शिक्षा पर क़ायम हैं और शेष सारे सम्प्रदाय सत्यता के मार्ग से भटक चुके हैं और इस सम्प्रदाय ने पंडित दयानन्द साहिब सरस्वती को जिन्होंने सन् 1883 ई. में मृत्यु पायी थी अपना पेशवा और लीडर माना है।

इस प्रारम्भिक नोट के बाद हम उस उत्तम निवारण का वर्णन करते हैं जो हज़रत मिर्ज़ा साहिब की ओर से इस सम्प्रदाय के मुक़ाबले में किया गया। पहले हम प्रामाणिक और बौद्धिक बहस का वर्णन करते हैं फिर आध्यात्मिक मुक़ाबले का वर्णन करेंगे। आर्यों के साथ हज़रत मिर्ज़ा साहिब के पब्लिक मुक़ाबला का प्रारम्भ पंडित दयानन्द सरस्वती की उस घोषणा से हुआ जो सन् 1877 ई. में अखबारों के द्वारा की गई थी और उस घोषणा का सारांश यह था कि मौजूदा आत्माएँ अनन्त हैं और इतनी अधिकता से हैं कि परमेश्वर को भी उनकी संख्या ज्ञात नहीं, इसलिए वे सदैव मुक्ति पाती रहेंगी परन्तु कभी समाप्त नहीं होंगी। इस खुले-खुले झूठे अक़ीदे की घोषणा पर मुकाबले में पहला व्यक्ति जो खड़ा हुआ वह हज़रत मिर्ज़ा साहिब ही थे। आप ने इस अक़ीदा के विरुद्ध बड़े ठोस और निरुत्तर (लाजवाब) कर देने वाले लेख अखबारों में प्रकाशित किए और उत्तर देने वाले के लिए पाँच सौ रुपये इनाम रखा। इन लेखों से आर्य: कैम्प में खलबली पड़ गई। इस से पहले उनकी यह हालत थी कि बेधड़क अपनी आक्रामक कार्यवाहियों में बढ़ते चले आते थे। मगर यह पहला गोला था जो उनके कैम्प में गिरा और उसने उनको पूर्णत: परेशान कर दिया। इससे

पहले हज़रत मिर्ज़ा साहिब का काम भी एक गुमनामी के कोने में पड़ा हुआ था और आपको कोई जानता भी न था लेकिन इन लेखों से लोगों की नज़रें आपकी ओर आश्चर्य से उठने लगीं और स्वयं आर्यों पर भी यह असर पड़ा कि कई बड़े-बड़े प्रतिष्ठित आर्य यह घोषणा करने पर मजबूर हुए कि आत्माओं के अनन्त होने का विचार पंडित दयानन्द साहिब का व्यक्तिगत विचार होगा हमारा यह विचार नहीं है। अत: लाला जीवनदास साहिब ने जो उन दिनों लाहौर की आर्यसमाज के सेक्रेटरी थे और आर्यों में एक बहुत विशिष्ट व्यक्ति थे अखबार के द्वारा प्रकाशित किया कि ''यह मसला समाज के सिद्धान्तों में शामिल नहीं। यदि कोई समाज का सदस्य इसका दावेदार हो तो उससे प्रश्न करना चाहिए और उसको इसका उत्तर देना अनिवार्य है। (देखो हयातुन्नबी) और यह भी लिखा कि ''आर्य स्वामी दयानन्द को अनुकरणीय लीडर नहीं समझते इसलिए आवश्यक नहीं कि उनके सारे अकीदों को समस्त आर्य लोग स्वीकार करें।'' सुब्हानल्लाह! यह कैसी महान विजय थी जो हज़रत मिर्ज़ा साहिब को आर्यों के विरुद्ध प्राप्त हुई कि एक ही वार में वे अपना मैदान छोड़ गए।

फिर भी आपने अपने लगातार लेखों से पंडित दयानन्द को चैलेन्ज दिया कि मेरे सामने आत्माओं के अनन्त होने के दावा को साबित करो और मुझसे इनाम लो। इस पर पंडित जी को पीछा छुड़ाना मुश्किल हो गया और भागने और छुपने की कोई जगह न रही। विवश होकर हज़रत मिर्ज़ा साहिब को यह सन्देश भेजा कि यद्यपि आत्माएँ वस्तुत: अनन्त नहीं हैं पर आवागमन फिर भी सही है।

पाठको ध्यान दो कि वेद से निष्कर्ष निकालकर पंडित जी एक अक़ीदा प्रस्तुत करते हैं और अक़ीदा भी ऐसा जो धार्मिक सिद्धान्तों का स्थान रखता है। परन्तु हज़रत मिर्ज़ा साहिब के ठोस तर्कों से अपने उस अक़ीदा से पीछे हट जाने पर मजबूर हो जाते हैं। इससे अधिक स्पष्ट विजय और क्या होगी कि आर्य समाज का सबसे बड़ा लीडर

बल्कि संस्थापक इस प्रकार खुले मैदान में पीठ दिखाता है। यह विजय इतनी खुली-खुली विजय थी कि पंडित शिवनारायण अग्निहोत्री सम्पादक ''ब्रादरे हिन्द'' ने जो गोस्वामी ज्ी के श्रद्धालु न थे लेकिन फिर भी एक हिन्दू थे और इस्लाम के विरोधियों में से थे ''मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब रईस क़ादियान और आर्य समाज'' के शीर्षक से अपने अखबार में लिखा कि ''जब मिर्ज़ा साहिब ने उपरोक्त मसले को अपनी बहस में झूठा साबित कर दिया तो लाचार स्वामी जी ने मिर्ज़ा साहिब को यह सन्देश भेजा कि वास्तव में आत्माएँ अनन्त नहीं हैं पर आवागमन फिर भी सही है।'' (देखो मक्तूबात-ए-अहमदिया और ब्रादरे हिन्द जुलाई सन् 1878 ई.)

इसके बाद आर्यों ने आत्माओं के अनन्त होने और ख़ुदा को उनकी संख्या का ज्ञान न होने के अक़ीदे को छोड़ दिया और उसकी जगह यह अक़ीदा बनाया कि यद्यपि आत्माएँ संख्या में सीमित हैं लेकिन चूँकि कोई आत्मा सदैव के लिए पूर्णतया मुक्ति प्राप्त नहीं कर सकती इसलिए आवागमन का चक्कर फिर भी कायम रहता है।

पंडित दयानन्द के चुप हो जाने के बाद आर्य कैम्प का एक और मशहूर जरनैल मुकाबला के लिए आगे बढ़ा। यह महोदय बाबा नरायन सिंह सेक्रेटरी आर्य समाज अमृतसर थे। शुरू-शुरू में उन्होंने बड़ा जोशो खरोश दिखाया और जिस मैदान में उनके पेशवा स्वामी जी भी ठहर न सके थे वहाँ भी क़दम रखना चाहा लेकिन हज़रत मिर्ज़ा साहिब के एक दो वार ने ही उनको ठण्डा कर दिया और वह ऐसे चुप हुए कि मानो कभी बोले ही न थे। लेकिन उनकी खामोशी से भी बढ़कर एक और बात हुई वह क्या थी ? वह यह थी कि यही बावा साहिब जो उस समय आर्य समाज के एक विशिष्ट और बहुत जोशीले सदस्य थे, आर्य समाज के प्लेट फार्म से अलग होकर अपने मूल सम्प्रदाय में वापिस आ मिले। सुब्हानल्लाह! क्या महान विजय है जो हज़रत मिर्ज़ा साहिब के द्वारा इस्लाम को मिली!

इस बहस और मुबाहसा के बाद आर्य कैम्प में एक अवधि तक ख़ामोशी रही, परन्तु कुछ समय के पश्चात दो मशहूर व्यक्ति मुक़ाबला के मैदान में आए अर्थात मुन्शी इन्द्रमन मुरादाबादी और पंडित लेखराम पेशावरी सुम्मा लाहौरी।

पंडित लेखराम पेशावरी आर्य: समाज में वह विशिष्ट स्थान रखता था कि स्वामी दयानन्द के बाद मानो सारी क़ौम में यही व्यक्ति पूज्य समझा जाता था बल्कि कई दृष्टिकोण से स्वामी जी पर भी उसे प्रधानता दी जाती थी। ये दोनों व्यक्ति इस्लाम से घोर दुश्मनी रखते थे और कटुकता और गाली गलौज में भी अपने आप में बेजोड़ थे। हज़रत मसीह मौऊद के साथ इनके वार होते रहे और फिर जिस रूप में इस मुक़ाबले का अन्त हुआ वह भी इस्लामी इतिहास और विशेषरूप से सिलसिला अहमदिया के इतिहास में एक विशेष महत्व रखता है। लेकिन चूँकि वह रूहानी मुक़ाबला से सम्बन्ध रखता है इसलिए उसका वर्णन भी उसी के अन्तर्गत लिखा जाएगा।

इसके बाद सन् 1886 ई. में होशियारपुर में हज़रत मिर्ज़ा साहिब का एक जोशीले आर्य मास्टर मुरलीधर के साथ मुबाहसा हुआ जिसमें उसे भारी पराजय मिली। (देखो सुर्मा चश्म: आर्या) इस मुबाहसा के विवरण हेतु आपने एक किताब लिखी जिसका नाम सुर्मा चश्म: आर्य रखा। यह उस स्तर की किताब है कि दुश्मन अपने हाथ काटने के अतिरिक्त कदापि इसके जवाब की शक्ति नहीं रखता। इसके बाद आप ने शहन-ए-हक़ नामक एक और ठोस किताब लिखकर अकाट्य और निर्णायक तर्क दिए और आर्यों के धार्मिक अक़ीदों की धज्जियाँ उड़ा दीं सुर्मा चश्म: आर्य में आत्मा और पदार्थ के अनादि होने और आवागमन इत्यादि के विषयों पर वह प्रामाणिक और निरुत्तर कर देने वाली बहसें की गई हैं कि बेजोड़ होने में अपनी मिसाल नहीं रखतीं। आपने साबित किया कि आत्मा और पदार्थ का अनादि होना एक ऐसा विषय है जो ख़ुदा की विशेषताओं पर एक ख़तरनाक धब्बा

लगाता है अपितु इसको मानकर ख़ुदा की कई उन विशेषताओं को भी छोड़ना पड़ता है जिनको अन्दरूनी तौर पर आर्य साहिबान भी स्वीकार करते हैं। उदाहरणतया वस्त्रजन करने और मालिक होने की विशेषता इत्यादि। आपने साबित किया कि आत्मा एवं पदार्थ का अनादि होना और आवागमन का विषय झूठे अनुभव और अनुचित एवं असमान अटकलों के परिणामस्वरूप पैदा हुआ है अर्थात ख़ुदा को भी उसी क़ानून से नापा गया है जो सृष्टि पर चलता है और प्रकृति के कानून और शरीअत (धर्म विधान) में अन्तर नहीं किया गया और दोनों को एक समझ लिया गया है हालाँकि यह दोनों अलग-अलग क़ानून हैं जो अलग-अलग दायरों में काम करते हैं (इस विषय की विस्तारपूर्वक जानकारी के लिए लेखक की रचना ''हमारा ख़ुदा'' देखें) और ख़ुदा के इल्हाम के केवल वैदिक काल तक सीमित होने और फिर वेद के बाद हमेशा के लिए बन्द हो जाने के सम्बन्ध में आपने लिखा कि यह एक ऐसा ख़तरनाक अक़ीदा है जो ईमान के पौधे को जलाकर राख कर देता है। ईमान का वृक्ष ऐसा है कि जब तक उसे ख़ुदा के निशान और ख़ुदा के इल्हाम के द्वारा ताज़ा ब ताज़ा पानी न मिलता रहे वह सूख जाता है और केवल क़िस्से उसको कभी हरा-भरा नहीं रख सकते। जिस धर्म ने इल्हाम का दरवाज़ा बन्द किया वह मर गया। क्योंकि उसके हाथ में शुष्क किस्सों के अतिरिक्त और कुछ नहीं।

फिर आपने लिखा कि केवल वेद को इल्हामी मानना मानो ख़ुदा की विशेषता ''रब्बुल आलमीन'' (अर्थात सब लोकों का पालनहार) का इन्कार करना है। ख़ुदा केवल आर्यवर्त का ख़ुदा नहीं बल्कि सारी दुनिया का ख़ुदा है और सारी क़ौमों में अपना इल्हाम करता और रसूल भेजता रहा है और अन्ततः जब हिदायत की पूर्णता का समय आया तो उसने अपनी पूर्ण शरीअत (अर्थात धर्म विधान) मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पर अवतरित की और क़ुर्आन को सारी क़ौमों और सारे युगों के लिए धर्म विधान ठहरा दिया। क्योंकि

अब दुनिया ऐसी हालत और ऐसे ज़माने में पहुँच गई थी कि एक पूर्ण शरीअत जो सब क़ौमों के लिए और सब युगों के लिए उचित हो अवतरित की जा सकती थी। परन्तु इसके बाद भी ख़ुदा ने इल्हाम का दरवाज़ा बन्द नहीं किया बल्कि वह अब भी खुला है और हमेशा खुला रहेगा और सीमित कर्म का असीमित फल न मिलने के बारे में आपने फ़रमाया कि नि:सन्देह मनुष्य के कर्म सीमित हैं पर वफादार भक्त की नीयत तो सीमित नहीं है, इसलिए कोई कारण नहीं कि उसका फल सीमित हो। इसके अतिरिक्त कर्म का सीमित होना मनुष्य की अपनी इच्छा से नहीं बल्कि ख़ुदा का कार्य है। क्योंकि यदि मौत न आए जो ख़ुदा का कार्य है तो हर नेक इन्सान यही संकल्प रखता है कि हमेशा नेक कार्य करता चला जाएगा और सच्ची तौबा पर भी ख़ुदा का गुनाह माफ न करना एक ऐसा बुरा कृत्य है कि मानवीय प्रकृति उसे दूर से धक्के मारती है। जो बात मनुष्य में भी प्रशंसा योग्य समझी जाती है उसे आर्य लोग ख़ुदा को देना पसन्द नहीं करते। इसके अतिरिक्त नियोग ऐसा नीच और बेशर्मी का काम है कि उसे कदापि कोई ग़ैरतमन्द पसन्द नहीं कर सकता। तात्पर्य यह कि आपने आर्यों के सारे विश्वासों (अक़ीदों) पर पूर्णरूप से ठोस बहसें कीं और प्रमाण और बुद्धि से उनका पूर्णत: खण्डन किया और सूर्य समान स्पष्ट कर दिया कि मौजूदा वेद की शिक्षा सरासर दोषपूर्ण और शिर्क से भरी हुई है और कदापि इस योग्य नहीं कि मनुष्य के अन्दर सच्चा ईमान और सच्चा सुधार पैदा कर सके।

आपके इन लेखों ने आर्यों के दाँत खट्टे कर दिए। यहाँ तक कि कई लोगों ने उन्हीं दिनों हज़रत मिर्ज़ा साहिब को क़त्ल की धमकियाँ दीं और इस विषय के गुमनाम पत्र भी आपको भेजे। (देखो शहन-ए-हक़) परन्तु आपने बड़े धैर्य से अपना काम जारी रखा बल्कि आर्य: धर्म, नसीम-ए-दावत, सनातन धर्म, क़ादियान के आर्य: और हम इत्यादि बड़ी ठोस पुस्तकें लिखकर आर्यों के गिरते हुए किले पर और वार

किया और अन्ततः सन् 1907 ई. में जब आर्यों ने बिच्छूवाली लाहौर में एक सर्वधर्म सम्मेलन आयोजित किया और आपको भी उसमें शामिल होने का निमन्त्रण दिया तो आपने एक बहुत ठोस लेख लिखकर भेजा। परन्तु आर्यों ने वादे के खिलाफ और मेहमान नवाज़ी के नियमों के विरुद्ध और सभ्यता के क़ानून के विपरीत अपने भाषण में अत्यन्त गाली-गलौज और तानाज़नी करके दिलों को बहुत दुःख दर्द पहुँचाया और इस्लाम और इस्लाम के संस्थापक को बुरी तरह कोसा। जब इस जलसा की ख़बर हज़रत मिर्ज़ा साहिब को पहुँची तो आपकी इस्लामी ग़ैरत जोश में आई। इस पर आपने वह ठोस और बेजोड़ पुस्तक लिखी जिसका नाम चश्मः मारिफत है। मानो सचमुच आपने अपने कलम के द्वारा अध्यात्म ज्ञान के स्त्रोत का मुँह खोल दिया। यह वह आख़िरी वार था जो आपकी ओर से मुनाज़रा (शास्त्रार्थ) के मैदान में आर्य कैम्प पर किया गया। जो व्यक्ति इस किताब का अध्ययन करे वह समझ सकता है कि ख़ुदा ने इन हाथों में क्या शक्ति रखी थी जिन्होंने इस शस्त्र को तैयार किया। दुश्मन जिसने दुश्मनी की ठानी हो, चुप नहीं हुआ करता। परन्तु उसकी छटपटाहटें बुद्धिमान व्यक्ति को बता देती हैं कि चोट गहरी लगी है जिससे बचना मुश्किल है। निःसन्देह वह व्यक्ति जो इस्लाम की खिदमत की नीयत से "सुर्मा चश्म आर्यः" और "चश्मा-ए-मारिफत" इत्यादि को अपने हाथ में लेकर निकलेगा वह आर्यवर्त में जहाँ भी जाएगा सफलता और विजय का झण्डा उसके सिर पर लहराएगा और सफलता उसके क़दम चूमेगी।

अब हम रूहानी मुकाबले का वर्णन करते हैं सबसे प्रथम यह कि अभी आर्य समाज के पेशवा स्वामी दयानन्द जीवित थे कि हज़रत मिर्ज़ा साहिब ने ख़ुदा से ख़बर पाकर भविष्यवाणी की कि अब स्वामी जी की ज़िन्दगी का अन्त है और निकट ही वे इस दुनिया से गुज़र जाएँगे और आपने बहुत से आर्यों को यह भविष्यवाणी सुना दी। अतः इसके बाद बहुत शीघ्र स्वामी जी अपने अनुयायियों को छोड़ गए।

(देखो हक़ीक़तुल वह्यी इत्यादि)

इसके बाद जैसा कि ऊपर वर्णन किया जा चुका है इन्द्रमन मुरादाबादी मुक़ाबले में आया। यह व्यक्ति बहुत गुस्सैल और अपशब्द बकने वाला था। इसकी भाषा का नूमना देखना हो तो देखो ''किताबुल बरीय:'' जिसमें हज़रत मिर्ज़ा साहिब ने ग़ैर मुस्लिमों की कटुकता के कुछ नमूने दर्ज कए हैं।

हज़रत मिर्ज़ा साहिब ने निर्णायक तर्क पूर्ण करने की दृष्टि से सन् 1885 ई. में यह घोषणापत्र प्रकाशित किया था कि कोई अन्य धर्म का अनुयायी जो अपने धर्म में विशेष स्थान रखता हो एक वर्ष तक मेरे पास आकर क़ादियान में रहे यदि इस अवधि में वह इस्लाम की सच्चाई के समर्थन में कोई निशान न देखे तो मैं उसे दो सौ रुपए माहवार के हिसाब से चौबीस सौ रुपए नक़द अदा करूँगा और यदि वह कोई ख़ुदाई निशान देख ले तो फिर उसका कर्तव्य होगा कि यहीं क़ादियान में मुसलमान होकर अपने इस्लाम की घोषणा कर दे और रुपया के बारे में वह जिस तरह चाहे तसल्ली करा ले। इस घोषणा पर यही व्यक्ति इन्द्रमन बड़े जोशो खरोश के साथ उठा और मुक़ाबला में आने की तत्परता प्रकट की और लिखा कि रुपया मुझे पहले दिखा दो और फिर मेरे सामने किसी विश्वस्त जगह अमानत के तौर पर रखवा दो तो फिर मैं इसके लिए तैयार हूँ और इसी उद्देश्य के लिए वह नाभा से होता हुआ लाहौर पहुँचा। हज़रत मिर्ज़ा साहिब ने तुरन्त अपने एक श्रद्धालु मियाँ अब्दुल्लाह साहिब सन्नौरी को क़ादियान से रवाना किया और उनको लाहौर के कुछ मित्रों के नाम पत्र देकर कहा कि लाहौर से रुपया लेकर इन्द्रमन साहिब के पास चले जावें। अतएव वे गए और लाहौर के कुछ मित्रों के साथ मिलकर इन्द्रमन को रात के समय ही लिखित रूप से सन्देश पहुँचा दिया कि हम रुपया लेकर सुबह आएँगे आप अपने मकान पर रहें। अत: रात

को उन्होंने रुपयों का प्रबन्ध कर लिया और सुबह मुंशी इन्द्रमन के मकान पर पहुँचे। लेकिन देखते क्या हैं कि मुंशी इन्द्रमन साहिब नदारद हैं। पता किया तो ज्ञात हुआ कि वह तो रात को ही रेल पर सवार होकर कहीं चले गए। अत: इन्द्रमन साहिब के रूहानी मुकाबला का तो इसी पर अन्त हो गया। घर पर जाकर उन्होंने अपने भागने को छुपाना चाहा लेकिन सूरज पर धूल डालने से क्या बनता है। (देखो हज़रत मिर्ज़ा साहिब के इश्तिहारात का मज्मुआ, तब्लीग़-ए-रिसालत)

इसके बाद पंडित लेखराम का दौर दौरा शुरू हुआ। यह पंडित साहिब बहुत कटुभाषी और बहुत उद्दंड प्रकृति के व्यक्ति थे और उनकी ज़ुबान और क़लम दोनों छुरी की तरह चलते थे यह साहिब हज़रत मिर्ज़ा साहिब के मुक़ाबला के लिए क़ादियान भी आए पर विरोधियों के पास केवल कुछ दिन ही ठहर कर वापिस चले गए और स्थानीय आर्यों के भड़काने पर पहले से भी तेज हो गए और हज़रत मिर्ज़ा साहिब से निशान मांगा। हज़रत मिर्ज़ा साहिब ने इसके बारे में दुआ की तो जवाब में जो इल्हाम हुआ उस पर आपने 20 फरवरी सन् 1893 ई. को एक इश्तिहार प्रकाशित किया जो यह था :-

‘‘स्पष्ट हो कि इस विनीत ने इश्तिहार 20 फरवरी सन् 1893 ई. में जो इस किताब के साथ सम्मिलित किया गया था, इन्द्रमन मुरादाबादी और लेखराम पेशावरी को इस बात के लिए आमन्त्रित किया था कि यदि वे इच्छुक हों तो उनके भाग्य के बारे में कुछ भविष्यवाणियाँ प्रकाशित की जाएँ। अत: इस इश्तिहार के बाद इन्द्रमन ने तो इन्कार किया और कुछ समय के बाद मर गया। लेकिन लेखराम ने बड़ी दिलेरी से इस विनीत की ओर एक कार्ड भेजा कि मेरे बारे में जो भविष्यवाणी चाहो प्रकाशित कर दो मेरी ओर से इजाज़त है। इसलिए उसके बारे में जब ध्यान लगाया गया तो प्रतापी अल्लाह की ओर से यह इल्हाम हुआ :-

عِجْلٌ جَسَدٌ لَّهٗ خُوَارٌ۔ لَهٗ نَصَبٌ وَّعَذَابٌ۔

अर्थात ''यह केवल एक बेजान बछड़ा है जिसके अन्दर से एक घृणित आवाज़ निकल रही है और इसके लिए उन गुस्ताख़ियों और बद्ज़बानियों के बदले में सज़ा और दु:ख और अज़ाब निर्धारित है जो अवश्य उसे मिलेगा और इसके बाद आज जो 20 फरवरी सन् 1893 ई. दिन सोमवार है उस अज़ाब का समय ज्ञात करने के लिए ध्यान लगाया गया तो ख़ुदावन्द करीम ने मुझ पर स्पष्ट किया कि आज की तिथि से जो 20 फरवरी सन् 1893 ई. है छ: वर्ष की अवधि तक यह व्यक्ति अपनी बदज़ुबानियों की सज़ा में अर्थात उन अशिष्टताओं की सज़ा में जो इस व्यक्ति ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के बारे में की हैं बहुत बड़े अज़ाब में मुब्तिला हो जाएगा...।

अत: अब मैं इस भविष्यवाणी को प्रकाशित करके समस्त मुसलमानों, आर्यों, ईसाइयों और अन्य धर्मों पर प्रकट करता हूँ कि यदि उस व्यक्ति पर आज की तिथि से छ: वर्ष के अन्दर कोई ऐसा अज़ाब न आया जो साधारण कष्टों से निराला और चमत्कार और अपने अन्दर ख़ुदाई रौब रखता हो तो समझो कि मैं ख़ुदा तआला की ओर से नहीं और न उसकी ओर से मेरी यह वाणी है और यदि इस भविष्यवाणी में झूठा निकला तो हर एक सज़ा भुगतने के लिए मैं तैयार हूँ और इस बात पर राज़ी हूँ कि मुझे गले में रस्सा डालकर किसी सूली पर खींचा जावे।''

इसी 20 फरवरी सन् 1893 ई. के इश्तिहार के प्रारम्मभ में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने लेखराम के बारे में ये फ़ारसी छन्द भी लिखे :-

الا اے دشمنِ نادان و بے راہ
بترس از تیغِ برّانِ محمدؐ
رہِ مولیٰ کہ گم کردند مردم

بجُو در آل واعوانِ محمدؐ
الا اے منکر از شانِ محمدؐ
ہم از نورِ نمایانِ محمدؐ
کرامت گرچہ بے نام و نشان است
بیابنگر ز غِلمان محمدؐ

अर्थात ''सावधान हे इस्लाम के नादान और गुमराह दुश्मन! (तू अपनी ज़ुबान की छुरी को ज़रा संभालकर रख और) मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की काटने वाली तलवार से डर और अल्लाह तआला तक पहुँचने का रास्ता जिसे लोग खो बैठे हैं, आ और उसे मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के रूहानी बेटों और उसके लाए हुए धर्म के मददगारों में तलाश कर। हाँ, हे वह व्यक्ति जो मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की महानता और आप(स) के खुले-खुले तेज का इन्कारी है! यद्यपि इस ज़माने में करामत का अस्तित्व ओझल हो रहा है परन्तु आ और हम मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के सेवकों के सामने आकर उसको देख।''

फिर 2 अप्रैल सन् 1893 ई. को आपने इश्तिहार के द्वारा घोषणा की कि :-

आज 2 अप्रैल 1893 ई. अर्थात 14 रमज़ान 1310 हिजरी है सुबह के समय थोड़ी सी ऊँघ की हालत में मैंने देखा कि मैं एक बड़े मकान में बैठा हुआ हूँ और कुछ मित्र भी मेरे पास मौजूद हैं। इतने में भारी भरकम शरीर और भयानक चेहरे वाला एक व्यक्ति मानो उसके चेहरे से खून टपकता है मेरे सामने आकर खड़ा हो गया। मैंने नज़र उठाकर देखा तो मुझे ज्ञात हुआ कि वह एक नई सृष्टि और शक्ल का व्यक्ति है मानो मनुष्य नहीं अत्यन्त कठोर और निर्दयी फ़रिश्तों में से है और उसका डर दिलों पर छाया था और मैं ने उसको देखा ही था कि उसने मुझ से पूछा कि लेखराम कहाँ है और एक और व्यक्ति का नाम लिया कि वह कहाँ है ? तब मैंने उस समय समझा कि यह

व्यक्ति लेखराम और उस दूसरे व्यक्ति की सज़ा के लिए आदेशित किया गया है। पर मुझे ज्ञात नहीं रहा कि वह दूसरा व्यक्ति कौन है।'' (देखो तब्लीग़-ए-रिसालत)

फिर आपने सन् 1893 ई. में अपनी किताब ''बरकातुद्दुआ'' में सर सैयद अहमद ख़ाँ साहिब को संबोधित करके लिखा कि :-

ایکہ گوئی گر دُعا ہارا اثر بودے کجا است
سوئے من بشتاب بنمائم تراچوں آفتاب
ہاں مکن انکار زیں اسرار قدرتہائے حق
قصّہ کوتاہ کن ببیں ازما دُعائے مستجاب
(یعنی دعائے موت لیکھرام)

अर्थात ''हे वह व्यक्ति जो कहता है कि यदि दुआ में कुछ असर होता है तो वह कहाँ है, मेरी तरफ आ कि मैं तुझे दुआ का असर सूरज की तरह दिखाऊँगा। तू ख़ुदा की सूक्ष्म से सूक्ष्म शक्तियों से इन्कार न कर और यदि दुआ का असर देखना चाहता है तो आ और मेरी इस दुआ का नतीजा देख ले, जिसके बारे में ख़ुदा ने मुझे बताया है कि वह क़बूल हो गई है अर्थात लेखराम के बारे में मेरी दुआ।''

यह स्मरण रखना चाहिए कि स्वीकृत दुआ के शब्दों के साथ जो ''दुआ-ए-मौत लेखराम'' का हाशिया दर्ज है यह भी उसी समय का है। (देखो बरकातुद्दुआ)

फिर आपने सन् 1893 ई. में अपनी किताब करामातुस्सादिक़ीन में लिखा :-

و بشّرنی ربی وقال مبشرًا
ستعرف یومَ العیدِ والعیدُ اقربٌ

अर्थात ''मुझे लेखराम की मृत्यु के बारे में ख़ुदा ने सूचना दी है और कहा कि निकट ही तू उस ईद के दिन को पहचान लेगा और असल ईद का दिन भी उस ईद के बहुत निकट होगा।''

अत: यह बात कि पंडित लेखराम की मौत ईद के दिन के निकट

होगी कई आर्य समाज के अखबारों में भी प्रकाशित हो गई थी। (उदाहरण के तौर पर देखो अखबार "समाचार" इत्यादि)

हज़रत मिर्ज़ा साहिब की ओर से तो यह भविष्यवाणी हुई अब देखो कि पंडित लेखराम की ओर से क्या हुआ। पंडित साहिब ने अपनी एक किताब में हज़रत मिर्ज़ा साहिब के मुक़ाबले पर लिखा :-

''किसी बुद्धिमान की इस कहावत पर कि ''झूठे को उसके दरवाज़ा तक पहुँचा देना चाहिए'' मिर्ज़ा साहिब की इस आख़िरी इच्छा को भी मन्ज़ूर करता हूँ और मुबाहला को यहाँ छपवाकर मशहूर।

मैं पूर्ण अभिलाषी लेखराम पुत्र पंडित तारा सिंह साहिब शर्मा लेखक इस पत्र और तक्ज़ीब बराहीन अहमदिया पूरी बुद्धि और विवेक के साथ पूर्णत: स्वीकार करके कहता हूँ कि मैंने शुरू से अन्त तक सुर्मा चश्म आर्य को पढ़ लिया और एक बार नहीं बल्कि कई बार और उसके तर्कों को पूर्णत: समझ लिया, बल्कि सत्धर्म की दृष्टि से उनके झूठे होने को इस पत्रिका में प्रकाशित किया। मेरे हृदय में मिर्ज़ा जी के तर्कों ने कुछ भी असर नहीं किया और न ही वे सच्चाई से सम्बन्धित हैं। मैं अपने जगत पिता परमेश्वर को साक्षी जानकर स्वीकार करता हूँ कि जैसा कि चारों वेद सन्मार्ग का पवित्र आधार हैं इस पर मैं पक्का विश्वास रखता हूँ कि मेरी आत्मा और समस्त आत्माओं को कभी मृत्यु नहीं अर्थात पूर्णरूप से विनाश नहीं है और न कभी हुआ और न होगा। मेरी आत्मा को कोई अनस्तित्व से अस्तित्व में नहीं लाया बल्कि सदैव से परमात्मा की अनादि क़ुदरत में रहा और रहेगा। इसी तरह मेरा शारीरिक पदार्थ अर्थात प्रकृति या परमाणु भी पुरातन या अनादि परमात्मा के अधिकार में मौजूद हैं। कभी समाप्त नहीं होंगे और समस्त जगत का सृजनहार एक ही कर्ता रहे दूसरा कोई नहीं। मैं परमेश्वर की तरह तमाम् दुनिया का मालिक या स्त्रष्टा नहीं हूँ और न सर्वव्यापक हूँ और न अन्तर्यामी। बल्कि उस महान शक्तिमान का

एक छोटा सा सेवक हूँ। परन्तु उसके ज्ञान और शक्ति में हमेशा से हूँ, विनष्ट कभी नहीं हुआ और न ही परलोक कहीं है। बल्कि किसी चीज़ को विनाश नहीं । इसी तरह वेद की इस न्याय संगत शिक्षा को भी मैं स्वीकार करता हूँ कि मुक्ति अर्थात नजात कर्मों के अनुसार महाकल्प तक मिलती है। इसके बाद परमात्मा के न्याय के अनुसार फिर मनुष्य का शरीर धारण करना पड़ता है। सीमित कर्मों का असीमित फल नहीं है।... और मैं यह भी मानता हूँ कि परमेश्वर पापों को बिल्कुल क्षमा नहीं करता है... और मैं वेद की दृष्टि से इस बात पर पूर्णरूप से सच्चा विश्वास रखता हूँ कि चारों वेद अवश्य ईश्वर का ज्ञान हैं। इनमें थोड़ी सी भी गलती या झूठ या कोई क़िस्सा कहानी नहीं है उनको हमेशा हर नई दुनिया में परमात्मा जगत की व्यापक हिदायत के लिए प्रकाश किया करता है। इस सृष्टि के प्रारम्भ में जब मनुष्य का जन्म आरम्भ हुआ परमात्मा ने वेदों को... चार ॠषियों की आत्माओं में इल्हाम किया... जिस तरह मैं अन्य सच्चाई के विरुद्ध बातों को ग़लत समझता हूँ उसी तरह मैं क़ुर्आन और उसके उसूलों और शिक्षाओं को जो वेद के प्रतिकूल हैं... उनको ग़लत और झूठा जानता हूँ। लेकिन मेरा विपक्षी मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद है वह क़ुर्आन को ख़ुदा की वाणी जानता है और उसकी सारी शिक्षाओं को सही और सत्य समझता है... जिस तरह मैं क़ुर्आन इत्यादि को पढ़कर ग़लत समझता हूँ वैसे ही वह अनपढ़ संस्कृत और नागरी से पूर्णत: अनभिज्ञ... वेदों को बग़ैर पढ़े या देखे वेदों को ग़लत समझता है...

हे परमेश्वर हम दोनों पक्षों में सच्चा निर्णय कर... क्योंकि झूठा सच्चे की तरह कभी तेरे निकट प्रतिष्ठा नहीं पा सकता। (देखो ख़ब्त अहमदिया, पृष्ठ 344)

इसके अतिरिक्त पंडित लेखराम ने यह भी दावा किया कि यह व्यक्ति (अर्थात हज़रत मिर्ज़ा साहिब) तीन वर्ष के अन्दर हैज़ा से मर जाएगा क्योंकि झूठा है (नऊज़ुबिल्लाह)। आगे लिखा कि तीन वर्ष के

अन्दर उसका अन्त हो जाएगा और उसकी नस्ल में से कोई शेष नहीं रहेगा। (देखो पंडित साहिब की किताब "तक्ज़ीब बराहीन अहमदिया" पृष्ठ 211, व किताब कुल्लियाते आर्य मुसाफिर पृष्ठ 501)

मानो हज़रत मिर्ज़ा साहिब के विरुद्ध पंडित लेखराम ने भी अपने परमेश्वर की ओर से एक ख़बर पाकर दुनिया को सूचना दे दी।

अब देखो कि प्रतापी ख़ुदा क्या निर्णय करता है। हज़रत मिर्ज़ा साहिब की भविष्यवाणी से पाँचवें वर्ष अर्थात 06 मार्च सन् 1897 ई. को ईदुज़्ज़ुहा के दूसरे दिन हज़रत मिर्ज़ा साहिब की दिन दोगुनी रात चौगुनी तरक़्क़ी देखता हुआ किसी अज्ञात हाथ द्वारा क़त्ल होकर इस्लाम की सच्चाई पर अपने खून से मुहर लगाकर अपने अरमानों को दिल में लिए हुए पंडित लेखराम इस दुनिया से परलोक सिधार गया और पूरी कोशिश के बावजूद कातिल का कोई सुराग़ न मिला। न मालूम कि वह कोई आदमी था जो छुप गया या कोई फरिश्ता था जो आसमान पर चढ़ गया। क्योंकि कहते हैं कि जिस समय पंडित लेखराम क़त्ल हुआ उस समय उसके मकान की ड्योढ़ी में कोई मुलाक़ात करने वाला बाहर से मिलने के लिए आया हुआ था और उस मुलाक़ाती ने किसी व्यक्ति को बाहर जाते नहीं देखा। बल्कि जैसा कि लेखराम की पत्नी इत्यादि का बयान सुना गया है कि लेखराम को क़त्ल करके क़ातिल सीढ़ियों के रास्ते छत पर चढ़ गया था और फिर इसके बाद उसका कोई निशान नहीं मिला। तात्पर्य यह कि ठीक भविष्यवाणी के अनुसार लेखराम क़त्ल होकर भविष्यवाणी की सच्चाई पर मुहर लगा गया।

परन्तु खेद है कि इस घटना से इबरत पकड़ने और ख़ुदा के इस चमकते हुए निशान से फ़ायदा उठाने की बजाय आर्यों की ईर्ष्या-द्वेष की आग और भड़क उठी और उन्होंने मशहूर करना शुरू कर दिया कि मानो हज़रत मिर्ज़ा साहिब ने लेखराम को क़त्ल करवा दिया है। अतएव उन दिनों कई पत्र आप के पास आए जिनमें लेखराम के क़त्ल

के बदले में आप को क़त्ल की धमकी दी गई थी। इस पर आपने घोषणा पत्र द्वारा ख़ुदा की क़सम खाकर अपने निर्दोष होने की घोषणा की और लिखा कि :-

''यदि अब भी किसी शक करने वाले का शक दूर नहीं हो सकता और वह मुझे उस क़त्ल की साज़िश में शामिल समझता है जैसा कि हिन्दू अख़बारों ने लिखा है तो मैं एक नेक परामर्श देता हूँ कि जिससे इस सारे क़िस्से का निर्णय हो जाए और वह यह है कि ऐसा व्यक्ति मेरे सामने क़सम खाए जिसके शब्द ये हों कि मैं नि:सन्देह जानता हूँ कि यह व्यक्ति (अर्थात हज़रत मिर्ज़ा साहिब) क़त्ल की साजिश में शामिल है या इसके आदेश से क़त्ल की घटना हुई है, अत: यदि यह सच नहीं है तो हे सामर्थ्यवान ख़ुदा! एक वर्ष के अन्दर मुझ पर वह अज़ाब डाल जो भीषण अज़ाब हो और किसी मनुष्य के हाथों से न हो और न मनुष्य की योजनाओं का उसमें कुछ दखल सोचा जा सके। अत: यह व्यक्ति (अर्थात ऐसी क़सम खाने वाला) एक वर्ष तक मेरे बददुआ (अभिशाप) से बच गया तो मैं अपराधी और उस सज़ा के योग्य हूँ जो एक क़ातिल के लिए होनी चाहिए। अब यदि कोई बहादुर कलेजा वाला आर्य है जो इस तरह से सारी दुनिया को शंका से मुक्त कर दे तो इस मार्ग को अपनाए। (देखो इश्तिहार 15 मार्च सन् 1897 ई.)

पाठकगण देखें कि यह कैसा फैसले का सही मार्ग था जो आर्यों के सामने प्रस्तुत किया गया और दूसरे घोषणापत्र में हज़रत मिर्ज़ा साहिब ने ऐसे व्यक्ति के लिए जो एक वर्ष की समय सीमा के अन्दर उपरोक्त ढंग पर क़सम खाकर न मरे, दस हज़ार रुपए का इनाम मुक़र्रर किया और यह भी स्वीकार किया कि इस दशा में बेशक आपको अपराधियों की तरह फांसी दी जाए और फिर आपकी लाश उपरोक्त व्यक्ति के सुपुर्द कर दी जाए इत्यादि इत्यादि। (देखो इश्तिहार 5 अप्रैल सन् 1897 ई.)

मगर कोई आर्य मुक़ाबले के लिए मैदान में न आया और केवल दूर से ही गीदड़ भबकियों की तरह अपना जी खुश करते रहे। सुब्हानल्लाह! यह कितना बड़ा निशान था जो इस्लाम की सत्यता और आर्य मज़हब के खण्डन में प्रकट हुआ। मानो हिदायत का सूरज निकला किन्तु खेद है कि अन्धी दुनिया उस सूरज की किरणों को न देख सकी।

इसके अतिरिक्त क़त्ल का शक करना कैसी नादानी और मूर्खता है नादानो! थोड़ी देर के लिए मान लो कि पंडित लेखराम हज़रत मिर्ज़ा साहिब ही की साज़िश से क़त्ल हुए, आगे क्या हुआ ? क्या इससे भविष्यवाणी की सच्चाई में कोई फ़र्क़ आ जाता है ? क्या यह सच नहीं कि दोनों ने ख़ुदा से फैसला चाहा था और दोनों ने दुआ की थी कि झूठा नष्ट हो और सच्चे की प्रतिष्ठा प्रकट हो और दोनों ने एक दूसरे के मरने की भविष्यवाणी की थी और दोनों ने अपने धर्म की सच्चाई इस मुबाहले के आधार पर ठहराई थी ? तो यदि इन सारी बातों के बावजूद मिर्ज़ा साहिब का इन्सानी हथियार पंडित लेखराम पर चल गया तो क्या यह साबित न हुआ कि (हज़रत मिर्ज़ा साहिब का ख़ुदा तो एक दूर की बात है) स्वयं मिर्ज़ा साहिब भी आर्यों के ख़ुदा से ज़्यादा ताक़तवर हैं कि इस जानकारी के बावजूद कि मेरे परमभक्त लेखराम ने मुझसे फैसला चाहा है और मेरे मज़हब की सच्चाई इस फैसले पर निर्भर है कि लेखराम सुरक्षित रहे और मिर्ज़ा साहिब मर जाएँ और एक दुनिया इस फैसले की प्रतीक्षा में है। आर्यों का ख़ुदा मिर्ज़ा साहिब को मारना तो दर किनार अपने परमभक्त लेखराम को मिर्ज़ा साहिब की साज़िश से भी सुरक्षित न रख सका और उसके मुकाबले में इस्लाम के ख़ुदा ने न केवल हज़रत मिर्ज़ा साहिब को तमाम् आसमानी और ज़मीनी मुसीबतों से बचाए रखा बल्कि आप के दुश्मन को ठीक आपकी भविष्यवाणी के अनुसार नष्ट करके इस्लाम की सच्चाई और आर्य मज़हब के झूठ का सदैव के लिए फैसला कर दिया।

फिर हम कहते हैं कि हे आर्य साहिबान! तुम हज़रत मिर्ज़ा साहिब पर तो क़त्ल की साजिश का शक करते हो पर यह तो बताओ कि संख्या, शक्ति और समृद्धि में अधिक होने के बावजूद तुमने क्यों हज़रत मिर्ज़ा साहिब को क़त्ल न करवा दिया ? हालाँकि तुम्हारी क़त्ल की धमकियाँ बता रही हैं कि तुम इन विषयों में अच्छी तरह अभ्यस्त हो। क्या यह सही नहीं कि तुम्हारे प्रतिनिधि के मिट्टी में मिल जाने के बाद हज़रत मिर्ज़ा साहिब ग्यारह वर्ष तक तुम्हारे सामने बिजली की तरह गरजते रहे ? और तुमने उनको, क़त्ल की धमकियाँ भी दीं। बल्कि उन दिनों में मुसलमानों के कुछ निर्दोष बच्चे पंजाब के कई शहरों में बेरहमी से क़त्ल भी किए गए। लेकिन ज़रा हज़रत मिर्ज़ा साहिब का भी तो बाल बीका करके दिखाया होता। हे बद्किस्मत क़ौम! ख़ुदा तेरी आँखें खोले! तूने निशान मांगा और वह तुझे दिया गया मगर तूने उससे फायदा न उठाया बल्कि अपने अधर्म में और भी बढ़ गई। ख़ुदा से डर कि एक दिन उसके सामने हाज़िर की जाएगी।

हम फिर पाठकों को संबोधित करके बड़े प्रेम और शिष्टाचार से कहते हैं कि क़त्ल का शक करना भविष्यवाणी की सच्चाई पर किसी प्रकार का सन्देह पैदा नहीं कर सकता पूर्णत: निराधार और खुला-खुला झूठ है। स्पष्ट है कि जुर्म दो प्रकार से ही साबित हो सकता था। एक यह कि गवर्नमेन्ट की तहकीकात में जुर्म साबित हो जाता। दूसरे यह कि ख़ुदाई फैसला से हज़रत मिर्ज़ा साहिब मुजरिम ठहर जाते। गवर्नमेन्ट से तहक़ीक़ात तो आर्य साहिबान ने दिल खोलकर करवा ली अर्थात रिपोर्टें कीं, तलाशियाँ करवायीं, गुप्तचर पुलिस विभाग के विशेष लोग स्पेशल तौर पर ड्यूटियों पर लगावाए और स्वयं भी एड़ी चोटी का ज़ोर लगाया, परन्तु परिणाम क्या निकला ? क्या कोई शक की एक छोटी सी भी गुंजाइश साबित हुई ? फिर दूसरा ढंग ख़ुदाई फैसले का था तो वह भी आर्य साहिबों के सामने प्रस्तुत कर दिया गया था। परन्तु उसकी ओर आर्य साहिबों ने रुख तक न किया। हालाँकि

इसके लिए यह शर्त रखी गई थी कि मौत ऐसे आसमानी अस्त्र से होगी कि जिसमें लोगों के षड़यन्त्रों का शक भी न सोचा जा सके और दस हज़ार रुपए का नकद इनाम भी साथ था और फिर उनके विचारानुसार पंडित लेखराम के क़ातिल की लाश भी उनको मिलनी थी। फिर क्या कारण है कि आर्य साहिबान ने उसे स्वीकार न किया और व्यर्थ बहानेबाज़ी में मौका टाल दिया ? यह बातें पूर्णत: विश्वास दिलाती हैं कि वस्तुत: आर्यों को यह डर था कि लेखराम साहिब तो जा चुके कहीं कोई दूसरा माननीय न चल बसे क्योंकि उनके दिल महसूस करते थे कि हज़रत मिर्ज़ा साहिब की सहायता में ख़ुदा का हाथ है।

पंडित लेखराम के क़त्ल के बाद आर्यों को दो अवसर ऐसे मिले जिनमें वे हज़रत मिर्ज़ा साहिब के ख़िलाफ़ कोई अमली कार्यवाही कर सकते थे और दोनों से उन्होंने पूरा-पूरा फ़ायदा उठाया। पहला मौका तो क़त्ल की साज़िश के उस मुक़दमे का था जो मसीहियों ने हज़रत मिर्ज़ा साहिब के ख़िलाफ़ दायर किया और जिसमें कई आर्य वकीलों ने मसीहियों की तरफ से मुक़द्दमे की मुफ़्त पैरवी की और वैसे भी आर्य लोग हर तरह उनके सहायक और मददगार हुए। दूसरा मौका वह था कि मौलवी करमदीन जेहलमी की ओर से एक फौजदारी मुक़द्दमा सन् 1903-1904 ई. में हज़रत मिर्ज़ा साहिब के ख़िलाफ़ दायर किया गया था जिसकी एक के बाद एक दो हिन्दू जजों की अदालत में सुनवाई हुई थी। उसमें आर्यों ने अपने जजों के खूब कान भरे। अत: अन्य प्रमाणों के अतिरिक्त उनके बदले हुए तेवर भी सारी कहानी कह देते थे। फिर संक्षिप्त यह कि पहला मजिस्ट्रेट ई.ए.सी. से मुंसिफी की ओर पदावनति होकर गुरदासपुर से तब्लील हो गया और दूसरे ने जो उसका क़ायमुकाम होकर आया था अपने दो जवान बेटों की मौत देखी। लेकिन जब उसने अपनी पत्नी की डरावनी ख्वाब के बावजूद जो उसने उन्हीं दिनों देखी थी हज़रत मिर्ज़ा साहिब पर पाँच सौ रुपये जुर्माना कर दिया तो अपील करने पर न्यायालय ने इस

फैसले पर बड़ी नाराज़गी प्रकट की और जुर्माना रद्द करके रुपया वापिस दिलाया और हज़रत मिर्ज़ा साहिब उस ख़ुदाई शुभ सूचना के अनुसार जो पहले से अखबारों के द्वारा मशहूर कर दी गई थी सम्मान सहित बरी कर दिए गए और आर्य साहिबान देखते के देखते रह गए। (देखो अलहकम व बदर व हक़ीक़तुल वह्यी)

इस लेख को समाप्त करने से पूर्व क़ादियान के आर्यों का थोड़ा सा वर्णन कर देना उचित मालूम होता है। क्योंकि उनके अन्दर भी ख़ुदाई क़ुदरत के कई विशेष निशान प्रकट हुए हैं। इसलिए जानना चाहिए कि क़ादियान की आर्य समाज एक पुरानी समाज है। इस समाज के दो सदस्य लाला शर्मपत और लाला मलावामल प्रारम्भ से हज़रत मिर्ज़ा साहिब के पास आते जाते थे और धार्मिक विचारों का आदान-प्रदान होता रहता था। उन दोनों ने हज़रत मिर्ज़ा साहिब के बीसियों निशान पूरे होते हुए देखे। पर जन्मजात बद्बख़्ती ने हिदायत नसीब न होने दी। (देखो ''तब्लीग-ए-रिसालत, क़ादियान के आर्य और हम'' इत्यादि)

जब आपने सन् 1884-1885 ई. में यह घोषणापत्र दिया कि जो व्यक्ति कोई निशान देखना चाहे वह एक वर्ष तक मेरे पास आकर रहे तो क़ादियान के कुछ आर्य और सनातन धर्मियों ने भी इस घोषणापत्र पर आप से निशान देखने की लिखित इच्छा प्रकट की। अत: इस विषय पर दोनों पक्षों के मध्य एक विधिवत् तहरीर लिखी गई और दोनों ओर से गवाह भी मुकर्रर हो गए। उन दिनों हज़रत मिर्ज़ा साहिब ने अपने कुछ निकट सम्बन्धियों मिर्ज़ा निज़ामुद्दीन साहिब और मिर्ज़ा इमामुद्दीन साहिब की इच्छा पर एक भविष्यवाणी की थी कि अल्लाह ने मुझे ख़बर दी है, कि इकत्तीस महीने के अन्दर-अन्दर उनके घर में से कोई व्यक्ति मर जाएगा जिसकी मृत्यु के कारण उन्हें बड़ा सदमा पहुँचेगा और इस भविष्यवाणी का कारण यह था कि मिर्ज़ा इमामुद्दीन और मिर्ज़ा निज़ामुद्दीन इत्यादि जो हज़रत मिर्ज़ा साहिब के चचेरे भाई

थे जो पहले दर्जे के अधर्मी थे और ख़ुदा के इल्हाम और कलाम पर हँसी ठट्ठा किया करते थे और अपने लिए किसी भयानक प्रकोपीय निशान के इच्छुक रहते थे। सारांश यह कि कुछ स्थानीय हिन्दुओं ने ऐसी तहरीर लिखकर हज़रत मिर्ज़ा साहिब को दे दी कि हमें भी घोषणापत्र के बुलावे के अनुसार एक वर्ष के अन्दर कोई निशान दिखाया जाए। (देखो तब्लीग़े रिसालत जिल्द 1)

अब ख़ुदा की क़ुदरत का तमाशा देखो कि अभी यह साल भी पूरा न गुज़रा था और 31 माह वाली भविष्यवाणी की निर्धारित समयसीमा में भी अभी कुछ दिन शेष थे कि मुख़ालिफों ने शोर मचाना शुरू कर दिया कि बस 31 माह मानो बीत गए हैं केवल कुछ ही दिन शेष हैं लेकिन कोई निशान प्रकट न हुआ और सब लोग ज़िन्दा सलामत मौजूद हैं। जब यह लोग हँसी ठट्ठा कर चुके तो अचानक ख़ुदाई चमत्कार प्रकट हुआ और वह इस तरह पर, कि जब 31 माह की समय सीमा में केवल 15 दिन शेष थे तभी मिर्ज़ा निज़ामुद्दीन की बेटी जो कि इमामुद्दीन की भतीजी थी 25 वर्ष की आयु में 15 माह का लड़का छोड़कर इस दुनिया से गुज़र गई और इस मौत से इस खानदान को बड़ा सदमा पहुँचा। मानो यह घटना एक ओर मिर्ज़ा निज़ामुद्दीन और मिर्ज़ा इमामुद्दीन साहिब के लिए और दूसरी ओर क़ादियान के उन हिन्दुओं के लिए निशान ठहर गई। परन्तु जब आँखें बन्द हों तो सूरज की किरणें कौन देखे ? क़ुर्आन शरीफ़ में अल्लाह तआला फ़रमाता है :-

وَإِنْ يَرَوْا آيَةً يُّعْرِضُوْا وَيَقُوْلُوْا سِحْرٌ مُّسْتَمِرٌّ۔

(सूरह अल-क़मर 54:3)

अर्थात ''काफ़िर जब कोई निशान पूरा होता देखते हैं तो मानते नहीं बल्कि मुँह फेर लेते हैं और कहते हैं यह तो कोई धोखा और चालबाज़ी मालूम होती है।''

क़ादियान वालों ने भी यह निशान देखा लेकिन धोखा और

चालबाज़ी कहकर दूसरी तरफ मुँह फेर लिया। बल्कि ज्यों-ज्यों समय बीतता गया अबू जहल और उसके साथियों की तरह मुख़ालिफत में आगे बढ़ते गए। जब लेखराम कत्ल हो गया तो दूसरे आर्यों की तरह क़ादियान के आर्यों का भी क्रोध बहुत बढ़ गया। अत: हज़रत मिर्ज़ा साहिब की ज़िन्दगी के आख़िरी कुछ सालों में उन्होंने क़ादियान से एक अख़बार निकालना शुरू किया और उसका नाम ''शुभ चिन्तक'' रखा। यह अख़बार आर्यों की सभ्यता को पूरी तरह प्रकट करता था क्योंकि झूठ, बनावट, बद्ज़ुबानी और कटुकता उसका पहला उसूल था। इस अख़बार के सम्पादक और प्रबन्धक तीन व्यक्ति थे अर्थात सोमराज, अक्षरचन्द्र और भगतराम, ये तीनों अत्यन्त दु:खदायी और अत्याचारी थे। इनके उपहास और बद्ज़ुबानी का कुछ नमूना चाहो तो निम्नलिखित है पढ़ लें :-

''यह व्यक्ति (अर्थात हज़रत मिर्ज़ा साहिब) अपना ही गुणगान करने वाला है। वासनाओं का रसिया है, दुराचारी है, बद्चलन है इसलिए गन्दे और अपवित्र स्वप्न उसको आते हैं। (देखो शुभ चिन्तक 22 अप्रैल सन् 1906 ई.)

''क़ादियानी मसीह के इल्हामों और उसकी भविष्यवाणियों की असलियत खोलने का ज़िम्मा उठाने वाला एक ही पर्चा शुभचिन्तक है। मिर्ज़ा क़ादियानी अशिष्ट, प्रसिद्धि पाने का इच्छुक, खाऊ है।'' (शुभ चिन्तक 15 मई सन् 1906 ई.)

''कमबख़्त, कमाने से शर्म करने वाला, धोखा, चालबाज़ी और झूठ में अभ्यस्त।'' (शुभ चिन्तक 22 दिसम्बर सन् 1906 ई.)

''हम उनकी चालाकियों को आम करेंगे और हमें उम्मीद भी है कि हम अपने इरादे में अवश्य सफल होंगे। मिर्ज़ा मक्कार, झूठ बोलने वाला है और मिर्ज़ा की जमाअत के लोग बद्चलन और लुच्चे हैं।'' (शुभ चिन्तक 22 दिसम्बर सन् 1906 ई.)

''हमने पन्द्रह साल तक लगातार साथ-साथ एक ही कस्बे में

उनके साथ रहकर उनके हाल पर ग़ौर किया तो इतने ग़ौर के बाद हमें यही मालूम हुआ कि यह व्यक्ति वस्तुत: मक्कार, स्वार्थी, रंगरसिया, और कटुभाषी इत्यादि इत्यादि है। निशान तो हमने इस अवधि तक कोई नहीं देखा। हाँ यह देखा है कि यह व्यक्ति हर दिन झूठे इल्हाम बनाता है और एक सबसे बड़ा मूर्ख है।" (शुभ चिन्तक 01 मार्च सन् 1907 ई.)

तात्पर्य यह कि उनका हर एक अंक गालियों से भरा हुआ निकलता था। हज़रत मिर्ज़ा साहिब आर्यवर्त के इन सभ्य सपूतों की गालियाँ तो सुनने के आदी थे ही, यह भी सुनते रहते और ख़ुदा स्वयं कोई फैसला करता बल्कि आपको अधिक कष्ट इस बात का हुआ कि यह लोग क़ादियान में रहते हैं और पड़ोसी होने का दावा करते हैं जो वस्तुत: है भी सच, तो अब यदि उनकी ओर से कोई बात बाहर वालों के पास जाएगी तो कमज़ोर प्रकृति के लोग अवश्य शंकाओं में पड़ेंगे और व्यर्थ में नासमझ लोगों के लिए सच्चाई स्वीकार करने के मार्ग में एक ठोकर लगेगी। इस पर आपने सन् 1907 ई. के प्रारम्भ में ''क़ादियान के आर्य और हम'' के नाम से एक पुस्तक लिखी और उसमें इन लोगों को ख़ुदा का ख़ौफ़ दिलाया और लिखा कि लेखराम का निशान तुम्हारे लिए गुज़र चुका है, अब भी यदि तुम इन झूठी बातें बनाने से न रुके तो ख़ुदा तुम्हारे अन्दर कोई दूसरा निशान प्रकट करेगा। अतएव आपने क़ादियान के आर्यों के बारे में लिखा कि :-

मौत-ए-लेखू बड़ी करामत है
पर समझते नहीं यह शामत है।
मेरे मालिक तू इनको ख़ुद समझा
आसमाँ से फिर इक निशाँ दिखला।

(''क़ादियान के आर्य और हम'' टाईटल पेज पृष्ठ अन्दरुनी)

फिर इसी किताब के पृष्ठ 61 पर लिखा :-

दीने ख़ुदा के आगे कुछ बन न आई आख़िर
सब गालियों पर उतरे दिल में उठा यही है।
शर्मो हया नहीं है आँखों में उनकी हर गिज़
वह बढ़ चुके हैं हद से अब इन्तिहा यही है।
हमने है जिस को माना क़ादिर है वह तवाना
उसने है कुछ दिखाना उस से रज़ा यही है।
ऐ आर्यो यह क्या है क्यों दिल बिगड़ गया है
इन शोख़ियों को छोड़ो राहे हया यही है।
मुझको हो क्यों सताते सौ इफ़्तिरा बनाते
बेहतर था बाज़ आते दूर अज़ बला यही है
जिसकी दुआ से आख़िर लेखू मरा था कटकर
मातम पड़ा था घर-घर वह मीरज़ा यही है
अच्छा नहीं सताना पाकों का दिल दु:खाना
गुस्ताख होते जाना उसकी जज़ा यही है।

फिर उन्हीं दिनों की बात है कि एक बार हमारे प्रिय मित्र शेख याक़ूब अली साहिब सम्पादक "अल् हक़म" क़ादियान के पोस्ट आफिस में बैठे थे और उनके पास उन तीन आर्यों में से अक्षरचन्द भी बैठा था और डाकख़ाना के उप डाकपाल बाबू अल्लादत्ता साहिब भी वहीं मौजूद थे उस समय बातों बातों में शेख याक़ूब साहिब ने अक्षरचन्द से कहा कि हज़रत मिर्ज़ा साहिब को ख़ुदा ने इल्हाम किया है कि हज़रत मिर्ज़ा साहिब बल्कि वे लोग भी जो आपके मकान में रहेंगे प्लेग से पूर्णत: सुरक्षित रहेंगे और यह एक ख़ुदा का निशान है जो तुम लोगों पर एक दलील है। इस पर बद्बख़्त अक्षरचन्द बोला – ''यह भी कोई निशान है ? मैं कहता हूँ कि मैं प्लेग से नहीं मरूँगा''। इस पर शेख साहिब ने ईमानी ग़ैरत से जोश में आकर उससे कहा कि अब तुम ज़रूर प्लेग से ही मरोगे (हक़ीक़तुल वह्यी पृष्ठ 154 ततिम्मा, इसके अतिरिक्त बाबू अल्लाह दत्ता साहिब अब भी ज़िन्दा

मौजूद हैं और हमारे मुख़ालिफ़ों में से हैं उनसे क़सम खिलाकर पूछ लो) अब देखो ख़ुदा की क़ुदरतनुमाई क्या जल्वा दिखाती है।''

किताब ''क़ादियान के आर्य और हम'' के प्रकाशन के कुछ दिन बाद क़ादियान में प्लेग आया और ख़ुदा के प्रकोपीय निशान ने कुछ ही दिनों के अन्दर-अन्दर उन तीनों का काम तमाम् कर दिया और उनकी मुसीबत उनके परिवार पर भी पड़ी। कई लोगों का तो घर का घर साफ हो गया और मिस्टर अक्षरचन्द जो हज़रत मिर्ज़ा साहिब की तरह प्लेग से सुरक्षित रहने का दावा करते थे अपने उस दावा के कुछ दिन बाद ही प्लेग का शिकार हो गए और साथ ही अख़बार शुभ चिन्तक भी सदैव के लिए मिट्टी में मिल गया। अत: हे बुद्धि और विवेक रखने वालो! सीख प्राप्त करो।

यह निशान भी लेखराम के निशान से कम नहीं बल्कि इससे उस आरोप का भी खण्डन हो गया कि लेखराम को नऊज़बिल्लाह हज़रत मिर्ज़ा साहिब ने क़त्ल करवा दिया था। नादानो! लेखराम को तो तुम्हारी सोच के अनुसार हज़रत मिर्ज़ा साहिब की छुरी मार गई और तुमने यह शक करके अपने आँसू पोंछ लिए, मगर अक्षरचन्द और सोमराज और भगतराम को किस छुरी ने मारा ? यदि आँखें हैं तो अब भी देखो, कान हैं तो अब भी सुन लो, दिल है तो अब भी सोचो कि दोनों अवसरों कर वही एक चीज़ थी अर्थात ख़ुदा की सज़ा जो एक के पेट में फौलादी छुरी बनकर घुस गई और दूसरों को प्लेग का कीड़ा बनकर खा गई और लाक्षणिक तौर पर इस निशान से उस एतराज़ का उत्तर भी हो गया कि क़ादियान में प्लेग क्यों आई। प्रथम तो हज़रत मिर्ज़ा साहिब का ऐसा कोई इल्हाम नहीं था कि क़ादियान में प्लेग बिल्कुल ही नहीं आएगी। बल्कि इल्हाम यह था कि यहाँ सफाया कर देने वाली प्लेग नहीं आएगी, अर्थात ऐसी प्लेग नहीं आएगी जो गाँव को वीरान और तबाह कर देने वाली हो और लोग बदहवास होकर इधर-उधर भाग जाएँ। जैसा कि ख़ुदा

तआला ने फ़रमाया -

لولاالاکرام لهلك المقام

अर्थात "यदि हमें इस बात का ख्याल न होता कि क़ादियान हमारे एक पवित्र रसूल का तख्तगाह है तो यह गाँव अवश्य इस बात का पात्र था कि इसे बिल्कुल ही नष्ट और बर्बाद कर दिया जाता।" पर انّه اوی القرية अर्थात "अब इसे पूरी वीरानी और तबाही से बचाया जाएगा।"

दूसरे यह कि यदि क़ादियान में प्लेग बिल्कुल ही न आती तो यह निशान किस तरह प्रकट होता कि एक ही जगह अर्थात पड़ोस ही में हज़रत मिर्ज़ा साहिब और अक्षरचन्द और सोमराज और भगतराम इत्यादि रहते हैं और दोनों पक्ष इस बात का दावा करते हैं कि हम प्लेग से सुरक्षित रहेंगे लेकिन प्लेग आती है और अक्षरचन्द और सोमराज और भगतराम का सफाया कर जाती है लेकिन हज़रत मिर्ज़ा साहिब के घर में एक चूहा तक नहीं मरता।

तात्पर्य यह कि हज़रत मिर्ज़ा साहिब ने आर्यों के साथ बौद्धिक व प्रामाणिक और आध्यात्मिक अर्थात दोनों मुक़ाबले के रूप में युद्ध किया और विजय पाई। इस पर अल्लाह की भूरि-भूरि प्रशंसा।

ब्रह्म समाज से मुक़ाबला

चौथा मज़हब जिसके साथ हज़रत मिर्ज़ा साहिब का मुक़ाबला हुआ वह ब्रह्म समाज है। ये लोग यद्यपि रीति-रिवाज की दृष्टि से हिन्दुओं के अन्दर शामिल हैं परन्तु उनकी आस्थाएं दूसरे हिन्दुओं से बिल्कुल भिन्न हैं और यह लोग कुछ विचारों और आस्थाओं में मुसलमानों के नए फ़िर्क़ा नास्तिक के समान हैं। अर्थात जिस तरह नास्तिक लोग इल्हाम और दुआ के स्वीकार होने और चमत्कार के इन्कारी हैं अर्थात उनकी ऐसी तावील करते हैं कि असल मसला का ही सफाया हो जाता है। इसी तरह यह लोग भी पैग़म्बरी के आने और

इल्हाम और दुआ इत्यादि के इनकारी हैं और अपने धर्म की बुनियाद केवल बुद्धि पर रखते हैं। यह लोग ख़ुदा के तो अवश्य क़ाइल हैं लेकिन इल्हाम और पैग़म्बरों के आने के घोर इनकारी हैं। हाँ दूसरे धर्मों के बुज़ुर्गों को साधारणतया बुरा नहीं कहते बल्कि ज्ञानी के तौर पर सम्मान की दृष्टि से देखते हैं। यह मज़हब थोड़ा सा भी प्रचार-प्रसार का धर्म नहीं। अर्थात यह लोग आर्यों और ईसाइयों की तरह बहस मुबाहसा की तरफ ज़्यादा ध्यान नहीं देते केवल ज्ञान के रंग में अपने विचारों को प्रकट करते रहते हैं और धार्मिक जोश व खरोश भी उनमें नहीं पाया जाता। इसलिए उनका हज़रत मिर्ज़ा साहिब के साथ कोई विधिवत् रूहानी मुक़ाबला नहीं हुआ। हाँ बेशक यह लोग भी उस व्यापक चैलेन्ज में संबोधित थे जो हज़रत मिर्ज़ा साहिब ने दूसरे धर्म वालों को दिया था। परन्तु इनकी ओर से कोई व्यक्ति विधिवत् सामने नहीं आया।

तार्किक और बौद्धिक रंग में भी उनके साथ हज़रत मिर्ज़ा साहिब का कोई विधिवत् मुनाज़रा (शास्त्रार्थ) नहीं हुआ लेकिन हज़रत मिर्ज़ा साहिब ने इनकी तरफ काफी ध्यान दिया है और अपनी कई रचनाओं में उनके अकीदों का खण्डन किया है। विशेषरूप से बराहीन अहमदिया भाग 3, और भाग 4 ब्रह्म समाज ही के अक़ीदों के खण्डन में हैं। इनके अतिरिक्त ''आइना कमालात-ए-इस्लाम'' और ''बरकातुद्दुआ'' और ''बराहीन अहमदिया'' भाग 5 और ''मक्तूबात'' में भी इनका काफी खण्डन पाया जाता है। हज़रत मिर्ज़ा साहिब ने बार-बार लिखा कि ख़ुदा पर ईमान का दावा, और फिर इल्हाम और दुआ और पैग़म्बरों के आने का इन्कार दो विपरीत विचार हैं। केवल बुद्धि मनुष्य को ख़ुदा के बारे में इस मर्तबा से आगे कदापि नहीं ले जा सकती कि कोई ख़ुदा होना चाहिए। अर्थात बुद्धि का कार्य अधिक से अधिक यह है कि ज्ञान की दृष्टि से यह साबित हो जाए कि कोई ख़ुदा होना चाहिए। लेकिन ''होना चाहिए'' का मर्तबा कदापि सन्तुष्टि योग्य नहीं। बल्कि

सच यह है कि ख़ुदा के बारे में इस हद तक का ईमान कोई ईमान ही नहीं और न यह बनावटी ईमान एक सच्चे प्रेमी और सत्याभिलाषी की स्वाभाविक प्यास को बुझा सकता है बल्कि कभी-कभी तो वह शुष्क फिलास्फरों की तरह नास्तिकता तक पहुँचा देता है। असल ईमान यह है कि इन्सान ख़ुदा के बारे में ''होना चाहिए'' के सन्देह युक्त और खतरनाक विचारधारा के स्थान से निकलकर ''है'' के निश्चित और सुरक्षित स्थान तक पहुँच जाए और यह अकेली बुद्धि का काम नहीं है क्योंकि ख़ुदा की हस्ती सृष्टि से परे है अकेली बुद्धि उस तक कदापि नहीं पहुँचा सकती वह केवल दूर से उसकी ओर इशारा कर सकती है। अत: अवश्य है कि कोई ऐसा मार्ग हो जो मनुष्य को ख़ुदा तक पहुँचा दे और वह यही है कि ख़ुदा ख़ुद अपने इल्हाम और पैग़म्बरों के माध्यम से अपने भक्तों की ओर आए और अपने अस्तित्व को महसूस और सुस्पष्ट कराए ताकि ईमान केवल इस हद तक न रहे कि कोई ख़ुदा होना चाहिए बल्कि इस हद तक पहुँच जाए कि ख़ुदा ''है'' और मनुष्य उसके साथ व्यक्तिगत सम्बन्ध क़ायम कर सके। ''होना चाहिए'' का मर्तबा तो केवल एक कपोल कल्पित (काल्पनिक) ख़ुदा को प्रस्तुत करता है। लेकिन हज़रत मिर्ज़ा साहिब फ़रमाते हैं :-

बिन देखे किस तरह किसी मह्रुख़ पे आए दिल।
क्योंकर कोई ख़्याली सनम् से लगाए दिल।।

इसके अतिरिक्त आपने अपने इल्हामों और उन ख़ुदाई चमत्कारों को अकाट्य और निर्णायक प्रमाण के रूप में प्रस्तुत किया जो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के माध्यम से और इस युग में स्वयं आप के माध्यम से ख़ुदा ने दिखाए और इन्कार करने वालों को आज़माइश और देखने के लिए बुलाया। लेकिन कोई व्यक्ति सामने न आया और इस्लाम का झण्डा ऊँचा ही लहराता रहा।

देव समाज से मुक़ाबला

पाँचवा नास्तिकता और देवसमाज का मज़हब था। यह मज़हब भी आजकल अन्दर ही अन्दर बहुत से दिलों को खा रहा था। परन्तु कुछ ने हिम्मत करके उसको व्यक्त कर दिया और एक अलग पार्टी बना ली। लेकिन अधिकतर ने अपने भ्रम दिल में छुपाए रखे। यदि ध्यान से देखा जाए तो अधिकतर लोगों के ईमान के स्तम्भ को यह कीड़ा पूरी तरह खा चुका है। हिन्दुओं, ईसाइयों बल्कि स्वयं मुसलमानों और दूसरी क़ौमों में इन्हीं लोगों की अधिकता है जिनके ईमान को यह घुन लग चुका है और इस ज़माने के ज़हरीले विचार और आधुनिक विद्याओं के घातक प्रभाव और भौतिकवाद के अन्धकार उनके धर्म और सदाचरण का अन्त कर चुके हैं। यह लेग केवल परम्परा और क़ौम की दृष्टि से अपने धर्म की ओर मंसूब होते हैं। यदि उनको अपने मज़हब की कोई ग़ैरत है तो वह भी केवल जातिगत तौर पर, धार्मिक तौर पर नहीं। इन परोक्षरूपी नास्तिकों के अतिरिक्त प्रत्यक्ष रूप से भी एक गिरोह ऐसा मौजूद है जो ख़ुदा का इन्कार करता है। यह गिरोह हिन्दुओं में स्पष्ट तौर पर मौजूद है जो देवसमाज के नाम से मशहूर है। इस गिरोह का हज़रत मिर्ज़ा साहिब के साथ कोई विधिवत् मुक़ाबला नहीं हुआ पर गहन दृष्टि से देखा जाए तो मानो आप की सारी उम्र इसी गिरोह के मुक़ाबले में गुज़री और आपकी हर रचना इसी गिरोह की विचारधारा के खण्डन में है। क्योंकि ध्यान से देखने पर ज्ञात होता है कि जिन प्रमाणों से आपने दूसरे धर्म वालों को पराजित किया वे सब प्रमाण इस धर्म को धूल चटा रहे हैं।

विशेषकर रूहानी मैदान के प्रमाण तो इस धर्म के ख़िलाफ़ मानो एक सूरज चढ़ा देते हैं। उदाहरणत: आथम की मौत, मार्टन क्लार्क की नाकामी, डूई की मौत, इन्द्रमन का फ़रार, लेखराम का क़त्ल, अक्षरचन्द इत्यादि की तबाही इत्यादि जहाँ मसीहियत और आर्य धर्म

की जड़ काट रहे हैं वहाँ नास्तिकता और देवसमाज की गर्दन पर भी एक धारदार कुल्हाड़ी का काम देते हैं।

जब आप ने विभिन्न धर्मों के लोगों को निशान देखने के लिए बुलाया तो उनमें देव समाज को विशेष रूप से आमन्त्रित किया। यह अटूट सत्य है कि नास्तिक का दिल बहुत कमज़ोर होता है अत: उनमें से कोई व्यक्ति सामने न आया। जो ख़ुदा को मानता है चाहे वह ग़लत तौर पर ही हो लेकिन फिर भी उसके दिल को कुछ न कुछ सहारा होता है लेकिन नास्तिक का दिल हमेशा काँपता रहता है और उसे कभी भी चैन और दिल को ठण्डक नहीं मिलती। इसलिए वह आमतौर पर मुकाबले में बुज़दिल होता है। अत: किसी नास्तिक देवसमाजी को हिम्मत नहीं हुई कि हज़रत मिर्ज़ा साहिब के मुकाबले पर आता। आपने उन लोगों का दो तरह मुकाबला किया। एक तो यह साबित किया कि सद्‌बुद्धि का सही प्रयोग हर चिन्तन करने वाले को एक स्रष्टा के अस्तित्व का पता बता रहा है। क्योंकि यह भौतिक जगत अपनी समस्त सूक्ष्म से सूक्ष्म हिकमतों और अद्बितीय प्रबन्धों के साथ एक सर्वशक्तिमान स्रष्टा पर प्रमाण है और इस अद्बितीय कारखाना को बिना स्रष्टा के समझना स्पष्टरूप से बुद्धि के विपरीत है। अत: हम इस बात को स्वीकार करने के लिए विवश हैं कि इस संसार का कोई स्रष्टा और मालिक होना चाहिए और जब तक सत्याभिलाषी ''होना चाहिए'' के स्तर तक पहुँचता है तो फिर उसके लिए इल्हाम और क़ुदरतनुमाई के निशानों से लाभ उठाने का द्बार खोला जाता है जो उसे ''है'' के उच्चस्तर ईमान की ओर उठाकर ले जाते हैं। अर्थात होना चाहिए तक पहुँचना तो ख़ुदा की कृपा से मनुष्य का काम है और ''है'' तक पहुँचाना ख़ुदा का कर्म है जो वह अपनी विशेष ताक़तों और इल्हाम के द्बारा करता है। हज़रत मिर्ज़ा साहिब फ़रमाते हैं :-

क़ुदरत से अपनी ज़ात का देता है हक़ सुबूत ।
उस बेनिशां की चेहरा नुमाई यही तो है ।।

जिस बात को कहे कि करूँगा मैं यह ज़रूर ।
टलती नहीं वह बात ख़ुदाई यही तो है ।।

ख़ुदा जैसी सूक्ष्म, अदृश्य और सृष्टि से परे हस्ती के बारे में यह समझना कि वह बाह्येंन्द्रियों[1] (अर्थात कर्मेंद्रियों) से महसूस की जा सकती है एक मूर्खतापूर्ण बात है। क़ुर्आन शरीफ में लिखा है कि :-

لَا تُدْرِكُهُ الْأَبْصَارُ وَهُوَ يُدْرِكُ الْأَبْصَارَ وَهُوَ اللَّطِيفُ الْخَبِيرُ۔

(सूरह अल-अनआम 6:104)

अर्थात ''चूँकि ख़ुदा सूक्ष्म है इसलिए बाह्येन्द्रियाँ उस तक नहीं पहुँच सकतीं, परन्तु वह सूक्ष्म से सूक्ष्म बातों को जानने वाला भी है और जानता है कि उस तक पहुँचे बिना मनुष्य आध्यात्मिक रूप से ज़िन्दा नहीं रह सकता और उसका ईमान परिपूर्ण होना तो दर किनार क़ायम भी नहीं रह सकता। इसलिए वह स्वयं मनुष्य की इन्द्रियों के पास आकर अपने आपको महसूस करवाता है अर्थात पैग़म्बरों एवं इल्हाम और क़ुदरत नुमाइयों से अपना चेहरा दिखाता है ताकि मनुष्य का ईमान "होना चाहिए" के सन्देहयुक्त स्तर से निकलकर ''है'' के विश्वसनीय स्तर तक पहुँच जाए। (हस्ती बारी तआला के बारे में विस्तारपूर्वक जानकारी के लिए विनीत की पुस्तक ''हमारा ख़ुदा'' देखी जाए)

अत: हज़रत मिर्ज़ा साहिब ने दुनिया को संबोधित करके कहा कि आओ मैं तुम्हें दिखाता हूँ कि ख़ुदा है और वह सब कुछ जानता है चूँकि मैं एक मनुष्य होने के कारण सम्पूर्ण ज्ञान नहीं रखता लेकिन ख़ुदा मुझे कहता है कि यह चीज़ यों होगी और फिर हज़ारों पर्दों के पीछे अदृश्य होने के बावजूद आख़िरकार वह चीज़ उसी तरह ज़ाहिर हो जाती है जिस तरह ख़ुदा ने कहा था। आओ और इसकी आज़माइश कर लो। मैं तुम्हें दिखाता हूँ कि ख़ुदा है और वह हर चीज़ पर समर्थ है और मैं

1. अर्थात स्पर्शेन्द्रिय, श्रवणेन्द्रिय, घ्राणेन्द्रिय, स्वादेन्द्रिय, दृष्टेन्द्रिय - अनुवादक

मनुष्य होने के कारण सर्वशक्तिमान नहीं हूँ। लेकिन ख़ुदा मुझे कहता है कि मैं अमुक काम इस प्रकार करूँगा और वह काम ऐसा होता है कि मनुष्य की ताक़त से उस तरह पर नहीं हो सकता परन्तु वह ख़ुदा के कथनानुसार उसी तरह हो जाता है आओ और उसकी आज़माइश कर लो। मैं तुम्हें दिखाता हूँ कि ख़ुदा है और वह दुआओं को सुनता है क्योंकि मैं ख़ुदा से ऐसे कामों के बारे में दुआ माँगता हूँ कि वे देखने में अनहोने होते हैं परन्तु ख़ुदा मेरी दुआ से उन कामों को पूरा कर देता है आओ और उसकी आज़माइश कर लो। मैं तुम्हें दिखाता हूँ कि ख़ुदा है और वह इस्लाम के दुश्मनों पर जो बद्ज़ुबानी में हद से बढ़ते हैं अन्तिम और निर्णायक तर्क प्रस्तुत करने के बाद अपना प्रकोप डालता है आओ और उसकी आज़माइश कर लो मैं तुम्हें दिखाता हूँ कि ख़ुदा है और वह स्रष्टा है चूँकि मैं मनुष्य होने के कारण सृजन नहीं कर सकता परन्तु वह मेरे द्वारा अपने सृजन के चमत्कार दिखाता है जैसा कि उसने बिना किसी पदार्थ के मेरे कुर्ते पर अपनी स्याही के छींटे डाले। अत: आओ और उसकी परीक्षा कर लो। मैं तुम्हें दिखाता हूँ कि ख़ुदा है और वह तौबा को स्वीकार करता है और भक्त की ओर से आकृष्ट होने पर वह स्वयं भी उसकी ओर रहमत के साथ आकृष्ट होता है और हालतों के बदल जाने पर अपने अज़ाब (दण्ड) के फैसले को बदल देता है क्योंकि वह बहुत दयालु है अत्याचारी नहीं, आओ और उसकी परीक्षा कर लो, मैं तुम्हें दिखाता हूँ कि ख़ुदा है और वह अपने विशिष्ट भक्तों से प्यार की बातें करता है। जैसा कि उसने मुझसे किया आओ और उसकी परीक्षा कर लो मैं तुम्हें दिखाता हूँ कि ख़ुदा है और वह समस्त लोकों का पालनहार है कोई चीज़ उसके पालन-पोषण से बाहर नहीं क्योंकि जब वह कहता है कि मैं अमुक चीज़ के पालन-पोषण को छोड़ता हूँ तो फिर वह चीज़ चाहे कैसी भी हो जीवित नहीं रह सकती। आओ और इसकी आज़माइश कर लो और फिर मैं तुम्हें दिखाता हूँ कि ख़ुदा है और वह मालिक है क्योंकि सृष्टि में से कोई चीज़ उसकी

नाफ़र्मानी नहीं कर सकती और वह जिस चीज़ पर अधिकार करना चाहे कर सकता है। अतएव आओ कि मैं तुम्हें आसमान पर उसके अधिकार दिखाऊँ, आओ कि मैं तुम्हें ज़मीन पर उसके अधिकार दिखाऊँ, आओ कि मैं तुम्हें हवा में उसके अधिकार दिखाऊँ, आओ कि मैं तुम्हें पानियों पर उसके अधिकार दिखाऊँ, आओ कि मैं तुम्हें पहाड़ों पर उसके अधिकार दिखाऊँ, आओ कि मैं तुम्हें क़ौमों पर उसके अधिकार दिखाऊँ, आओ कि मैं तुम्हें हुकूमतों पर उसके अधिकार दिखाऊँ, आओ कि मैं तुम्हें दिलों पर उसके अधिकार दिखाऊँ, अत: आओ और उसकी आज़माइश कर लो।

यह एक बहुत बड़ा दावा है, लेकिन सोचो कि यदि यह साबित हो जाए तो क्या नास्तिकता क़ायम रह सकती है ? परन्तु मुझे उस हस्ती की क़सम है जिसके कब्ज़े में मेरे प्राण हैं कि हज़रत मिर्ज़ा साहिब ने अल्लाह के विधानानुसार यह सब बातें करके दिखला दीं और यदि यह कहो कि फिर लोगों ने हज़रत मिर्ज़ा साहिब को क्यों नहीं माना तो यह मूर्खतापूर्ण ऐतराज़ होगा। कौन सा अवतार आया है कि जिसे सब लोगों ने मान लिया ? मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से बढ़कर कौन होगा कि हज़रत मिर्ज़ा साहिब उनकी दासता को अपने लिए गर्व समझते हैं। अत: जैसा कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि यदि ईसा(अ) और मूसा(अ) भी ज़िन्दा होते तो उन्हें भी मेरी दासता का जुआ अपनी गर्दन पर रखना पड़ता। किन्तु इन सबके बावजूद वह आया और ख़ुदा की अजीब दर अजीब क़ुदरत नुमाइयाँ दिखाकर गुज़र गया पर दिल के अन्धों ने उसे न माना। बल्कि अब तक भी जबकि साढ़े तेरह सौ वर्ष बीत चुके हैं उसके इनकार करने वालों की संख्या उसके मानने वालों से बहुत अधिक है। अत: मूर्खतापूर्ण ऐतराज़ मत करो और क़ुर्आन खोलकर देखो कि ख़ुदा फ़रमाता है :-

يَاحَسْرَةً عَلَى الْعِبَادِ مَا يَأْتِيهِمْ مِنْ رَسُولٍ إِلَّا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِئُونَ

(सूरह यासीन 36:31)

अर्थात ''लोगों पर अफ़सोस है, कि कोई भी अवतार दुनिया में ऐसा नहीं आया कि लोगों ने उसका इन्कार करके उस की हँसी न उड़ाई हो।''

अत: हम खुश हैं कि हज़रत मिर्ज़ा साहिब के विरोधियों ने भी अवतारों के विरोधियों की यह परम्परा अपने हाथों से पूरी कर दी। अत: सोचो तो यह मुखालिफत भी हज़रत मिर्ज़ा साहिब की सच्चाई का एक प्रमाण है।

अन्य विभिन्न धर्मों से मुक़ाबला

उपरोक्त पाँच धर्मों को जिस रंग में हज़रत मिर्ज़ा साहिब ने मुकाबला करके पराजित किया और उनके समक्ष इस्लाम को विजयी कर दिखाया उसका संक्षिप्त वर्णन हमने ऊपर बयान कर दिया है और विस्तार पूर्वक अध्ययन हेतु रचनाओं के उद्धरण दे दिए गए हैं। इन धर्मों के अतिरिक्त दुनिया में एक बुद्ध धर्म भी पाया जाता है। यद्यपि अब यह धर्म रूहानी दृष्टिकोण से एक चन्द्रावस्था में है अर्थात इसके अनुयायियों में जो सम्भवत: संख्या की दृष्टि से अन्य धर्म वालों से बढ़े हुए हैं आध्यात्मिक रूप से जीवन की कोई विशेष धड़कन नहीं पाई जाती और इस धर्म में प्रचार-प्रसार का काम भी व्यवहारिक रूप से बिल्कुल बन्द है। परन्तु फिर भी उसे नज़र अन्दाज़ नहीं किया गया। (देखें पत्रिकाएँ रीवियू आफ़ रिलीजन्ज़)

फिर यहूदियत है इसकी धार्मिक हालत भी जो है वह सब के सामने है मगर उसका भी बीच में कई जगहों पर मिर्ज़ा साहिब की पुस्तकों में वर्णन आ चुका है। फिर पारसी धर्म है जिसका अब केवल इतना ही काम है कि वह एक क़ौमी धर्म के रूप में थोड़े से गिने

चुने लोगों तक ही सीमित है। इसका भी रीवियू आफ़ रिलीजन्ज़ में थोड़ा-बहुत वर्णन किया जा चुका है। फिर मूर्तिपूजा है इसका भी कई जगहों पर हज़रत मिर्ज़ा साहिब की पुस्तकों में वर्णन पाया जाता है। फिर थियोसॉफ़ी (ब्रह्मवाद) है जो कोई धर्म नहीं बल्कि एक दर्शन है। लेकिन इसे भी नज़र अन्दाज़ नहीं किया गया। (देखिए रीवियू ऑफ रिलीजन्ज़) फिर बहाई धर्म है जिसमें ज़िन्दगी की कुछ धड़कन पाई जाती है क्योंकि यह एक बिल्कुल नया सिलसिला है लेकिन अब वह भी गिर रहा है और ध्यान दो तो ज्ञात होता है कि यह कोई धर्म नहीं है बल्कि एक प्रकार की शिष्टाचार संबंधी नीतिवादी सोसाइटी है। इसके संस्थापक ने ख़ुदा के प्रतिरूप होने का दावा किया था न कि पैग़म्बर होने का, और विभिन्न धर्मों की अच्छी लगने वाली शिक्षाओं को जो सुनने में कानों को भली लगती हैं लेकर एक सिलसिला जारी कर दिया था। इसी कारण से उसमें कोई ऐसे बुनियादी धार्मिक सिद्धान्त नहीं पाए जाते जिन पर व्यवहृत होना अनिवार्य हो और वे दूसरे धर्मों से टकराएँ बल्कि सारे धर्मों को सारांशत: अच्छा कहा जाता है और एक संयुक्त नीतिवादी शिक्षा दी जाती है। इस ज़माने के कुछ स्वच्छंद लोगों को इसकी ओर झुकाव हो जाता है। अत: इस से स्पष्ट है कि वस्तुत: यह धर्म स्वच्छन्दता की एक शाखा है जिसमें क़ुर्आनी शरीअत (विधान) के मन्सूख (निरस्त) होने का दावा किया गया है इसके बारे में भी रीवियू आफ़ रिलीजन्ज़ क़ादियान, में वर्णन हो चुका है और जमाअत अहमदिया की ओर से कुछ पुस्तकें भी प्रकाशित की गई हैं। (देखो ''बहाई तहरीक'' लेखक मौलवी अबुल अता साहिब)

धर्म को परखने के दो स्वर्णिम सिद्धान्त

अब विस्तृत रूप से तो धर्मों के मुकाबले की चर्चा हो चुकी। लेकिन इस बहस को समाप्त करने से पहले इस विषय पर हम

सामूहिक रूप से एक सरसरी दृष्टि डालते हैं और संक्षिप्त रूप से उन बातों का वर्णन करते हैं जो आमतौर पर हज़रत मिर्ज़ा साहिब ने इस्लाम की सेवा के लिए कीं।

पहली बात यह है कि हज़रत मिर्ज़ा साहिब ने धार्मिक बहस (शास्त्रार्थ) के लिए एक ऐसा ठोस और सुनहरा सिद्धान्त प्रस्तुत किया है जो धर्मों के मध्य होने वाले शास्त्रार्थ को बहुत संक्षिप्त रूप दे देता है जिससे एक सत्याभिलाषी को सत्य और असत्य में अन्तर करने का बहुत अच्छा अवसर हाथ आ जाता है। इसी सिद्धान्त की ओर हमने आथम के मुबाहसा का वर्णन करते हुए संकेत किया था और वह सिद्धान्त यह है जिस पर हज़रत मिर्ज़ा साहिब ने बहुत बल दिया है कि जो व्यक्ति अपने धर्म से संबंधित कोई दावा करे तो उसका कर्तव्य है कि पहले उस दावे को अपनी धार्मिक पुस्तक से सिद्ध करे फिर उस पर अपनी उसी पुस्तक से प्रमाण प्रस्तुत करे उदाहरणत: एक ईसाई कहता है कि ख़ुदा तीन हैं पर उसका दावा तब तक ध्यान देने योग्य न होगा जब तक कि वह उस दावे को इन्जील से साबित करके न दिखाए। अर्थात उसको यह साबित करना होगा कि इन्जील में वास्तव में यह दावा मौजूद है कि ख़ुदा तीन हैं और फिर इसके बाद उसको इन्जील से ही उस दावे की दलील प्रस्तुत करनी होगी। यदि वह इन्जील से यह दावा साबित न कर पाएगा तो यह साबित हो जाएगा कि यह अक़ीदा इन्जील का अक़ीदा नही है। इस दशा में वह ईसाइयत की ओर से प्रस्तुत नहीं किया जा सकेगा बल्कि वह किसी व्यक्ति विशेष का व्यक्तिगत अक़ीदा समझा जाएगा जो उसने इन्जील की ओर मन्सूब करके प्रस्तुत कर दिया है। चूँकि मूल इन्जील में तसलीस (अर्थात् तीन ख़ुदा होना) का कोई सबूत मौजूद नहीं है इसलिए केवल इसी एक मर्म से बहस का अन्त हो जाएगा क्योंकि बहस ईसाइयत से थी न कि किसी व्यक्ति विशेष के अक़ीदों से। स्पष्ट

है कि वह पुस्तक किसी आकर्षण की पात्र नहीं समझी जा सकती जो अपने धर्म के मौलिक सिद्धातों के बारे में दावा तक भी न कर सके या केवल दावे के लिए भी किसी व्यक्ति विशेष के मुँह की ओर ताकना पड़े या वह दावा प्रस्तुत कर दे पर दलील प्रस्तुत न कर सके अर्थात दावा तो उसमें मौजूद हो लेकिन दलील न हो और दलील के लिए उसे किसी व्यक्ति विशेष का एहसानमन्द होना पड़े तो यह भी उस किताब और उस धर्म के झूठे होने की एक पक्की दलील होगी। क्योंकि वह धर्म जो प्रमाणों के लिए दूसरों का मुहताज हो और केवल दावा कर देना ही जानता हो और दलील देने के समय चुप रह जाता हो वह ख़ुदा की ओर से नहीं समझा जा सकता। तात्पर्य यह कि दोनों प्रकार से उस धर्म की मौत है। हम यह मानते हैं कि कुछ सहायक प्रमाण बाह्य भी हो सकते हैं और इसमें कोई हर्ज नहीं कि कुछ प्रमाण बाह्य भी हों, लेकिन किसी किताब का प्रमाणों के प्रस्तुतीकरण से पूर्णत: रहित होना उसकी एक बहुत बड़ी कमज़ोरी है जिसके होते हुए ऐसा कोई भी धर्म आकर्षण योग्य नहीं समझा जा सकता। अब देखो कि यह सिद्धान्त कितना पक्का और ठोस है लेकिन इसे मानकर इस्लाम के अलावा दूसरे धर्मों का कुछ भी शेष नहीं रहता। उदाहरण के तौर पर ईसाइयों का यह अक़ीदा है कि ख़ुदा तीन हैं, मसीह ख़ुदा है, कफ़्फ़ारा का अक़ीदा सच्चा है, अब ढूँढो तो इन्जील में इस अक़ीदे की दलील तो क्या दावा भी नहीं मिल सकता। ईसाई अपने मुँह से जो चाहें कहें पर हमें तो इन्जील की शिक्षा से काम है जिसको वे अपनी धार्मिक पुस्तक समझते हैं और इन्जील इन विषयों के बारे में एक मूर्ति की तरह खामोश खड़ी है। इन्जील से यदि कुछ साबित होता है तो यही कि ख़ुदा एक है कोई उसका साझीदार नहीं और मसीह उसका एक चुना हुआ भक्त था इसके अतिरिक्त कुछ भी नहीं। चलो फुर्सत मिली और सारी बहस का अन्त हो गया।

अच्छी तरह जान लो कि धार्मिक सिद्धान्त को, जिन पर सारे विषय की बुनियाद है इबारत के अगले-पिछले और हालात के विरुद्ध, तुच्छ निष्कर्षों से निकालना एक हास्यास्पद बात है। सिद्धान्त के बारे में तो मज़हब को एक पवित्र और सुस्पष्ट दावा प्रस्तुत करना चाहिए जो क़ुर्आन की सुस्पष्ट आयतों की तरह सिद्ध हो। यदि धार्मिक सिद्धान्त में भी नीच और घटिया निष्कर्षों से काम लिया जाय तो धार्मिक आस्थाओं से विश्वास उठ जाता है। देखो क़ुर्आन शरीफ ने इस्लामी सिद्धान्तों के बारे में अपने दावे कैसे खुले और सुस्पष्ट शब्दों में बयान किए हैं और उनको बार-बार दुहराकर मानो एक सूरज चढ़ा दिया है पर इन्जील में यह बात बिल्कुल नहीं पायी जाती।

दूसरा दर्जा प्रमाण का है तो इसमें भी इन्जील बिल्कुल गूँगी है दावों में तो ईसाई लोग दूर की खींचतान और घटिया निष्कर्षों के साथ कुछ ताना बाना खड़ा कर भी देते हैं पर प्रमाण कहाँ से लाएँ। इसलिए विवश होकर कुछ ज़ैद के दिमाग़ से लेकर कुछ बक़र से मांगकर कुछ खालिद से पूछकर इन्जील के भिक्षापात्र को भरना पड़ता है। अब यह अजीब धर्म है जो न तो अपना दावा प्रस्तुत करता है और न इस पर कोई प्रमाण प्रस्तुत करता है। बल्कि एक मोम की नाक है पुजारियों ने जिधर चाहा मोड़ दी। मसीही लोग बताएँ कि इन्जील ने उन पर क्या एहसान किया ? यह तो इन्जील पर मसीहियों का एहसान हुआ कि भीख माँगकर ही सही उन्होंने इन्जील को शर्मिन्दगी से बचाया और उसके कटोरे में अपनी ओर से दावा और प्रमाण डालकर खानापूर्ति कर दी। لاحول ولا قوۃ اِلّا باللہ۔

आर्यों का भी यही हाल है। उदाहरण के रूप में उनका सबसे बड़ा विषय आत्मा और पदार्थ के अनादि होने का विषय है लेकिन जब वेद से दावा माँगा जाए तो देने में असमर्थ। चारों वेदों के पन्ने चाटकर अन्त में केवल एक मन्त्र प्रस्तुत करते हैं जिसमें उनके गुमान में लाक्षणिक और रूपक के तौर पर आत्मा और पदार्थ के अनादि होने का दावा

बयान हुआ है। अब देखो यह कैसा मज़हब है कि भारी-भारी चार किताबें मौजूद हैं जिन्हें सम्भव है कि एक कमज़ोर आर्य उठा भी न सके, पर दलील तो अलग रही, मज़हब के मूल सिद्धान्त को प्रस्तुत करने में असमर्थ है और यदि कुछ है तो चारों वेदों में केवल एक मन्त्र है जिसके बारे में स्वयं आर्य साहिबान भी मानते हैं कि इससे केवल लाक्षणिक तौर पर इस अक़ीदे का निष्कर्ष निकलता है। किसी ने ख़ूब कहा है :-

बहुत शोर सुनते थे पहलू में दिल का
जो चीरा तो इक क़तरा ख़ूँ न निकला

ऐसे आवश्यक और महत्वपूर्ण सिद्धान्त के बारे में तो वेद का कर्त्तव्य था कि खुले-खुले और सुस्पष्ट शब्दों में अपना अक़ीदा बयान करता और फिर जगह-जगह पर उसे दोहराता ताकि सन्देह की कोई गुंजाइश शेष न रहती। परन्तु ऐसा नहीं किया गया। इसलिए यह एक बड़ा सन्देह पैदा होता है कि आत्मा और पदार्थ के अनादि होने का अक़ीदा वेद का अक़ीदा ही नहीं है बल्कि आजकल के आर्य साहिबान का मनगढ़त अक़ीदा है जो वेद की ओर अकारण मन्सूब कर दिया गया है। क्योंकि मुद्दई सुस्त गवाह चुस्त वाला विषय है।

फिर प्रमाण माँगे जाएँ तो उनका भी यही हाल है कि वेद साहिब तो मूर्ति की तरह चुप हैं पर चेलों ने आसमान सिर पर उठा रखा है। अब स्पष्ट है कि जिस किताब का अपने मज़हब के मूल सिद्धान्त के बारे में यह हाल है कि न तो दावा स्पष्ट और विश्वसनीय तौर पर बयान हुआ है और न दलील का कहीं पता चलता है बल्कि दोनों के लिए उसे दूसरे के द्वार पर भीख माँगनी पड़ती है वह हमें क्या राह दिखा सकती है ? वह तो स्वयं अन्धों की तरह इस बात की मुहताज है कि कोई दूसरा व्यक्ति उसे रास्ता दिखलाए। हज़रत मिर्ज़ा साहिब क्या ख़ूब फ़रमाते हैं :-

मुर्दा से कब उम्मीद कि वह ज़िन्दा कर सके ।
उससे तो ख़ुद मुहाल कि रह भी गुज़र सके ।।

ध्यानपूर्वक सोचो तो यह एक पूर्णत: ठोस बात है कि इन सब धर्मों की जड़ सत्य पर थी और मौजूदा गलत और दूषित विचार जो पूर्णत: मुश्रिकाना हैं बाद की मिलावटें हैं और धीरे-धीरे बाहर से दाखिल होकर दीन-धर्म का हिस्सा बन गए हैं। इसलिए धर्म की मूल पुस्तकें मनुष्य की दख़लंदाज़ी के बावजूद अब तक भी काफी हद तक उन दूषित अकीदों से रहित हैं जो उनके अनुयायियों में व्यवहारिक दृष्टि से पाए जाते हैं। मूल शिक्षा और सच्चाई का तत्व उनसे पूर्णत: नष्ट नहीं हुआ। यही कारण है कि उन पुस्तकों में इन झूठे विचारों के प्रमाण मिलना तो दूर बल्कि केवल दावा ही साबित करना मुश्किल है। तात्पर्य यह कि यह एक अति उत्तम और ठोस नियम है जो हज़रत मिर्ज़ा साहिब ने धर्मों के मध्य बहस के लिए क़ायम किया है यदि इसको दृष्टिगत रखकर इस्लाम के मुखालिफों के साथ मुक़ाबला किया जाए तो उन्हें एक क़दम बढ़ना भी असम्भव हो जाता है और उनकी छटपटाहटें सत्याभिलाषी को निर्णय करने के लिए सर्वोत्तम अवसर प्रदान करती हैं। पाठकगण ध्यानपूर्वक सोचें कि हज़रत मिर्ज़ा साहिब के एक ही वार ने किस तरह सारे धर्मों का निर्णय कर दिया है। जब ईसाइयों और आर्यों के मौजूदा अकीदों के बारे में इन्जील और वेद खामोश हैं तो नि:सन्देह इस्लाम के मुक़ाबले में ईसाइयत और आर्य मज़हब तो खुले-खुले पराजित हो गए। हाँ ज़ैद, बकर, ख़ालिद इत्यादि के व्यक्तिगत विचार रह गए तो हज़रत मिर्ज़ा साहिब ने उनका भी जो हाल किया वह ऊपर वर्णित हो चुका है। इसी प्रकार दूसरे धर्मों का हाल है।

दूसरा अति उत्तम नियम जो हज़रत मिर्ज़ा साहिब ने विभिन्न धर्मों के पारस्परिक मुकाबले के सम्बन्ध में प्रस्तुत किया वह यह था कि किसी धर्म की सत्यता परखने के लिए केवल उसके भूत और भविष्य को देखना काफी नहीं होता बल्कि उसके वर्तमान को भी देखना

चाहिए। यदि कोई धर्म अपने भूत के बारे में तो बड़े ज़ोरदार क़िस्से सुनाता है और भविष्य के बारे में भी बड़े-बड़े वादे देता है पर वर्तमान में अपने अनुयायियों के लिए कोई आशा नहीं दिलाता तो ऐसा धर्म कदापि स्वीकारयोग्य नहीं, बल्कि उसकी सारी शिक्षा केवल धोखा है जिससे हर बुद्धिमान को बचना चाहिए। हमें इस बात से क्या मतलब कि पहले लोगों ने किसी धर्म पर चलकर क्या पाया या भविष्य के बारे में कोई धर्म क्या वादे करता है ये दोनों ज़माने तो एक पर्दे के पीछे हैं जिनकी असल सच्चाई केवल ख़ुदा को ज्ञात है। हमें तो जिस चीज़ से मतलब है वह हमारा "वर्तमान" है यदि हमारा वर्तमान सही नहीं होता तो बीते हुए ज़मानों का इतिहास हमारे लिए एक क़िस्सा और भविष्य के वादे हमारे लिए एक मरीचिका से ज़्यादा महत्व नहीं रखते। हाँ यदि एक मज़हब वर्तमान में हमें वह फल दे देता है जो एक सच्चे मज़हब से मिलने की उम्मीद है तो नि:सन्देह हम भूतकाल के क़िस्सों को भी सच्चा मान सकते हैं और भविष्य के बारे में भी मज़हब के वादों पर विश्वास कर सकते हैं। लेकिन केवल भूत और भविष्य का उद्धरण हमें बिल्कुल कोई तसल्ली नहीं दे सकता।

अत: हज़रत मिर्ज़ा साहिब ने दूसरा सिद्धान्त यह बयान फ़रमाया कि सच्चे मज़हब की कसौटी यह है कि वह अपने मीठे और ताज़ा फल लगातार देता रहे और केवल पुराने क़िस्सों या भविष्य के वादों पर न टाले। उदाहरणत: यदि किसी धर्म का यह दावा है कि वह मनुष्य को ख़ुदा तक पहुँचाता है तो मानवीय प्रकृति की तसल्ली के लिए यह बात कदापि काफी नहीं समझी जा सकती कि हमें किसी किताब में यह लिखा हुआ दिखा दिया जाए कि पुराने ज़मानों में इस मज़हब के अनुयायी ख़ुदा तक पहुँचते रहे हैं या यह कि यह मज़हब दावा करता है कि मरने के बाद इसके अनुयायी ख़ुदा को पा लेंगे ये दोनों सांत्वनाएँ बचकानी तसल्लियों से ज़्यादा नहीं और कोई बुद्धिमान व्यक्ति केवल इस प्रकार की तसल्ली से संतुष्ट नहीं हो सकता बल्कि

आवश्यकता इस बात की है कि हमारा धर्म हमें इसी ज़िन्दगी में ख़ुदा तक पहुँचा दे और हम ख़ुदा के विश्वसनीय चमत्कार को इसी दुनिया में अपनी आँखों से देख लें और उसके प्यार को एक जीती जागती सच्चाई के तौर पर महसूस कर लें और यदि हम उसे सूक्ष्म, असीमित और सृष्टि से परे होने के कारण देख नहीं सकते तो कम से कम उसकी जीवनदायक आवाज़ को अपने कानों से सुन लें और उसके निशानों को अपनी आँखों से देख लें ताकि ख़ुदा का अस्तित्व हमारे लिए केवल एक बौद्धिक तर्क का नतीजा न रहे बल्कि एक जीवित, महसूस और मौजूद हस्ती का रंग अपना ले। ऐसी दशा में नि:सन्देह पुराने क़िस्से भी हमारे लिए एक ज़िन्दा सीख बन जाएँगे और भविष्य के वादे भी केवल एक विचार की चीज़ न रहेंगे। अब ध्यानपूर्वक सोचो कि संसार के कितने मज़हब हैं जो हमारे लिए इस प्रकार के जीवन का सामान प्रदान कर सकते हैं।

हज़रत मिर्ज़ा साहिब ने दावा किया कि यह आध्यात्मिक जीवन जो वर्तमान के ताज़ा-बताज़ा फलों से प्राप्त होता है केवल इस्लाम में मिलता है दूसरा कोई धर्म इस जीवन के निशान नहीं दिखा सकता। क्योंकि शेष सब का दारोमदार केवल भूतकाल के क़िस्सों या भविष्य के वादों पर है। उदाहरणत: ईसाइयों में कोई व्यक्ति ऐसा नहीं मिलेगा जिसने वर्तमान युग में ख़ुदा से संवाद का सौभाग्य प्राप्त किया हो और उसके ताज़ा ब ताज़ा संवाद से जीवन पाया हुआ हो और ख़ुदा की सहायता का हाथ पग-पग पर उसके साथ दिखाई देता हो। इसी प्रकार आर्य मज़हब का कोई अनुयायी ऐसा नहीं मिलेगा जो वर्तमान युग में ख़ुदा की सहायता का जलवा दिखा सकता हो और जिस पर ख़ुदा की ताज़ा-ताज़ा और जीवनदायक वाणी अवतरित होती हो। यही हाल दूसरे धर्मों का है कि उनके अन्दर भूत के क़िस्सों या भविष्य के लुभावने वादों के अतिरिक्त कुछ भी नहीं। परन्तु हज़रत मिर्ज़ा साहिब ने साबित किया कि इस्लाम ख़ुदा का एक जीवित धर्म है क्योंकि

उसका वृक्ष आज भी उसी तरह फल दे रहा है जिस तरह वह हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के युग में देता था और वह आज भी उसी तरह अपने अनुयायियों को ख़ुदा के साथ मिला रहा है जिस तरह वह पहले ज़माने में मिलाता था और आज भी इस पर चलने वाले उसी तरह ख़ुदा की ताज़ा-ताज़ा वाणी को सुनते हैं जिस तरह पूर्वज सुनते थे और आज भी वे उसी तरह ख़ुदा के जीवित निशानों को देखते हैं जिस तरह पहले ज़मानों में देखते थे। इसलिए जीवित धर्म केवल इस्लाम ही है और शेष समस्त धर्म अपनी आयु की सीमा समाप्त कर चुके हैं। आपने अपने विरोधियों को बार-बार चैलेन्ज दिया कि इस प्रकार से कोई भी व्यक्ति मेरे सामने आकर मुक़ाबला कर ले और अपने धर्म की सच्चाई साबित करे, पर किसी ने आपके सामने आने की हिम्मत न की। लेखराम और डोई इत्यादि की तरह जिस किसी ने भी यह हिम्मत दिखाई वह इस्लाम की सच्चाई पर अपनी मौत की मुहर लगाता हुआ सदैव की नींद सो गया। अब देखो यह कितनी बड़ी विजय है जो इस्लाम को मिली और यह कितना सच्चा और ठोस नियम है जिसने इस्लाम की सच्चाई सूर्य समान सिद्ध कर दी। (देखो हक़ीक़तुल वह्यी, बराहीन अहमदिया भाग 5 इत्यादि)

हज़रत मिर्ज़ा साहिब के द्वारा समस्त धर्मों पर इस्लाम की विजय

अब हम हज़रत मिर्ज़ा साहिब के एक और महान कार्य का वर्णन करते हैं जिससे इस्लाम को विजयी कर दिखाने का वादा बड़े सुन्दर और व्यापक रूप में पूरा हुआ।

सन् 1896 ई. में लाहौर के कुछ प्रतिष्ठित हिन्दुओं ने परामर्श करके यह प्रस्ताव रखा कि एक बहुत बड़ा जलसा आयोजित किया

जाए और समस्त धर्मों के प्रतिनिधियों को सम्मिलित होने के लिए आमन्त्रित किया जाए और कुछ ऐसे प्रश्न निर्धारित किए जाएँ जो प्रत्येक धर्म की जान हों और समस्त धर्मों के प्रतिनिधि इन प्रश्नों के उत्तर में अपने-अपने धर्म के अनुसार लेख पढ़ें। पर उन लेखों में किसी दूसरे धर्म पर आरोप न हो बल्कि केवल अपने धर्म की विशेषताएँ बयान की जाएँ ताकि सत्याभिलाषियों को ठण्डे दिल से निर्णय करने का अवसर मिले। इस तहरीक के मुखिया ब्रह्मसमाजी थे। अत: यह प्रस्ताव पास हो गया और इसके लिए प्रबन्धकों की एक उप कमेटी बनाई गयी और भाषणों के लिए जो प्रश्न तय किए गए वे निम्नलिखित हैं :-

1. मनुष्य की शारीरिक, नैतिक एवं आध्यात्मिक अवस्थाएँ।

2. मनुष्य की मृत्यु के बाद की अवस्था।

3. संसार में मनुष्य के जीवन का मूल उद्देश्य क्या है और वह किस तरह पूरा हो सकता है ?

4. कर्मों का असर लोक और परलोक में क्या होता है ?

5. ज्ञान और अध्यात्मज्ञान के साधन क्या-क्या हैं ?

इसके बाद प्रत्येक धर्म के लीडरों को आमन्त्रित किया गया कि वे इन प्रश्नों के उत्तर में लेख लिखें या जलसे के समय मौखिक रूप से भाषण दें और प्रत्येक धर्म की ओर से दो-दो तीन-तीन आदमी नियुक्त किए गए। अत: इस्लाम की ओर से यह निम्नलिखित तीन प्रतिनिधि नियुक्त किए गए :-

1. हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी मसीह व महदी माहूद।

2. मौलवी अबू सईद मुहम्मद हुसैन साहिब बटालवी।

3. मौलवी अबुल वफा सनाउल्लाह साहिब अमृतसरी।

इसी प्रकार ईसाइयों, आर्यों, सनातन धर्मियों, ब्रह्मसमाज वालों, सिक्खों, ब्रह्मवादी सोसाइटी वालों एवं स्वच्छंदवादियों इत्यादि की

ओर से भी कुछ प्रतिनिधि नियुक्त हुए और सबको यह आदेश दिया गया कि इन सवालों के उत्तर में केवल अपने धर्म की शिक्षा बयान करें और दूसरे धर्मों पर कोई आरोप न लगाएँ। जलसे की तिथियाँ 26, 27, और 28 दिसम्बर सन् 1896 ई. निर्धारित हुईं और जलसे के आयोजन के लिए अंजुमन हिमायते इस्लाम लाहौर का हाल अस्थायी तौर पर ले लिया गया और विज्ञापनों एवं समाचारपत्रों द्वारा इस जलसे का व्यापक रूप से प्रचार कर दिया गया और उसमें शामिल होने के लिए सबको आमन्त्रित किया गया।

हज़रत मिर्ज़ा साहिब ने इन प्रश्नों के उत्तर में एक लेख लिखा और अपने एक सद्भावक सहचर हज़रत अब्दुल करीम साहिब स्यालकोटी को देकर लाहौर भेजा और साथ ही जलसे से पाँच छः दिन पूर्व 21 दिसम्बर सन् 1896 ई. को एक विज्ञापन भी प्रकाशित किया जिसमें लिखा कि मैंने ख़ुदा की विशेष सहायता और समर्थन से यह लेख लिखा है और मुझे ख़ुदा ने सूचित किया है कि मेरा यह लेख शेष समस्त लेखों पर विजयी रहेगा और वह विज्ञापन निम्नलिखित है :-

''धर्मों का महासम्मेलन जो लाहौर के टाउनहाल में 26, 27, 28 दिसम्बर सन् 1896 ई. को आयोजित होगा। उसमें क़ुर्आन शरीफ की विशेषताओं और चमत्कारों के बारे में इस विनीत का एक लेख पढ़ा जाएगा। यह वह लेख है जो मानवीय शक्तियों से बढ़कर और ख़ुदा के निशानों में से एक निशान है और उसके विशेष समर्थन से लिखा गया है। इसमें क़ुर्आन शरीफ की वह यथार्थ सच्चाइयाँ और अध्यात्मज्ञान दर्ज हैं जिनसे सूर्य की तरह स्पष्ट हो जाएगा कि सचमुच यह ख़ुदा की वाणी और समस्त लोकों के पालनहार की किताब है तथा जो व्यक्ति इस लेख के प्रारम्भ से अन्त तक पाँचों प्रश्नों के उत्तर सुनेगा, मैं विश्वास करता हूँ कि उसमें एक नया ईमान पैदा होगा और एक नई ज्योति उसमें चमक उठेगी और ख़ुदा तआला की पवित्र वाणी की एक बड़ी ठोस व्याख्या उसके हाथ आ जाएगी। यह मेरा लेख मनुष्य

की निरर्थक बातों और डींगों से रहित है। मुझे इस समय केवल लोगों की हमदर्दी ने इस इश्तिहार के लिखने के लिए विवश किया है ताकि वे क़ुर्आन शरीफ की विशेषता और चमत्कार का अनुभव करें और देखें कि हमारे विरोधियों का कितना अन्याय है कि वे अन्धकार से प्रेम करते और ज्ञान से नफरत रखते हैं। मुझे सर्वज्ञ ख़ुदा ने इल्हाम द्वारा सूचित किया है कि यह वह लेख है जो **सब पर विजयी होगा** और इसमें सच्चाई, युक्ति एवं अध्यात्म का वह ज्ञान है कि यदि दूसरी कौमें हाज़िर हों और उसको प्रारम्भ से अन्त तक सुनें तो शर्मिन्दा हो जाएँगी और कदापि समर्थ न होंगी कि अपनी पुस्तकों की यह विशेषता दिखा सकें चाहे वे ईसाई हों, चाहे आर्य, चाहे सनातन धर्म वाले या कोई अन्य, क्योंकि ख़ुदा तआला ने यह इरादा किया है कि उस दिन इस पवित्र पुस्तक का चमत्कार प्रकट हो। मैंने कश्फ (तन्द्रावस्था) की हालत में इसके बारे में देखा कि मेरे महल पर ग़ैब (परोक्ष) से एक हाथ मारा गया और उस हाथ के छूने से इस महल में से दमकता हुआ एक द्रुतगामी प्रकाश निकला जो चारों ओर फैल गया और मेरे हाथों पर भी उसकी रोशनी पड़ी। तब एक व्यक्ति जो मेरे पास खड़ा था उच्च स्वर से बोला -

اَللّٰہُ اَکْبَرُ خَرِبَتْ خَیْبَرُ

उसकी व्याख्या यह है कि उस महल से अभिप्राय मेरा हृदय है जो प्रकाशों के उतरने और समा जाने का स्थान है और वे प्रकाश क़ुरआनी ज्ञान हैं और ख़ैबर से तात्पर्य समस्त ख़राब धर्म हैं जिनमें शिर्क (ख़ुदा का साझीदार बनाना) और बिदअत (धर्मविधान के आदेशों में अपनी ओर से नई-नई बातों का समावेश) की मिलौनी है और मनुष्य को ख़ुदा का स्थान दिया गया है। ख़ुदा की विशेषताओं को उनके यथोचित स्थान से नीचे गिरा दिया गया है। अत: मुझे बताया गया है कि इस लेख के खूब फैलने के बाद झूठे धर्मों का झूठ खुल जाएगा और क़ुर्आन की सच्चाई दिन-प्रतिदिन यहाँ तक कि अपनी परिधि पूरी कर

ले धरती पर फैलती जाएगी। फिर मेरा हृदय कश्फ की हालत के बाद इल्हाम की ओर फेरा गया और मुझे यह इल्हाम हुआ -

اِنَّ اللّٰہَ مَعَكَ اِنَّ اللّٰہَ یَقُوْمُ اَیْنَمَا قُمْتَ۔

अर्थात ख़ुदा तेरे साथ है और ख़ुदा वहीं खड़ा होता है जहाँ तू खड़ा होता है। यह ख़ुदा की ओर से समर्थन का एक लाक्षणिक सन्देश है। अब मैं अधिक न लिखकर हर एक को यही सूचना देता हूँ कि इन अध्यात्मज्ञानों को सुनने के लिए अपना-अपना हर्ज करके भी सम्मेलन की निर्धारित तिथियों पर अवश्य लाहौर पधारें कि उनकी बुद्धि और ईमान को इससे वे लाभ मिलेंगे कि वे सोच भी नहीं सकते होंगे।'' (देखो ''तब्लीग़ रिसालत'')

यह इश्तिहार जलसे से कई दिन पहले लाहौर और देश के दूसरे स्थानों में प्रकाशित कर दिया गया। फिर निर्धारित तिथियों के अनुसार तमाम् धर्मों के प्रतिनिधि उपस्थित हुए और जलसा शुरू हुआ और सब ने सजा-सजाकर भाषण दिए जब हज़रत मिर्ज़ा साहिब के लेख की बारी आई तो हज़रत मौलवी अब्दुल करीम साहिब खड़े हुए और हज़रत मिर्ज़ा साहिब का लिखा हुआ लेख पढ़ना आरम्भ किया। इस लेख को सुनने के लिए विशेष रूप से इतनी अधिक संख्या में लोग आए हुए थे कि हाल में जगह न रही। लोगों पर इस लेख का ऐसा प्रभाव पड़ा कि मानो उसमें लीन होकर झूमने लगे। जब इस लेख के लिए निर्धारित दो घंटे बीत गए और लेख अभी काफी शेष था तो लोगों ने एक स्वर होकर कहा कि इस लेख को सुनाने के लिए जलसे का एक दिन और बढ़ाया जाए। अत: 29 दिसम्बर का दिन बढ़ाया गया। लेकिन जब लेख का निर्धारित समय बीत गया और भाषण समाप्त न हुआ तो श्रोतागणों ने सर्वसहमति से निवेदन किया कि इसे और समय दिया जाए क्योंकि हम इसे पूरा सुनना चाहते हैं। अत: प्रोग्राम की समयसीमा को बढ़ाते हुए उसे और समय दिया गया। इस तरह लोगों की दाद और वाह-वाह के नारों से यह भाषण समाप्त हुआ और

एक प्रतिष्ठित हिन्दू सज्जन के मुँह से जो उस जलसा के अध्यक्ष थे बेधड़क निकला कि यह लेख सारे लेखों से श्रेष्ठ रहा।'' लाहौर के मशहूर अंग्रेज़ी अख़बार ''सिविल एण्ड मिलिट्री गज़ट'' ने भी जिसके मालिक और एडीटर उस ज़माने में सारे ईसाई अंग्रेज़ हुआ करते थे यही राय लिखी कि मिर्ज़ा साहिब क़ादियानी का लेख सबसे श्रेष्ठ रहा और लगभग 20 ऐसे उर्दू अख़बार भी होंगे जिन्होंने इस लेख के सफल और विजयी रहने की गवाही दी और उस सम्मेलन में घोर ईर्ष्यालु लोगों के अतिरिक्त तमाम् लोगों की ज़बान पर यही था कि यही लेख विजयी हुआ और आज तक उस लेख के सुनने वाले यही गवाही देते हैं कि उस दिन यह लेख सब पर विजयी रहा। अत: उदाहरण के तौर पर ''सिविल एण्ड मिलिट्री गज़ट लाहौर'' की राय का अनुवाद प्रस्तुत है :-

''लाहौर में धर्मों का महासम्मेलन जो 26, 27, 28 दिसम्बर सन् 1896 ई. को लाहौर के इस्लामिया कालेज के हाल में आयोजित हुआ, उसमें विभिन्न धर्मों के प्रतिनिधियों ने उन पाँच प्रश्नों का उत्तर दिया (जो इससे पूर्व लिखे जा चुके हैं) लेकिन सब लेखों से अधिक ध्यान और दिलचस्पी से मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी का लेख सुना गया जो इस्लाम के बहुत बड़े समर्थक और विद्वान हैं। इस लैक्चर को सुनने के लिए पास-पड़ोस के अतिरिक्त दूरदराज़ से भी हर सम्प्रदाय और क़ौम के लोग भारी संख्या में एकत्र थे। चूँकि मिर्ज़ा साहिब स्वयं तो सम्मेलन में उपस्थित नहीं हो सके पर उनका लेख उनके एक योग्य और मृदुभाषी शिष्य मौलवी अब्दुल करीम साहिब स्यालकोटी ने पढ़ा। 27 तारीख वाला लेख साढ़े तीन घन्टे तक पढ़ा गया अभी पहले प्रश्न का उत्तर ही खत्म हुआ था जिसे लोगों ने तल्लीन और आत्मविस्मृत होकर सुना और फिर कमेटी ने इसके लिए सम्मेलन की तिथियों में 29 दिसम्बर की तारीख बढ़ा दी।''

यह बात चिन्तन योग्य है कि सिविल अख़बार ने हज़रत मिर्ज़ा

साहिब के लेख के अतिरिक्त अन्य किसी लेख का वर्णन तक नहीं किया और इस जलसा की उस रिपोर्ट में जो हिन्दुओं की ओर से संकलित हुई हज़रत मिर्ज़ा साहिब के लेख के बारे में यह शब्द लिखे गए :-

''पंडित गोवर्धन दास के भाषण के बाद आधा घण्टे का अवकाश था, चूँकि अवकाश के बाद इस्लाम के एक मशहूर प्रतिनिधि की ओर से लेख प्रस्तुत होना था इसलिए अधिकांश लालायित लोगों ने अपनी-अपनी जगह को न छोड़ा। डेढ़ बजने में अभी काफी समय शेष था कि इस्लामिया कालेज का विशाल भवन शीघ्र-शीघ्र भरने लगा और कुछ ही मिन्टों में सारा भवन भर गया। उस समय लगभग सात हज़ार के निकट लोग थे जिनमें विभिन्न धर्मों, क़ौमों और सोसाइटियों के विश्वसनीय और विद्वान लोग मौजूद थे, यद्यपि कुर्सियों, मेज़ों और बिछाने की दरियों का बड़ी संख्या में प्रबन्ध किया गया था लेकिन फिर भी सैंकड़ों लोगों को खड़ा रहना पड़ा। इन खड़े हुए लालायित लोगों में बड़े-बड़े शासक, पंजाब के उच्च अधिकारीगण, प्रकाण्ड विद्वान, बैरिस्टर वकील, प्रोफेसर एक्सट्रा असिस्टैंट कमिश्नर, डाक्टर, तात्पर्य यह कि विभिन्न वर्गों की भिन्न-भिन्न शाखाओं के हर प्रकार के लोग मौजूद थे। उन्हें उस समय बड़ी विनम्रता और धैर्य के साथ निरन्तर चार-पाँच घंटों तक मानो एक पैर के बल खड़ा रहना पड़ा। इस लेख को सुनाने के लिए यद्यपि कमेटी की ओर से केवल दो घंटे ही निर्धारित थे परन्तु जलसे में उपस्थित लोगों को इससे कुछ ऐसी दिलचस्पी पैदा हो गई कि मॉडरेटर साहिबान जो बड़े जोश और खुशी से आज्ञा दी कि जब तक यह लेख समाप्त न हो तब तक जलसे की कार्यवाही को समाप्त न किया जाए, उनका ऐसा कहना जलसे के श्रोतागणों की इच्छा के सरासर अनुकूल था। क्योंकि जब निर्धारित समय-सीमा बीतने पर मौलवी मुबारक अली साहिब ने अपना समय भी इस लेख के समाप्त होने के लिए दे दिया तो उपस्थित सज्जनों

और मॉडरेटर साहिबानों ने खुशी से नारा लगाते हुए मौलवी साहिब का धन्यवाद किया। यह लेख प्रारम्भ से अन्त तक बराबर दिलचस्पी और लोकप्रियता अपने अन्दर रखता था।'' (देखो रिपोर्ट जलसा आज़म मज़ाहब लाहौर)

फिर उसी जलसे में सिक्खों के लैक्चरर सरदार जवाहर सिंह साहिब ने अपने भाषण के दौरान हज़रत मिर्ज़ा साहिब का वर्णन करते हुए कहा कि उनके कल के विद्वतापूर्ण लेख से कोई भी ऐसा न था जो खुश न हुआ हो और उसने उसे पसन्द न किया हो। (देखो उपरोक्त रिपोर्ट)

अब पाठकगण स्वयं चिन्तन करें कि यह कितनी बड़ी विजय है जो इस्लाम को प्राप्त हुई। एक जलसा होता है और पहले से प्रश्न निर्धारित करके फैला दिए जाते हैं। फिर तमाम् धर्मों के प्रतिनिधि तैयार होकर उसमें अपने-अपने धर्म की शिक्षा प्रस्तुत करते हैं। मैदान में आर्य भी आते हैं, ईसाई भी आते हैं, ब्रह्म समाजी भी आते हैं, सिक्ख भी आते हैं, ग़ैर अहमदी मुसलमान भी आते हैं और हज़रत मिर्ज़ा साहिब इस्लाम की ओर से एक लेख लिखकर प्रस्तुत करते हैं और पहले से उसे इश्तिहार द्वारा तमाम जनता को सुना भी देते हैं कि मेरा यह लेख सब पर विजयी रहेगा और फिर दोस्त-दुश्मन, अपने-पराए, मुस्लिम-ग़ैर मुस्लिम अपनी कथनी और करनी से इस बात को स्वीकार करते हैं कि सचमुच यह लेख सब लेखों पर विजयी रहा। क्या इससे बढ़कर भी कोई विजय हो सकती है ?

यह लेख अब अंग्रेज़ी में भी अनुवाद होकर प्रकाशित हो चुका है (देखो टीचिंग ऑफ इस्लाम) और इसके द्वारा हमें पश्चिमी देशों में इस्लाम के प्रचार-प्रसार में बड़ी सहायता मिली है। यूरोप और अमेरिका के सज्जन जब यह किताब पढ़ते हैं तो वाह-वाह कह उठते हैं और उनके दिल में इस्लाम की मुहब्बत पैदा हो जाती है।

कुछ बुद्धिमानों ने इस लेख के बारे में जो विचार व्यक्त किए हैं

उनके उद्धरण निम्नलिखित हैं :-

दि स्काईमैन लिखता है :-

''विभिन्न धर्मों का तुलनात्मक अध्ययन करने वाले वर्ग में नि:सन्देह इस किताब का बहुत स्वागत और सम्मान होगा।''

पी.ई. कदावद कलपेनी द्वीप से लिखता है :-

''यह किताब ख़ुदा के ज्ञान का एक मुख्य स्रोत है।''

ब्रिस्टल टाइम्स एण्ड मिरर लिखता है :-

''निश्चय ही वह व्यक्ति जो इस रंग में यूरोप और अमेरिका को संबोधित करता है, कोई साधारण व्यक्ति नहीं हो सकता।''

स्प्रीचुअल जरनल बोस्टन लिखता है :-

''यह किताब मानव क़ौम के लिए एक शुद्ध शुभ सूचना है।''

थ्योसोफिकल बुकनोट्स में यह शब्द लिखे हैं :-

''यह किताब मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) के धर्म की सर्वश्रेष्ठ और सबसे अधिक दिलकश तस्वीर है।''

इंडियन रीवियू लिखता है :-

यह किताब बहुत दिलचस्प और आनन्दप्रद है। इसके विचार सुस्पष्ट, व्यापक और युक्तिपूर्ण हैं। पढ़ने वाले के मुँह से बेधड़क इसकी प्रशंसा निकलती है। यह किताब नि:सन्देह इस योग्य है कि प्रत्येक उस व्यक्ति के हाथ में हो जो मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) के धर्म का अध्ययन करना चाहता है।''

मुस्लिम रीवियू लिखता है :-

''इस किताब का अध्ययन करने वाला इसमें बहुत से सच्चे, गूढ़, आधारभूत और प्राणवर्द्धक विचार पाएगा जो मुस्लिम और ग़ैर मुस्लिम दोनों की दिलचस्पी का कारण होंगे। हम बड़े ज़ोर के साथ इस किताब का समर्थन करते हैं।'' (ये विचार अंग्रेज़ी से अनुवाद किए गए हैं और केवल उदाहरण के तौर पर लिखे गए हैं अन्यथा इस प्रकार के विचारों की संख्या बहुत है विस्तारपूर्वक देखने के लिए देखें रीवियू

आफ रिलीजन्ज़, जुलाई सन् 1912 ई.)

इस विनीत लेखक ने भी जब अपने एक यूरोपियन मित्र मिस्टर जी. ए. वादन ज़ाइम ए. को जो गवर्नमेन्ट कालेज लाहौर में अंग्रेज़ी के सीनियर प्रोफेसर थे और मेरे ट्यूटर भी थे, यह किताब भिजवाई तो उन्होंने मुझे उत्तर में लिखा कि मैंने बहुत शौक़ और दिलचस्पी के साथ इस किताब को पढ़ा है और मैं विश्वास रखता हूँ कि इस किताब के अध्ययन से ईसाई जगत में इस्लाम के बारे में जो ऐतराज़ फैले हुए हैं वे बड़ी हद तक दूर हो जाएँगे।

इस्लाम के प्रचार व प्रसार के लिए जमाअत अहमदिया की कोशिश

अब मैं उन सामूहिक प्रचार व प्रसार सम्बन्धी कोशिशों का कुछ संक्षिप्त रूप से वर्णन करता हूँ जो हज़रत मिर्ज़ा साहिब और आपके खलीफाओं की ओर से इस्लाम के फैलाने के बारे में की गईं और की जा रही हैं, परन्तु पहले यह बता देना आवश्यक है कि यद्यपि हमारी जमाअत की संख्या इस समय कई लाख समझी जाती है। परन्तु नियमित मदद करने वाले और चन्दा देने वाले वर्ग की संख्या लगभग सत्तर अस्सी हज़ार से अधिक नहीं है इसके अतिरिक्त हमारी जमाअत में गरीब लोगों की संख्या अधिक है, धनाढ्य कम और शासक बहुत ही कम हैं। यह गरीबी और कमज़ोरी भी इस जमाअत के सच्चे होने की एक पहचान है क्योंकि ख़ुदाई जमाअतों में शुरू-शुरू में अधिकतर गरीब और कमज़ोर लोग ही दाखिल हुआ करते हैं। अत: देख लो कि हज़रत नूह अलैहिस्सलाम के अनुयायियों के बारे में विरोधी यही कहते रहे कि -

اَرَاذِلُنَا بَادِیَ الرَّاْیِ (सूरह हूद 11:28)

अर्थात ये लोग जो नूह के अनुयायी हुए हैं बिल्कुल ग़रीब और कमज़ोर लोग हैं। इसी प्रकार रोम के बादशाह हिरकल के इस प्रश्न पर कि क्या मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को कमज़ोर और ग़रीब लोग मानते हैं या बड़े और अमीर लोग ? तो अबू सुफियान ने यही उत्तर दिया (بخاری) بَلْ ضُعَفَاۤئُهُمْ कि उसे ग़रीब और कमज़ोर लोग ही मानते हैं।

तात्पर्य यह कि ख़ुदा का विधान यही है कि प्रारम्भिक तौर पर ख़ुदाई सिलसिलों में कमज़ोर और ग़रीब लोग ही अधिकतर दाखिल होते हैं और बड़े लोग बाद में आते हैं। हज़रत मसीह नासरी भी इन्जील में फ़रमाते हैं कि अमीर लोग गरीबों से बहुत बाद में जन्नत में दाखिल होंगे। इसमें रहस्य यह है कि प्रथमत: ईमान और नैतिक कर्म, कई प्रकार के त्याग मांगते हैं जिनके लिए अमीर लोग अपने आस पास के हालात को देखते हुए जल्दी तैयार नहीं होते, और उनका घमण्ड, भोग-विलास, आलस्य और धर्म के प्रति उदासीनता ख़ुदाई सिलसिला में उनके दाखिल होने की राह में बड़ी रोक बन जाती हैं। दूसरे यह कि ख़ुदा तआला शुरू-शुरू में अपने सिलसिला में गरीबों और कमज़ोरों के दाखिल होने से दुनिया को यह नज़ारा भी दिखाना चाहता है कि यह सारा कारोबार मेरा है और मैं ही इसे चला रहा हूँ अन्यथा इस जमाअत की जो ताक़त है वह तो केवल यह है कि गिनती के थोड़े से ग़रीब और कमज़ोर लोग इसमें दाख़िल हैं। परन्तु जब यही छोटी और कमज़ोर सी जमाअत दुनिया में वे काम कर दिखाती है जो बड़ी-बड़ी ताक़तवर और मालदार जमाअतें नहीं कर सकतीं, तो फिर दुनिया के लिए एक निशान बन जाती है। तात्पर्य यह कि हमारी क़ौम अर्थात जमाअत अहमदिया आमतौर पर ग़रीब लोगों की एक छोटी सी जमाअत है।

इस प्रारम्भिक नोट के बाद मैं बहुत संक्षेप में उन प्रचार व प्रसार सम्बन्धी कोशिशों का वर्णन करता हूँ जो हज़रत मिर्ज़ा साहिब और

आपके खलीफाओं की ओर से इस्लाम को फैलाने के लिए की गईं और की जा रही हैं। सबसे पहली बात यह है कि जब आपको अल्लाह तआला की ओर से सूचित किया गया कि आप अवतरित किए गए हैं तो आपने बीस हज़ार की संख्या में उर्दू और अंग्रेज़ी में एक घोषणापत्र छपवाकर हिन्दुस्तान, यूरोप और अमेरिका इत्यादि में वितरित किए और उसमें लिखा कि अल्लाह तआला ने मुझे इस्लाम की सेवा के लिए अवतरित किया है। अत: जिसको इस्लाम के प्रति कोई सन्देह हो या वह कोई ऐतिराज़ रखता हो तो मेरे समक्ष प्रस्तुत करे मैं उसकी संतुष्टि कराऊँगा और ख़ुदाई निशान भी दिखाए जाएँगे। इसके बाद आपने अपना काम शुरू किया। फिर जिस तरह विभिन्न क़ौमों के साथ आपके मुकाबले हुए उसकी एक संक्षिप्त रूपरेखा ऊपर वर्णन हो चुकी है। आपका सारा जीवन उच्चकोटि के जिहाद में ही गुज़रा, और विरोधी भी इस बात को स्वीकार करते हैं कि आपके जीवन में ऐसा कोई समय नहीं आया कि आप ने थके और चूर सिपाही की तरह हथियार उतार कर थोड़ा सा भी आराम किया हो। कभी-कभी कहा करते थे कि यह जो खाने पीने और मल-मूत्र इत्यादि में समय लगता है उसका भी हमें बड़ा अफ़सोस होता है कि आयु थोड़ी सी है, यह समय भी धर्म की सेवा में लग जाता तो अच्छा था। जिस समय आपका देहान्त हुआ उस समय भी आप प्रचार व प्रसार सम्बन्धी एक उच्चकोटि की पुस्तक लिख रहे थे जिसे आप पूरी न कर पाए और लिखते-लिखते ही कूच का समय आ गया और आप स्वर्ग सिधार गए। इस पुस्तक के अधूरे रहने में भी यह ख़ुदाई रहस्य ज्ञात होता है कि लोगों पर यह स्पष्ट हो जाए कि आप का देहान्त जिहाद करते हुए हुआ। यदि आप इसे समाप्त करने के बाद अन्य कोई पुस्तक लिखने से पहले देहान्त पाते तो फिर भी जिहाद की ही हालत में समझे जाते। लेकिन मौजूदा स्थिति अधिक स्पष्ट होने के कारण अधिक महत्व और शान रखती है। आपने 80

से अधिक पुस्तकें लिखीं जिनमें कई बड़ी मोटी भी हैं और बहुत से इश्तिहार हज़ारों की संख्या में प्रकाशित किए। आपकी अधिकतर रचनाएँ उर्दू भाषा में हैं लेकिन एक पर्याप्त संख्या अरबी में भी है जो अरब, मिस्र, शाम (सीरिया) और फिलिस्तीन इत्यादि के शहरों में फैलाई जा चुकी हैं। आपकी कुछ पुस्तकें फ़ारसी भाषा में भी हैं। आपकी रचनाओं में धार्मिक लिट्रेचर की कोई ऐसी शाख नहीं है जो नज़र अन्दाज़ की गई हो। जिस तरह वर्तमान युग में पाए जाने वाले दूसरे धर्मों को अनुपयोगी और दोषपूर्ण सिद्ध किया गया है। उसी तरह इस्लाम की सच्चाई और उसकी विशेषताएँ बयान करके उसकी उत्कृष्टतम् शान प्रकट की गई है। मुसलमानों के गलत अक़ीदों और विचारों का सुधार और अपनी जमाअत के नैतिक और आत्मिक सुधार की ओर भी पूरा ध्यान दिया गया है। आपके जीवन काल में ही तीन उर्दू अखबार और तीन उर्दू मासिक पत्रिकाएँ और एक मासिक अंग्रेज़ी पत्रिका नियमित रूप से क़ादियान से प्रकाशित होते थे। उनमें से अंग्रेज़ी पत्रिका रीवियू आफ रिलीजन्ज़ के काम के बारे में एक यूरोपियन पादरी के विचार उदाहरण के तौर पर लिखता हूँ :-

"यह पत्रिका अपने नाम के अनुरूप है क्योंकि इस पत्रिका ने धर्मों के एक बहुत बड़े क्षेत्र को अपने काम में शामिल किया है और धार्मिक विषयों के एक बड़े दायरे पर नज़र डाली है। उदाहरण के तौर पर सनातन धर्म, आर्य समाज, ब्रह्मसमाज, थ्योसोफी, सिक्ख धर्म, बौद्ध धर्म, जैन धर्म, पारसी धर्म, बहाई धर्म, ईसाइयत और ईसाई विद्याओं इत्यादि सब पर इस पत्रिका ने बहसें की हैं। फिर इसी प्रकार इस्लाम की नई और पुरानी शाखों जैसे शिया, अहले हदीस, ख़ारजी, सूफी और वर्तमान युग के सर सैयद अहमद ख़ान और सैयद अमीर अली के श्रद्धालु एवं अनुयायियों इत्यादि को अपनी बहस में शामिल किया है। (देखो "अहमदिया मूवमेन्ट" लेखक एच. ए. वाल्टर एम.ए., पृष्ठ 17)

फिर इसी पत्रिका के बारे में ए. अरूब अमेरिका से लिखता है :-

''इस पत्रिका के लेख आध्यात्मिक सच्चाइयों की अत्यन्त युक्तिपूर्ण और सुस्पष्ट व्याख्या हैं।''

रूस का मशहूर लेखक काउन्ट टालस्टाय लिखता है कि :-

''इस पत्रिका के विचार बड़े ठोस और बड़े सच्चे हैं।''

प्रोफेसर हॉट्समा एडीटर इन चीफ़ इन्साइक्लोपीडिया आफ इस्लाम लिखता है :-

''यह पत्रिका अत्यन्त दिलचस्प है।''

रीवियू आफ रीवियोज़ लन्दन लिखता है :-

''यूरोप व अमेरिका के वे लोग जो मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) के धर्म में दिलचस्पी रखते हैं उन्हें चाहिए कि यह पुस्तक अवश्य मँगाएँ।''

मिस हल्ट अमेरिका से लिखती हैं :-

इस पत्रिका का हर अंक अत्यन्त दिलकश होता है और उन ग़लत विचारों का खण्डन करता है, जो इस ज़माने में इस्लाम के बारे में संसार की उन क़ौमों की ओर से फैलाए जाते हैं जो सभ्य कहलाती हैं।'' (यह सारी विचारधाराएँ अंग्रेज़ी से अनुवाद की गई हैं विस्तारपूर्वक देखने लिए देखें रीवियू आफ रिलीजन्ज़)

इसी प्रकार अहमदिया जमाअत की दूसरी पत्र-पत्रिकाएँ और कई अखबार भी अपने-अपने क्षेत्र में इस्लाम फैलाने का कार्य कर रहे हैं और हज़रत मिर्ज़ा साहिब के देहान्त के पश्चात् ज्यों-ज्यों जमाअत ने तरक़्क़ी की, हमारे धार्मिक अखबार और पत्र-पत्रिकाओं की संख्या और बढ़ती गई। अत: इस समय पाँच उर्दू अखबार दो माहवार पत्रिकाएँ एक त्रै-मासिक अंग्रेज़ी पत्रिका और एक साप्ताहिक अंग्रेज़ी अखबार छपते हैं (बल्कि अब इन की संख्या बहुत ज़्यादा हो चुकी है) पम्फलेट और किताबें तो भारी संख्या में छपती हैं और क़ादियान जो हज़रत मिर्ज़ा साहिब के ज़माने में केवल एक छोटा

सा गाँव था अब एक विकासशील और प्रसिद्ध अन्तर्राष्ट्रीय शहर बन चुका है। जिसमें डाक, रेल, तार, टेलीफोन और तमाम् आधुनिक सहूलियतें मौजूद हैं। और कई कार्यालय स्कूल कालेज होने के बावजूद एक धार्मिक मदर्सा भी है जिसमें धार्मिक शिक्षा के अतिरिक्त अरबी विद्या के साथ-साथ कई आधुनिक विद्याओं की शिक्षा भी दी जाती है और इस्लाम के प्रचार व प्रसार के लिए प्रचारक तैयार होते हैं। (भारत के विभाजन के पश्चात जमाअत के उपकेन्द्र रब्वा में ख़ुदा की कृपा से इससे भी व्यापक प्रबन्ध हो चुके हैं) जहाँ तक व्यवहारिक रूप से प्रचार व प्रसार का प्रश्न है तो ख़ुदा की कृपा से संसार के अधिकतर देशों में विशेषकर ईसाई और बहुदेववादी देशों में प्रचार व प्रसार का एक व्यापक और कल्याणकारी जाल फैलाया जा चुका है और धर्मार्थ समर्पित प्रचारकों का कर्मचारी वर्ग दिन-रात काम में लगा हुआ है। एशिया, अफ्रीका, यूरोप और अमेरिका के अधिकांश देशों में ख़ुदा के सन्देश का प्रचार बड़े ज़ोरों पर हो रहा है जिसके कारण उन देशों में एक महान परिवर्तन हो रहा है और जो ईसाई देश पहले इस्लाम की हर बात को ऐतराज़ की दृष्टि से देखते थे और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पर गन्दे आरोप लगाने में आनन्द महसूस करते थे, अब उनका व्यवहार ऐतराज़ और नुक्ताचीनी के स्थान से बदलकर विशेषताओं की परख, प्रशंसा और सम्मान की ओर आ रहा है जो ख़ुदा की कृपा से इस्लाम के लिए एक बड़े इन्कलाब की बुनियाद है। हज़रत मिर्ज़ा साहिब ने आज से कई दशक पहले अपनी अध्यात्मरूपी आंख से इस इन्क़लाब को देखकर क्या ही खूब फ़रमाया था कि :-

क्यों अजब करते हो गर मैं आ गया होकर मसीह
ख़ुद मसीहाई का दम भरती है यह बादे बहार

आसमाँ पर दावते हक़ के लिए इक जोश है
हो रहा है नेक तबओं पर फ़रिश्तों का उतार

आ रहा है इस तरफ अहरार यूरोप का मिज़ाज
नब्ज़ फिर चलने लगी मुर्दों की नाग: ज़िन्दावार
कहते हैं तस्लीस को अब अहले दानिश अलविदाअ
फिर हुए हैं चश्म-ए-तौहीद पर अज़्जाँ निसार
बाग़ में मिल्लत के है कोई गुले रअना खिला
आई है बादे सबा गुलज़ार से मस्तानावार
आ रही है अब तो ख़ुशबू मेरे यूसुफ की मुझे
गो कहो दीवाना मैं करता हूँ उसका इन्तिज़ार

(बराहीन अहमदिया, भाग 5)

जमाअत अहमदिया की प्रचार व प्रसार संबंधी कोशिशों के विवरण का नक्शा

देश	प्रचार केन्द्रों की संख्या	मस्जिदों की संख्या	धार्मिक मदरसों की संख्या	विवरण
नाईजीरिया (पश्चिमी अफ्रीका)	3	19	10	यहाँ से एक अंग्रेज़ी अख़बार निकलता है और स्थानीय भाषा योरबा में क़ुर्आन शरीफ़ का अनुवाद भी हो रहा है।
घाना (पश्चिमी अफ्रीका)	14	151	1266	यहाँ जमाअत का एक सेकेण्डरी स्कूल भी है और प्रेस भी और स्थानीय भाषा फैन्टी में क़ुर्आन का अनुवाद हो रहा है।
सेराल्यून (पश्चिमी अफ्रीका)	6	24	4	यहाँ से जमाअत का एक अख़बार निकलता है और अपना प्रेस भी है।
लाईबेरिया (पश्चिमी अफ्रीका)	1			यहाँ अभी 1959 ई. में ही प्रचार केन्द्र खुला है।
नैरोबी टंगानिका युगांडा (पूर्वी अफ्रीका)	7	12	1	यहाँ से जमाअत के दो अखबार निकलते हैं सवाहिली भाषा में क़ुर्आन शरीफ का अनुवाद हो चुका है इसके अतिरिक्त यहाँ की युगांडा भाषा में भी क़ुर्आन मजीद का अनुवाद हो चुका है।

देश	प्रचार केन्द्रों की संख्या	मस्जिदों की संख्या	धार्मिक मदरसों की संख्या	विवरण
भारत के पश्चिमी द्वीप व अमेरिका	2			यहाँ एक अंग्रेज़ नवमुस्लिम प्रचारक है।
पश्चिमी जर्मनी	1	1		जर्मन भाषा में क़ुर्आन का अनुवाद हो चुका है।
हालैण्ड	1	1		यहाँ की मस्जिद अहमदी औरतों के चन्दे से बनाई गई है। स्थानीय भाषा डच में क़ुर्आन का अनुवाद हो चुका है। यहाँ से क़ुर्आन मजीद का अंग्रेज़ी अनुवाद भी प्रकाशित हो चुका है। (5क़ादियान से प्रकाशित होने वाली अंग्रेज़ी में विस्तृत व्याख्या इसके अतिरिक्त है)
स्वीट्ज़रलैण्ड	1			यहाँ से एक माहवार तब्लीग़ी पत्रिका निकलती है।
स्वीडन (नार्वे)	1			यह प्रचार केन्द अभी 1956 में ही खुला है।
लंदन (ब्रिटेन)	1	1		
स्पेन	1			यह वह देश है जहाँ आठ सौ वर्ष तक मुसलमानों का शासन रहा है। यहाँ इस्लाम की तब्लीग़ की दो किताबें प्रकाशित हो चुकी हैं और स्थानीय भाषा में क़ुर्आन का अनुवाद भी हो चुका है।

देश	प्रचार केन्द्रों की संख्या	मस्जिदों की संख्या	धार्मिक मदरसों की संख्या	विवरण
संयुक्त राष्ट्र अमेरिका	6	3		यहाँ की हब्शी आबादी में तेज़ी से इस्लाम फैल रहा है और यहाँ से एक अंग्रेज़ी पत्रिका भी निकलती है।
गियाना (दक्षिणी अमेरिका)	1			यह प्रचार केन्द्र अभी 1956 में ही खुला है।
सिलौन	1			
बर्मा	1	निर्माणाधीन		
मारीशस	1	1		यहाँ से दो तब्लीग़ी किताबें प्रकाशित हुई हैं।
इण्डोनेशिया (जावा स्माट्रा सेलीबीज़ इत्यादि)	7	34	1	यहाँ से एक मासिक पत्रिका निकलती है स्थानीय भाषा में बहुत सी तब्लीग़ी पुस्तकें छापी गई हैं और क़ुर्आन का अनुवाद भी हो रहा है।
बोर्नियो (द्वीप समूह पूर्वी भारत)	3	3		यहाँ से एक मासिक पत्रिका निकलती है।
शाम (सीरिया)	1	1		
लेबनान	1			
इस्राईल	1	1		यहाँ एक अरबी पत्रिका निकलती है।

देश	प्रचार केन्द्रों की संख्या	मस्जिदों की संख्या	धार्मिक मदरसों की संख्या	विवरण
सिंगापुर मलाया	1	2		यहाँ मलाई भाषा में क़ुर्आन मजीद का अनुवाद हो चुका है।
मस्कत	1			
कुल संख्या 24	64	255	28	

नोट :- यह संख्या वकालत तब्शीर तहरीक जदीद रब्वा (पाकिस्तान) ने 1960 में उपलब्ध कराई थी। अब सन् 2018 में ख़ुदा की कृपा से 210 देशों में जमाअत अहमदिया क़ायम है और जमाअत अहमदिया की ओर से क़ुर्आन मजीद के अनुवाद 74 भाषाओं में हो चुके हैं। - प्रकाशक।

इन प्रचार केन्द्रों के अतिरिक्त बहुत से अन्य देशों में भी जमाअत अहमदिया के सद्भावक व्यक्तिगत तौर पर प्रचार में लगे हुए हैं ख़ुदा की कृपा से उनके भी अच्छे परिणाम निकल रहे हैं। यद्यपि रूस में हमारा कोई प्रचार केन्द्र नहीं लेकिन रूसी भाषा में क़ुर्आन का अनुवाद हो चुका है। इसी तरह इस समय फ्रांस में कोई प्रचार केन्द्र नहीं है परन्तु फ्रांसीसी भाषा में क़ुर्आन मजीद का अनुवाद हो रहा है अत: यह हज़रत मिर्ज़ा साहिब और आपकी मुट्ठी भर जमाअत की तब्लीग़ी कोशिशों का एक संक्षिप्त विवरण है पर देखो तो यह कितना बड़ा काम है जो किया गया और किया जा रहा है। ख़ुदा की कृपा से यह काम दिन प्रतिदिन बढ़ता ही जा रहा है। एक तरफ इस काम को देखो जो अभी अपनी प्रारम्भिक अवस्था में है दूसरी ओर जमाअत अहमदिया को देखो और तीसरी ओर तमाम् मुसलमानों को देखो और फिर बताओ कि क्या यह सच नहीं कि दूसरे मुसलमान जो इस समय

चालीस करोड़ होने का दावा करते हैं उनमें बादशाह भी हैं, बड़े-बड़े देशों के अध्यक्ष भी हैं, बड़ी-बड़ी रियासतों के नवाब भी हैं, बड़े-बड़े पदों पर आसीन अधिकारी भी हैं, बड़े-बड़े जागीरदार और ज़मींदार भी हैं, बड़े-बड़े लखपति और करोड़पति व्यवसायी और कारीगर भी हैं, बड़े-बड़े धनाढ्य भी हैं, वे भी हैं जो धर्म के विद्वान कहलाते हैं, वे भी हैं जो दुनिया की बड़ी-बड़ी विद्याओं और कलाओं में विशेष रूप से दक्ष हैं, संख्या भी इतनी है कि यदि हिम्मत करें तो एक बड़े सैलाब की तरह दुनिया पर छा जाएँ और दूसरी ओर जमाअत अहमदिया है जिसकी संख्या ही इस समय इतनी है कि यदि हम किसी को बताते हैं तो लोग छोटी सी जमाअत कहकर मज़ाक उड़ाते हैं, आर्थिक हालत यह है कि 75% वे लोग हैं जो सारा दिन मेहनत करके अपने बच्चों के लिए केवल इतना गुज़ारा कमा सकते हैं कि यदि बीमार हो जाएँ और थोड़े दिन काम पर न जा सकें तो घर में टुकड़े-टुकड़े के मुहताज हो जाएँ और बच्चे भूख से बिलखते फिरें। इन परिस्थितियों में इस नन्हीं सी जमाअत का यह काम और अन्य मुसलमानों की भरी संख्या की यह हालत कि ख़िदमते इस्लाम का नाम तक याद नहीं! पाठक विचार करें, परन्तु न्याय के साथ। अल्लाह न्याय करने वालों को पसन्द करता है।

हज़रत मिर्ज़ा साहिब के बारे में विरोधियों के विचार

अब मैं हज़रत मिर्ज़ा साहिब के बारे में कुछ ग़ैर अहमदी और ग़ैर मुस्लिम लोगों द्वारा दिए गए विचारों को प्रस्तुत करके इस लेख को समाप्त करता हूँ।

मौलवी मुहम्मद हुसैन साहिब बटालवी ने जो कि अभी हज़रत मिर्ज़ा साहिब के विरोधी नहीं हुए थे मिर्ज़ा साहिब की प्रारम्भिक रचना बराहीन अहमदिया पर रीवियू करते हुए लिखा :-

"हमारी राय में यह किताब (अर्थात बराहीन अहमदिया, लेखक हज़रत मिर्ज़ा साहिब) इस ज़माने में मौजूदा परिस्थितियों की दृष्टि से ऐसी किताब है जिसकी मिसाल आज तक इस्लाम में प्रकाशित नहीं हुई और आगे का पता नहीं لعلّ اللہ یُحدث بعد ذلك امراً और इसका लेखक भी इस्लाम की माली व जानी व क़लमी व लिसानी व हाली व क़ाली सहायता में ऐसा साबित क़दम निकला जिसका उदाहरण पहले मुसलमानों में बहुत ही कम पाया गया है। हमारे इन शब्दों को यदि कोई एशियाई अतिशयोक्ति समझे तो हम को कम से कम एक ऐसी किताब बता दे जिसमें इस्लाम के तमाम् विरोधी सम्प्रदायों विशेषकर आर्य और ब्रह्मसमाज के साथ इस ज़ोर से मुकाबला पाया जाता हो और इस्लाम की सहायता करने वाले दो चार ऐसे लोगों के नाम बताए जिन्होंने इस्लाम की सहायता अपने धन, प्राण, लेख और मौखिक के अतिरिक्त आधुनिक रूप से भी सहायता का बीड़ा उठा लिया हो और इस्लाम के मुख़ालिफों और इल्हाम के इन्कारियों के सामने साहसपूर्वक ललकार कर यह दावा किया हो कि जिसको इल्हाम के बारे में शक हो वह हमारे पास आकर उसका अनुभव कर ले और देख ले और उस तजुर्बा और अवलोकन का दूसरी क़ौमों को मजा भी चखा दिया हो... लेखक हमारे हमवतन हैं और बाल्यकाल के (जब हम क़तबी और शरहमुल्ला पुस्तकें पढ़ते थे) हमारे सहपाठी हैं उस ज़माने से आज तक हम में उनसे पत्र-व्यवहार और मुलाकात जारी है। इसलिए हमारा यह कहना कि हम उनके हालात व विचारों से अच्छी प्रकार से अवगत हैं अतिश्योक्ति योग्य नहीं...लेखक बराहीन अहमदिया ने मुसलमानों की इज़्ज़त रख दिखाई और इस्लाम के मुख़ालिफों से शर्तें लगा लगाकर उन्हें ललकारा है और अधिकतर भू-भाग में यह घोषणा कर दी है कि जिस व्यक्ति को इस्लाम की सच्चाई में शक हो वह हमारे पास आए...। हे ख़ुदा! अपने चाहने वालों के मार्गदर्शक! उन पर अपनी तरफ से उनके माँ-बाप और सारे विश्व के दयालुओं से अधिक दया

कर! तू इस किताब की मुहब्बत लोगों के दिलों में डाल दे और उसकी बरकतों से उनको मालामाल कर दे और अपने किसी नेक भक्त के द्वारा इस तुच्छ विनीत को अपनी कृपाओं और उपकारों और इस किताब की विशेष बरकतों से लाभान्वित कर। आमीन! (देखो इशाअतुस्सुन्न: जिल्द 6, नम्बर 7 व जिल्द 7, नम्बर 11)

सम्भवत: इस बात को बताने की आवश्यकता नहीं कि जब हज़रत मिर्ज़ा साहिब की ओर से मसीह के समरूप होने का दावा प्रकाशित हुआ तो यही मौलवी मुहम्मद हुसैन साहिब सबसे पहले कुफ्र का फत्वा लेकर पूरे देश में इधर-उधर दौड़े और हज़रत मिर्ज़ा साहिब को दज्जाल क़ाफिर, अधर्मी और दायरा इस्लाम से ख़ारिज ठहरा दिया।

ببیں تفاوتِ رہ از کجاست تابہ کجا

अनुवाद - देखो राह का फ़र्क़ कहां से कहां तक है ? (अनुवादक)

दूसरी राय जो इस जगह मैं लिखना चाहता हूँ वह अमृतसर के प्रसिद्ध और मशहूर ग़ैर अहमदी अखबार ''वकील'' की राय है जो उसने हज़रत मिर्ज़ा साहिब के देहान्त पर प्रकट की :-

वह व्यक्ति, बहुत बड़ा व्यक्ति, जिसका क़लम चमत्कार था और ज़बान जादू। वह व्यक्ति जो दिमाग़ी अजायबात का साक्षात् रूप था जिसकी दृष्टि दूर अंदेश और आवाज़ क़ियामत (इन्क़्लाब) थी। जिसकी उँगलियों से इन्क़्लाब के तार उलझे हुए थे और जिसकी दो मुट्ठियाँ बिजली की दो बैटरियाँ थीं। वह व्यक्ति जो धार्मिक जगत के लिए तीस वर्ष तक ज़लज़ला और तूफान रहा और इन्क़्लाब की आवाज़ बनकर सोए हुओं को जगाता रहा, खाली हाथ दुनिया से उठ गया। (खाली हाथ मत कहो वह हिदायत का उपहार लेकर आया था और श्रद्धा के फूल लेकर गया - लेखक) (अर्थात दुनिया ने उसकी क़द्र न की) मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी का देहान्त इस योग्य नहीं कि उससे सीख न ली जाए। ऐसे लोग जिनसे धार्मिक या बौद्धिक

जगत में परिवर्तन पैदा हो सदैव दुनिया में नहीं आते।...

मिर्ज़ा साहिब के इस देहान्त ने, उनके श्रद्धालुओं से घोर मतभेद रखने के बावजूद, हमेशा पृथक रहने वाले मुसलमानों को, हाँ शिक्षित और रौशन विचारधारा रखने वाले मुसलमानों को एहसास करा दिया कि उनका एक बड़ा व्यक्ति उनसे जुदा हो गया है और उसके साथ इस्लाम के विरोधियों के मुक़ाबले पर इस्लाम की शानदार प्रतिरक्षा भी, जो उसके साथ संबद्ध थी, समाप्त हो गई। वह इस्लाम के विरोधियों के समक्ष एक विजेता जरनैल का कर्तव्य निभाते रहे, उनकी यह विशेषता हमें मजबूर करती है कि इस एहसास को खुल्लम-खुल्ला स्वीकार किया जाए।

ईसाइयों और आर्यों के मुकाबले में मिर्ज़ा साहिब के द्वारा जो लिट्रेचर लिखा गया वह व्यापक रूप से लोकप्रिय हो चुका है। उस लिट्रेचर का महत्व आज हमें दिल से स्वीकार करना पड़ता है कि वह अपना काम पूरा कर चुका है। इस प्रतिरक्षात्मक लिट्रेचर ने न केवल ईसाइयत के उस प्रारम्भिक असर के परखचे उड़ा दिए जो अंग्रेज़ी हुकूमत की छत्रछाया में पलने के कारण वस्तुत: उसकी जान था बल्कि ख़ुद ईसाइयत का जादू धुआँ बनकर उड़ने लगा।

तात्पर्य यह कि मिर्ज़ा साहिब की यह सेवा आने वाली पीढ़ियों को एहसान के बोझ से सदैव बोझल रखेगी जो उन्होंने क़लम का जिहाद करने वालों की पहली कतार में खड़े होकर इस्लाम की ओर से प्रतिरक्षा का कर्तव्य निभाया और ऐसा लिट्रेचर यादगार छोड़ा कि उस समय तक जब तक कि मुसलमानों की नसों में ज़िन्दा खून रहे और इस्लाम की सहायता की भावना उनकी क़ौमी पहचान नज़र आए, क़ायम रहेगा।

इसके अलावा आर्य समाज के ज़हरीले विचारों को कुचलने में भी मिर्ज़ा साहिब ने इस्लाम की बड़ी विशेष ख़िदमत की। आर्य समाज के मुकाबले पर लिखी गई इनकी तहरीरों से इस दावे पर

अत्यन्त स्पष्ट रौशनी पड़ती है कि भविष्य में हमारी प्रतिरक्षा का कार्य चाहे कितना ही बड़ा हो जाए पर असम्भव है कि यह तहरीरें नज़र अन्दाज़ की जा सकें। स्वाभाविक सूझ-बूझ अभ्यास और दक्षता और लगातार बहस-मुबाहसा की आदत ने मिर्ज़ा साहिब में एक विशेष शान पैदा कर दी थी। अपने धर्म के अलावा दूसरे धर्मों का उन्हें व्यापक ज्ञान था और वह अपनी उन जानकारियों को बड़े शिष्टता और सभ्यता से प्रयोग करते थे। तब्लीग़ और सदुपदेश से यह विशेषता उनमें पैदा हो गई थी कि संबोधित व्यक्ति चाहे कितना ही योग्य हो या किसी मत या धर्म का हो उनके हाज़िर जवाब से एक बार ज़रूर गहरी सोच में पड़ जाता था। हिन्दुस्तान आज धर्मों का अजायबखाना है। जिस बहुतात से यहाँ छोटे बड़े धर्म मौजूद हैं और परस्परिक वैमनस्यता और संघर्ष से अपनी मौजूदगी की घोषणा करते रहते हैं उसका उदाहरण सम्भवत: संसार में किसी जगह नहीं मिल सकता। मिर्ज़ा साहिब का दावा था कि मैं उन सब के लिए न्यायक हूँ। पर इसमें सन्देह नहीं कि इन विभिन्न धर्मों के सामने इस्लाम को श्रेष्ठ कर दिखाने की उनमें विशेष योग्यता थी और यह उनकी स्वाभाविक योग्यता और अध्ययन एवं अत्यन्त अभ्यास का परिणाम था। आगे आशा नहीं कि हिन्दुस्तान के धार्मिक जगत में इस महानता का व्यक्ति पैदा हो जो अपनी बड़ी-बड़ी इच्छाओं को इस तरह धर्म के अध्ययन में खर्च कर दे। (अखबार वकील अमृतसर, जून सन् 1908 ई.)

तीसरी राय जो मैं इस जगह लिखना चाहता हूँ वह दिल्ली के अखबार कर्जन गजट की है। इस अखबार के एडीटर मिर्ज़ा हैरत साहिब देहलवी ने हज़रत मिर्ज़ा साहिब के देहान्त पर लिखा :-

''मरहूम की वे महान सेवाएँ जो उसने इस्लाम की आर्यों और ईसाइयों के मुक़ाबले में की हैं वे सचमुच बहुत ही प्रशंसा की पात्र हैं। उसने मुनाज़रा (शास्त्रार्थ) का बिल्कुल रंग ही बदल दिया और

हिन्दुस्तान में एक नए लिट्रेचर की बुनियाद डाल दी। हम एक मुसलमान होने के नाते नहीं बल्कि एक गवेषी होने की दृष्टि से इस बात को स्वीकार करते हैं कि किसी बड़े से बड़े आर्य और बड़े से बड़े पादरी को यह हिम्मत न थी कि वह मरहूम के मुक़ाबले में मुँह खोल सकता... यद्यपि मरहूम पंजाबी था पर उसके क़लम में इतनी ताक़त थी कि आज सारे पंजाब बल्कि पूरे हिन्द में भी उस ताक़त का कोई लिखने वाला नहीं... उसका ठोस लिट्रेचर अपनी शान में बिल्कुल निराला है और नि:सन्देह उसकी कई तहरीरें पढ़ने से अपार हर्ष के कारण एक झूमने की सी हालत छा जाती है।... उसने मौत की भविष्यवाणियों और विरोध एवं नुक्ताचीनियों की आग में से होकर अपना रास्ता साफ किया और तरक्की के महान स्थान तक पहुँच गया।'' (कर्जन गजट देहली 1 जून सन् 1908)

मैं इस जगह हिन्दुस्तान के एक मशहूर अंग्रेज़ी अखबार पायनियर इलाहाबाद की राय का अनुवाद भी दर्ज किए देता हूँ जो उसने हज़रत मिर्ज़ा साहिब के देहान्त पर व्यक्त किया।

''यदि पहले ज़माने के इस्राइली नबियों में से कोई नबी स्वर्ग से वापस आकर इस ज़माने में दुनिया में प्रचार करे तो वह बीसवीं शताब्दी के हालात में इस से अधिक योग्य न होगा जैसा कि मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी थे... हम यह योग्यता नहीं रखते कि उनकी विद्वतापूर्ण हैसियत पर कोई राय लगा सकें। परन्तु हम यह जानते हैं कि मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब को अपने सम्बन्ध में या अपने दावे के बारे में कभी कोई शक नहीं हुआ और वह पूरी सच्चाई और पूरी निष्ठा से इस बात पर विश्वास रखते थे कि उन पर ख़ुदा का इल्हाम (वाणी) अवतरित होता है और यह उनको एक चमत्कारिक सामर्थ्य प्रदान किया गया है।... वे लोग जिन्होंने धार्मिक क्षेत्र में दुनिया के अन्दर एक हलचल पैदा कर दी है और वे अपने स्वभाव में मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब से अधिक समानता रखते हैं जैसा

कि इस ज़माने में इंग्लैण्ड का लार्ड विशप होता है। यदि इस ज़माने में अरनस्ट रीनन (फ्राँस का एक प्रसिद्ध इतिहासकार) अतीत के बीस वर्ष में भारत में होता तो वह नि:सन्देह मिर्ज़ा साहिब के पास जाता और उनके हालात का अध्ययन करता जिसका यह परिणाम निकलता कि बनी इस्राईल के नबियों के अजीबो-गरीब हालात पर एक नई रौशनी पड़ती। बहरहाल क़ादियान का नबी उन लोगों में से था जो हमेशा दुनिया में नहीं आते।''

एक दूसरा लेखक मिस्टर एच.ए. वाल्टर जो पूरे हिन्दुस्तान की यंगमैन क्रिश्चियन सोसाइटी का सेक्रेटरी था, अपनी किताब ''अहमदिया मूवमेन्ट'' में लिखता है :-

यह बात हर प्रकार से सिद्ध है कि मिर्ज़ा साहिब अपने स्वभावों में स्वच्छ और दानशील भावनाएँ रखने वाले व्यक्ति थे। उनका नैतिक साहस, जो उन्होंने अपने विरोधियों की ओर से घोर विरोध और कष्ट पहुँचाने के सम्मुख दिखलाया नि:सन्देह गर्व के योग्य है। केवल एक आकर्षक भावना और आकर्षक नैतिकता रखने वाला व्यक्ति ही ऐसे लोगों की मित्रता और वफादारी प्राप्त कर सकता है जिन में से कम से कम दो ने अफ़ग़ानिस्तान में अपने अक़ीदों के लिए प्राण न्योछावर कर दिए परन्तु मिर्ज़ा साहिब का दामन न छोड़ा... मैंने सन् 1916 ई. में जब मिर्ज़ा साहिब को देहान्त पाए आठ वर्ष बीत चुके थे क़ादियान जाकर एक ऐसी जमाअत देखी जिसमें धर्म के लिए वह सच्चा और तीव्र उत्साह मौजूद था जो हिन्दुस्तान के दूसरे मुसलमानों में आजकल बिल्कुल देखने को नहीं मिलता। क़ादियान जाकर मनुष्य समझ सकता है कि एक मुसलमान को, मुहब्बत और ईमान की वह रूह जिसे वह दूसरे मुसलमानों में व्यर्थ ढूँढता है अहमद की जमाअत में अधिकता के साथ मिलेगी।'' (किताब अहमदिया मूवमेन्ट-लेखक मिस्टर वाल्टर एम.ए. से अनुवादित)

मसीह मौऊद का तीसरा कार्य

मसीह मौऊद का तीसरा काम यह बताया गया था कि वह खोए हुए ईमान को पुन: दुनिया में क़ायम करेगा, अर्थात उसके ज़माने में सच्चा ईमान दुनिया से उठ चुका होगा लेकिन वह फिर पुन: ईमान को दुनिया में क़ायम करेगा। अत: इस विषय में कि सच्चा ईमान दुनिया से उठ चुका था हम बहुत कुछ लिख आए हैं पुनरावृत्ति की आवश्यकता नहीं। इस स्थान पर थोड़े से कुछ और विषय लिखे जाते हैं। यह एक स्पष्ट और सीधी बात है कि ईमान का दावा करना और बात है और ईमान पर सचमुच कायम होना और बात है। यों तो चालीस करोड़ मुसलमान कहलाने वाले सबके सब ही दावा करते हैं कि हम मोमिन हैं लेकिन हालात पर गौर करने से पता चलता है कि यह दावा कहाँ तक सत्य है।

ईमान की वास्तविकता

हदीस में लिखा है कि ईमान का प्रारम्भिक स्तर यह है कि मोमिन आग में डाले जाने को पसन्द करता है पर यह पसन्द नहीं करता कि वह ईमान लाने के बाद फिर अधर्म की ओर लौट जाए। (मिश्कात किताबुल ईमान)

क़ुर्आन शरीफ में ख़ुदा तआला फ़रमाता है :-

قَالَتِ الْأَعْرَابُ آمَنَّا قُلْ لَّمْ تُؤْمِنُوْا وَلَكِنْ قُوْلُوْا أَسْلَمْنَا وَلَمَّا يَدْخُلِ الْإِيْمَانُ فِيْ قُلُوْبِكُمْ۔

(सूरह अल-हुजुरात 49:15)

अर्थात गँवार लोग कहते हैं कि हम ईमान ले आए पर हे मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम! तू इनसे कह दे कि ईमान का दावा मत करो। हाँ यह अवश्य कहो कि हमने इस्लाम स्वीकार कर लिया है पर ईमान के दावेदार न बनो क्योंकि ईमान तो अभी तक तुम्हारे दिलों

में दाख़िल भी नहीं हुआ।''

अब यह प्रश्न उठता है कि ईमान किस चीज़ का नाम है ? अत: ज्ञात रहे कि ईमान दिल की उस हालत का नाम है कि जब तक मनुष्य स्त्रष्टा की विशेषताओं और उसके निशानों को देखकर उसके बारे में विश्वास के उस स्तर पर क़ायम हो जाता है जो मनुष्य को उसकी भौतिक अनुभूतियों के बारे में उनके देखने से प्राप्त होता है। उदाहरणत: मनुष्य अपने बाप को देखता है और पहचान लेता है कि यह मेरा बाप है बेटे को देखता है और समझता है कि यह मेरा बेटा है, सूरज को देखता है और जानता है कि यह सूरज है इसी तरह वह ख़ुदा पर भी ईमान ले आए अर्थात ख़ुदा के अस्तित्व के बारे में उसे इतना विश्वास हो जाए जितना कि उसे अपने बाप और बेटे और सूरज इत्यादि के बारे में प्राप्त है और यदि ख़ुदा के बारे में उसका ईमान इस स्तर से गिरा हुआ है तो वस्तुत: वह ईमान नहीं बल्कि एक सन्देह है जिसे वह केवल रस्म के तौर पर ईमान समझ रहा है। इसलिए हदीस में आता है कि :-

لایزنی الزانی حین یزنی وھومومنٌ ولایسرق حین یسرق وھومومنٌ۔(بخاری کتاب الحدود)

अर्थात ''कोई व्यभिचारी इस दशा में व्यभिचार नहीं करता कि जब वह मोमिन हो और कोई चोर इस हालत में चोरी नहीं करता कि वह मोमिन हो।''

इससे स्पष्ट है कि सच्चा ईमान उस हालत का नाम है कि जिसमें मनुष्य गुनाह से बिल्कुल सुरक्षित हो जाता है अर्थात ईमान की हालत में गुनाह करना असम्भव है।[1] इसीलिए हज़रत मिर्ज़ा साहिब ने गुनाह

1. इस जगह यह सन्देह पैदा होता है कि यदि सच्चे ईमान के लिए गुनाह से बचे रहना आवश्यक है तो नबियों के अतिरिक्त कोई व्यक्ति भी मोमिन नहीं रह सकता क्योंकि गुनाह से केवल नबियों का गिरोह ही सुरक्षित है तथा दूसरी ओर हदीस में यह शब्द भी पाए जाते हैं कि اِنْ زَنٰی وَاِنْ سَرَقَ अर्थात एक मोमिन कभी गलती से व्यभिचार या चोरी इत्यादि के गुनाह

के फलसफा में इस बात पर बहुत ज़ोर दिया है कि गुनाह विश्वास के न होने से पैदा होता है और विश्वास के होने से दूर होता है और आप ने बार-बार लिखा है कि यह सम्भव ही नहीं कि मनुष्य को सच्चा और पक्का विश्वास प्राप्त हो और फिर उस दशा में वह गुनाह भी करे। आप ने लिखा कि क्या मनुष्य उस बिल में हाथ डाल सकता है जिसके बारे में उसे पूर्ण विश्वास हो कि उसमें एक ज़हरीला साँप है ? या उस जंगल में क़दम रख सकता है जिसके बारे में उसे ज्ञात हो कि इसके अन्दर एक शेर है ? या उस छत के नीचे ठहर सकता है जिसके बारे में वह जानता हो कि वह गिरने वाली है ? या उस गिलास को मुँह लगा सकता है जिसके बारे में उसे ज्ञात हो कि उसमें एक घातक विष है? कदापि नहीं, कदापि नहीं तो फिर ख़ुदा पर ईमान और इस बात पर

का दोषी होने के बावजूद ख़ुदा की ओर से क्षमा पा लेता है।'' (इन बातों से स्पष्ट होता है कि एक मोमिन भी पाप का दोषी हो सकता है और यह दोनों बातें एक दूसरे के विपरीत हैं। अत: इसका उत्तर यह है कि यह सच है कि एक सच्चा मोमिन भी कभी ग़लती से गुनाह कर सकता है पर फिर भी वह दावा जो हमने लेख में बयान किया है सच रहेगा अर्थात यह नियम फिर भी यथावत रहेगा कि सच्चा ईमान मनुष्य को गुनाह से बचाता है और सच्चा ईमान रखते हुए कोई व्यक्ति पाप का दोषी नहीं हो सकता। मूल बात यह है कि मनुष्य के अन्दर स्वाभाविक तौर पर कुछ कमज़ोरियाँ पाई जाती हैं। जिनके कारण वह कभी-कभी ग़लतियाँ कर बैठता है पर एक पक्के मोमिन अर्थात नबी और दूसरे साधारण मोमिनों में यह अन्तर होता है कि नबी हर समय वास्तविक और सच्चे ईमान पर क़ायम रहता है और अन्धकार का कोई अंश एक पल के लिए भी उसके ईमान को डगमगा नहीं सकता, लेकिन उसकी अपेक्षा एक साधारण मोमिन कभी-कभी सच्चा ईमान रखते हुए भी अस्थायी तौर पर किसी अज्ञानता में पड़कर ग़लती कर बैठता है पर उसकी यह ग़लती केवल क्षणिक और अस्थायी होती है जिसके बाद वह तुरन्त सँभलकर फिर ख़ुदा के सामने सीधे खड़ा हो जाता है। इसका उदाहरण ऐसा ही है जैसे एक श्रेष्ठ घोड़ा कभी-कभी नाखून से ठोकर खा जाता है पर वह गिरता

विश्वास रखते हुए कि उससे दूरी और उसका प्रकोप एक ऐसी आग है जो मेरी रूह (आत्मा) को जलाकर भस्म कर देगी वह किस तरह पाप की ओर क़दम बढ़ा सकता है ? इसलिए आप ने लिखा कि यदि गुनाह से बचना चाहो तो उसका यही इलाज है कि ईमान और विश्वास पैदा करो क्योंकि इसके बिना गुनाह से छुटकारा नहीं मिल सकता।

अब पाठक समझ गए होंगे कि वास्तविक ईमान जो ख़ुदा के निकट सच्चा ईमान है उसमें और दिखावे के ईमान में क्या अन्तर है ? एक व्यक्ति मुसलमान के घर में पैदा होता है और बचपन से अल्लाह का नाम उसके कानों में पड़ना शुरू होता है जिसका अनिवार्यत: यह परिणाम निकलेगा कि वह उस नाम को सीख लेगा और उसकी ओर अपने आपको मन्सूब करेगा और कभी-कभी उसके लिए ग़ैरत भी

नहीं बल्कि ठोकर खाते ही सँभल जाता है और सवार को नुकसान नहीं पहुँचाता। पर एक अन्य घोड़ा उससे भी श्रेष्ठ होता है जो ठोकर खाता ही नहीं या उसका उदाहरण यों समझना चाहिए जैसे कि एक अच्छे पहरेदार को भी कभी ऊँघ आ जाती है पर उसके बाद वह तुरन्त सँभल जाता है और आमतौर पर वह बहुत होशियार और चौकस रहता है लेकिन उसकी अपेक्षा नबियों का वर्ग एक ऐसे पहरेदारों का समूह है जो अपनी ड्यूटी पर कभी भी नहीं सोता और हर समय जागता और सचेत रहता है। लेकिन एक तीसरा वर्ग ऐसा होता है जो हर समय या अधिकतर सोता ही रहता है यह वह वर्ग है जो मोमिनों का नहीं है। या घोड़े का उदाहरण देकर कह सकते हैं कि जो वर्ग मोमिनों का नहीं है वह उस घोड़े की तरह है जो रास्ते पर चलते हुए अक्सर ठोकरें खाता रहता है और ठोकर भी ऐसी खाता है कि ज़मीन पर गिर जाता है और अपने सवार को भी चोट पहुँचाता है। इन उदाहरणों से स्पष्ट है कि सच्चे मोमिन की वास्तविक हालत तो पाप से बचे रहने की हालत है पर कभी-कभी वह ऊँघ कर सो भी जाता है और यह हालत वह है जब उसके ईमान पर किसी अस्थायी अन्धकार का पर्दा आ जाता है। अत: दोनों बातें अपनी-अपनी जगह सत्य हैं अर्थात यह बात भी सत्य है कि सच्चा और पक्का ईमान ही वह चीज़ है जो गुनाह से बचाए रखता है और एक सच्चे मोमिन की पहचान यह

दिखलाएगा और उसके दिल पर उस नाम का रौब भी होगा जो सम्भव है कि उसे कभी पाप करने से डर भी दिलाए या कभी उसके दिल में नेकी करने की चाहत भी पैदा कर दे। पर खूब सोच लो कि यह ईमान सच्चा ईमान नहीं है बल्कि केवल दिखावे का ईमान है क्योंकि यह लगाव और ग़ैरत और यह रौब और यह डर और यह चाहत उसके हृदय में एक स्थायी भावना के रूप में क़ायम नहीं होती जो बुद्धि और विवेक के आधार पर पैदा हुई हो, बल्कि केवल पास-पड़ोस के हालात के अनुसार केवल रस्मी तौर पर यह हालतें कभी-कभी एक धुँधली चमक की तरह अपनी आभा प्रकट कर जाती है इससे अधिक कुछ भी नहीं। इस हालत से केवल यह साबित होता है कि ऐसे व्यक्ति का दिल अभी मुर्दा नहीं हुआ पर उसको ज़िन्दा भी नहीं कह सकते।

है कि वह साधारण परिस्थितियों में गुनाह से बचा रहता है और दूसरी ओर यह बात भी सत्य है कि यदा-कदा एक सच्चा मोमिन भी ग़लती खा सकता है पर यह गलती क्षणिक होती है जिसके बाद वह तुरन्त संभल जाता है। इस व्याख्या के बाद आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की इन दो बातों में कोई विरोधाभाष नहीं रहता कि एक ओर तो आप ने यह फ़रमाया कि :-

لایزنی الزانی وھو مومنٌ ولا یسرق وھو مومنٌ۔

अर्थात कोई व्यभिचारी उस दशा में व्यभिचार नहीं करता कि जब वह मोमिन हो और कोई चोर उस दशा में वह चोरी नहीं करता जब वह मोमिन हो।'' और दूसरी ओर आप फ़रमाते हैं-

اِنۡ زَنٰی وَاِنۡ سَرَقَ

अर्थात एक मोमिन चोरी या व्यभिचार की कभी ग़लती करने के बावजूद ख़ुदा की ओर से क्षमा प्राप्त कर सकता है।'' क्योंकि पहली दशा में तो मूल और स्थायी हालत की ओर इशारा है और दूसरी हालत में वह क्षणिक ग़लती की ओर इशारा किया गया है जो कभी किसी अस्थायी अज्ञानता के कारणवश एक मोमिन से भी हो सकती है पर उसके बाद एक सच्चा मोमिन सचेत होकर तुरन्त सँभल जाता है। अत: सोचो और चिन्तन करो।

इसलिए वह सच्चे अर्थों में ईमानदार कहलाने का पात्र नहीं। हाँ ऐसा व्यक्ति ईमान की पात्रता अवश्य रखता है और उसमें वह तत्व अवश्य है जिससे ईमान का भवन तैयार हो सकता है पर मोमिन वह केवल उसी समय कहलाएगा जब रस्मो-रिवाज के प्रभावों के अतिरिक्त वह स्वयं बुद्धि और विवेक के आधार पर ख़ुदा के अस्तित्व को अनुभूत और आभास करके उसके बारे में एक ऐसा व्यक्तिगत और जीवित विश्वास क़ायम कर लेगा जैसा कि वह इस भौतिक संसार की चीज़ों के बारे में रखता है।

सारांश यह कि आमतौर पर संसार में जिस ईमान का दावा किया जाता है प्रथम यह कि वह केवल दिखावे का दावा होता है नहीं तो आमतौर पर ऐसा दावेदार स्वयं भी महसूस करता है कि मेरा दिल भ्रम और सन्देहों से भरा पड़ा है।

द्वितीय यह कि यदि वह स्वयं इस बात को महसूस न भी करता हो और यही समझता हो कि मैं सचमुच ईमान पर क़ायम हूँ तो फिर भी वह केवल रस्मी ईमान के आधार पर ऐसा समझता है और वास्तविक रूप से उसका दिल सच्चे और पक्के ईमान पर क़ायम नहीं होता बल्कि वह धोखे में पड़ा हुआ होता है और यदि वह अपनी हालात पर ग़ौर करे तो कभी-कभी स्वयं भी समझ सकता है कि मेरा ईमान केवल एक रस्मी ईमान है।

तीसरी हालत वह है कि एक मनुष्य रस्मी ईमान की हद से तो आगे बढ़ जाता है अर्थात स्वयं अपने चिन्तन मनन से ख़ुदा के बारे में एक प्रकार के ईमान पर क़ायम हो जाता है और समझता है कि मैं ठोस तर्कों के द्वारा इस बात पर क़ायम हो चुका हूँ कि ख़ुदा है लेकिन फिर भी सच में वह मोमिन नहीं होता क्योंकि जिस चीज़ को वह ईमान समझता है वह ख़ुदा पर ईमान नहीं होता बल्कि केवल उस विचारधारा पर ईमान होता है कि कोई ख़ुदा होना चाहिए, अर्थात वह बौद्धिक तर्कों से इस परिणाम तक पहुँच जाता है कि संसार रूपी इस कारखाना

का कोई स्रष्टा होना चाहिए और केवल इतनी सोच से वह समझने लगता है कि मैंने ख़ुदा को पा लिया और मैं उस पर ईमान ले आया हालाँकि वास्तविक रूप से उसने ख़ुदा को नहीं पाया बल्कि केवल इस विचारधारा को पा लिया है कि कोई ख़ुदा ''होना चाहिए'' पर अपनी नासमझी या सादगी से वह उसी को ख़ुदा का पाना और उस पर ईमान लाना समझता है, हालाँकि ख़ुदा पर ईमान लाना और उसको पा लेना तो तब समझा जा सकता है कि वह सचमुच ख़ुदा तक पहुँच गया हो और उसे पता लग गया हो कि ख़ुदा है अर्थात ''होना चाहिए'' के स्तर से बढ़कर वह ''है'' के स्तर तक पहुँच गया हो और उसने ख़ुदा को व्यवहारिक रूप से पा लिया हो। जिसका यह अर्थ है कि उसने ख़ुदा के अस्तित्व को व्यवहारिक रूप से अनुभूत और आभास कर लिया है और अपनी आध्यात्मिक आँखों से उसे उसी तरह देख लिया है जिस तरह भौतिक आँख से अपने बाप, बेटों या सूरज को देखता है या दूसरी भौतिक चीज़ों को देखता है। यह वह हालत है जिसे ईमान की चौथी हालत कहना चाहिए और यही वह ईमान है जो ख़ुदा और उसके नबियों के निकट सच्चा ईमान कहलाता है और जिसके बारे में कहा गया है कि मनुष्य आग में पड़ना स्वीकार कर लेता है पर ईमान को नहीं छोड़ता।

अतएव ईमान की चार हालतें हुईं :-

(1) दिखावे का ईमान (2) रस्मी ईमान (3) ''होना चाहिए'' के स्तर का ईमान (4) ''है'' के स्तर का ईमान, और यही आख़िरी ईमान वास्तविक ईमान है। मानो यों समझना चाहिए कि पहली हालत का ईमान दोगलेपन का ईमान है दूसरी हातल का ईमान मूर्खता का ईमान है। तीसरी हालत का ईमान फलसफा का ईमान है और चौथी हालत का ईमान वस्तुत: सच्चा ईमान है। या यों समझना चाहिए कि पहली हालत विमुखता की हालत है दूसरी हालत ग़फ़लत (संज्ञानहीनता) की हालत है तीसरी हालत तलाश की हालत है। चौथी हालत मिलाप की

हालत है।

अब देखो कि मुसलमानों में कितने हैं जो असल ईमान की हालत पर क़ायम हैं। हम दावे से कह सकते हैं कि मुसलमान कहलाने वालों में बहुत बड़ी संख्या पहली दो हालतों में ही जकड़ी हुई है और बहुत ही कम लोग हैं जो इन दो हालतों से बाहर पाए जाते हैं और जो थोड़े बहुत लोग इन दो हालतों से बाहर हैं वे तीसरी हालत में भटक रहे हैं इससे आगे नहीं और यदि कुछ हैं तो न होने के बराबर। साधारण लोगों के बारे में तो क्या कहना उलमा जो धर्म की गद्‌दी के वारिस बनते हैं और जिनका काम लोगों में ईमान पैदा करना है स्वयं उनका अपना यह हाल है कि पहली और दूसरी हालत के अन्धकारों में पड़े हुए हैं। मनमौजी लोगों में जो नई रौशनी को चाहने वाले कहलाते हैं कुछ ऐसे लोग भी मिल जाएँगे जिनकी हालत तीसरी हालत से मिलती-जुलती है पर उलमा में तीसरी हालत पर भी कोई नज़र नहीं आता। जिसे सन्देह हो वह उलमा की हालत का स्वयं ध्यानपूर्वक अध्ययन करके देख ले।

हज़रत मिर्ज़ा साहिब के दावा से पहले नि:सन्देह मुसलमान उलमा में से कई स्वच्छ स्वभाव और सज्जन लोग मौजूद थे लेकिन वे या तो आपकी बैअत करके आपकी जमाअत में दाखिल हो गए या आपके दावे से पहले ही देहान्त पा गए। हज़रत मिर्ज़ा साहिब फ़रमाते हैं :-

तक़्वा के जाम जितने थे वह चाक हो गए ।
जितने ख़्याल दिल में थे नापाक हो गए ।।
कुछ कुछ जो नेक मर्द थे वह ख़ाक हो गए ।
बाक़ी जो थे वह ज़ालिम व सफ़्फ़ाक हो गए ।।

अत: हे प्रियजनों और मित्रो! मूर्तिपूजा केवल यही नहीं कि पत्थर या लकड़ी या लोहे की मूर्ति बनाकर उसे सज्दा किया जाए, बल्कि हर एक चीज़ जो ख़ुदा की राह में रोक हो जाती है वह एक मूर्ति है अर्थात हर वह चीज़ जिससे मनुष्य ऐसी मुहब्बत करता है जो ख़ुदा से

करनी चाहिए या उससे ऐसा डरता है जैसा कि ख़ुदा से डरना चाहिए या उस पर ऐसा भरोसा करता है जैसा कि ख़ुदा पर करना चाहिए वह एक मूर्ति है जिसके सामने वह सदैव नतमस्तक है। हज़रत मिर्ज़ा साहिब ने क्या ख़ूब फ़रमाया है :-

ہر کہ غیر خدا بخاطِر تُست
آں بُتِ تُست اے بایماں سُست
پُر حدزباش زیں بُتان نہاں
دامنِ دل زدستِ شاں بُرہاں
چیست قدرے کسے کہ شِرکش کار
چوں زنِ زانیہ ہزارش یار

अर्थात ''तुम्हारे दिल में ख़ुदा को छोड़कर उसकी अपेक्षा जो भी विचार है वह एक बुत है जिसे तुम पूजते हो। अत: तुम्हें चाहिए कि तुम उन छुपी हुई मूर्तियों से बचकर रहो। क्योंकि उस व्यक्ति की कोई क़द्र व क़ीमत नहीं जिसका दिल शिर्क के विचारों में फँसा हुआ है। उसका हाल वैसा ही है जैसे कि उस व्यभिचारी स्त्री का जो एक सदाचारी पति को छोड़कर हज़ारों मित्रों के साथ सम्बन्ध स्थापित करती फिरती है।''

अब ग़ौर करो कि कितने लोग हैं जो सच्चे तौर पर एक ख़ुदा के पुजारी हैं और किसी प्रकार की मूर्तिपूजा का थोड़ा सा भी अंश अपने अन्दर नहीं रखते। यों कहने को तो हर मुसलमान एक ख़ुदा को मानने वाला है पर क्या यह सच नहीं कि वह दिल में सैकड़ों और हज़ारों मूर्तियाँ जमाए हुए है जिनके आगे वह हर समय सज्दा कर रहा है। यह तो ख़ुदा के बारे में ईमान का हाल है। फिर फ़रिश्तों और मौत के बाद की ज़िन्दगी और जन्नत-दोज़ख और नेकी एवं बदी की तक़दीर अर्थात यह कि ख़ुदा ही इस कारखाने को चला रहा है और यह कि सारी वस्तुओं के प्रभाव उसी की ओर से हैं इत्यादि इत्यादि। यह सारी बातें धर्म के सिद्धान्तों में शामिल हैं और नि:सन्देह मुसलमानों की

ज़बान पर हैं और उनमें से कई यह भी समझते होंगे कि यह बातें हमारे दिल में भी हैं लेकिन यदि उस नियम के अनुसार आज़माया जाए जो हमने अल्लाह पर ईमान लाने के सम्बन्ध में लिखा है तो पूर्णत: स्पष्ट हो जाएगा कि जो कुछ है वह केवल मुँह पर ही है दिल में कुछ भी नहीं। चूँकि मुसलमानों के घर पैदा हो गए हैं इसलिए इस्लाम का दावा करते हैं और इसी कारण से कभी-कभी धार्मिक ग़ैरत भी दिखाते हैं पर यह ग़ैरत केवल क़ौम के रूप में होती है न कि धर्म की दृष्टि से। इस ज़माने में क़ौम के शब्द ने भी धर्म को बहुत नुकसान पहुँचाया है। अब मानो इस्लाम किसी धर्म का नाम नहीं बल्कि उस सामाजिक दशा का नाम है जो मुसलमान कहलाने वालों में पाई जाती है और यह एक भयानक सोच है जो मुसलमानों को हर पल नीचे गिराती जा रही है। इसी कारण हम अपने सदस्यों में और विशेषकर बच्चों में क़ौम का शब्द साधारणत: प्रचलित नहीं होने देते और उसके स्थान पर धार्मिक सेवा या जमाअत की सेवा या इस्लाम की सेवा या जमाअत का काम या धार्मिक काम या धर्म के लिए बलिदान इत्यादि शब्दों का प्रयोग करते और करने को कहते हैं। ताकि हमारे विचारों का मुख्यबिन्दु क़ौम न हो जिसे केवल नाम से लगाव होता है बल्कि धर्म हो जिसे सच्चाई से लगाव होता है। जो व्यक्ति इस सत्यता से मुँह फेरेगा चाहे वह नाम हमारे साथ हो या सामाजिक रूप से हमारा एक सदस्य हो पर वह हममें से न रहेगा क्योंकि जो रिश्ता उसे और हमें एक सूत्र में बाँध रहा था वह टूट गया और केवल नाम रह गया। मुसलमान जब से इस रहस्य का भूले हैं उनका हर क़दम हर पल तबाही की ओर बढ़ रहा है। पर खेद है कि वे फिर भी नहीं जागते।

ईमान के लक्षण

अब मैं यह बताता हूँ कि हज़रत मिर्ज़ा साहिब ने उस खोए हुए ईमान को सचमुच दुनिया में क़ायम किया है। स्पष्ट है कि ईमान उन चीज़ों में से नहीं है जो भौतिक हैं और बाह्य इन्द्रियों से महसूस हो सकती हैं। बल्कि ईमान दिल की एक हालत का नाम है जिसका पता उसके लक्षणों को देखने से होता है। उदाहरण के तौर पर प्रेम की भावना है, अब कोई व्यक्ति उस भावना को महसूस नहीं कर सकता। लेकिन जब उस भावना के लक्षण प्रकट होते हैं तो फिर प्रेम पहचाना जाता है। उदाहरण के तौर पर ज़ैद को ख़ालिद से प्रेम है अब जब बकर को ज़ैद के उस प्रेम का पता लगेगा तो ऐसा नहीं होगा कि ज़ैद का प्रेम साक्षात कोई मूर्ति बनकर उसके सामने आ जाएगा। बल्कि इस प्रकार होगा कि जब ज़ैद की करनी और कथनी में वह ऐसी बातें देखेगा जिनके द्वारा संसार में प्रेम का इज़्हार हुआ करता है तो वह उससे ज़ैद के प्रेम को पहचान लेगा। इसी प्रकार क्रोध की भावना है जो स्वयं किसी भौतिक वस्तु की भाँति दिखाई नहीं देती। लेकिन जब हम एक व्यक्ति को एक विशेष रूप में देखते हैं और हम अपने पूर्व ज्ञान से यह जानते हैं कि ऐसी दशा क्रोध के समय में हुआ करती है जो हमें यह पता चल जाता है कि यह व्यक्ति इस समय क्रोध की हालत में है। तात्पर्य यह है कि अलौकिक वस्तुएँ प्रत्यक्ष रूप से नहीं दिखाई देतीं पर उनके लक्षणों से उनके अस्तित्व का पता चलता है और यह ज्ञान उसी तरह सच्चा है जैसा कि भौतिक वस्तुओं के देखने से प्राप्त होने वाला ज्ञान। अत: ईमान भी चूँकि एक अलौकिक चीज़ है इसलिए उसका ज्ञान भी हमें इसी ढंग से हो सकता है कि हम उसके लक्षणों को देखें। अब चूँकि बिना लक्षणों को देखे ईमान का पता लगाना असम्भव है। इसलिए **ईमान का पता लगाने के लिए उसके लक्षणों का पता लगाना आवश्यक है** और हर बुद्धिमान समझ सकता है कि वे लक्षण

निम्नलिखित हैं :-

1. मोमिन के कर्म शरीअत (अर्थात क़ुर्आन शरीफ़) के अनुसार होंगे अर्थात मोमिन वही बातें करेगा जिनका शरीअत ने आदेश दिया है और उन बातों से बचेगा जिनसे शरीअत ने रोका है और यह अनुरूपता आराधनाओं, शिष्टाचारों एवं व्यवहारों इत्यादि सभी पहलुओं में प्रकट होगी।

2. मोमिन इस्लाम के लिए पूरी ग़ैरत रखेगा, अर्थात जब कोई व्यक्ति उसके सामने इस्लाम पर मौखिक या व्यवहारिक रूप से हमला करेगा तो वह उसे कभी गवारा नहीं करेगा और ग़ैरत से भर जाएगा और वह धार्मिक दृष्टि से बुरी संगति को कभी पसन्द नहीं करेगा और किसी ऐसी सभा में कदापि नहीं बैठेगा जिसमें इस्लाम की बातों पर हँसी उड़ाई जाती हो या वे हेयदृष्टि से देखी जाती हों।

3. मोमिन हमेशा अपने सामर्थ्यानुसार इस्लाम के प्रचार के कामों में लगा रहेगा और उसको यह शौक होगा कि जितना समय भी निकाल सके, इस्लाम के फैलाने में लगाए और इस्लाम पर जो आरोप लगे उनका खण्डन करे और झूठ का सामना और सत्य का समर्थन करता रहे।

4. मोमिन अपने वक्तव्य और लेख में ख़ुदा और उसके रसूल और उसकी पवित्र पुस्तक और उसके औलिया का अधिकांश वर्णन करेगा और उसकी हर बात से ख़ुदा और उसके रसूल और उसके धर्म की मुहब्बत टपकेगी और वह सदाचारियों की संगति पसन्द करेगा।

5. मोमिन ख़ुदा और उसके रसूल और उसके धर्म के लिए हर प्रकार का बलिदान देने को तैयार रहेगा। अर्थात अपने विचारों की, अपने मित्रों की, अपने देश की, अपने सगे-सम्बन्धियों की, अपने धन-दौलत की, अपने सुख चैन की, अपनी और पसन्दीदा चीज़ों की, अपनी सन्तान की, यहाँ तक कि अपने प्राण प्रतिष्ठा और इज़्ज़त की भी। यहाँ तक कि कोई चीज़ ख़ुदा और रसूल और उसके धर्म के मार्ग

में बाधक नहीं होगी और वह समय पड़ने पर किसी चीज़ के बलिदान से पीछे नहीं हटेगा।

यह वे पाँच मोटी-मोटी बातें हैं जब वह किसी में पायी जाएँ तो यह इस बात की पहचान होगी कि उसके दिल में ईमान दाखिल हो चुका है और वह ईमान की मिठास जिसका हदीसों में वर्णन आया है उसे प्राप्त हो चुकी है। पर शर्त यह है कि यह सारी बातें उसके अन्दर उस अस्थायी रूप में न पायी जाएँ जो किसी अस्थायी प्रेरणा या समसामयिक आवेग से पैदा हो जाती हैं, बल्कि वह सारी भावनाएँ स्थायी और दृढ़पूर्वक उसके अन्दर पायी जाएँ और हर हालत में उसकी साँसों के साथ रहें।

अब हम इन लक्षणों को अलग-अलग लेकर जमाअत अहमदिया की ईमानी हालत का परीक्षण करते हैं। यदि जमाअत अहमदिया में यह लक्षण दूसरों की अपेक्षा अधिक पाए जाएँ तो यह सिद्ध हो जाएगा कि हज़रत मिर्ज़ा साहिब ने वास्तव में खोए हुए ईमान को दुनिया में क़ायम कर दिया है। क्योंकि यह सिद्ध हो चुका है कि इस ज़माने में ये लक्षण मुसलमानों के सारे फ़िर्क़ों में समाप्त हो चुके हैं।

ईमान का पहला लक्षण

ईमान का पहला लक्षण यह है कि कर्म शरीअत के अनुसार हों अल्लाह की कृपा से अहमदिया जमाअत में सामूहिक दृष्टिकोण से यह लक्षण ऐसे विशेष रूप से स्पष्टत: पाए जाते हैं कि एक न्यायप्रिय शत्रु भी उनको स्वीकार किए बिना नहीं रह सकता। सैकड़ों लोग ऐसे होंगे जो अहमदी होने से पहले व्यभिचार, मद्यपान, हरामखोरी, रिश्वत, जुआ और अत्याचार इत्यादि के अतिरिक्त शरीअत द्वारा निषिद्ध कर्मों में ग्रसित थे और बीसियों ऐसे थे जो चोरी और डाका जैसे खतरनाक अपराधों में अभ्यस्त और चरम पर थे। लेकिन अहमदी होने के साथ

ही वे मानो बिलकुल नए इन्सान बन गए। जो लोग कभी फ़र्ज़ नमाज़ के निकट भी न गए थे वे ऐसे नमाज़ी हो गए कि यदि उनसे कभी तहज्जुद की नमाज़ भी रह जाए तो उन्हें घंटों अफसोस रहता है। जो लोग रमज़ान के पवित्र माह में भी कभी रोज़ा न रखते थे, अब वे रमज़ान के अलावा वर्ष में कई नफ़्ली रोज़े भी रखने लगे। इसी प्रकार दूसरी इबादतों का हाल है। कर्मों में भी एक बड़ा अन्तर नज़र आता है। नि:सन्देह हम में से कुछ कमज़ोर भी हैं लेकिन उनका कमज़ोर होना जमाअत की सामूहिक हालत पर कोई असर नहीं डाल सकता। जब एक जमाअत तैयार होती है तो सब एक जैसे नहीं हुआ करते बल्कि कुछ अच्छे होते हैं और कुछ औसत और कुछ कमज़ोर भी होते हैं। इनके अतिरिक्त कुछ मुनाफ़िक़ (दोगले) भी होते हैं। सहाबा रज़ि. की पवित्र जमाअत का भी यही हाल था यद्यपि पवित्रता और निश्छलता में उनका अद्वितीय होना सिद्ध है। लेकिन फिर भी उनमें सब अबू बकर, उमर, उस्मान और अली(रज़ि.) जैसे नहीं थे। बल्कि कुछ औसत दर्जे के थे और कुछ कमज़ोर भी और कुछ ऐसे भी थे जैसा कि क़ुर्आन व हदीस में वर्णित है कि दोगले लोगों की तरह उनमें मिले जुले रहते थे। एक स्कूल की अच्छी से अच्छी कक्षा को देख लो उसमें भी सब एक जैसे नही होंगे। अतएव देखना यह चाहिए कि सामूहिक दृष्टि से किसी जमाअत का क्या हाल है या इस प्रकार परखा जा सकता है कि जो लोग हम में से उच्चकोटि के हैं उनकी मुसलमान कहलाने वाली दूसरी जमाअतों के सज्जन पुरुषों से तुलना की जाए और जो औसत दर्जे के हैं उनकी औसत वर्ग के लोगों से तुलना की जाए और जो लोग हम में से कमज़ोर हैं उनकी दूसरे फ़िर्क़ों के कमज़ोर आदमियों से तुलना की जाए फिर पता लगेगा कि कौन सी जमाअत सुधरी हुई है और कौन सी नहीं। हम दावे से कहते हैं गर्व से नहीं कि कोई भी न्यायप्रिय व्यक्ति इस बात को स्वीकार किए बिना नहीं रह सकता कि हज़रत मिर्ज़ा साहिब के साथ नाता जोड़कर अहमदियों ने बहुत ही विशेष बदलाव

पैदा किया है और यह एक स्पष्ट सच्चाई है कि इस्लामी शरीअत पर कारबन्द होने और अपने आचार-व्यवहार को क़ुर्आन व हदीस के अनुसार रखने में अहमदिया जमाअत इस्लाम के दूसरे तमाम् फ़िर्कों से उत्कृष्ट ही नहीं बल्कि सर्वोत्कृष्ट है और ख़ुदा की इबादत, संयम और ईमानदारी इत्यादि में सामूहिक दृष्टि से सर्वश्रेष्ठ आदर्श प्रस्तुत करती है।

फिर एक दूसरी बात भी याद रखनी चाहिए जो एक धर्मनिष्ठ को बहुत आनन्द पहुँचा सकती है और वह यह है कि यदि हम अहमदिया जमाअत के लोगों पर दृष्टि डालें और ध्यानपूर्वक उनका अध्ययन करें तो स्पष्ट रूप से दिखाई देता है कि जमाअत अहमदिया में से वे लोग जिनको हज़रत मिर्ज़ा साहिब की संगति में रहने का अधिक अवसर मिला है वे उन लोगों की अपेक्षा जिनको संगति में रहने का कम अवसर मिला है स्पष्टरूप से सामूहिक तौर पर अल्लाह और लोगों के अधिकारों की अदायगी में बहुत अधिक आगे बढ़े हुए हैं। उन लोगों के मस्तक पर वही ईमान और नैतिकता का तेज चमकता हुआ नज़र आता है जो सहाबा किराम में पाया जाता था। उनके हर काम से आस्था और ज्ञान की किरणें फूटती हैं। यह लोग यदि दिन में धर्म की सेवा के काम में सबसे आगे नज़र आएँगे तो रात को ख़ुदा के समक्ष इबादतों में दिखाई देंगे। जैसा कि स्वयं ख़ुदा ने भी फ़रमाया है कि :-

ثُلَّةٌ مِّنَ الْأَوَّلِيْنَ ـ وَثُلَّةٌ مِّنَ الْآخِرِيْنَ ـ

(सूरह अल-वाक़िया 56:40, 41)

अर्थात ''जिस तरह नेक लोगों की एक बड़ी जमाअत आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के ज़माने में मौजूद है उसी तरह एक बड़ी जमाअत आख़रीन में भी पायी जाएगी।''

हे अल्लाह उन सब पर सलामती अवतिरत कर। आमीन!

ईमान का दूसरा लक्षण

ईमान का दूसरा लक्षण यह है कि मोमिन ईमान की ग़ैरत दिखाता है और ईमान ने विरुद्ध कोई बात सुनकर आराम से नहीं बैठ सकता और अधर्मियों से जो धर्म का उपहास करते हैं नाता तोड़ लेता है। अब देखो इस लक्षण पर भी केवल अहमदिया जमाअत ही ईमान पर क़ायम साबित होगी। आजकल प्राय: मुसलमानों में और विशेषकर अंग्रेज़ी पढ़ने वालों में भौतिकवाद और धर्म से विमुखता की जो गन्दी हवा चली हुई है कोई छुपी हुई बात नहीं, पर अहमदी जमाअत के इस वर्ग में भी ईमानी ग़ैरत और कुसंगति से प्राय: नफ़रत पायी जाएगी। कोई सच्चा अहमदी धर्म के विरुद्ध बात सुनकर या देखकर चुप नहीं रहेगा बल्कि तुम देखोगे कि वह अपनी कथनी या करनी से अपनी नफरत को प्रकट किए बिना नहीं रुकेगा और उस संगति से परहेज़ करेगा जिसमें धर्म का उपहास होता हो या उस पर हँसी उड़ाई जाती हो। यह बात देखने से सम्बन्ध रखती है अधिक क्या लिखें जो देखते हैं वे जानते हैं।

ईमान का तीसरा लक्षण

ईमान का तीसरा लक्षण यह बयान हुआ है कि मोमिन धर्म के प्रचार में लीन रहता है। मानो उसे हर समय यह धुन सवार रहती है कि इस्लाम की विशेषताएँ लोगों तक पहुँचाए और दुनिया से अधर्म को मिटाने और धर्म को क़ायम करने और धर्म के प्रचार के लिए अपने समय एवं धन को खर्च करने से मुँह न मोड़े और जब इस्लाम पर कोई आरोप लगे तो तुरन्त उसके खण्डन के लिए तैयार हो जाए। अब देखो इस लक्षण से भी अहमदिया जमाअत का ईमान सूर्य समान स्पष्ट है। हर अहमदी एक प्रचारक दिखाई देगा। यदि कोई व्यक्ति किसी स्वतन्त्र व्यवसाय में है तो वहीं उसका प्रचार का काम जारी

होगा। व्यापारी है तो अपने मिलने वालों को प्रचार करता होगा। ज़मींदार है तो अपने क्षेत्र में ही ख़ुदा के लिए प्रचार में लगा होगा तात्पर्य यह कि अहमदियों में हर व्यक्ति अपनी-अपनी जगह इस्लाम की सेवा में लगा हुआ मिलेगा। विद्यार्थी है तो वह भी प्रचारक है। अध्यापक है तो वह भी प्रचारक है, सेवक है तो वह भी प्रचारक है, मालिक है तो वह भी प्रचारक है, अनपढ़ है तो वह भी प्रचारक है, विद्वान है तो वह भी प्रचारक है, बच्चा है तो वह भी प्रचारक है, बूढ़ा है तो वह भी प्रचारक है पुरुष है तो वह भी प्रचारक है। स्त्री है तो वह भी प्रचारक है। तात्पर्य यह कि जो भी सच्चा अहमदी है चाहे वह कुछ भी हो पर प्रचारक अवश्य है। पिछले दिनों ही की बात है कि जब हिज रॉयल हाइनैस प्रिंस आफ वेल्ज़ भारत आए तो असहयोग आन्दोलन वालों की यह इच्छा थी कि कोई उनको देखने तक न जाए और जो लोग सहयोग का दम भरते थे उनकी यह इच्छा थी कि उस महान खानदान के युवराज को देखें और हो सके तो उनसे मुलाक़ात भी करें, कोई स्वागत नामा प्रस्तुत करें और कोई मेला और त्योहार का आयोजन करें, कोई तमाशे और प्रदर्शनी दिखाएँ या कोई आश्चर्यजनक नज़ारा प्रस्तुत करें। यह पूरी की पूरी भावना चूँकि प्रेम और सम्मान को प्रकट करने के लिए थी इसलिए सम्मानयोग्य थी, पर देखो कि अहमदिया जमाअत को इस अवसर पर क्या सूझता है, जब वे सुनते हैं कि उच्चप्रतापी युवराज हमारे देश में आ रहे हैं तो सबसे पहला विचार जो उनके दिलों में आता है वह यह है कि यह एक सुन्दर अवसर है आओ हम इस सुअवसर पर युवराज को इस्लाम का सन्देश दें। अत: बहुत कम समय होने के बावजूद लगभग बत्तीस हज़ार छोटे-बड़े, अमीर-ग़रीब, स्त्री-पुरुष अहमदी मिलकर और एक-एक आना चन्दा जमाकर एक भव्य तबलीग़ी तोहफा छपवाकर युवराज के समक्ष प्रस्तुत कर देते हैं और उनको इस्लाम की ओर आमन्त्रित करते हैं और इस्लाम की

विशेषताएँ उन तक पहुँचाते हैं। यह तोहफा जमाअत अहमदिया के इमाम हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ियल्लाहु अन्हो ने तैयार किया और जमाअत की ओर से प्रस्तुत किया गया। अत: यह एक प्रमाणित बात है कि जितना प्रचार करने का उत्साह और धर्म की सेवा का जोश जमाअत में दिखाई देता है उसका सौवाँ भाग भी दूसरी जगह नहीं पाया जाता।

ईमान का चौथा लक्षण

चौथा लक्षण यह है कि मोमिन की बातों में अधिकता के साथ ख़ुदा और उसके रसूल का वर्णन पाया जाएगा और उसकी हर कथनी और करनी से ख़ुदा और उसके रसूल और उसके औलिया और सदाचारियों की मुहब्बत टपकेगी। अत: इस लक्षण के अनुसार भी देख लो कि केवल अहमदिया जमाअत का ईमान ही सच्चा ईमान साबित होगा। आजकल सारा इस्लामी जगत ख़ुदा और उसके रसूल के नाम को भूला हुआ है और यदि कभी कोई याद भी करता है तो न इस तौर पर कि ख़ुदा और उसका रसूल वास्तविक रूप से इच्छित और प्रिय हैं बल्कि केवल एक क्षणिक जोश और दिखावटी ग़ैरत के रूप में। पर अहमदिया जमाअत के अधिकतर लोग ऐसे मिलेंगे जिनके वार्तालाप का अधिकतर भाग ख़ुदा और उसके रसूल और उसके प्यारों और उसके धर्म की चर्चा पर आधारित होता है। बल्कि देखा गया है कि कभी-कभी दूसरे लोग तंग आकर कह देते हैं कि अहमदियों को तो इन बातों का जूनून है। अधिकतर देखा जाता है कि रेल की यात्रा में जबकि दूसरों को परस्पर हँसी मज़ाक की बातें सूझती हैं पर एक अहमदी को वहाँ भी ख़ुदा और उसके रसूल और उसके धर्म की ही चर्चा सूझती है। अत: जिस प्रकार एक सच्चा प्रेमी हर समय अपने प्रियतम की याद में अपनी ख़ुराक पाता है उसी तरह अहमदिया जमाअत के

अधिकतर लोग ख़ुदा और उसके रसूल और उसके धर्म की चर्चा में ख़ुराक पाते हैं और जहाँ दूसरे लोगों का यह हाल है कि वे धर्म की याद से बिल्कुल बेपरवाह हैं और यदि ख़ुदा और उसके रसूल का वर्णन करते भी हैं तो केवल एक खुश्क मौलवियाना रंग में, जिसमें प्रेम के तनिक भी लक्षण नहीं दिखाई देते या फिर सरसरी तौर पर क़ौमी ग़ैरत के रूप में वर्णन करते हैं जो हार्दिक सच्चाई से रिक्त होता है वहाँ ख़ुदा के फ़ज़्ल से अहमदियों की बात से ख़ुदा और उसके रसूल और उसके धर्म से प्यार और लगाव की खुशबू फूट-फूटकर निकलती है। प्रेम एक ऐसी भावना है जो छुपी नहीं रह सकती। प्रेमी की हर बात और उसका उठना-बैठना उसके प्रेम की कहानी उजागर कर देता है। उसकी बातें उसका राज़ खोल देती है। उसका चेहरा उसका भेद खोलता है उसकी आँखें उसकी तर्जुमानी करती हैं और ख़ुदा की कृपा से जमाअत अहमदिया में यह लक्षण भी विशेष रूप से पाया जाता है। पर जिसके कान नहीं वह क्या सुने, जिसकी आँख नहीं वह क्या देखे, जिसका दिल नहीं वह क्या समझे।

ईमान का पाँचवा लक्षण

पाँचवां लक्षण ईमान का यह है कि मोमिन ईमान के लिए अपनी हर चीज़ क़ुर्बान कर देने को तैयार रहता है अर्थात अपनी जान, माल, सन्तान और इज़्ज़त। जब कभी हालात ऐसे पैदा होते हैं कि उसे अपने ईमान और अपनी किसी दूसरी चीज़ में किसी एक को अपनाना पड़ता है और यह असम्भव हो जाता है कि वह दोनों को बचा सके, तो वह ईमान को अपनाता है और दूसरी चीज़ को छोड़ देता है अब देखो कि अल्लाह की कृपा से इस लक्षण की दृष्टि से भी केवल अहमदिया जमाअत ही वह जमाअत साबित होती है जो सच्चे अर्थों में ईमानदार कहला सके। क्योंकि यह एक खुली-खुली सच्चाई है कि अहमदिया

जमाअत में से अधिकतर लोगों ने ईमान को बड़ी-बड़ी क़ुर्बानियाँ देकर खरीदा है। ईमान के लिए धन की क़ुर्बानी का वर्णन ऊपर हो चुका है कि किस तरह अत्यन्त गरीबी के बावजूद यह जमाअत लाखों रुपया इस्लाम के प्रचार के लिए खर्च कर रही है। लगभग सारे ऐसे हैं जो अपनी-अपनी आय का सोलहवाँ भाग लगातार इस्लाम की सेवा के लिए देते हैं। बहुत से लोग ऐसे हैं जो दसवाँ भाग देते हैं, बहुत हैं जो पाँचवां हिस्सा देते हैं और कई हैं जो तीसरा हिस्सा देते हैं। कई ने तो मात्र जीवित रहने से अधिक अपने आप पर खर्च करने को हराम ठहरा लिया है। पर यह इस तरह है कि इससे अधिक उन से माँगा नहीं जाता। अन्यथा जमाअत की कान्फ्रेंसों में कई बार यह बात सामने आ चुकी है कि अहमदियों ने बड़े जोश और हर्ष से यह कहा है कि यदि धर्म के लिए आवश्यकता पड़े तो हमारा सब कुछ हाज़िर है। पिछले दिनों में जमाअत के बढ़ते हुए खर्चों ने हमारे कोषागार पर अत्यधिक बोझ डाला तो बहुत से लोगों ने जमाअत के इमाम को लिखा कि हम अपनी सारी जायदादें और धन दौलत पूर्णत: हुज़ूर के क़ब्ज़े में देते हैं जिस तरह चाहें खर्च करें।

रिश्तेदारों की क़ुर्बानी के अवसर भी अहमदियों में से हज़ारों को मिले। अल्हम्दुलिल्लाह कि अधिकतर इस आज़माइश में कामयाब निकले हैं। बहुतों को अपने ईमान के कारण अपने माता-पिता को छोड़ना पड़ा (अर्थात क़ुर्आन की शिक्षानुसार उनकी इच्छा कुर्बान कर देनी पड़ी) और उन्होंने ईमान को पकड़ा और ख़ुदा के लिए माता-पिता को छोड़ दिया। बहुतों ने अपनी सन्तान को छोड़ा, बहुतों ने अपनी पत्नियों को छोड़ा, पर ईमान को न छोड़ा। उन्होंने धर्म के रूहानी रिश्ते को अपनाया और सांसारिक रिश्तों को कुर्बान कर दिया। ऐसे उदाहरण दस-बीस नहीं हज़ारों हैं।

प्राणों का बलिदान तो इस रंग में हज़ारों ने कर दिखाया है कि अपनी सारी शक्तियाँ धर्म के लिए समर्पित कर रखी हैं। लेकिन प्राणों

के वास्तविक न्योछावर का अवसर अहमदियों को हिन्दुस्तान में नहीं आया। जिसका कारण यह है कि हिन्दुस्तान में एक शान्तिपूर्ण और सुदृढ़ सरकार थी जिसने धार्मिक स्वतन्त्रता दे रखी थी और क़त्ल, एवं खून का मैदान गर्म नहीं होने देती थी। इसलिए ख़ुदा ने हिन्दुस्तान में अहमदियों को प्राणों की परीक्षा से बचाए रखा। यद्यपि शरीरिक कष्टों और तकलीफों के बहुत अवसर यहाँ भी आए और अहमदियों ने इस आज़माइश को खुशी से बर्दाश्त करके इस बात का प्रमाण दे दिया है कि वे हर प्रकार का शारीरिक बलिदान देने के लिए तैयार हैं (यह देश के विभाजन से पहले का नोट है बाद की परिस्थितियों को ख़ुदा जानता है - संकलनकर्ता) पर हाँ हिन्दुस्तान से बाहर अहमदियों पर प्राण न्योछावर करने के अवसर भी आए हैं और सम्भवत: पाठकगण अवगत होंगे कि हज़रत मिर्ज़ा साहिब के अनुयायियों ने किस धैर्य और ख़ुशी से इस परीक्षा में खरे उतरे। अफ़ग़ानिस्तान में बादशाह अब्दुर्रहमान ख़ान और फिर बादशाह हबीबुल्लाह ख़ान के शासनकाल में दो पवित्र सदाचारियों ने जिनमें से एक साहिबज़ादा मौलवी सैयद अब्दुल लतीफ साहिब रज़ियल्लाहु तआला अन्हु जो विद्वता की दृष्टि से बड़े प्रकाण्ड विद्वान और सिद्धपुरुष होने के अतिरिक्त सांसारिक प्रतिष्ठा की दृष्टि से भी एक बड़े प्रतिष्ठित मुखिया और हज़ारों आदमियों के पेशवा थे, वह केवल अहमदी होने के कारण बड़ी निदर्यतापूर्वक क़त्ल किए गए, उन्होंने मरना स्वीकार कर लिया पर ईमान को छोड़ना गवारा न किया। मौलवी सैयद अब्दुल लतीफ साहिब का वह स्थान था कि शासक हबीबुल्लाह ख़ान के राजतिलक की रस्म उन्होंने ही अदा की थी और बादशाह के दरबार में उनका बड़ा रसूख था। लेकिन जब ख़ुदा ने उनको हज़रत मिर्ज़ा साहिब के द्वारा वह ईमान प्रदान कर दिया जो संसार से उठ चुका था तो उन्होंने उस ईमान के खातिर दुनिया की प्रतिष्ठाओं को ठोकर मार दी, यहाँ तक कि अपने प्राणों की भी कुछ परवाह न की। बादशाह हबीबुल्लाह ख़ान ने उनको बार-बार समझाया

कि यदि तुम अहमदियत छोड़ दोगे तो मैं तुम्हें फिर पहले की तरह सम्मानित कर दूँगा और तुम्हारी प्रतिष्ठा बढ़ा दूँगा अन्यथा तुम्हारी सज़ा मौत है। अगर तुम्हें अपनी हालत पर रहम नहीं आता तो अपनी पत्नी और बच्चों पर ही रहम करो और अपनी आस्था को छोड़ दो लेकिन उन्होंने हर बार यही जवाब दिया कि मैं ईमान पर किसी चीज़ को प्राथमिकता नहीं दे सकता।

فاقض ما انت قاض انّما تقضی ھٰذہ الحیٰوۃ الدنیا

अर्थात आपके दिल में जो आए करें, परन्तु आपका फैसला केवल इसी दुनिया तक सीमित है।

अन्ततः जब बादशाह ने देखा कि काबुल के मौलवियों ने साहिबज़ादा अब्दुल लतीफ़ पर कुफ्र का फत्वा लगा दिया है और लालच एवं भय उनको ईमान से नहीं डगमगा सकते तो उसने आदेश दिया कि इनको कमर तक धरती में गाड़कर ऊपर से पत्थर बरसाए जाएँ। अतएव उनको उसी तरह धरती में ज़िन्दा गाड़ दिया गया और उसके बाद बादशाह पुनः आगे बढ़कर उनके पास गया और कहा कि अब भी समय है अपने विचारों को छोड़ दो पर उनकी ओर से फिर वही जवाब था कि मैं ईमान को नहीं बेच सकता। इस पर बादशाह ने आदेश दिया कि पत्थर बरसाए जाएँ फिर क्या था चारों ओर से पत्थर बरसने शुरू हो गए। देखने वाले कहते हैं कि स्व. शहीद ने उफ तक न की यहाँ तक कि उस निर्दोष और पीड़ित भक्त की आत्मा इस लोक से परलोक सिधार गई। इसी प्रकार इससे पूर्व मौलवी सैयद अब्दुल लतीफ साहिब के शिष्य मौलवी अब्दुर्रहमान ख़ान साहिब बादशाह अब्दुर्रहमान के शासनकाल में उनके आदेश से क़त्ल कर दिए गए थे। उन्होंने भी कत्ल होना स्वीकार किया परन्तु ईमान को न छोड़ा। फिर बादशाह अमानुल्लाह ख़ान के शासनकाल में भी एक धर्मनिष्ठ नवजवान मौलवी नेमतुल्लाह ख़ान साहिब अहमदियत स्वीकार करने के कारण पत्थर बरसा कर मार

दिए गए उन्होंने भी साहिबज़ादा मौलवी अब्दुललतीफ साहिब की तरह प्राणों के बलिदान का महान आदर्श प्रस्तुत किया और अपने ईमान पर एक मज़बूत चट्टान की तरह क़ायम रहे। इसी प्रकार दो और धर्मनिष्ठ अहमदी मौलवी अब्दुल हलीम साहिब और मौलवी नूर अली साहिब उसी शासक अमानुल्लाह ख़ान के शासनकाल में शहीद कर दिए गए और उफ तक न किया बल्कि पूरे धैर्य का महान आदर्श प्रस्तुत किया। (मौलवी अब्दुल लतीफ साहिब शहीद के क़त्ल की घटना के लिए अन्डर दी एब्सिल्यूट अमीर - लेखक मिस्टर मार्टन लेट इन्जीनियर इन चीफ काबुल और देखो हज़रत मिर्ज़ा साहिब की पुस्तक तज़्किरतुश्शहादतैन) इसी प्रकार कई अन्य देशों में भी निर्दोष अहमदियों को केवल अहमदियत के कारण क़त्ल किया गया पर उन्होंने अहमदियत का दामन न छोड़ा।

तात्पर्य यह कि अमहदिया जमाअत ने हर प्रकार का बलिदान दे कर इस बात को प्रमाणित कर दिया कि उनकी सबसे प्रिय चीज़ ईमान है जिस पर वे संसार की हर चीज़ क़ुर्बान करने को तैयार हैं। अत: सिद्ध हो गया कि इन में वह ईमान मौजूद है जिसके बारे में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने ख़बर दी थी कि वह दुनिया से उठ जाएगा। लेकिन मसीह मौऊद उसे पुन: संसार में क़ायम करेगा। अल्हम्दुलिल्लाह कि इस तरह से भी मसीह मौऊद के लक्षण हज़रत मिर्ज़ा साहिब में विशिष्ट रूप से पूरे हुए।

सच्चे ईमान पर ख़ुदा की मुहर

इस जगह यह बात भी याद रखनी चाहिए कि यद्यपि भक्त की ओर से ईमान के यह पाँच बड़े लक्षण हैं और जिसमें ये पाए जाएँ उसका मोमिन होना साबित हो जाता है। लेकिन इन लक्षणों के अतिरिक्त एक लक्षण और भी है जो इन लक्षणों के लिए मानो सत्यापित करने की

मुहर का काम देता है और इसके बाद किसी प्रकार का सन्देह शेष नहीं रहता और वह यह है कि जब भक्त सच्चे ईमान को अपनाता है तो फिर ख़ुदा उसके साथ वह बर्ताव करता है जो उसने सच्चे मोमिनों के साथ करने का वादा किया है। जैसा कि ख़ुदा तआला फ़रमाता है कि -

إِنَّا لَنَنْصُرُ رُسُلَنَا وَالَّذِينَ آمَنُوا فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا۔

(सूरह अल-मोमिन 40:52)

और -

لَهُمُ الْبُشْرٰى فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا۔

(सूरह यूनुस 10:65)

अर्थात ''हम अपने रसूलों और सच्चे मोमिनों को इस दुनियामें भी अवश्य सहायता पहुँचाएँगे।'' फिर फ़रमाया :-

''रसूलों और मोमिनों को इस दुनिया में ही हमारी ओर से रोअया (सच्चे स्वप्न) और इल्हाम के द्वारा शुभ सूचनाएँ मिला करेंगी।''

यह वह प्रमाण है जो इस दुनिया में मोमिन को ख़ुदा की तरफ से मिलता है जिसके बाद उसके ईमान में सन्देह करना सबसे बड़ी मूर्खता है। मानो पहले पाँच लक्षण बन्दे की ओर से पूरे किए जाते हैं और यह लक्षण विशेषत: ख़ुदा की ओर से प्रकट होता है और इस आख़िरी लक्षण का पाया जाना भी आवश्यक होता है ताकि सच और झूठ में सदृशता न रह सके। क्योंकि बुद्धिमान तो समझ सकता है लेकिन फिर भी मनुष्य कभी-कभी ग़लत तौर पर ऐसा सोच लेता है कि मुझ में ईमान के लक्षण पाए जाते हैं हालाँकि वस्तुत: वह नहीं पाए जाते या किसी दूसरे के बारे में सोचता है कि उसमें यह लक्षण नहीं पाए जाते हालाँकि वस्तुत: वह पाए जाते हैं तो इन परिस्थितियों में यह आख़िरी लक्षण जो ख़ुदा की ओर से ज़ाहिर होता है एक निर्णायक पैमाना बन जाता है। अब देख लो कि इस लक्षण की दृष्टि से भी यह बात सूर्य समान स्पष्ट है कि अहमदिया जमाअत ही उस ईमान पर क़ायम है जिसको ख़ुदा ने ईमान ठहराया है। मिर्ज़ा साहिब को ख़ुदा की सहायता ने किस तरह अपने विरोधियों के

मुकाबले में विजयी किया उसका संक्षिप्त वर्णन ऊपर हो चुका है। इसी प्रकार यदि अहमदियों के हालात पर भी दृष्टि डाली जाए तो स्पष्ट रूप से ख़ुदा की सहायता और शुभ सूचनाओं के वादे उनके साथ पूरे होते नज़र आते हैं और ख़ुदा की कृपा से लाखों अहमदियों ने अपने जीवन में किसी न किसी रूप में ख़ुदा की सहायता को देखा और हज़ारों अहमदी ऐसे हैं जिनको ख़ुदा ने सच्चे स्वप्न, कश्फ और इल्हाम पाने का सौभाग्य प्रदान किया। यह ख़ुदा की कृपा है जिस पर चाहता है करता है और वह बहुत बड़ी कृपा करने वाला है।

मसीह मौऊद के कार्य का बीजारोपण पूर्ण हो चुका है

अल्हम्दुलिल्लाह कि अब मैं मसीह मौऊद की दसवीं निशानी के बारे में यह बात साबित कर चुका हूँ कि हज़रत मिर्ज़ा साहिब के द्वारा वह काम भली भाँति पूरा हो चुका है जिसका क़ुर्आन और हदीस में वर्णन किया गया था। अत: अब कोई कारण नहीं कि हज़रत मिर्ज़ा साहिब के बाद किसी दूसरे मसीह और महदी की प्रतीक्षा की जाए। ख़ुदा का कोई काम व्यर्थ नहीं हुआ करता। जब ख़ुदा ने वह काम जो उसने मसीह मौऊद और महदी माहूद के लिए निर्धारित किया था हज़रत मिर्ज़ा साहिब के द्वारा पूरा करवा दिया तो फिर यह सोचना कि अब कोई दूसरा व्यक्ति आकर इस किए हुए काम को पुन: करेगा एक व्यर्थ और निरर्थक सोच है। वृक्ष अपने फल से पहचाना जाता है। अत: यदि हज़रत मिर्ज़ा साहिब के वृक्ष ने मसीही और महदवी फल पैदा किया है तो फिर उन्हें मसीह और महदी न मानने वाला और उनका इन्कार करने वाला अपना परिणाम स्वयं सोच ले।

यह कहना कि अभी पूर्ण रूप से उस काम के निशान प्रकट नहीं हुए और परिणाम की दृष्टि से अभी उसका दायरा बहुत सीमित है एक मूर्खतापूर्ण विचार है। नबियों और रसूलों का काम केवल बीज बोना होता

है जो बाद में उगता और बढ़ता और फूलता और फलता है। इसलिए नबियों के लिए जो काम निर्धारित होते हैं वे कभी उनके जीवनकाल में पूर्ण नहीं हुआ करते बल्कि उनके हाथ से केवल उनका बीजारोपण किया जाता है। यह एक ऐसा प्राकृतिक विधान है जो हर नबी के ज़माने में पाया जाता है। देखो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के प्रादुर्भाव का उद्देश्य क़ुर्आन शरीफ यह बयान फ़रमाता है कि -

لِيَكُوْنَ لِلْعَالَمِيْنَ نَذِيْرًا۔

(सूरह फ़ुरक़ान 25:2)

फ़िर फ़रमाता है -

لِيُظْهِرَهٗ عَلَى الدِّيْنِ كُلِّهٖ۔

(सूरह अत्-तौब: 9:33)

अर्थात ''हमने इस रसूल को इस उद्देश्य से भेजा है ताकि वह सारे विश्व के लिए सचेतक हो और सारी क़ौमों तक अपना पैग़ाम पहुँचाए और इस्लाम को सारे धर्मों पर विजयी कर दिखाए।''

इसी प्रकार हदीस में लिखा है कि आँहरत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि मैं काले गोरे सब के नाम इस्लाम का पैग़ाम लेकर आया हूँ, पर क्या आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के जीवनकाल में सारी दुनिया में आपका पैग़ाम पहुँच चुका था।'' क्या सारी क़ौमों को आपने सचेत कर दिया था ? और क्या सारे धर्मों के साथ आपका शास्त्रार्थ हुआ ? कदापि नहीं। बल्कि आपका सन्देश आपके जीवनकाल में केवल अरब और अरब के कुछ पड़ोसी देशों तक ही पहुँचा था और संसार के अधिकतर भू-भाग और कई धर्मों तक तो आपका नाम तक भी नहीं पहुँच सका था तो क्या (नऊज़बिल्लाह) आप अपने काम में सफल नहीं हुए और आपके द्वारा वह काम पूरा नहीं हुआ जिसके लिए आप अवतरित हुए थे ? कदापि नहीं आप तो ऐसे सफल हुए हैं कि जिसका उदाहरण नहीं मिल सकता। अत: स्पष्ट है कि किसी अवतार का जो काम बताया जाता है वह व्यापक रूप

से उसके जीवन में पूरा नहीं हुआ करता बल्कि उसके द्वारा केवल उसके काम का बीजारोपण हुआ करता है। फिर बाद में ख़ुदा तआला उसके खलीफ़ाओं और उसकी जमाअत के द्वारा धीरे-धीरे उस काम को अन्जाम तक पहुँचाता है। हाँ यदि किसी अवतार के जीवनकाल में उसके काम के बीजारोपण के लक्षण भी प्रकट न हों तो यह बात नि:सन्देह विषय को संदिग्ध कर देने वाली होगी। लेकिन यह निश्चित रूप से साबित किया जा चुका है कि हज़रत मिर्ज़ा साहिब के द्वारा उस वैभवशाली काम का पूर्णत: बीजारोपण हो चुका है जो मसीह मौऊद और महदी माहूद के लिए निर्धारित था। अब यह बीज ख़ुदा के विधानानुसार बढ़ेगा और फूलेगा और फलेगा और कोई नहीं जो इसे रोक सके।

हमारे आक़ा हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने अपने काम का बीजारोपण किया और जिसने उन के काम को देखने और समझने की कोशिश न की और इन्कार करने वाला बन गया, वह ख़ुदा की रहमत से केवल वंचित ही नहीं रहा बल्कि उसके प्रकोप का निशाना भी बना और अब वर्तमान युग में आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के सेवक और आध्यात्मिक प्रतिरूप हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब ने अपने काम का बीजारोपण किया है अब जो ख़ुदा के भेजे हुए इस सुधारक को नहीं पहचानेगा और निरर्थक तर्क और बहानेबाज़ी से इन्कार कर देगा वह स्मरण रखे कि वह ख़ुदा की रहमत से वंचित रहेगा और उसके प्रकोप का निशाना बनेगा। हज़रत मिर्ज़ा साहिब फ़रमाते हैं :-

यारो जो मर्द आने को था वह तो आ चुका
यह राज़ तुमको शम्स व क़मर भी बता चुका
अब साल सत्रह भी सदी से गुज़र गए
तुम में से हाय! सोचने वाले किधर गए

थोड़े नहीं निशान जो दिखाए गए तुम्हें
क्या पाक़ राज़ थे जो बताए गए तुम्हें
पर तुमने उनसे कुछ भी उठाया न फ़ायदा
मुँह फेर कर हटा दिया तुमने यह माइदा

जमाअत अहमदिया की सार्वभौमिक उन्नति के बारे में एक महान भविष्यवाणी

इस जगह उचित मालूम होता है कि मिर्ज़ा साहिब की उस महान भविष्यवाणी का भी वर्णन कर दिया जाए जो जमाअत अहमदिया की सार्वभौमिक उन्नति के बारे में हज़रत मिर्ज़ा साहिब ने अपने ख़ुदा से सूचना पाकर आज से पचास वर्ष पूर्व की थी। आपने फ़रमाया :-

ख़ुदा तआला ने मुझे बार-बार ख़बर दी है कि वह मुझे बड़ी महानता देगा और मेरी मुहब्बत दिलों में बिठाएगा और मेरे सिलसिला को सारी धरती पर फैलाएगा और सब फ़िर्कों पर मेरे फ़िर्क़ा को बिजयी करेगा और मेरे फ़िर्क़ा के लोग ज्ञान एवं अध्यात्म में इतनी उन्नति करेंगे कि वे अपनी सच्चाई के नूर और अपने तर्कों और निशानों की दृष्टि से सबका मुँह बन्द कर देंगे और हर एक क़ौम इस झरने से पानी पियेगी और यह सिलसिला ज़ोर से बढ़ेगा और फूलेगा यहाँ तक कि धरती पर छा जाएगा। बहुत सी रोकें पैदा होंगी और परीक्षाएँ आएँगी परन्तु ख़ुदा सबको बीच से उठा देगा और अपने वादा को पूरा करेगा और ख़ुदा ने मुझे संबोधित करके कहा कि मैं तुझे बरकत पर बरकत दूँगा यहाँ तक कि बादशाह तेरे कपड़ों से बरकत ढूँढेंगे।''

(तजल्लियाते इलाहिया पृष्ठ 21, मुद्रित सन् 1907 ई.)

मसीह व महदी की निशानियों पर एक मौलिक दृष्टि

कथित निशानियों के संबंध में एक सन्देह का निराकरण

हम कथित निशानियों की बहस संक्षिप्ततः समाप्त कर चुके हैं लेकिन एक सन्देह का निराकरण शेष है। यद्यपि आमतौर पर मसीह मौऊद व महदी माहूद की निशानियाँ तो हज़रत मिर्ज़ा साहिब में पूरी हो चुकी हैं। पर कहा जाता है कि कथित निशानियों की कुछ बातें घटित नहीं हुईं इसी प्रकार कुछ वे बातें हैं जो उम्मत के उलमा ने हदीसों और सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम के कथनों से निष्कर्ष निकालकर या अपने अन्दाज़ों से लिखी हैं उनमें से कुछ अभी तक पूरी नहीं हुईं। अतः इस सन्देह का उत्तर यह है कि उलमा के व्यक्तिगत विचारों के तो हम उत्तरदायी नहीं, लेकिन सच्ची कथित निशानियों के सम्बन्ध में जो क़ुर्आन और हदीस में बयान हुई हैं दो बातें याद रखनी चाहिए और हम आशा करते हैं कि जो व्यक्ति ख़ुदा का भय रखते हुए इन बातों पर चिन्तन करेगा, वह अवश्य सत्य को पा लेगा।

पहली बात यह है कि हर नबी के बारे में जो निशानियाँ बयान की जाती हैं उनका एक व्यापक अर्थ हुआ करता है जो निशानियों पर पूर्णतः दृष्टि डालने से प्राप्त होता है। इसलिए सर्वप्रथम हमें कथित निशानियों पर ग़ौर करके उनका एक व्यापक अर्थ निकालना चाहिए अर्थात यह ज्ञात करना चाहिए कि कथित निशानियों में से सामूहिक दृष्टिकोण से वह कौन सी निष्कर्षतः व्यापक रूपरेखा निकलती है जिसके अनुसार

मसीह मौऊद व महदी माहूद का प्रादुर्भाव होना निश्चित था, अर्थात सारी निशानियों और उनकी व्याख्याओं पर व्यापक दृष्टि डालकर फिर ख़ुदा के दिए हुए विवेक से इस बात का पता लगाना चाहिए कि इस पूरे अध्ययन से वह कौन सी व्यापक रूप रेखा सिद्ध होती है जिसको तमाम् कथित निशानियों का वास्तविक उद्देश्य और उनकी रूह और उनका सारांश और निचोड़ कहा जा सकता है। फिर जब हम सारी निशानियों और उनकी व्याख्याओं पर पूर्णत: दृष्टि डालकर उनसे एक व्यापक अर्थ ज्ञात कर लें तो फिर हमें, दावेदार को उस व्यापक अर्थ के सम्मुख रखकर उसके सच्चे होने का फैसला करना चाहिए। यदि दावेदार के हालात उस व्यापक अर्थ के अनुसार सिद्ध हों और उस व्यापक अर्थ की दृष्टि से उसके दावे की सच्चाई में किसी उचित शक और सन्देह की गुंजाइश न रहे और दूसरी ओर यदि ऐसे बौद्धिक तर्क जिनकी सत्यता विशेषत: क़ुर्आन से साबित हो और उसके दावे का सत्यापन कर रहे हों तो हमें व्याख्याओं में पाए जाने वाले तमाम् मतभेदों को ख़ुदा के हवाले करना चाहिए और उस दावेदार को सच्चा मान लेना चाहिए। यही अमन का मार्ग है जो सदैव से सदाचारियों का रहा है।

स्पष्ट है कि जब कथित निशानियाँ अपने व्यापक अर्थों की दृष्टि से एक दावेदार का पूरा-पूरा सत्यापन कर रही हैं तो फिर केवल इस कारण से उसका इन्कार कर देना कि हमारे विचार के अनुसार कुछ बातें अभी तक घटित नहीं हुईं, एक तबाही की राह है जिससे हर मोमिन को बचना आवश्यक है। निशानियों का असल तत्व तो उनका व्यापक अर्थ ही होता है। अत: जब यह व्यापक अर्थ मुद्दई की सच्चाई पर सत्यता की मुहर लगा दे तो यह पूर्णत: मूर्खता होगी कि हम कई व्यर्थ बातों पर अड़ जाएँ और उस मुद्दई के बारे में जिसकी सच्चाई पर सारी निशानियों ने व्यापक रूप से गवाही दी है शक व सन्देह को वैध रखें। स्पष्ट है कि कथित निशानियों के व्यापक अर्थों के अनुसार

अपने आप को ढ़ाल लेना बन्दे के बस में नहीं है। हाँ एकांकी रूप से कथित बातों के सम्बन्ध में कई दशाओं में यह सन्देह हो सकता है कि बन्दा स्वयं उनके अनुसार अपने हालात को बना सकता है।

अत: अल्हम्दुलिल्लाह हम पूरे विश्वास और यक़ीन से कहते हैं कि एक ओर मसीह मौऊद व महदी माहूद के बारे में जितनी भी निशानियाँ क़ुर्आन शरीफ और हदीसों से साबित हैं उनका व्यापक अर्थ विश्वसनीय और पूर्णरूप से हज़रत मिर्ज़ा साहिब में पाया जाता है और इस बारे में विश्वसनीय और दीप्तिमान प्रमाणों के साथ आपकी सच्चाई साबित की जा सकती है और जो ईर्ष्या-द्वेष से अन्धा हो चुका हो या घोर अंधविश्वास का शिकार हो, उसके अतिरिक्त किसी को किसी प्रकार के सन्देह की गुंजाइश नहीं रहती।

दूसरी ओर निशानियों में से बहुत बड़ा हिस्सा अर्थात क़ुरआनी निशानियों का तो सारा हिस्सा और हदीस में वर्णित निशानियों का अधिकतर भाग साफ और स्पष्ट तौर पर पूरा हो चुका है और जो हिस्सा शेष रहता है वह भी उचित व्याख्या के साथ उसके अनुसार किया जा सकता है तो इस दशा में यह कितना दुर्भाग्य होगा कि किसी आंशिक व्याख्या को लेकर उस पर हठ किया जाए और वे स्पष्ट प्रमाण जिन्होंने हज़रत मिर्ज़ा साहिब के दावों पर एक सूरज चढ़ा रखा है रद्दी की तरह फेंक दिए जाएँ। ऐसे व्यक्ति के बारे में यह कदापि नहीं कहा जा सकता कि उसकी नीयत अच्छी है और न ऐसा व्यक्ति दिल से सत्य का अभिलाषी समझा जा सकता है। बल्कि तुम नि:सन्देह ऐसे व्यक्ति को अहंकार, स्वार्थ, अभिमान और ईर्ष्या-द्वेष का शिकार पाओगे। क्योंकि जहाँ उसके मन के अनुसार कोई बात उसे मिलती है वह उसे एक कण भी नहीं छोड़ता परन्तु जहाँ उसकी इच्छा के विपरीत बात हो तो वह प्रमाणों के एक पहाड़ को भी रद्दी की तरह फेंक देता है।

ببیں تفاوتِ رہ از کُجاست تابہ کُجا

अनुवाद - देखो राह का फ़र्क़ कहाँ से कहाँ तक है ? (अनुवादक) दूसरी बात जो याद रखनी चाहिए वह यह है कि यह एक प्राकृतिक विधान है कि ख़ुदा के नबियों, रसूलों इत्यादि का अवश्य इन्कार किया जाता है, क़ुर्आन खोलकर देखो, कोई रसूल ऐसा नहीं आया जिसे उसकी क़ौम ने पहली आवाज़ पर ही मान लिया हो, बल्कि सबका इन्कार हुआ है और सब पर हँसी उड़ाई गए है और सबको झूठा कहा गया है और सबका मुक़ाबला किया गया है और फिर आश्चर्य यह कि सबके बारे में यह कहा गया है कि उनमें वह लक्षण नहीं पाए जाते थे जो पुराने धर्मग्रन्थों में बयान किए गए थे। क़ुर्आन शरीफ़ फ़रमाता है :-

يَاحَسْرَةً عَلَى الْعِبَادِ مَا يَأْتِيهِم مِّن رَّسُولٍ إِلَّا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِئُونَ

(सूरह यासीन 36:31)

फिर फ़रमाता है :-

أَفَكُلَّمَا جَاءَكُمْ رَسُولٌ بِمَا لَا تَهْوَىٰ أَنفُسُكُمُ اسْتَكْبَرْتُمْ فَفَرِيقًا كَذَّبْتُمْ وَفَرِيقًا تَقْتُلُونَ

(सूरह अल-बक़र: 2:88)

''अर्थात खेद है लोगों पर कि जब भी उनके पास कोई रसूल आता है तो वे उसका इन्कार करते और मज़ाक उड़ाते हैं।''

''हे लोगो! क्या यह सच नहीं कि जब कभी भी तुम्हारे पास हमारा कोई रसूल वह बात लेकर आता है जिसे तुम्हारे दिल पसन्द नहीं करते तो तुम अहंकार करते हो और उनमें से अधिकतर को झूठा कहते हो और बहुतों के जान से मार देने के पीछे पड़ जाते हो।''

तात्पर्य यह कि यह एक साबित शुदा सच्चाई है जिस पर क़ुर्आन साक्षी है और इतिहास गवाह है कि हर नबी और रसूल को झुठलाया जाता है और उनका मज़ाक उड़ाया जाता है। क्योंकि वे उसे अपनी मर्ज़ी और इच्छाओं के अनुसार नहीं पाते अर्थात वे उसके बारे में कुछ दूसरा ही नक्शा अपने दिमाग़ों में जमाए होते हैं और वह निकलता है

कुछ और। इस के उदाहरणों से क़ुर्आन और अन्य धार्मिक पुस्तकें भरी पड़ी हैं पर इस जगह केवल दो उदाहरण प्रस्तुत करना पर्याप्त समझता हूँ।

हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ने जब मसीह होने का दावा किया तो यहूदियों ने उनका घोर इन्कार किया और उनके दावों पर बहुत हँसी उड़ाई और कहा कि हमारी किताबों में तो आने वाले की अमुक-अमुक निशानियाँ लिखी हैं और तू उनके अनुसार प्रकट नहीं हुआ। उदाहरणत: उन्होंने कहा कि हमारे यहाँ लिखा है कि मसीह के आने से पहले इलियास नबी आसमान से उतरेगा और फिर उसके बाद मसीह आएगा (मलाकी 4/3) परन्तु इलियास अभी तक आसमान से नहीं उतरा। (मती 17/10)

इसी तरह हमें बताया गया था कि मसीह एक बादशाह पैग़म्बर होगा और हमें उसके द्वारा बड़ी सत्ता मिलेगी और हमारी खोई हुई प्रतिष्ठा पुन: लौट आएगी और वह हमारे दुश्मनों के साथ युद्ध करके उनको मौत के घाट उतार देगा, और यह बातें प्रकट नहीं हुईं। (देखो चारों इन्जीलें)

हज़रत मसीह ने उन्हें उत्तर दिया कि ईलिया अर्थात इलियास के आसमान से उतरने से, उसके समरूप का आना तात्पर्य है और वह यह्या नबी है जो आ चुका। (मती 11/14) और बादशाहत के बारे में यह स्पष्टीकरण प्रस्तुत किया कि इससे आध्यात्मिक बादशाहत अभिप्राय है न कि सांसारिक। पर यहूदियों ने उन स्पष्टीकरणों को न माना और ज़ाहिरी बातों पर अड़े रहे।

इसी प्रकार जब आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने अहले किताब के सामने यह दावा प्रस्तुत किया कि मैं वही नबी हूँ जिसकी मूसा अलैहिस्सलाम ने भविष्यवाणी की थी तो उन्होंने कहा कि उसकी तो अमुक-अमुक निशानियाँ हैं जो आप में नहीं पाई जातीं। उदाहरणत: हमसे कहा गया था कि वह बनी-इस्राईल में से होगा पर

आप इस्माईल की नस्ल हैं इत्यादि इत्यादि।

इन सारी बातों से स्पष्ट है कि निशानियों का झगड़ा इस ज़माने का नया नहीं बल्कि पुराना झगड़ा है, जो कम से कम दो हज़ार वर्षों से चला आ रहा प्रतीत होता है। इसलिए ऐसी दशा में बड़ी सावधानी की आवश्यकता है। इन्कार की ओर क़दम उठाना अच्छा नहीं होता। क्या तुम जानते हो, कि शायद ख़ुदा की ओर से कोई निशानी तुम्हारे लिए एक परीक्षा के तौर पर हो। अत: संभल जाओ और होशियार हो जाओ। ऐसा न हो कि लापरवाही के कारण तुम उस परीक्षा में पड़ जाओ और नाकाम रहो। यहूद ने इन बातों पर ठोकर खाकर इनकार किया और ख़ुदा के प्रकोप के नीचे आ गए। मगर मैं कहता हूँ कि यदि तुम इन्कार करोगे तो तुम यहूदियों से भी अधिक दण्डनीय होगे, क्योंकि उनके लिए पहले कोई उदाहरण मौजूद न था। लेकिन तुम्हारे लिए यहूदियों का खुला-खुला उदाहरण मौजूद है और जो व्यक्ति उदाहरण मौजूद होने पर भी ठोकर खा जाता है वह सज़ा के योग्य होता है।

फिर हम कहते हैं कि पाठकगण इस बात पर भी बहुत ध्यान दें, और यह बात बहुत याद रखने योग्य है कि यदि कोई व्यक्ति बिल्कुल उन निशानियों के अनुसार प्रकट हो जो लोगों ने किसी आने वाले के बारे में समझ रखी हों और कण मात्र भी अन्तर न हो तो बुद्धि इस बात को कदापि स्वीकार नहीं कर सकती कि ऐसे व्यक्ति का भी इन्कार हो सकता है। बल्कि अवश्य ऐसे व्यक्ति को सब लोग देखते ही पहचान लेंगे कि यही वह व्यक्ति है जिसके बारे में वादा किया गया था और किसी को इन्कार की गुंजाइश नहीं होगी। पर हम देखते हैं और क़ुर्आन भी यही कहता है कि हर नबी या रसूल का इन्कार होता है और इतिहास से भी यही सिद्ध होता है। बल्कि मसीह मौऊद के बारे में तो कई रिवायतों में विशेष रूप से वर्णन आता है कि उसका बहुत इन्कार किया जाएगा। यहाँ तक कि लोग उसे काफिर और दायरा

इस्लाम से ख़ारिज ठहराएँगे (देखो हुजजुल किरामा) इन परिस्थितियों में यह मानना पड़ता है कि पुरातन पद्धति के अनुसार आवश्यक है कि मसीह मौऊद भी ऐसे रूप और ऐसे ढंग पर प्रकट हो कि लोगों ने उसके प्रकटन का जो नक्शा अपनी सोचों में जमा रखा है वह नक्शा उसके हालात से पूरी तरह अनुरूपता न पाए और लोग समझें कि इसमें अमुक-अमुक निशानियाँ पूरी नहीं हुईं। अन्यथा यह किस प्रकार हो सकता है कि आने वाला तो उन सब निशानियों के अनुसार आए जो लोगों ने अपनी ओर से अपने दिलों में जमा रखी हों और कोई एक भी निशानी ऐसी न हो जो उसमें न पाई जाती हो और लोग फिर भी उस पर हँसी उड़ाएँ और उसका इन्कार करें। क्या लोगों का सर फिरा हुआ होगा कि वे सारी निशानियाँ जो उन्होंने समझ रखी होंगी सब की सब स्पष्ट तौर पर देख लेने के बाद भी एक मुद्दई का इन्कार करेंगे।

सारांश यह कि एक ओर तो प्राथमिक तौर पर क़ुर्आन शरीफ की दृष्टि से हर नबी या रसूल का इन्कार किया जाना पूर्णत: सिद्ध है और मसीह मौऊद का इन्कार किया जाना तो विशेष रूप से कई रिवायतों में वर्णित है और दूसरी ओर हम देखते हैं कि इन्कार बौद्धिक तौर पर केवल उसी हालत में हो सकता है कि जब एक मुद्दई किसी ऐसे रूप में प्रकट हो जो लोगों के विचार और उम्मीदों के अनुरूप न हो और उनको यह कहने का अवसर मिले कि इसमें अमुक-अमुक बातें नहीं पाई जातीं और अमुक-अमुक निशानियाँ प्रकट नहीं हुईं। अत: सिद्ध हुआ कि मसीह मौऊद के लिए आवश्यक था कि वह किसी ऐसे ढंग पर प्रकट हो जो लोगों की कई उम्मीदों के उलट हो। या दूसरे शब्दों में यह कहना चाहिए कि जहाँ मसीह मौऊद की दूसरी निशानियाँ बताई गई थीं वहाँ मानो एक निशानी यह भी बताई गई थी कि उसके बारे में कुछ निशानियाँ जो लोगों ने समझ रखी होंगी वे उनकी इच्छा और विचारों के अनुरूप प्रकट नहीं होंगी।

इसके अतिरिक यह बात भी ध्यान देने योग्य है कि हदीसों में

मसीह मौऊद का नाम **हकम् व अदल** रखा गया है (देखो बुख़ारी) हकम् का अर्थ है मतभेदों में निर्णय करने वाला और अदल का अर्थ है ठीक-ठीक निर्णय करने वाला मानो जैसा कि ऊपर बयान हो चुका है कि मसीह मौऊद के बड़े कामों में से एक काम हकम बनना अर्थात मतभेदों में फैसला करना भी था और उसको अदल ठहराकर यह भी प्रकट कर दिया गया था कि वह सही सही फैसला करने वाला होगा। जिसका यह तात्पर्य था कि उस ज़माने में उम्मते मुहम्मदिया में बहुत से मतभेद पैदा हो चुके होंगे और मसीह मौऊद उन सब मतभेदों का सच्चा-सच्चा निर्णय करेगा। अत: जब मसीह मौऊद की निशानियों के बारे में भी मतभेद था तो अवश्य था कि वह हकम-अदल होने की दृष्टि से उन विभिन्न रिवायतों का भी निर्णय करे जो उसके लिए निशानियों के तौर पर समझी गई थीं और उनमें से बहुतों को सही ठहरावे और बहुतों को ग़लत। खेद है कि तुम मसीह मौऊद को हकम और अदल मानते हुए फिर उसे इतना स्थान भी नहीं देते कि वह साधारण मुहद्दिसों की भाँति कई रिवायतों को अविश्वसनीय और कई को विश्वसनीय ठहरावे ? तुम मुहद्दिसों के बारे में मानते हो कि उनको यह अधिकार था कि वे अपने ज्ञान से कुछ रिवायतों को अविश्वसनीय या झूठी ठहरा दें और कुछ को ठोस और सही। और तुम आज तक व्यवहारिक दृष्टि से उनके फैसले को मानते रहे हो। लेकिन वह व्यक्ति जो ख़ुदा की ओर से आदेशित होकर आने वाला है और जिसके बारे में कहा गया था कि वह हकम व अदल होगा उसका तुम यह अधिकार स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं कि वह विश्वसनीय, अविश्वसनीय या सही ग़लत रिवायतों में निर्णय करे और उसके निर्णय को मानना तुम्हें स्वीकार नहीं!

हे हमारे ना समझ दोस्तो! यदि मसीह मौऊद तुम्हारी झूठी सच्ची बातों को स्वीकार करके केवल एक अनुसरणकर्ता की भाँति तुम्हारे मौलवियों के सामने घुटने टेके बैठा रहे और कोई एक बात भी ऐसी

मुँह पर न लाए जो किसी मौलवी या हदीस के किसी आलिम की राय और तहक़ीक़ के विपरीत हो तो फिर वह हकम और अदल कैसा हुआ ? और उसके आने का फायदा ही क्या हुआ ? क्या तुम समझते हो कि मसीह मौऊद इसलिए आएगा कि कभी एक मौलवी के पाँव पर गिरे और कभी दूसरे के सामने घुटने टेक कर बैठे और कभी तीसरे के सामने हाथ जोड़े और उसको थोड़ा सा भी अधिकार न होगा कि वह कोई बात उन मौलवी साहिबान के विरुद्ध मुँह पर लावे। अफ़सोस है कि दिल मर गए और आँखों की देखने की क्षमता खत्म हो गई।

मित्रो ! सोचो और समझो! कि वह जो मसीह मौऊद होकर और ख़ुदा से शिक्षा-दीक्षा पाकर और हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से हकम और अदल की उपाधि पाकर संसार के सुधार के लिए आता है तुम उसको इतना दर्जा भी नहीं देते जितना एक साधारण मुहद्दिस के लिए स्वीकार करते हो और फिर तुम में से बहुत हैं जिनका यह विश्वास है कि अन्तर्यामी और कश्फ व रोअया देखने वाले कभी-कभी अपने रोअया, कश्फ या इल्हाम के द्वारा किसी हदीस के कमज़ोर या ठोस का पता लगा लेते हैं मगर तुम मसीह मौऊद के लिए यह दर्जा भी स्वीकार करने को तैयार नहीं। हे बद्किस्मत क़ौम! ख़ुदा तेरी आँखें खोले क्या यह अमन का रास्ता न था कि जब क़ुर्आन शरीफ़ और हदीस सहीह और बुद्धि ने हज़रत मिर्ज़ा साहिब के दावे पर सच्चे होने की मुहर लगा दी तो फिर वे बातें जिनके बारे में यह विचार किया जाता था कि वह जिस तरह समझी गई थीं उस प्रकार घटित नहीं हुईं ख़ुदा के हवाले कर दी जातीं और इन्कार की तरफ़ क़दम न उठाया जाता।

पर हे बद्नसीब गिरोह! तुझे किससे उपमा दी जाए। तेरा उदाहरण तो उस व्यक्ति का सा है जिसने एक दूल्हे के आने की खुशी में बड़ी धूमधाम से तैयारी की और अपनी बिरादरी और पड़ोस के लोगों को भी उसके आने की शुभसूचना देकर जश्न में शामिल होने का

निमन्त्रण दिया। लेकिन जब दूल्हा आया और बिल्कुल ठीक समय पर आया और निर्धारित निशानियों के अनुसार आया और एक प्रमाणों का चमकता हुआ सूरज भी अपने साथ लाया तो उस मूर्ख ने यह सब देखकर केवल इसलिए दूल्हे की ओर से मुँह फेर लिया और अपना दरवाज़ा बन्द कर लिया कि दूल्हे के आने की जो बातें उसने समझ रखी थीं उनमें से कुछ उसकी सोच के अनुसार नज़र नहीं आईं। तब उसे ख़ुदा की ओर से एक रौबदार आवाज़ आई कि बस अब बारात और उसके जश्न के धूमधाम का विचार छोड़ दे और अपनी बद्नसीबी और महरूमी पर आँसू बहा कि दूल्हा जो आने वाला था वह आया और तेरे दरवाज़े को बन्द पाकर तेरे भाइयों के घर में दाख़िल हो गया क्योंकि उन्होंने उसके लिए खुशी से अपने दरवाज़े खोले और उसे स्वीकार किया और ख़ुदा का शुक्र अदा किया। हज़रत मिर्ज़ा साहिब अपने इन्कार करने वालों और मानने वालों के बारे में एक जगह वर्णन करते हुए फ़रमाते हैं :-

उन्हें मातम् हमारे घर में शादी
फ़सुब्हानल्लज़ी अख़्ज़ल अआदी
वह आया मुंतज़िर थे जिसके दिन रात
मुअम्मा खुल गया रौशन हुई बात
दिखाईं आसमाँ ने सारी आयात
ज़मीं ने वक़्त की दे दीं शहादात
फिर इसके बाद कौन आएगा हैहात
ख़ुदा से कुछ डरो छोड़ो मआदात

अपने इन्कार करने वालों के बारे में हज़रत मिर्ज़ा साहिब ने क्या ख़ूब फ़रमाया है कि मूर्खो ! मैं तुम्हारे तमाँचे खाने के लिए नहीं आया। जब मेरी सच्चाई पर ख़ुदा ने गवाही दे दी और धरती-आसमान ने अपने समय पर पुकारा और क़ुर्आन शरीफ़ की सारी और हदीसों की अधिकतर निशानियाँ पूरी हो गईं तो फिर तुम्हें चाहिए था कि मुझे

स्वीकार करते और इसके बजाय कि तुम मुझे उन हदीसों के साथ नापते सच तो यह था कि उन हदीसों को मेरे साथ नापते और जो हदीसें मेरे मुताबिक न उतरें उनकी व्याख्या करते या कमज़ोर ठहराकर छोड़ देते। क्योंकि मैं ख़ुदा की वह्यी के साथ बोलता हूँ और **हकम और अदल** होकर आया हूँ। सौभाग्यशाली है वह जो इस रहस्य को पहचानता और मूर्खता की मौत मरने से बचता है।

अब हम संक्षिप्त रूप से वे कारण भी बताए देते हैं जिनके आधार पर समझा जाता है कि कई निशानियाँ पूरी नहीं हुईं। अत: सबसे पहला कारण यह है कि जिन निशानियों के बारे में कहा जाता है कि वे पूरी नहीं हुईं उनका पता हमें केवल "अहाद" अर्थात उन हदीसों द्वारा जो अधिक मशहूर नहीं है लगता है। परन्तु ऐसी हदीसों के बारे में उम्मत ने सर्वसहमति की है कि इनसे केवल कल्पनात्मक जानकारी पैदा होती है पक्की और विश्वसनीय नहीं। पक्की और विश्वसनीय जानकारी केवल "मुतवातिर" हदीस से मिलती है (अर्थात उन हदीसों से जिनके वर्णन और वर्णन कर्ताओं का सिलसिलाक्रम आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम तक पहुँचता है - अनुवादक) पर इस बात पर भी उम्मत में सर्वसहमति है कि तवातुर का दर्जा केवल क़ुर्आन शरीफ को प्राप्त है। शेष सारी हदीसें अहाद हैं जिनके बारे में फ़िक़्क़ा के विद्वान एवं मुहद्दिसीन सहमत हैं कि इनसे केवल काल्पनिक ज्ञान पैदा होता है। कुछ मुहद्दिसों ने अवश्य कुछ हदीसों जैसे कि हदीस -

إِنَّمَا الْاَعْمَالُ بِالنِّيَّات

और यह हदीस -

من كذب عليَّ متعمدًا فليتبوّأ مقعدهٗ من النّار

के मुतवातिर होने का विचार व्यक्त किया है लेकिन जिस बात पर पूरी उम्मत की सहमति है वह यही है कि तवातुर का स्थान केवल क़ुर्आन करीम को ही प्राप्त है। शेष सारी हदीसें अहाद के अन्तर्गत हैं और जो हदीसें क़यामत के निकट और मसीह मौऊद के अवतरण

और उसकी निशानियों इत्यादि के बारे में वर्णित हुई हैं उनके लिए तो सारी उम्मत का सर्वसम्मति से यह फत्वा है कि वे अहाद हैं मुतवातिर कदापि नहीं। मानो उम्मत की सर्व महमति से यह बात साबित हो गई कि इस बारे में जितनी हदीसें हैं वे केवल काल्पनिक ज्ञान का लाभ देती हैं पूर्णत: पक्के और अटूट विश्वास के स्थान तक नहीं पहुँचतीं और बुद्धि भी यही कहती है कि जो बातें डेढ़ सौ वर्ष पश्चात् लोगों से सुन-सुनकर एकत्र की गई हों जिनकी सुरक्षा का आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम और आपके चारों उत्तराधिकारियों (ख़लीफ़ों) और इस्लामी शासन की ओर से कोई विशेष प्रबन्ध न किया गया हो, उनको कदापि यह स्थान प्राप्त नहीं हो सकता कि ख़ुदाई गवाही और क़ुरआनी प्रमाण और पूर्णत: सच्चे और विश्वसनीय तर्कों के समक्ष उनकी कोई हक़ीक़त समझी जाए। स्वयं मुहद्दिसों ने भी स्वीकार किया है कि हदीसों के शब्दों की सच्चाई का दावा नहीं किया जा सकता क्योंकि अधिकतर लोग रिवायत अपने शब्दों में बयान करने के आदी होते हैं फिर बयान करने वालों की स्मरण शक्ति की गल्तियाँ और उनकी समझ की गल्तियाँ और कई परिस्थितियों में उनकी दूसरी कमज़ोरियाँ इत्यादि कई प्रकार की बातें हैं जो असर डालती हैं। इन परिस्थितियों में कुछ व्याख्याओं के शब्दों पर अड़ना और स्पष्ट प्रमाणों को नज़र अन्दाज़ कर देना किसी तरह सलामती का मार्ग नहीं। अत: यह एक बहुत बड़ी और ठोस बात है कि हदीसों में सन्देह का पहलू मौजूद है इसलिए केवल उन्हीं पर अपनी जाँच पड़ताल की हमेशा बुनियाद रखना और वह भी ऐसे हालात में कि क़ुर्आन करीम उनके विपरीत कहता हो और बुद्धि एवं विवेक भी उनके उलट हो और ख़ुदा की गवाही भी उनके खिलाफ हो और स्वयं दूसरी सहीह हदीसें भी उनको रद्द कर रही हों, कदापि सही नहीं हो सकता।

इस सन्दर्भ में यह बात भी याद रखनी चाहिए कि हदीसों की पुस्तकों की भी कई श्रेणियाँ हैं। उदाहरण के तौर पर अहले सुन्नत

वल् जमाअत ने लगभग एकमत होकर क़ुर्आन करीम के बाद सहीह बुख़ारी का स्थान माना है या कुछ लोग मौता इमाम मालिक को ऐसा समझते हैं। अब हम इन दोनों पर दृष्टि डालते हैं तो इनकी बयान की हुई हदीसों में एक निशानी भी ऐसी नहीं मिलती जो हज़रत मिर्ज़ा साहिब में न पाई जाती हो बल्कि सारी निशानियाँ आप में उचित रूप से पाई जाती हैं। हाँ सहीह मुस्लिम से ऐसी रिवायतों का अस्तित्व शुरू होता है जो एक हद तक सन्देह में डालती हैं और फिर ज्यों-ज्यों हम हदीस की किताबों में प्रमाणिकता के स्थान से नीचे उतरते जाते हैं रिवायतों की मुश्किलें बढ़ती जाती हैं। अब यह एक बुद्धिमान के लिए बड़े चिन्तन मनन के साथ ध्यान देने का स्थान है कि जिन हदीसों में सन्देह ज्ञात होता है वे न तो क़ुर्आन शरीफ में पाई जाती हैं और न हदीस बुख़ारी में और न मौता इमाम मालिक में उनका कुछ पता चलता है और यदि कुछ पता चलता है तो केवल उन किताबों में चलता है जो इन किताबों से प्रमाणिकता के स्थान में निम्नतर समझी गई हैं। यह एक अति सूक्ष्म रहस्य है जो एक सत्याभिलाषी को बहुत लाभ पहुँचा सकता है।

दूसरा कारण यह है कि सारी निशानियाँ ख़ुद मुद्दई के अस्तित्व में पूरी होना ज़रूरी भी नहीं होतीं बल्कि कई उसके बाद उसके उत्तराधिकारियों और अनुयायियों में पूरी होती हैं क्योंकि उसके उत्तराधिकारी और अनुयायी उससे अलग नहीं होते। वस्तुत: निशानियाँ बयान करते हुए केवल सिलसला के संस्थापक का नाम ले लिया जाता है परन्तु व्यवहारिक रूप से कुछ बातें स्वयं उस में प्रकट होती हैं और कुछ उसके उत्तराधिकारियों और अनुयायियों में प्रकट होती हैं और वे सब उसी की निशानियाँ कहलाती हैं क्योंकि वह उस सिलसिले का संस्थापक होता है और शेष उसके अनुयायी। अर्थात वह जड़ होता है शेष शाखाएँ। जैसे कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने रोअ्या में देखा कि क़ैसर और किसरा के ख़ज़ानों की कुंजियाँ आप

सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के हाथ में दी गई हैं (देखो बुख़ारी) परन्तु आप का स्वर्गवास हो गया और आपके बाद वे कुंजियाँ आप के उत्तराधिकारियों के हाथ में आयीं। इसी प्रकार आपने देखा कि मक्का पर विजय मिली है और उसैद को मक्का का हाकिम बनाया गया है पर उसैद मक्का विजय से पहले ही देहान्त पा गया और मक्का विजय होने पर आँहरत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उसैद के बेटे अत्ताब को मक्का का हाकिम बनाया (देखो ज़रक़ानी जिल्द 3) इसी प्रकार इल्मिुर्रोअया की पुस्तकों का अध्ययन करो उनमें स्पष्टरूप से लिखा है कि स्वप्न जगत में कभी-कभी जिस आदमी के बारे में कोई नज़ारा देखा जाता है उससे उसका कोई बेटा या कोई निकट सम्बन्धी या अनुयायी तात्पर्य होता है। अतएव कुछ स्वप्नफल बयान करने वालों ने इसके कई उदाहरण भी हदीस से दिए हैं (देखो भूमिका किताब तातीरुल अनाम)। अत: इसमें कदापि कोई आपत्ति की बात नहीं कि कई कथित निशानियाँ जो हज़रत मिर्ज़ा साहिब में प्रत्यक्षत: पूरी नहीं हुईं वे अपनी प्रत्यक्ष रूप में कभी आपके उत्तराधिकारी या सन्तान या जमाअत के हाथ पर पूरी हों। मूर्ख दुश्मन इस पर हँसेगा पर हम किसी की हँसी के कारण उन सच्चाइयों को किस तरह छोड़ सकते हैं जो क़ुर्आन करीम और ससीह हदीस और इतिहास से साबित हैं।

तीसरा कारण यह है कि कभी-कभी कुछ निशानियाँ दो या दो से अधिक विभिन्न समयों और विभिन्न आदमियों के बारे में वर्णित होती हैं। परन्तु वे ग़लती से एक ही आदमी के बारे में समझ ली जाती हैं। जैसा कि हमने महदी के खण्ड में बयान किया है।

चौथा कारण यह है कि मसीह मौऊद की निशानियों में कई वे निशानियाँ भी दाखिल समझ ली गई हैं जो क़यामत के निकट होने के सम्बन्ध में बयान हुई हैं। हालाँकि जैसा कि हम निशानियों की बहस की भूमिका में लिख चुके हैं कि वे क़यामत के निकट होने की निशानियाँ हैं न कि मसीह मौऊद की।

पाँचवां कारण यह है कि कथित निशानियों पर उलमा ने जो हाशिए चढ़ाए और कल्पनाएँ कीं उन पर भी सच्ची ख़बर के तौर पर भरोसा कर लिया गया है पर स्पष्ट है कि उन पर ऐसा भरोसा करना किसी भी प्रकार ठीक नहीं।

इन सारे कारणों से स्पष्ट है कि निशानियों के बारे में कई प्रकार की ठोकरें लग सकती हैं और निशानियों का आँख बन्द करके अनुसरण करना हलाकत की राह है, हाँ उचित तौर पर देखा जाए तो सारी सही निशानियाँ हज़रत मिर्ज़ा साहिब में पूरी हो चुकी हैं और हम साबित कर चुके हैं कि एक साबित शुदा निशानी भी ऐसी नहीं जो अल्लाह के विधानानुसार प्रकट न हो चुकी हो।

निशानियों के सम्बन्ध में एक ठोस वर्णन

अब हम हज़रत मिर्ज़ा साहिब की एक तहरीर पर निशानियों की बहस को समाप्त करते हैं आप फ़रमाते हैं :-

''याद रहे कि मसीह मौऊद की विशेष निशानियों में से यह लिखा है कि :-

1. वह दो पीली चादरों के साथ उतरेगा।

2. वह दो फरिश्तों के कन्धों पर हाथ रखे हुए उतरेगा।

3. काफिर उसकी साँस से मरेंगे।

4. वह ऐसी हालत में दिखाई देगा कि मानो स्नान करके स्नानागार से निकला है और पानी की बूँदें उसके सिर से मोतियों के दानों की तरह टपकती दिखाई देंगी।

5. वह दज्जाल के सम्मुख काबा शरीफ का तवाफ करेगा।

6. वह सलीब को तोड़ेगा।

7. वह ख़िन्ज़ीर को क़त्ल करेगा।

8. वह विवाह करेगा और उसके यहाँ सन्तान होगी।

9. वह दज्जाल को क़त्ल करेगा।

10. मसीह मौऊद क़त्ल नहीं होगा बल्कि स्वाभाविक तौर पर देहान्त पाएगा और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की क़ब्र में दाख़िल किया जाएगा। यह दस मुख्य (निशानियाँ) हैं

अत: दो पीली चादरों के सम्बन्ध में हम बयान कर चुके हैं कि वे दो बीमारियाँ हैं जो निशानी के तौर पर मसीह मौऊद के शरीर के साथ प्रारम्भ से निर्धारित कर दी गई थीं ताकि इनके होते हुए भी उसका असाधारण स्वास्थ्य भी एक निशान हो।

इसके अतिरिक्त दो फ़रिश्तों से अभिप्राय उसके लिए ख़ुदा की ओर से दो अदृश्य सहारे हैं जिन पर उसके अकाट्य एवं निर्णायक तर्क आधारित है।

(1) ख़ुदा का दिया हुआ ज्ञान जो मानसिक और उदाहृत ज्ञान के साथ अकाट्य और निर्णायक तर्क, जो बिना परिश्रम और अध्ययन के उसको प्रदान किया जाएगा।

(2) ऐसे निशानों के साथ अकाट्य एवं निर्णायक तर्क जो बिना मानवीय हस्तक्षेप के ख़ुदा की ओर से अवतरित होंगे।

दो फ़रिश्तों के कन्धों पर हाथ रखकर उसका उतरना इस बात की ओर संकेत है कि उसकी तरक़्क़ी के लिए ख़ुदा की ओर से सरलतापूर्वक साधन उपलब्ध होंगे और उनके द्वारा काम चलेगा। मैं इससे पहले एक स्वप्न बयान कर चुका हूँ कि मैंने देखा कि एक तलवार मेरे हाथ में दी गई है जिसका हत्था तो मेरे हाथ में और उसकी नोंक आसमान में है और मैं दोनों तरफ़ उसको चलाता हूँ और हर एक तरफ़ चलाने से सैकड़ों मनुष्य क़त्ल होते जाते हैं। जिसका स्वप्नफल स्वप्न ही में एक सज्जन (जिससे स्व. हज़रत मौलवी अब्दुल्लाह साहिब गज़नवी अमृतसरी तात्पर्य हैं) ने बयान किया कि यह इत्मामे हुज्जत (अर्थात अकाट्य एवं निर्णायक तर्क - अनुवादक) की तलवार है और दाहिनी ओर से वह इत्मामे हुज्जत तात्पर्य है जो निशानों के द्वारा

होगी और बायीं ओर से वह इत्मामे हुज्जत तात्पर्य है जो बुद्धि और उदाहृत प्रमाणों के साथ होगी और यह दोनों प्रकार को इत्मामे हुज्जत बिना मानवीय परिश्रम और प्रत्यन के प्रकट होगी और काफिरों को अपनी सांस से मारने का तात्पर्य यह है कि मसीह मौऊद के नफ़्स से अर्थात उसकी बद्दुआ से क़ाफिर हलाक होंगे।

मसीह मौऊद का ऐसा दिखाई देना कि मानो वह स्नानागार से स्नान करके निकला है और मोतियों के दानों की तरह पानी की बूँदें उसके सर से टपकती हैं इस कश्फ का यह अर्थ है कि मसीह मौऊद अपनी बार-बार की क्षमायाचना और दर्द भरी दुआओं से ख़ुदा के साथ अपने सम्बन्धों को ताज़ा करता रहेगा। मानो वह हर समय स्नान करता है और उस पवित्र पानी की बूँदें मोतियों की तरह उसके सर से टपकती हैं। यह कदापि तात्पर्य नहीं कि मानवीय प्रकृति के विरुद्ध उसमें कोई चमत्कार (करामात) की बात है। क्या लोगों ने इससे पहले चमत्कार की बात का ईसा इब्नि मरियम में परिणाम नहीं देख लिया? जिसने करोड़ों लोगों को नर्क की आग का ईंधन बना दिया, तो क्या अब भी यह चाहत शेष है कि मानवीय प्रकृति के विरुद्ध ईसा आसमान से उतरे, फरिश्ते भी साथ हों और वह अपने मुँह की फूँक से लोगों को मार दे और मोतियों की तरह बूँदें उसके शरीर से टपकती हों। अत: मसीह मौऊद के सिर से मोतियों की तरह बूँदें टपकने का जो अर्थ मैंने लिखा है वही सत्य है। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने अपने हाथों में सोने के कड़े देखे थे तो क्या उससे कड़े ही तात्पर्य थे ? इसी तरह आँहरत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने गायें ज़िबह होते हुए देखीं तो क्या इसे गायें ही तात्पर्य थीं ? कदापि नहीं। बल्कि उनका और ही अर्थ था। अत: इसी प्रकार मसीह मौऊद को आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का इस रूप में देखना कि मानो वह स्नान करके आता है और पानी की बूँदें मोतियों की तरह उसके सर से टपकती हैं। जिसका यह अर्थ है कि वह ख़ुदा से बहुत क्षमायाचना

करने और ध्यान लगाने वाला होगा और ख़ुदा तआला से सदैव उसका सम्बन्ध ताज़ा बताज़ा रहेगा मानो वह हर समय स्नान करता है और पवित्र ध्यान की पवित्र बूँदें मोतियों के समान उसके सर से टपकती हैं।

एक दूसरी हदीस में भी ख़ुदा से ध्यान लगाने को स्नान करने से समानता दी गई है। जैसा कि नमाज़ की विशेषताओं में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया है कि यदि किसी के घर के दरवाज़े के सामने नहर हो और वह पाँच समय उस नहर में नहाए, तो क्या उसके शरीर पर मैल शेष रह सकता है ? सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम ने कहा कि नहीं, तब आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने कहा कि इसी प्रकार जो व्यक्ति पाँच समय नमाज़ पढ़ता है (जो क्षमायाचना, कल्याण और दर्दभरी दुआ और ख़ुदा की स्तुति और गुणगान की संक्षिप्त एवं व्यापक रहस्यपूर्ण आराधना है।) उसके दिल में भी गुनाहों का मैल नहीं रह सकता। मानो वह पाँच समय (अध्यात्म रूपी नहर में - अनुवादक) स्नान करता है। इस हदीस से स्पष्ट है कि मसीह मौऊद के स्नान का भी यही अर्थ है। अन्यथा भौतिक रूपी स्नान में कौन सी बड़ी विशेषता है। इस तरह तो हिन्दू भी प्रतिदिन प्रात: काल स्नान करते हैं और पानी की बूँदें भी उनसे टपकती हैं। खेद है कि सरसरी विचार के लोग हर एक आध्यात्मिक विषय को भौतिक बातों की ओर ही खींचकर ले जाते हैं और यहूदियों की तरह रहस्यों और वास्तविकताओं से अनभिज्ञ हैं।

यह विषय कि मसीह मौऊद दज्जाल के विरुद्ध काबा शरीफ का तवाफ करेगा अर्थात दज्जाल भी काबा शरीफ का तवाफ (परिक्रमा) करेगा और मसीह मौऊद भी। इसका अर्थ स्वयं स्पष्ट है कि इस तवाफ से ज़ाहिरी तवाफ़ तात्पर्य नहीं। अन्यथा यह मानना पड़ेगा कि दज्जाल काबा शरीफ में दाखिल हो जाएगा या मुसलमान हो जाएगा। यह दोनों बातें क़ुर्आन और हदीस के स्पष्ट विपरीत हैं। अत: प्रत्येक दशा में यह हदीस स्पष्टीकरण योग्य है और इसका वह स्पष्टीकरण

जो ख़ुदा ने मुझ पर स्पष्ट किया है वह यह है कि आख़िरी युग में एक गिरोह उठेगा जिसका नाम दज्जाल है वह इस्लाम का घोर शत्रु होगा और वह इस्लाम को दुनिया से मिटाने के लिए जिसका केन्द्र काबा शरीफ़ है, चोर की तरह उसके चारों ओर चक्कर लगाएगा ताकि इस्लाम की इमारत को जड़ से उखाड़ फेंके और उसके विरुद्ध मसीह मौऊद भी इस्लाम के केन्द्र का तवाफ करेगा जिसकी रूपक दशा काबा शरीफ है और उस तवाफ से मसीह मौऊद का उद्देश्य यह होगा कि उस चोर को पकड़े जिसका नाम दज्जाल है और उसके हाथों इस्लाम के केन्द्र को नुकसान पहुँचने से सुरक्षित रखे। यह बात स्पष्ट है कि रात के समय चोर भी घरों के चक्कर काटता है और चौकीदार भी। चोर का उद्देश्य चक्कर काटने से यह होता है कि सेंध लगावे और घर वालों को तबाह व बर्बाद करे और चौकीदार का चक्कर काटने से यह उद्देश्य होता है कि चोर को पकड़े और उसको घोर पीड़ादायक जेल में दाखिल करावे ताकि उसकी शरारत से लोग अमन में आ जावें। अत: इस हदीस में इसी मुक़ाबला की ओर संकेत है कि आख़िरी ज़माने में वह चोर जिसको दज्जाल के नाम से नामित किया गया है पूरा ज़ोर लगाएगा कि इस्लाम की इमारत को तबाह व बर्बाद कर दे और मसीह मौऊद भी इस्लाम की हमदर्दी में अपनी आवाज़ आसमान तक पहुँचाएगा और तमाम् फ़रिश्ते उसके साथ हो जाएँगे, ताकि उस आख़िरी लड़ाई में उसकी विजय हो। वह न थकेगा और न निराश होगा और न सुस्त होगा और पूरा ज़ोर लगाएगा ताकि उस चोर को पकड़े और जब उसकी दर्दभरी दुआएँ ख़ुदा तक पहुँच जाएँगी तब ख़ुदा उसके दिल को देखेगा कि कहाँ तक वह इस्लाम के लिए पिघल गया। तब वह काम जो मनुष्य नहीं कर सकते ख़ुदा करेगा और वह विजय जो मनुष्य के हाथों से नहीं हो सकती, वह फ़रिश्तों के हाथों से प्राप्त होगी। उस मसीह के आख़िरी दिनों में घोर विपत्तियाँ और भयानक भूकम्प आएँगे और सारे विश्व से अमन उठ जाएगा।

यह विपत्तियाँ केवल उस मसीह की दुआ से अवतिरत होंगी, तब उन निशानों के बाद उसकी विजय होगी। यह वही फ़रिश्ते हैं जो रूपक के तौर पर लिखा गया है कि मसीह मौऊद उनके कन्धों पर उतरेगा। आज कौन सोच सकता है कि यह दज्जाली फ़ित्ना, जिससे तात्पर्य आख़िरी युग के पापी पादरियों के षड़यन्त्र हैं, मानवीय कोशिशों से दूर हो सकता है, कदापि नहीं। बल्कि आसमान का ख़ुदा स्वयं इस फित्ना को दूर करेगा। वह बिजली की तरह कौंधेगा और तूफान की तरह आएगा और एक भयानक आँधी की तरह दुनिया को हिला देगा, क्योंकि उसके क्रोध का समय आ गया है वह निस्पृह है। क़ुदरत के पत्थर की आग मनुष्य की दर्दभरी दुआ की चोट की मुहताज है। आह! क्या मुश्किल काम है। आह! क्या मुश्किल काम है!! हमने एक त्याग करना है जब तक हम वह त्याग न करेंगे, सलीब का षड़यन्त्र नहीं टूटेगा। ऐसा त्याग जब तक किसी नबी ने नहीं किया उसकी विजय नही हुईं। इसी त्याग की ओर निम्नलिखित पवित्र आयत में संकेत है -

واستفتحوا وخاب كل جبّار عنيد

(सूरह इब्राहीम 14:16)

अर्थात नबियों ने अपने आपको त्याग और तपस्या की आग में डालकर विजय चाही, फिर क्या था हर एक अत्याचारी और दुष्ट तबाह हो गया, और इसी की ओर इस शेर में संकेत है :-

تا دلِ مردِ خدا نامد بدرد
ہیچ قومے را خدا رُسوا نکرد

अनुवाद :- जब तक लोगों की ओर से किसी मर्दे ख़ुदा (सदात्मा) के दिल को कष्ट नहीं पहुँचता, तब तक ख़ुदा किसी क़ौम को रुसवा नहीं करता। (अनुवादक)

और सलीब तोड़ने से यह समझना कि सलीब की लकड़ी या सोने चाँदी की सलीबें तोड़ दी जाएँगी बहुत बड़ी ग़लती है। इस प्रकार की सलीबें तो सदैव इस्लामी लड़ाइयों में टूटती रही हैं। बल्कि इससे

तात्पर्य यह है कि मसीह मौऊद सलीबी विचारधारा को तोड़ देगा और उसके बाद संसार में सलीबी विचारधारा पर विश्वास की ज्योति नहीं जगेगी ऐसे टूटेगी कि फिर क़यामत तक उसकी गाँठ नहीं जुड़ेगी। मानवीय भुजाएँ उसको नहीं तोड़ेंगी बल्कि वह ख़ुदा जो सारी शक्तियों का मालिक है। जिस तरह उसने इस फित्ने को पैदा किया था उसी तरह उसको मलियामेट करेगा। उसकी आँख हर एक को देखती है और हर एक सच्चा और झूठा उसकी नज़र के सामने है। वह दूसरे को यह प्रतिष्ठा नहीं देगा बल्कि उसके हाथ का बनाया हुआ मसीह यह प्रतिष्ठा पाएगा। जिसको ख़ुदा सम्मान दे उसे कोई अपमानित नहीं कर सकता। वह मसीह एक बड़े काम के लिए पैदा किया गया है। अत: वह काम उसके हाथ से सफल होगा, उसका तेज सलीबी विचारधारा के पतन का कारण होगा और सलीबी विचारधारा पर विश्वास की आयु उसके प्रकटन से समाप्त हो जाएगी और स्वयं लोगों के विचार सलीबी विचारधारा से विमुख होते चले जाएँगे जैसा कि आजकल यूरोप में हो रहा है। जैसा कि स्पष्ट है कि इन दिनों ईसाइयत का काम केवल तन्ख़्वाहदार पादरी चला रहे हैं और बुद्धिजीवी इस विचारधारा को छोड़ते जाते हैं। अत: यह एक हवा है जो सलीबी विचारधारा के विरुद्ध यूरोप में चल पड़ी है और हर दिन तेज़ से तेज़ होती चली जाती है। यही मसीह मौऊद के प्रादुर्भाव के निशान हैं। क्योंकि वही दो फ़रिश्ते जो मसीह मौऊद के साथ नाज़िल होने वाले थे सलीबी विचारधारा के विरुद्ध काम कर रहे हैं और दुनिया अन्धकार से प्रकाश की ओर आती जाती है और वह समय निकट है कि दज्जाली मायाजाल खुले तौर पर टूट जाए क्योंकि उसकी आयु पूरी हो गई है।

और यह भविष्यवाणी कि मसीह मौऊद खिन्ज़ीर (सूअर) को क़त्ल करेगा, यह एक गन्दे और अपशब्द बोलने वाले दुश्मन को पराजित करने की ओर संकेत है और इस बात की ओर इशारा है कि ऐसा दुश्मन मसीह मौऊद की दुआ से क़त्ल किया जाएगा।

यह भविष्यवाणी कि मसीह मौऊद के यहाँ सन्तान होगी यह इस बात की ओर संकेत है कि ख़ुदा उसकी नस्ल से एक ऐसे व्यक्ति को पैदा करेगा जो उसका उत्तराधिकारी होगा और इस्लाम का समर्थन करेगा, जैसा कि मेरी कई भविष्यवाणियों में यह ख़बर आ चुकी है।

और यह भविष्यवाणी कि वह दज्जाल को क़त्ल करेगा इसका यह अर्थ है कि उसके प्रादुर्भाव से दज्जाली फित्ने का पतन होना शुरू हो जाएगा और स्वयं कम होता जाएगा और बुद्धिजीवियों के दिल एक ख़ुदा की ओर पलटा खाएँगे। स्पष्ट हो कि दज्जाल के शब्द की दो व्याख्याएँ की गई हैं :-

1. दज्जाल उस गिरोह को कहते हैं, जो झूठ का समर्थक हो और धोखे और चालबाज़ी से काम चलाए।

2. दज्जाल उस शैतान का नाम है जो हर एक झूठ और फ़साद का जनक है। क़त्ल का यह अर्थ है कि उस शैतानी फ़ित्ना का ऐसा दमन होगा कि फिर क़यामत तक कभी उसका सिर नहीं उठेगा मानो इस आख़िरी लड़ाई में शैतान क़त्ल किया जाएगा।

और यह भविष्यवाणी कि मसीह मौऊद देहान्त पाने के बाद आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की क़ब्र में दाखिल होगा, जिसका यह अर्थ करना कि नऊज़ुबिल्लाह आँहरत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की क़ब्र खोदी जाएगी, यह केवल भौतिक विचारधारा वाले लोगों की भ्रान्तियाँ हैं जो दु:साहस और अशिष्टता से भरी हुई हैं। बल्कि इसका अर्थ यह है कि मसीह मौऊद प्यार की निकटता के स्थान में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से इतना निकट होगा कि मौत के बाद वह इस रुतबा को पाएगा कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के सबसे निकट होने का स्थान उसको मिलेगा और उसकी रूह आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की रूह से ऐसे निकट हो जाएगी कि मानो एक ही क़ब्र में हैं। सच्चा अर्थ यही है जिसका जी चाहे दूसरे अर्थ करता फिरे। इस बात को

आध्यात्मिक लोग जानते हैं कि मौत के बाद शारीरिक निकटता कुछ वास्तविकता नहीं रखती है बल्कि हर एक जो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से आध्यात्मिक प्रेम रखता है उसकी रूह आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की रूह से निकट की जाती है जैसा कि अल्लाह तआला फ़रमाता है :-

فَادْخُلِیْ فِیْ عِبٰدِیْ وَادْخُلِیْ جَنَّتِیْ۔

(सूरह अल-फज्र 89:30, 31)

अनुवाद :- कि आ मेरे भक्तों में शामिल हो जा और मेरे स्वर्ग में प्रविष्ट हो जा।

और यह भविष्यवाणी कि वह क़त्ल नहीं किया जाएगा यह इस बात की ओर संकेत है कि ख़ात्मुल ख़ुलफा का क़त्ल होना इस्लाम की तौहीन है। इसी कारण से आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम भी क़त्ल से बचाए गए।" (हक़ीक़तुल वह्यी पृष्ठ 307 से 313)

हज़रत मिर्ज़ा साहिब का नुबुव्वत का दावा

ख़त्मे नुबुव्वत के बारे में हमारा अक़ीदा

चूँकि हज़रत मिर्ज़ा साहिब संस्थापक जमाअत अहमदिया के दावों की बहस में ख़त्मे नुबुव्वत का विषय भी शामिल है क्योंकि हज़रत मिर्ज़ा साहिब ने मसीह और महदी होने के साथ-साथ प्रतिरूपी तौर पर नुबुव्वत का भी दावा किया था जो आपने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के अनुसरण और आपके प्रतिरूप होने की दृष्टि से पाई थी। इसलिए इस पुस्तक में उसके सम्बन्ध में भी संक्षिप्त रूप से लिखा जाना आवश्यक है ताकि सत्याभिलाषियों के लिए सन्मार्ग प्राप्ति का कारण हो। इसलिए जानना चाहिए कि हमारा यह ईमान है कि जैसा क़ुर्आन शरीफ में बयान हुआ है आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम नि:सन्देह ख़ातमुन्नबीयीन हैं और ख़त्मे नुबुव्वत पर हम सच्चे दिल से ईमान लाते हैं और इसके इन्कार को कुफ्र समझते हैं। हाँ यह अवश्य है कि हम ख़ातमुन्नबीयीन का वह अर्थ नहीं करते जो आजकल के अक्सर ग़ैर अहमदी मौलवी करते हैं अर्थात हमारे निकट ख़ातमुन्नबीयीन का यह अर्थ नहीं है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के बाद हर प्रकार की नुबुव्वत का दरवाज़ा पूर्णत: बन्द हो चुका है और अब कोई व्यक्ति किसी तरह भी नबी नहीं हो सकता। बल्कि हमारे निकट ख़ातमुन्नबीयीन का यह अर्थ है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम सब नबियों से महान और नबियों की मुहर हैं अर्थात आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के अन्दर नुबुव्वत की समस्त विशेषताएँ पूर्णरूप से सर्वांगपूर्ण स्थिति में पायी जाती हैं। इसलिए भविष्य में कोई भी व्यक्ति नुबुव्वत के इनाम में

से तब तक कुछ भी हिस्सा नहीं पा सकता जब तक कि वह आपके लगाए हुए बाग़ का फल न खाए और आप के निरन्तर बहने वाले उपकार रूपी स्रोत से न पिए और आपकी लाई हुई शरीअत का पाबन्द न हो अर्थात अब रूहानी विशेषताओं की प्राप्ति के लिए आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की सत्यापित मुहर का होना आवश्यक हो गया है अब आपके बाद ऐसा कोई नबी नहीं आ सकता जो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की लाई हुई शरीअत को निरस्त करे या बिना आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के अनुसरण के स्वतन्त्र रूप से नुबुव्वत का इनाम पाए। हाँ ज़िल्ली (प्रतिरूपी) नुबुव्वत का द्वार बन्द नहीं है और हमारा ईमान है कि हज़रत मिर्ज़ा साहिब भी ज़िल्ली (प्रतिरूपी) नबी थे और ज़िल्ली नुबुव्वत का हमारे निकट यह अर्थ है कि जब कोई सिद्धपुरुष आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के अनुसरण और प्रेम में अपने दिल को इतना स्वच्छ कर ले कि एक उच्चकोटि की पालिश किए हुए शीशे की भाँति स्वच्छ हो जाए और कोई मैल उसमें शेष न रहे और वह प्राकृतिक योग्यता भी पूरी रखता हो, यहाँ तक कि अपने आप को आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के अनुसरण और आपके प्रेम में डूब कर अपने हृदय रूपी दर्पण को पूर्ण तौर पर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पवित्र अस्तित्व के सामने ले आए तो इस दशा में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के गुण और खूबियाँ उसके हृदयरूपी दर्पण पर उसी तरह उतर आएँगे जिस तरह कि एक स्वच्छ दर्पण में देखने वाले व्यक्ति का चेहरा और निशान उतर आते हैं। मानो वह इस दशा में आप का प्रतिरूप अर्थात प्रतिबिम्ब हो जाएगा और यदि ऐसा व्यक्ति नुबुव्वत के गुणों की योग्यता रखता हो और उसकी स्वाभाविक शक्तियाँ इस स्तर पर गठित हों कि नुबुव्वत की ख़ूबियों का प्रतिबिम्ब ग्रहण कर सके तो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि

व सल्लम की नुबुव्वत भी प्रतिरूप के तौर पर उसमें प्रकट हो जाएगी और वह आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का पूर्णत: अनुसरण करने से प्रतिरूप के तौर पर नुबुव्वत का दर्जा पा लेगा। ऐसी नुबुव्वत हमारे निकट ख़त्मे नुबुव्वत के विरुद्ध नहीं और न ऐसी नबी के प्रकट होने से आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के आख़िरी नबी होने में किसी प्रकार की कोई कमी आती है। बल्कि ऐसे नुबुव्वत का जारी होना आपकी रूहानी विशेषता का एक भारी प्रमाण है। अत: नि:सन्देह आप ख़ातमुन्नबीयीन हैं जैसा कि क़ुर्आन शरीफ बयान करता है और नि:सन्देह आप आख़िरी नबी हैं जैसा कि हदीस बयान करती है। परन्तु उन अर्थों की दृष्टि से नहीं जो कि आजकल के अधिकतर ग़ैर अहमदी मौलवी बयान करते हैं बल्कि उन अर्थों में जो हमने अभी बयान किए हैं।

लेख का सारांश यह है कि हम क़ुर्आन करीम की शिक्षा के अनुसार आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को सच्चे दिल से ख़ातमुन्नबीयीन मानते हैं जिसका अर्थ यह है कि आप नबियों के सरताज (सिरमौर) और नबियों की मुहर हैं अर्थात नुबुव्वत की समस्त विशेषताएँ आप के अन्दर व्यापक रूप से पायी जाती हैं। अब कोई ऐसा नबी नहीं आ सकता जो आपके अनुसरण के बन्धन से बाहर रहकर नुबुव्वत का इनाम पाए और आप की लाई हुई शरीअत में किसी प्रकार का रद्दोबदल करे बल्कि जो भी आएगा वह आपके अधीन होकर आएगा और आप का सेवक और आप से आध्यात्मिक रूप से शिक्षा एवं दीक्षा पाया हुआ होगा।

इसी प्रकार हम हदीस के बयान के अनुसार आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को आख़िरी नबी मानते हैं जिसका यह अर्थ है कि आपके बाद कोई ऐसा नबी नहीं आ सकता जो आपके सिलसिला-ए-नुबुव्वत को समाप्त करके एक नया दौर शुरू कर दे। क्योंकि हमारा ईमान है कि आपकी नुबुव्वत का ज़माना

क़यामत तक फैला हुआ है और आपके बाद जो भी नबी आएगा वह चूँकि आपका शिष्य और आप से उपकार पाया हुआ और आपका सेवक होकर आएगा। इसलिए उसकी नुबुव्वत का ज़माना अवश्य आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की नुबुव्वत के ज़माना के अन्दर होगा न कि उससे बाहर। इसलिए ऐसे व्यक्ति के बारे में यह नहीं कहा जा सकता कि उसकी नुबुव्वत आपकी नुबुव्वत के बाद है। क्योंकि बाद का आशय यह है कि आप की नुबुव्वत का दौर समाप्त हो जाए और उसके बाद कोई दूसरी नुबुव्वत आए। पर जो दशा हमने बयान की है उसमें आप की नुबुव्वत समाप्त नहीं होती बल्कि क़यामत तक उसी का दौर जारी रहता है। अत: इसमें क्या सन्देह है कि इन अर्थों की दृष्टि से आप वास्तव में आख़िरी नबी हैं और आपके बाद कोई दूसरा नबी नहीं आ सकता। इसलिए हम हार्दिक विश्वास से आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को ख़ातमुन्नबीयीन और ख़ुदा का आख़िरी नबी मानने के बावजूद हज़रत मिर्ज़ा साहिब को स्पष्ट और हार्दिक तौर पर बुद्धि और विवेक से ख़ुदा का नबी और रसूल मानते हैं। क्योंकि हमारा ईमान है कि हज़रत मिर्ज़ा साहिब की नुबुव्वत आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की नुबुव्वत की ज़िल्ल (प्रतिरूप) और उसके अधीन और उसकी शाख है न कि कोई आज़ाद (स्वतन्त्र) नुबुव्वत और ऐसी नुबुव्वत आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की तौहीन का कारण नहीं, बल्कि आपके आध्यात्मिक लाभ पहुँचाने की विशेषता को साबित करती है और दुनिया पर यह स्पष्ट करती है कि आप केवल नबी ही नहीं बल्कि नबी बनाने वाले हैं और आप ऐसे महान हैं कि आपके सेवक भी आपके उपकार से नुबुव्वत का दर्जा पा सकते हैं।

यह है हमारा अक़ीदा जो मैंने स्पष्टरूप से बयान कर दिया है ताकि इस बारे में किसी प्रकार की ग़लतफहमी की संभावना न रहे।

अब मैं अपने इस अक़ीदे के समर्थन में संक्षिप्त रूप से कुछ तर्क भी प्रस्तुत करना चाहता हूँ। परन्तु इससे पूर्व उन तर्कों का रद्द आवश्यक है जो इस विषय में हमारे विरोधियों की ओर से प्रस्तुत किए जाते हैं और उनसे यह नतीजा निकाला जाता है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के बाद नुबुव्वत का द्वार पूर्णत: बन्द है। इसके बाद इन्शाअल्लाह वे प्रमाण प्रस्तुत किए जाएँगे जो हमारे अक़ीदे के समर्थन में हैं।

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के बाद हर प्रकार की नुबुव्वत के द्वार को पूर्णत: बन्द समझने वाले लोग अपने गुमान में चार प्रकार के तर्क रखते हैं :-

1. क़ुर्आन करीम की आयत ख़ातमुन्नबीयीन से यह तर्क प्रस्तुत किया जाता है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के बाद नुबुव्वत का द्वार बिल्कुल बन्द हो चुका है और अब किसी प्रकार का कोई नबी नहीं आ सकता।

2. कुछ हदीसों में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने अपने बारे में आख़िरुल अम्बिया अर्थात मैं आख़िरी नबी हूँ। या ला नबीय बअदी अर्थात मेरे बाद कोई नबी नहीं इत्यादि शब्द प्रयोग किए हैं उनसे यह साबित करने की कोशिश की जाती है कि आपके बाद किसी प्रकार का नबी नहीं आ सकता।

3. कहा जाता है कि उम्मते मुहम्मदिया ने इस बात पर सर्वसहमति की है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के बाद कोई नबी नहीं आ सकता।

4. वर्णन किया जाता है कि हर नबी चूँकि अपने साथ नई शरीअत (धर्म विधान) और नई किताब लाता है और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के बारे में यह बात दोनों पक्षों में सर्वमान्य है कि आप वह शरीअत लाए हैं जो नस्ल इन्सानी के लिए आख़िरी शरीअत है और इसके बाद क़यामत तक कोई दूसरी शरीअत नहीं आएगी।

इसलिए आपके बाद कोई नबी भी नहीं आ सकता। यह वे चार प्रकार के तर्क हैं जो हमारे विरोधी अपने विचारों के समर्थन में प्रस्तुत किया करते हैं।

आयत ख़ातमुन्नबिय्यीन की व्याख्या

इन तर्कों के जवाब में सबसे पहले हम क़ुर्आन की आयत ख़ातमुन्नबीयीन को लेते हैं जो इस बहस में मानो सब की जड़ है। क़ुर्आन शरीफ में अल्लाह तआला फ़रमाता है :-

مَّا كَانَ مُحَمَّدٌ أَبَا أَحَدٍ مِّن رِّجَالِكُمْ وَلَٰكِن رَّسُولَ اللَّهِ وَخَاتَمَ النَّبِيِّينَ۔

(सूरह अल-अहज़ाब 33:41)

अर्थात ''मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम तुम्हारे (जैसे) मर्दों में से किसी के बाप नहीं हैं, लेकिन वह अल्लाह के रसूल हैं और ख़ातमुन्नबीयीन हैं।''

इस आयत के बारे में हमारे विरोधी यह कहते हैं कि इस आयत में जो ख़ातमुन्नबीयीन का शब्द प्रयोग हुआ है उससे तात्पर्य यह है कि आपके आने से नुबुव्वत का सिलसिला हर प्रकार से समाप्त हो गया है और आप हर तरह से आख़िरी नबी हैं पर हमारे निकट यह अर्थ सही नहीं हैं। वस्तुत: इस आयत के बारे में सबसे पहले हमें यह जानना चाहिए कि ख़ातम का शब्द जो व्यंजन त पर ज़बर की मात्रा के साथ है एक साधारण अरबी शब्द है जिसका अर्थ मुहर है और अल-नबीयीन का शब्द नबी शब्द का बहुवचन है अतएव अरबी भाषा के नियम के अनुसार ख़ातमुन्नबीयीन का अर्थ यह हुआ कि ''नबियों की मुहर'' और इस दशा में उपरोक्त आयत का यह अर्थ होगा कि ''मुहम्मद रसूलुल्लाह का कोई बेटा नहीं लेकिन वह अल्लाह के रसूल और नबियों की मुहर हैं।'' अब हमें देखना यह है कि इस

जगह नबियों की मुहर से क्या तात्पर्य है ? हमारे विरोधी कहते हैं कि ख़ातमुन्नबीयीन का अर्थ तो नि:सन्देह नबियों की मुहर है। लेकिन इससे अभिप्राय यह है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम आख़िरी नबी हैं। क्योंकि उनके निकट मुहर का यही काम होता है कि वह किसी चीज़ को बन्द करने के लिए प्रयोग होती है क्योंकि जब किसी पत्र इत्यादि को बन्द करना हो तो उस पर मुहर लगाते हैं।

इसके उत्तर में अच्छी तरह याद रखना चाहिए कि मुहर का असल काम बन्द करना नहीं होता बल्कि सत्यापित करना होता है अर्थात जब किसी तहरीर इत्यादि को प्रमाणित या सत्यापित करना हो तो उस पर मुहर लगाते हैं। इसीलिए कभी-कभी मुहर तहरीर के ऊपर अर्थात शुरू में लगाई जाती है और कभी नीचे भी लगा दी जाती है। क्योंकि उसका काम एक तहरीर को सत्यापित करना या उसे प्रमाणित बनाना होता है। बल्कि उर्दू भाषा में तो यह एक आम मुहावरा बन गया है कि अमुक व्यक्ति ने अमुक तहरीर पर मुहर लगा दी है। जिसका यह अर्थ होता है कि उसने उस पर अपनी मुहर लगाकर उसका सत्यापन कर दिया है। इसलिए मुहर लगाते हुए ऊपर नीचे या प्रारम्भ या अन्त की ओर नहीं देखा जाता बल्कि कभी ऊपर लगा देते हैं कभी नीचे लगा देते हैं। क्योंकि ऊपर नीचे का प्रश्न मुहर के असल उद्देश्य की दृष्टि से एक व्यर्थ प्रश्न है। असल कारण यह बताना उद्देश्य होता है कि यह चीज़ जाली नहीं है। बल्कि अमुक व्यक्ति या अमुक दफ्तर या अमुक विभाग या अमुक सरकार की सत्यापित है। अत: हदीस में आता है कि जब आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने सुलह हुदैबिया के बाद दूर देशों के बादशाहों और मुखियाओं के नाम तब्लीगी पत्र भेजने का इरादा किया तो आप से यह कहा गया कि हे अल्लाह के रसूल! जब तक पत्र के ऊपर पत्र लिखने वाले की मुहर न लगी हो यह लोग पत्र की ओर ध्यान नहीं देते। तो इस पर आप ने तुरन्त एक मुहर बनवायी जो बाद में हमेशा इस्लामी चिट्ठियों को सत्यापित करने

का काम देती रही। (देखो बुख़ारी और मुस्लिम इत्यादि)

अत: यह एक स्पष्ट सच्चाई है कि मुहर का काम सत्यापित करना होता है तो इस दशा में आयत ख़ातमुन्नबीयीन का यह अर्थ हुआ कि मुहम्मद रसूलुल्लाह का जिस्मानी रूप से तो कोई पुत्र नहीं है लेकिन आप अल्लाह के रसूल हैं और चूँकि रसूल अपनी उम्मत के रूहानी बाप होते हैं इसलिए इस प्रकार से आप कदापि नि:सन्तान नहीं बल्कि बहुत सी रूहानी सन्तान के बाप हैं और फिर आप साधारण रसूल भी नहीं बल्कि ख़ातमुन्नबीयीन भी हैं। अर्थात आप केवल साधारण मोमिनों के ही बाप नहीं बल्कि रूहानी तौर पर नबियों और रसूलों के भी बाप हैं और आपको वह महान स्थान प्राप्त है कि अब कोई नबी या रसूल तब तक नहीं आ सकता जब तक कि आपकी सत्यापित मुहर उसके साथ न हो। मानो आप साधारण मोमिनों के ही रूहानी बाप नहीं बल्कि नबियों और रसूलों के भी रूहानी बाप हैं। इस व्याख्या के अनुसार आयत का यह अर्थ हुआ कि आप के जिस्मानी पुत्र नहीं हैं तो इससे आपकी शान में फ़र्क़ नहीं आता और आप नऊज़बिल्लाह नि:सन्तान नहीं ठहरते। बल्कि सच यह है कि आप बहुत बड़ा मर्तबा रखने वाले असंख्य लोगों के रूहानी बाप हैं।

अब देखो इस आयत से आपके बाद नुबुव्वत के दरवाज़े बन्द होने का अर्थ कहाँ से निकला ? और आश्चर्य यह है कि यदि ख़ातमुन्नबीयीन का अर्थ आख़िरी नबी किया जाय तो आयत का कुछ अर्थ ही नहीं निकलता और नऊज़बिल्लाह यह आयत एक निरर्थक बात का रंग धारण कर लेती है। क्योंकि इस दशा में आयत का अनुवाद यह बनता है कि ''मुहम्मद रसूलुल्लाह का कोई बेटा तो नि:सन्देह नहीं है लेकिन आप आख़िरी नबी हैं।'' जो एक निरर्थक बात है। स्पष्ट है कि अरबी शब्द लाकिन (لٰكِنْ) जो इस आयत में प्रयुक्त हुआ है वह अरबी भाषा में उस अवसर पर प्रयोग होता है कि जब पहले वाक्य में जो बात वर्णन हुई हो उसके बाद उसके उलट का अर्थ बयान करना

उद्देश्य हो। उदाहरण के रूप में जैसे यह कहें कि ज़ैद बहादुर तो है लेकिन शरीर का कमज़ोर है या यह कहें कि ख़ालिद अनपढ़ तो है लेकिन बुद्धिमान है। अर्थात यदि पहले वाक्य में कोई विशेषता बयान की गई हो तो अरबी शब्द लाकिन (لٰكِنْ) के बाद उसी के समानान्तर कोई दोष बयान करते हैं या यदि पहले वाक्य में किसी दोष का वर्णन हो तो बाद के वाक्य में उसी के समानान्तर कोई विशेषता बयान करते हैं या फिर अरबी शब्द लाकिन (لٰكِنْ) का उस अवसर पर प्रयोग करते हैं कि जब पहली बात से कोई सन्देह पैदा होता हो और अगले वाक्य में उसका निराकरण करना उद्देश्य हो। जैसे कि कहते हैं कि सब लोग उठकर चले गए लेकिन उमर नहीं गया। अब इस जगह सब के उठकर चले जाने के शब्दों से यह सन्देह पैदा होता है कि शायद कोई भी व्यक्ति बैठा न रहा हो, इसलिए लेकिन शब्द के प्रयोग के बाद उस सन्देह का निवारण कर दिया गया। इस आशय को अरबी में इस्तिदराक कहते हैं। अत: अरबी शब्दकोष की पुस्तकों में स्पष्ट रूप से लिखा है कि अरबी शब्द लाकिन (لٰكِنْ) का शब्द सन्देह के निवारण के लिए आता है।

इस व्याख्या के बाद जब विचाराधीन आयत पर दृष्टि डाली जाए तो यह बात पूर्णतः स्पष्ट हो जाती है कि विचाराधीन आयत में भी लाकिन (لٰكِنْ) का शब्द प्रयोग हुआ है। अर्थात आयत इस तरह है कि ''मुहम्मद रसूलुल्लाह की कोई नर सन्तान नहीं है लेकिन आप अल्लाह के रसूल और ख़ातमुन्नबीयीन हैं।'' अब इस जगह आवश्यक है कि ''लेकिन'' के बाद वाले वाक्य का कोई ऐसा अर्थ किया जाय जो ''लेकिन'' से पहले वाले वाक्य के आशय पर हो। या यह कि पहले वाक्य से जो सोच और सन्देह पैदा होती हो उसका वह किसी दूसरे ढंग से निराकरण करते हों। अब इस व्याख्या के अनुसार ग़ौर करके देख लो कि यदि हमारे विरोधियों वाला अर्थ सही समझा जाए तो आयत ख़ातमुन्नबीयीन का कोई तर्क संगत अर्थ बन

ही नहीं सकता। क्योंकि आयत में अरबी शब्द लाकिन (لٰكِنْ) से पहले वाक्य का यह अर्थ है कि आपकी कोई नर सन्तान नहीं, अब यदि ख़ातमुन्नबीयीन का यह अर्थ हो कि आपके आने से नबियों का आना बन्द हो गया है और अब कोई नबी नहीं आ सकता तो दूसरे शब्दों में आयत का यह अनुवाद होगा कि ''मुहम्मद रसूलुल्लाह की कोई जिस्मानी नर सन्तान नहीं है लेकिन आपके आने से नुबुव्वत का सिलसिला भी बन्द हो गया है।'' जो एक पूर्णत: अनर्गल और अर्थहीन बात है। हाँ जो अर्थ हम करते हैं वह नि:सन्देह अरबी शब्द लाकिन (لٰكِنْ) के आशय के पूर्णत: अनुसार हैं। क्योंकि हम यह अर्थ करते हैं कि ''मुहम्मद रसूलुल्लाह की जिस्मानी सन्तान तो नहीं है लेकिन आपकी रूहानी सन्तान बहुत है यहाँ तक कि आपकी रूहानी सन्तान में नबी और रसूल भी हो सकते हैं।'' मानो हमारे विरोधियों के अर्थों की यह मिसाल है कि अमुक व्यक्ति के पास यद्यपि सांसारिक धन नहीं है लेकिन आध्यात्मिक धन भी थोड़ा ही है। और हमारे अर्थों की यह मिसाल है कि अमुक व्यक्ति के पास यद्यपि सांसारिक धन नहीं है लेकिन आध्यात्मिक धन बहुत है यहाँ तक कि आध्यात्मिक धन में वह बादशाह है बल्कि बादशाहों का बादशाह है। अब पाठकगण स्वयं सोच लें कि इन दोनों अर्थों में से कौन सा अर्थ ठीक और सही है।

लेख का सारांश यह है कि इस आयत का अगला पिछला भाग स्पष्ट रूप से बता रहा है कि आयत का वही अर्थ सही है जो हम करते हैं और हमारे विरोधियों का किया हुआ अर्थ पूर्णत: अनर्गल और हास्यास्पद है। अत: सिद्ध हुआ कि आयत ख़ातमुन्नबीयीन की व्याख्या केवल यही नहीं कि वह नुबुव्वत के दरवाज़ा को बन्द नहीं करती बल्कि वह ज़िल्ली और बुरूज़ी नुबुव्वत के दरवाज़ा को खोलती भी है। और यही आशय है।

हदीस لَانَبِیَّ بَعْدِیْ (ला नबीय बअदी) की व्याख्या

दूसरे प्रकार के तर्क हमारे विरोधियों के पास वे हैं जो हदीस पर आधारित हैं। इस बारे में साधारणत: वे हदीसें प्रस्तुत की जाती हैं जिनमें आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया है कि لَانَبِیَّ بَعْدِیْ (ला नबीय बादी) या اَنَا اٰخِرُ الْاَنْبِیَآء (अना आख़िरुल अम्बिया) इत्यादि। अर्थात ''मेरे बाद कोई नबी नहीं'' या यह कि ''मैं आख़िरी नबी हूँ'' और इन शब्दों से यह परिणाम निकाला जाता है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के बाद नुबुव्वत का द्वार पूर्णत: बन्द है। अत: इन दोनों वाक्यों का अर्थ हम ऊपर बयान कर चुके हैं और बता चुके हैं कि इन वाक्यों से यह अभिप्राय नहीं कि आप के बाद किसी प्रकार का भी नबी नहीं आ सकता बल्कि यह अभिप्राय है कि आपके बाद कोई ऐसा नबी नहीं आ सकता जो आपके दौरे नुबुव्वत को समाप्त करने वाला या आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के अनुसरण से अलग होकर नुबुव्वत का इनाम पाने वाला हो।

एक और बात भी याद रखने योग्य है और वह यह है कि कभी-कभी एक साधाराण बात बयान की जाती है लेकिन वस्तुत: वह विशेष होती है अर्थात एक शब्द सामान्यत: स्वतन्त्र रूप में प्रयोग किया जाता है परन्तु वस्तुत: वह सशर्त और सीमित होता है और केवल लेख के अगले पिछले भागों को देखने से ही इस बात का पता चलता है कि इस जगह शब्द स्वतन्त्र रूप से प्रयुक्त हुआ है या सशर्त एवं सीमित। उदाहरण के तौर पर हदीस में लिखा है कि :-

اذاھلك كسرىٰ فلا كسرىٰ بعدہ واذاھلك قیصر فلا قیصر بعدہٗ۔ (بخاری کتاب الایمان)

अर्थात आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम फ़रमाते हैं कि:-

''जब यह मौजूदा किसरा अर्थात ईरान का सम्राट मर जाएगा तो

इसके बाद कोई दूसरा किसरा न होगा, और जब यह मौजूदा क़ैसर अर्थात रोम का सम्राट मर जाएगा तो इसके बाद कोई दूसरा क़ैसर न होगा।''

अब यहाँ यदि क़ैसर और किसरा के शब्द साधारणतय: स्वतन्त्ररूप से समझे जावें और उनमें किसी प्रकार का अपवाद न समझा जाए तो नऊज़बिल्लाह आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की यह भविष्यवाणी ग़लत ठहरती है। क्योंकि जिस क़ैसर के समय में आप ने यह फ़रमाया था कि इसके बाद कोई क़ैसर न होगा। उसके बाद कई क़ैसर सिंहासन पर बैठे और सैकड़ों वर्ष तक यह सिलसिला जारी रहा। अत: न चाहते हुए भी इस जगह क़ैसर और किसरा के शब्दों को सशर्त और सीमित मानना पड़ेगा। अर्थात यह अर्थ करने पड़ेंगे कि मौजूदा कैसर व किसरा के बाद इस रुत्बे के क़ैसर और किसरा नहीं होंगे। परन्तु देखने में ये शब्द बिल्कुल साधारण और स्वतन्त्र रूप में प्रयोग हुए हैं। ऐसी मिसालें तमाम् भाषाओं में बड़ी अधिकता से मिलती हैं कि एक आम बात कही जाती है और स्पष्टत: उसमें कोई शर्त या अपवाद नहीं पाया जाता, पर वह वस्तुत: सशर्त होती है और कहने वाले ने किसी विशेष कारण या विशेष पहलू को दृष्टिगत रखकर कही होती है। अतएव यहाँ भी आवश्यक नहीं कि لانبی بعدی और انا آخر الانبیاء इत्यादि के शब्द स्वतन्त्र और साधारण समझे जाएँ। बल्कि सच यह है जैसा कि दूसरे तर्कों से स्पष्ट होता है कि यह शब्द सशर्त और सीमित हैं और इनसे तात्पर्य यह है कि मेरे बाद कोई मेरी तरह का साहिबे शरीअत नबी नहीं होगा और यह कि साहिबे शरीअत नबियों में से मैं आख़िरी नबी हूँ और मेरी शरीअत आख़िरी शरीअत है। अत: एक दूसरी हदीस हमारे इन अर्थों का समर्थन करती है। हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं :-

قولوا انّہٗ خاتم الانبیآء ولا تقولوا لانبی بعدہٗ۔

(درمنثور جلد ۵ و تکملہ مجمع البحار صفحہ ۸۵)

अर्थात ''हे मुसलमानो! तुम आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के बारे में यह तो अवश्य कहा करो कि आप ख़ातमुन्नबीयीन हैं पर यह न कहा करो कि आपके बाद कोई नबी नहीं।''

इस हदीस से यह बात सूर्य समान सिद्ध हो जाती है कि ''ला नबीय बअदी'' का यह अर्थ नहीं है कि आप के बाद पूर्णत: किसी प्रकार का नबी नहीं आ सकता बल्कि इससे केवल विशेष प्रकार के नबी का आना तात्पर्य है। अर्थात यह कि आप के बाद कोई शरीअत वाला नबी नहीं आएगा। यह हदीस बहुत ध्यान देने योग्य है क्योंकि इससे ''ला नबीय बअदी'' वाली हदीस की पूरी वास्तविकता खुलकर स्पष्ट हो जाती है। स्पष्ट है कि वाक्य ''ला नबीय बअदी अर्थात मेरे बाद कोई नबी नहीं'' के संभावित दो ही अर्थ हो सकते हैं। या तो उसका यह अर्थ है कि आपके बाद पूर्णत: किसी प्रकार का भी नबी नहीं आ सकता या उसका यह अर्थ है कि आपके बाद किसी विशेष प्रकार का भी नबी नहीं आ सकता, अर्थात साहिबे शरीअत नबी नहीं आ सकता लेकिन चूँकि शब्द ला नबीय बअदी का परस्पर पहला अर्थ जो तुरन्त दिमाग़ में आता है यह है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के बाद हर प्रकार की नुबुव्वत का द्वार बन्द हो गया है और अब आपके बाद किसी प्रकार का नबी भी नहीं हो सकता, पर दूसरा अर्थ गहन चिन्तन मनन और प्रसंग के अगले पिछले विषयों का अध्ययन करने से समझ में आता। इसलिए हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने मुसलमानों को एक ग़लत अक़ीदा से बचाने के लिए यह फ़रमा दिया कि तुम आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को ख़ातमुन्नबीयीन तो अवश्य कहा करो पर لا نبی بعدہٗ (कि उनके बाद कोई नबी नहीं) न कहा करो। मानो दूसरे शब्दों में यह कहा कि हदीस ''ला नबीय बादी'' का वह अर्थ समझा करो जो आयत ख़ातमुन्नबीयीन के अनुसार हो और वह अर्थ यही है कि आप के बाद कोई साहिबे शरीअत नबी नहीं आ सकता, बल्कि जो भी नबी होगा

वह आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का परम अनुयायी सेवक एवं प्रतिरूपी और उम्मती नबी होगा।

अत: हम ऊपर वर्णन कर चुके हैं कि हम इस बात को प्रारम्भ से ही स्वीकार करते हैं कि नि:सन्देह आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम आख़िरी नबी हैं और आपके बाद कोई नबी नहीं। क्योंकि हमारा ईमान है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की नुबुव्वत का ज़माना क़यामत तक फैला हुआ है अतएव यदि कोई ऐसा नबी पैदा हो जो अपनी नुबुव्वत को आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की नुबुव्वत की प्रतिच्छाया ठहरावे और अपने आप को आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के शिष्यों और सेवकों में शामिल करे तो नि:सन्देह उसकी नुबुव्वत आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की नुबुव्वत से बाहर नहीं समझी जा सकती और न उसकी नुबुव्वत सही अर्थों में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की नुबुव्वत के बाद कहला सकती है। क्योंकि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की नुबुव्वत का ज़माना उस नुबुव्वत के आने से समाप्त नहीं होता बल्कि उसके आने के बाद भी आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की नुबुव्वत उसी तरह जारी रहती है। अत: ऐसे नबी के आने के बावजूद भी आप (स.अ.व) नि:सन्देह सच्चे और आख़िरी नबी हैं।

हदीस لَوْ كَانَ بَعْدِیْ نَبِیًّا لَکَانَ عُمَرُ (लौ काना बअदी नबीयन् लकाना उमर) का स्पष्टीकरण

एक दूसरी यह हदीस प्रस्तुत की जाती है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि لَوْ كَانَ بَعْدِیْ نَبِیًّا لَکَانَ عُمَرُ ۔(مشکوٰۃ) अर्थात ''यदि मेरे बाद कोई नबी हो सकता तो उमर अवश्य नबी होता।'' इस हदीस से यह आशय निकाला जाता है कि आप के बाद

अब किसी प्रकार का कोई नबी नहीं हो सकता क्योंकि यदि नबी हो सकता तो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के कथनानुसार हज़रत उमर अवश्य नबी हो जाते। पर यह एक धोखा है जो इस्लामी इतिहास से अनभिज्ञता के कारण पैदा हुआ है। जो व्यक्ति हज़रत उमर की जीवनी को पढ़ेगा वह तुरन्त समझ लेगा कि इस हदीस से क्या तात्पर्य है ? असल बात यह है कि हज़रत उमर रज़ि. क़ानून के बहुत बड़े ज्ञाता थे और क़ानून बनाने और उसकी ऊँच नीच को सोचने और उसकी अच्छाई बुराई को परखने की उनमें विशेष सूझ-बूझ थी और यह एक ऐसी विशेषता है जो केवल खास-खास लोगों में होती है। कई लोग ऐसे होते हैं कि वैसे तो बड़े बुद्धिमान, योग्य, श्रेष्ठ और विद्वान होते हैं लेकिन क़ानून बनाने की महारत में असफल और अनभिज्ञ होते हैं। जहाँ एक स्पष्ट क़ानून बनाने की आवश्यकता पड़ती है तो वे असफल हो जाते हैं पर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु में यह गुण अत्यन्त सुस्पष्ट रूप से पाया जाता था। अत: हदीस में लिखा है कि कई बार ऐसा संयोग हुआ कि एक बात में दूसरे सहाबा ने एक रंग में मशवरा दिया और हज़रत उमर रज़ि. ने दूसरे रंग में मशवरा दिया। फिर जिस तरह हज़रत उमर ने मशविरा दिया उसी के समान ख़ुदा की वाणी अवतरित हुई। मानो उन विषयों में हज़रत उमर की विचार शक्ति सही बिन्दु पर पहुँचती थी। (देखो बुख़ारी, मुस्लिम व ज़रक़ानी इत्यादि)

अत: आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने जो यह फ़रमाया कि यदि मेरे बाद कोई नबी हो सकता तो उमर अवश्य नबी होता। इससे केवल यह तात्पर्य है कि यदि मेरे बाद कोई साहिबे शरीअत नबी हो सकता तो उमर में अवश्य यह तत्व मौजूद था कि वह साहिबे शरीअत बन जाता। इन अर्थों की पुष्टि इस प्रकार भी होती है कि अहले सुन्नत वल् जमाअत का यह सर्वमान्य अक़ीदा है कि सहाबा किराम में हज़रत अबू बकर सबसे श्रेष्ठ थे। अत: यदि इस हदीस

में नबी से साधारण नबी तात्पर्य होता तो नि:सन्देह हज़रत अबू बकर इस बात के अधिक पात्र थे कि उनके बारे में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ऐसे शब्द प्रयोग करते लेकिन उनको छोड़कर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का हज़रत उमर के बारे में उपरोक्त शब्द प्रयोग करना स्पष्ट रूप से बताता है कि इस जगह हज़रत उमर की किसी ऐसी विशेषता की ओर संकेत करना उद्देश्य है जिसमें वे एक आंशिक विशिष्टता के रूप में हज़रत अबू बकर से भी अधिक बढ़े हुए थे और वह यही क़ानून बनाने की विशेषता थी। इन परिस्थितियों में विचाराधीन हदीस का केवल यह अर्थ होगा कि यदि मेरे बाद कोई साहिबे शरीअत नबी हो सकता है तो उमर में अवश्य ऐसा तत्व पाया जाता था और यही आशय है।

हदीस لَمْ يَبْقَ مِنَ النُّبُوَّةِ إِلَّا الْمُبَشِّرَاتِ (लम् यबक़ा मिनन् नुबुव्वते इल्लल मुबश्शिरात) का स्पष्टीकरण

एक और हदीस जो इस बारे में हमारे विरोधियों की ओर से प्रस्तुत की जाती है वह यह है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम फ़रमाते हैं कि :-

لَمْ يَبْقَ مِنَ النُّبُوَّةِ إِلَّا الْمُبَشِّرَاتِ۔

(بخاری جلد۴ ابواب التعبیر)

''लम् यबक़ा मिनन् नुबुव्वत इल्लल मुबश्शिरात'' (बुख़ारी जिल्द-4, अबवाबुत् ताबीर)

अर्थात ''नुबुव्वत में से अब केवल मुबश्शिरात (शुभसूचनाएँ) शेष रह गई हैं।''

कहा जाता है कि इस हदीस में स्पष्ट रूप से वर्णित है कि नुबुव्वत में से अब केवल मुबश्शिरात और मुन्ज़िरात शेष रह गई हैं

(मुन्ज़िरात इसलिए कि वे मुबश्शिरात के साथ परस्पर संबद्ध हैं और मानो उन्हीं के अन्दर शामिल है) और नुबुव्वत की सारी राहें बन्द हो चुकी हैं। अर्थात केवल अब शेष यह रह गया है कि एक मोमिन कोई शुभसूचना का स्वप्न देख ले या उसे कोई शुभ सूचना का इल्हाम हो जाए या कोई सचेत होने या करने का स्वप्न आ जाए इससे अधिक कुछ नहीं। पर हम कहते हैं कि यही हदीस जिससे नुबुव्वत का बन्द होना साबित किया जाता है उसे खुला साबित कर रही है। क्योंकि जैसा कि हम बतला चुके हैं कि नबी दो प्रकार के होते हैं (1) साहिब-ए-शरीअत नबी (2) ऐसे नबी जो शरीअत नहीं लाते बल्कि उनके इल्हाम में केवल शुभसूचनाएँ और सचेत करने वाली बातें होती हैं। अत: इस हदीस का अर्थ यह है कि अब कोई साहिबे शरीअत नबी नहीं आ सकता पर शुभ सूचना देने वाला और सचेत करने वाला नबी आ सकता है।

यह एक बहुत बड़ा धोखा होगा कि शुभ सूचना और सचेत करने वाले इल्हामों को साधारण चीज़ समझा जाए बल्कि बात यह है कि यही शुभ सूचना और सचेत करने वाले इल्हाम अपनी संख्या और विशेषता की दृष्टि से अधिकता और विशेषता के साथ किसी व्यक्ति को प्रदान किए जाते हैं तो वही व्यक्ति नबी होता है। हाँ साधारण तौर पर उनका अस्तित्व सारे मोमिनों में थोड़ा बहुत पाया जाता है लेकिन जिस प्रकार एक रुपया का मालिक मालदार नहीं कहला सकता उसी प्रकार थोड़े सी शुभ सूचनाओं या सचेत करने वाले इल्हामों को पाने वाला नबी नहीं कहला सकता। हाँ जब यह इल्हाम पाने का सिलसिला उन पर अधिकता के साथ जारी हो जाए और वे अपनी सत्यता में भी व्यापकता को पहुँच जाएँ, तो ख़ुदा के निकट ऐसा व्यक्ति नबी कहलाता है। अत: देख लो कि पहले नबियों में से जो नबी ऐसे हुए हैं कि वे कोई शरीअत नहीं लाए उनमें इसके अतिरिक्त और क्या अधिक बात थी कि अल्लाह तआला का लगाव उन से इस हद तक

बढ़ गया था कि उन्हें शुभ सूचना एवं सचेत करने वाले इल्हाम बड़ी अधिकता के साथ प्रदान किए जाते थे अर्थात उन्हें अपने और अपने अनुयायियों के लिए तो शुभ सूचनाओं की खबरें मिलती थीं जो पूरी भी होती थीं और विरोधियों के लिए सचेत करने वाले इल्हाम पाते थे और यह सिलसिला उनके साथ करामत के तौर पर अधिकता के साथ जारी रहता था।

सारांशत: यह कि यद्यपि शुभ सूचना एवं सचेत करने वाले इल्हाम प्रतिष्ठानुसार सब मोमिनों को दिए जाते हैं पर इनकी अधिकता नुबुव्वत कहलाती है। अत: आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने जो यह फ़रमाया कि अब मेरे बाद नुबुव्वत में से केवल शुभ सूचना और सचेत करने वाले इल्हामों का हिस्सा शेष रह गया है तो इससे केवल यह तात्पर्य है कि अब शरीअत वाली नुबुव्वत का दरवाज़ा बन्द हो गया है। हाँ शुभ सूचना पाने वाली या सचेत करने वाली नुबुव्वत जारी है जिससे सामर्थ्यानुसार सभी हिस्सा पाते हैं परन्तु सबसे अधिक हिस्सा पाने वाला नबी होता है। जिस तरह एक रुपया का मालिक यद्यपि शब्दकोष के अनुसार धन रखता है परन्तु पारिभाषिक तौर पर धनाढ्य नहीं कहला सकता लेकिन लाख रुपया का मालिक धनाढ्य कहलाता है।

इसके अतिरिक्त इस हदीस के शब्द भी इस आशय की पुष्टि कर रहे हैं कि एक प्रकार की नुबुव्वत आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के बाद भी जारी है क्योंकि आप के शब्द यह हैं कि :-

''लम् यबक़ा मिनन् नुबुव्वते इल्लल मुबश्शिरात''

अर्थात नुबुव्वत की सारी क़िस्में तो अब बन्द हैं पर मुबश्शिरात और मुन्ज़िरात (अर्थात शुभ सूचनाओं और सचेत करने) वाली नुबुव्वत अब भी जारी है। इसका ऐसा ही उदाहरण है जैसे कि एक सभा के बारे में कहा जाए कि सब आदमी जा चुके हैं पर एक आदमी शेष है। अब इसका यह अर्थ कदापि नहीं होगा कि जो आदमी शेष है वह

आदमी ही नहीं है बल्कि कोई और चीज़ है। ठीक उसी तरह हदीस का आशय है कि नुबुव्वत की सारी क़िस्में बन्द हो चुकी हैं पर एक प्रकार की नुबुव्वत शेष है जो मुबश्शिरात और मुन्ज़िरात से सम्बन्ध रखती है। और यही तात्पर्य है।

नुबुव्वत के विषय में इज्माअ (अर्थात् समस्त मुसलमानों के एकमत) होने का दावा ग़लत है

तीसरा तर्क विरोधियों की ओर से यह प्रस्तुत किया जाता है कि उम्मते मुहम्मदिया ने इस बात पर सर्व सहमति की है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के बाद कोई नबी नहीं आ सकता, और कहा जाता है कि इस पर उम्मत की सर्वसहमति एक प्रमाण है। इससे साबित हुआ कि अब नुबुव्वत का दरवाज़ा बन्द है। पर हम कहते हैं कि यह बात पूर्णत: ग़लत है कि उम्मते मुहम्मदिया ने इस विषय पर सर्वसहमति की है। अत: हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा का अक़ीदा ऊपर बयान हो चुका है कि आप केवल शरीअत वाली नुबुव्वत का दरवाज़ा बन्द समझती थीं और बिना शरीअत वाले नबी का आना आयत ''ख़ातमुन्नबीयीन'' और हदीस ''ला नबीय बाअदी'' के विपरीत नहीं समझती थीं। इसी प्रकार कुछ और सहाबा किराम जैसे कि हज़रत अली कर्रमल्लाहु अन्हु और हज़रत मुग़ैरह इब्नि शोबा रज़ियल्लाहु अन्हु के बारे में भी रिवायत आती है कि वे आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के बाद बिना शरीअत वाले नबी के आने को जाइज़ समझते थे। (देखो दुर्रे मन्सूर व इब्नुल अम्बारी व इब्नि अबी शीबा) शेष किसी दूसरे सहाबी का कोई कथन इसके विपरीत वर्णित नहीं है। जिससे स्पष्ट होता है कि दूसरे सहाबा किराम का भी यही अक़ीदा था कि केवल शरीअत वाली नुबुव्वत का

दरवाज़ा बन्द है और सहाबा के ज़माने के बाद तो जैसा कि इमाम अहमद बिन हम्बल ने फ़रमाया है कि इस विषय पर सर्व सहमति का दावा ही ग़लत है (मुसल्लमुस्सबूत जिल्द 2, पृष्ठ 68) क्योंकि सहाबा के बाद उम्मते मुहम्मदिया इतनी अधिकता के साथ विभिन्न शहरों में फैल गई कि इज्माअ (सर्वसम्मति) का पता लगाना ही असम्भव हो गया। अत: यह किस तरह कहा जा सकता है कि किसी विषय में उम्मत की सर्वसहमति हुई है। पर फिर भी निर्णायक तर्क पूर्ण करने हेतु इस मनगढ़त सम्मति के विरुद्ध उदाहरण के तौर पर कुछ अतीत के वलियों (पुण्यात्माओं) के विचार प्रस्तुत किए जाते हैं और ये विचार हज़रत आयशा सिद्दीक़ा के उस स्पष्ट आदेश के अतिरिक्त हैं जिसका ऊपर वर्णन हो चुका है।

हज़रत मुहीउद्दीन इब्नि अरबी (देहान्त 638 हिजरी) जो एक बहुत बड़े विद्वान और सूफीवाद के इमाम गुज़रे हैं, फ़रमाते हैं :-

النُّبُوّةَ الّتی انقطعت بوجود رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم انّما هی نبوّة التشریع ..... وَھٰذا معنی قولہٖ صلی اللہ علیہ وسلم ان الرسالة النُّبُوّةُ قد انقطعت فلا رسول بعدی ولا نبیّ ای لا نبی بعدی یکون علیٰ شرع یخالف شرعی بل اذا کان یکون تحت حکم شریعتی۔ (فتوحاتِ مَکّیّہ جلد ثانی صفحہ ۳)

अर्थात "वह नुबुव्वत जो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के अस्तित्व के साथ समाप्त हो गई है वह केवल शरीअत वाली नुबुव्वत है अर्थात अब शरीअत वाला नबी नहीं आ सकता और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के इस कथन से कि अब रिसालत व नुबुव्वत समाप्त हो गई है यही तात्पर्य है कि मेरे बाद ऐसा कोई नबी और रसूल नहीं आ सकता जो ऐसी शरीअत पर हो जो मेरी शरीअत के विरुद्ध हो बल्कि जब कभी भी कोई नबी होगा तो वह मेरी शरीअत के अधीन ही होगा।"

हज़रत इमाम अब्दुल वह्हाब शुअरानी (देहान्त 976 हिजरी)

बयान करते हैं :-

فان مطلق النبوة لم ترتفع وانّما ارتفعت نبوّة التشريع۔

(الیواقیت والجواھر جلد ۲ صفحہ ۲۴)

अर्थात "नुबुव्वत पूर्णत: समाप्त नहीं हुई बल्कि केवल शरीअत वाली नुबुव्वत बन्द हुई है।"

मज्मउल बहार के लेखक हज़रत इमाम मुहम्मद ताहिर साहिब (देहान्त 986 हिजरी) जो अपने ज़माने के इमाम थे फ़रमाते हैं :-

ھٰذا ناظر الیٰ نزول عیسٰی وھذا ایضًا لا ینافی حدیث لا نبیّ بعدی لانّہ ارادلا نبیّ ینسخ شرعہٗ۔ (تکملہ مجمع البحار صفحہ ۸۵)

अर्थात "हज़रत आयशा ने जो यह फ़रमाया है कि हे मुसलमानों तुम आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के बारे में ख़ातमुन्नबीयीन के शब्द तो प्रयोग किया करो पर "ला नबीय बअदहू" न कहा करो तो यह हज़रत आयशा ने मसीह मौऊद के प्रादुर्भाव को ध्यान में रखकर कहा है और हज़रत आयशा का यह कथन हदीस "ला नबीय बअदी" के विपरीत नहीं है क्योंकि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के कहने का भी यही तात्पर्य था कि मेरे बाद कोई ऐसा नबी नहीं आएगा जो मेरी शरीअत को निरस्त करे।"

हन्फिया फ़िर्क़ा के एक बड़े इमाम हज़रत मुल्ला अली क़ारी (देहान्त 1014 हिजरी) फ़रमाते हैं :-

لوعاش ابراھیم وصار نبیًّا و کذالك لوصار عمر نبیًّا لکان من اتباعہٖ علیہ السلام....فلا یناقض قولہ خاتم النّبیّن اذا المعنیٰ انّہ لا یاتی نبیٌّ بعدہٗ ینسخ ملّتہٗ ولم یکن من اُمتہٖ۔ (موضوعاتِ کبیر صفحہ ۵۸،۵۹)

अर्थात "यदि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के बेटे इब्राहीम जीवित रहते तो नबी हो जाते या यदि उमर नबी हो जाते तो वे दोनों आपके अनुयायियों में से होते। अतएव उनका नबी होना ख़ुदा के कथन ख़ातमुन्नबीयीन के विरुद्ध न होता। क्योंकि ख़ातमुन्नबीयीन

का यही अर्थ है कि आपके बाद कोई ऐसा नबी नहीं आ सकता जो आपकी शरीअत को निरस्त करे और आपकी उम्मत में से न हो।''

बारहवीं शताब्दी हिजरी के मुजद्दिद हज़रत शेख़ अहमद साहिब सरहिन्दी (देहान्त 1034 हिजरी) जो एक बहुत बड़े मुजद्दिद माने गए हैं फ़रमाते हैं :-

حصولِ کمالاتِ نبوت مرتابعاں را بطریق تبعیّت و وراثت بعد از بعثت خاتم الرسل منافی خاتمیت او نیست فلا تکن من الممترین۔(مکتوباتِ احمدیہ جلد اوّل مکتوب صفحہ ۱-۲)

अर्थात आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के बाद आपके अनुयायियों के लिए अनुसरण और विरसा के तौर पर नुबुव्वत की विशेषताओं की प्राप्ति, आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के ख़ातमुल रुसुल होने के विपरीत नहीं है अत: तुम शक करने वालों में से न बनो।''

फिर हज़रत शाह वलीउल्लाह साहिब मुहद्दिस देहलवी (देहान्त 1176 हिजरी) जो एक बहुत बड़े विद्वान होने के अलावा बारहवीं शताब्दी हिजरी के मुजद्दिद भी थे, फ़रमाते हैं :-

وختم به النّبيّون اى لايوجد بعده من يامره الله سبحانه بالتشريع على الناس۔(تفہیمات الٰہیہ تفہیم صفحہ ۵۳)

अर्थात ''आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पर नुबुव्वत समाप्त हो जाने का यह अर्थ है कि अब कोई ऐसा व्यक्ति न होगा जिसे ख़ुदा तआला कोई नई शरीअत देकर अवतरित करे।''

मदर्सा देवबन्द के संस्थापक हज़रत मौलवी क़ासिम साहिब नानौतवी (देहान्त सन् 1889 ई.) फ़रमाते हैं :-

जन साधारण के विचार में तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के ख़ातम होने का यह अर्थ है कि आप का ज़माना पूर्व नबियों के बाद है और आप सब में आख़िरी नबी हैं पर बुद्धि और विवेक रखने वालों पर स्पष्ट होगा कि ज़माने के आगे या पीछे होने

में कोई विशेषता नहीं... (तहज़ीरुन्नास पृष्ठ 3) अत: अगर मान लो कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के ज़माने के बाद भी कोई नबी पैदा हो तो फिर भी मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की ख़ात्मीयत में कोई फर्क नहीं आएगा। (तहज़ीरुन्नास, पृष्ठ 28) देखो यह कैसे स्पष्ट और खुले-खुले उद्धरण हैं जो साबित करते हैं कि अतीत के औलिया अल्लाह (पुण्यात्माओं) में बहुत बड़ी संख्या इस बात की स्वीकारी रही है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के बाद केवल शरीअत वाली नुबुव्वत का दरवाज़ा बन्द है। परन्तु बिना शरीअत वाली नुबुव्वत का दरवाज़ा बन्द नहीं (इन उद्धरणों की विस्तृत व्याख्या हेतु देखें विनीत की संकलित पुस्तक ''ख़त्मे नुबुव्वत की हक़ीक़त'') इसके अतिरिक्त ये उद्धरण इस्लामी इतिहास के पूरे ज़माने पर फैले हुए हैं। यह जो हज़रत मौलवी मुहम्मद क़ासिम साहिब नानौतवी के उद्धरण में ''अगर'' और ''मान लो'' के शब्द आते हैं इन से यह धोखा नहीं खाना चाहिए कि यह केवल संभावित रूप में लिखा गया है नहीं तो हज़रत मौलवी साहिब के निकट अब नुबुव्वत का दरवाज़ा बन्द है क्योंकि यहाँ केवल बुनियादी रंग में सम्भावना की बहस है घटना की नहीं। घटना की बहस आगे है।

फिर आश्चर्य यह है कि जो लोग नुबुव्वत के सिलसिला के बन्द होने के सम्बन्ध में मनगढ़ंत रूप से सर्वसम्मति का दावा करते हैं उनका स्वयं यह अक़ीदा है कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम आसमान से उतरने वाले हैं और यह भी अक़ीदा है कि हज़रत ईसा अल्लाह के नबी और रसूल थे और साथ यह भी अक़ीदा है कि जब हज़रत ईसा उतरेंगे तो उनकी नुबुव्वत और रिसालत उनसे छीनी नहीं जाएगी। बल्कि उतरने के बाद भी वह नियमत: नबी और रसूल रहेंगे और हाँ मुहम्मदी शरीअत के अवश्य पाबन्द होंगे और अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के कथनानुसार चलेंगे।

अत: ख़ुदा के वास्ते अब ये लोग हमें बताएँ कि इनकी मनगंढ़त

सर्व सहमति कहाँ गई ? खेद है कि दावा तो इज्माअ का और स्वयं अपना अक़ीदा उसके उलट! बन्दगान-ए-ख़ुदा ज़रा ईर्ष्या-द्वेष की पट्टी आँखों से उतार कर देखो कि जिस मसीह के आने की तुम दिन-रात राह तकते हो वह कौन है ? क्या वह अल्लाह का नबी और रसूल नहीं ? अत: यदि हज़रत ईसा के आने से ख़त्म-ए-नुबुव्वत नहीं टूटती और لانبیّ بعدی और انا آخر الانبیاء का अशय पूर्णत: शेष रहता है तो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के अनुसरण में हज़रत मिर्ज़ा साहिब के प्रतिरूपी तौर पर नबी कहलाने से ख़त्म-ए-नुबुव्वत कैसे टूटती और لانبیّ بعدی और انا آخر الانبیاء का आशय क्यों टूटने लगता है ?

यह कहना कि हज़रत ईसा आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से पहले नुबुव्वत पा चुके थे इसलिए उनके आने से ख़त्म-ए-नुबुव्वत में कोई दोष नहीं पड़ता। पर उम्मते मुहम्मदिया में से किसी व्यक्ति के नबी हो जाने से, ख़त्म-ए-नुबुव्वत टूट जाती है जो एक झूठा विचार है क्योंकि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से पहले या आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के बाद नुबुव्वत के पाने का प्रश्न नहीं, बल्कि प्रश्न यह है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के बाद कोई नबी आ सकता है या नहीं ? अब तुम यह मानते हो कि हज़रत ईसा उतरेंगे और वह नबी होंगे और हम यह मानते हैं कि आने वाला आ गया है और वह नबी है। अत: हम दोनों ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के बाद एक नबी के अस्तित्व को माना, जिसमें कोई फ़र्क नहीं। हाँ यह अन्तर अवश्य है कि हमने एक ऐसे व्यक्ति की नुबुव्वत को स्वीकार किया है जो यह कहता है कि मैं आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का शागिर्द और सेवक हूँ और मैंने जो कुछ पाया है आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के माध्यम और उपकार से पाया है। पर तुमने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के बाद उस

व्यक्ति को नबी माना है जिसकी नुबुव्वत को आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की नुबुव्वत के साथ शागिर्दी और अनुसरण का कोई सम्बन्ध नहीं है, बल्कि वह एक स्वतन्त्र नुबुव्वत है जिसकी प्राप्ति में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के किसी उपकार और एहसान का दख़ल नहीं। अब अगर सोचो तो तुम्हारा मसीह नाज़िल होकर ज़रूर ख़त्मे नुबुव्वत को तोड़ेगा और انا آخر الانبیاء और لا نبیّ بعدی के सारे कथन नऊज़बिल्लाह झूठे हो जाएँगे। पर हज़रत मिर्ज़ा साहिब की नुबुव्वत ने किसी कथन को नहीं झुठलाया। बल्कि आपकी नुबुव्वत से मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की नुबुव्वत की उच्चतम शान दुनिया पर प्रकट हुई, क्या ही उच्च स्थान है उस महान नबी का जिसके सेवक भी नुबुव्वत का स्थान पाते हैं। हे अल्लाह! उस पर अपनी अनुकम्पा रख और उस पर बरकत और सलामती अवतरित करता रह।

हर नबी के लिए नई शरीअत (धर्म विधान) लाना आवश्यक नहीं

चौथा तर्क यह प्रस्तुत किया जाता है कि नबी वही होता है जो कोई नई शरीअत लाए, चूँकि अब शरीअत नाज़िल होने का सिलसिला सर्वमान्य तौर पर समाप्त हो चुका है इसलिए अब कोई नबी नहीं आ सकता। पर यह तर्क भी पूर्णत: व्यर्थ और अधूरा है क्योंकि यह एक स्पष्ट सच्चाई है कि हर नुबुव्वत के साथ नई शरीअत का आना कदापि आवश्यक नहीं होता। अत: विश्व के इतिहास पर दृष्टि डालने से यह ज्ञात होता है कि बहुत से नबी ऐसे गुज़रे हैं जिनको कोई नई शरीअत नहीं दी गयी वस्तुत: बात यह है कि जब ख़ुदा तआला की ओर से

एक शरीअत नाज़िल होती है तो फिर उस शरीअत में परिवर्तन या रद्दोबदल उस समय किया जाता है कि जब ख़ुदा की दृष्टि में मानव क़ौम की हालत उस शरीअत में किसी परिवर्तन या निरस्तीकरण की इच्छुक होती है। उदाहरण के तौर पर जिस तरह एक योग्य वैद्य अपने रोगी के लिए उस समय तक अपना नुस्खा नहीं बदलता जब तक कि बीमार की हालत किसी परिवर्तन की चाह न करे। लेकिन नुस्खा न बदलने के बावजूद इस बात की आवश्यकता बनी रहती है कि डाक्टर उस बीमार की निगरानी के लिए उसकी देख-भाल करता रहे और उसकी नर्सिंग और अन्य आवश्यकताओं एवं आवश्यक सावधानियों और परहेज़ों का ध्यान रखे और जहाँ नुस्खा के समझने में कोई ग़लती हो गयी हो उसे ठीक कर दे। इसी प्रकार आध्यात्मिक जगत का हाल है जब ख़ुदा तआला की ओर से नुस्खा के रूप में एक शरीअत नाज़िल होती है और यदि नुस्खा की अवधि लम्बी हो जाए अर्थात शरीअत के निरस्तीकरण का समय न आए तो ख़ुदा जो समस्त लोकों का रब्ब है मानव क़ौम की आध्यात्मिक निगरानी के लिए अक्सर छोटे-छोटे डाक्टर (अर्थात मुजद्दिद, ब्रह्मज्ञानी और सूफी) और कभी-कभी आवश्यकतानुसार कोई बड़ा डाक्टर (अर्थात नबी या रसूल) भेजता रहता है। उदाहरणत: देखो ख़ुदा तआला ने हज़रत मूसा के द्वारा एक शरीअत अर्थात ''तौरात'' नाज़िल की और फिर उसके बाद आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम तक कोई शरीअत नाज़िल न की। लेकिन इस अन्तराल में इस्राईली क़ौम में बहुत से नबी आए। अत: हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम भी उन्हीं नबियों में से एक नबी थे जिनको कोई शरीअत नहीं दी गई। वे केवल मूसा नबी की शरीअत की देख रेख के लिए भेजे जाते रहे।

इस जगह किसी को यह धोखा न लगे कि हज़रत ईसा को तो इन्जील दी गयी थी। इन्जील कोई शरीअत की किताब नहीं बल्कि वह केवल बिना शरीअत वाली बातों पर आधारित है। अत: इन्जील में

स्वयं हज़रत मसीह अपने शिष्यों से कहते हैं कि :-

"फ़क़ीही और फरीसी (अर्थात विद्वान और ज्ञानी - अनुवादक) मूसा की गद्दी पर बैठे हैं। अत: जो कुछ वे तुम्हें बताएँ वह सब करो और मानो, लेकिन उनके जैसे काम न करो। क्योंकि वे कहते हैं और करते नहीं।" (मती बाब 23)

फिर फ़रमाते हैं :-

"यह न समझो कि मैं तौरात या नबियों की किताबों को निरस्त करने आया हूँ। निरस्त करने नहीं आया बल्कि पूरा करने आया हूँ क्योंकि मैं तुम से सच-सच कहता हूँ कि जब तक आसमान और ज़मीन न टल जाएँ (अर्थात जब तक कोई नयी ज़मीन और नया आसमान न हो जो मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के प्रादुर्भाव से पैदा हो गया) एक बिन्दु या एक अंशमात्र तौरात का हरगिज़ न टलेगा, जब तक सब कुछ पूरा न हो जाए। (यह भी सरवरे काइनात सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के प्रादुर्भाव की ओर संकेत है) अत: जो कोई इन छोटे से छोटे आदेशों में से भी किसी को तोड़ेगा और यही आदमियों को सिखाएगा वह आसमान की बादशाहत में सबसे छोटा कहलाएगा। लेकिन जो इन पर व्यवहृत होगा और इनकी शिक्षा देगा वह आसमान की बादशाहत में बड़ा कहलाएगा।" (मती बाब 5 आयत 17-19)

इन उद्धरणों से पूर्णत: स्पष्ट है कि हज़रत मसीह नासरी ही नहीं बल्कि हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के बाद आने वाले तमाम् इस्राईली नबी कोई शरीअत नहीं लाए थे बल्कि केवल तौरात की सेवा और इस्राईली क़ौम के आध्यात्मिक सुधार हेतु भेजे गए थे।

फिर स्वयं क़ुर्आन शरीफ से भी स्पष्टरूप से पता लगता है कि हर नबी के साथ नयी शरीअत का आना आवश्यक नहीं होता बल्कि कई नबी बिना किसी नई शरीअत के भेजे जाते हैं। अत: अल्लाह तआला फ़रमाता है :-

وَقَفَّيْنَا مِنْ بَعْدِهٖ بِالرُّسُلِ۔

(सूरह अल-बक़्रर: 2:88)

और

اِنَّاۤ اَنۡزَلۡنَا التَّوۡرٰىةَ فِيۡهَا هُدًى وَّنُوۡرٌ‌ ۚ يَحۡكُمُ بِهَا النَّبِيُّوۡنَ الَّذِيۡنَ اَسۡلَمُوۡا لِلَّذِيۡنَ هَادُوۡا۔

(सूरह अल-मायद: 5:45)

अर्थात ''मूसा के बाद हमने लगातार कई नबी भेजे जिनके साथ कोई नयी शरीअत न थी बल्कि वे अपने तमाम् फैसले तौरात के अनुसार करते थे जिसमें उनके लिए रहनुमाई और ज्ञान का सामान था।''

इस पवित्र आयत में किस तरह खुले-खुले स्पष्ट शब्दों में इस विषय का फैसला किया गया है कि बहुत से नबी ऐसे हुए हैं कि जिन्हें कोई नयी शरीअत नहीं दी गई। पर जो व्यक्ति आँखें बन्द कर ले हम उसे किस तरह राह दिखाएँ। तात्पर्य यह कि ख़ुदा की दी हुई बुद्धि और इतिहास और क़ुर्आन शरीफ तीनों गवाही दे रहे हैं कि हर नबी के लिए नयी शरीअत का लाना आवश्यक नहीं होता। फिर इसके बावजूद यह कहना कि क़ुर्आन शरीफ के नाज़िल होने के बाद नयी शरीअत का नाज़िल होना बन्द हो चुका है इसलिए अब कोई नबी नहीं आ सकता, एक बिल्कुल झूठा दावा है जिसमें कोई सच्चाई नहीं।

हर नबी एक दृष्टि से किताब लाता है

कुछ लोग यह सन्देह प्रस्तुत करते हैं कि क़ुर्आन शरीफ ने कुछ उन नबियों के बारे में जिनके सम्बन्ध में कहा जाता है कि वे कोई नयी शरीअत नहीं लाए यह बयान किया है कि उनको किताब दी गयी थी। (उदाहरण के तौर पर देखो सूर: इनाम रुकू 10) जिससे प्रतीत होता है कि वे शरीअत लाए थे, इसके जवाब में जानना चाहिए कि किताब

के शब्द से यह समझना कि इससे नयी शरीअत तात्पर्य है बहुत बड़ा धोखा है। बल्कि वास्तविकता यह है कि किताब से अक्सर ख़ुदा की वे बातें तात्पर्य होती हैं जो एक नबी पर नाज़िल होती हैं चाहे वह शरीअत का पात्र हो या न हो। अर्थात शरीअत लाने वाले नबी की किताब, उस शरीअती इल्हाम को कहते हैं जो उसे ख़ुदा की ओर से मिलता है और बिना शरीअत वाले नबी की किताब ख़ुदा की उन बातों को कहते हैं जो बिना शरीअती तौर पर शुभसूचना और सचेत करने वाली बातों के रूप में उसे कही जाती हैं। इसीलिए क़ुर्आन शरीफ ने इन्जील को इसके बावजूद कि वह धर्म विधान की किताब नहीं, किताब कहा है। अत: साबित हुआ कि किताब से हमेशा शरीअत (धर्म विधान) तात्पर्य नहीं होती।

द्वितीय इस सन्देह का जवाब यह भी है कि यद्यपि कई नबी नई शरीअत तो नहीं लाते बल्कि पहली शरीअत की पैरवी में ही भेजे जाते हैं लेकिन एक प्रकार से कह सकते हैं कि वे भी शरीअत लाए हैं क्योंकि एक बिना शरीअत लाने वाला नबी भी उसी समय भेजा जाता है जब पहली शरीअत का ज्ञान लोगों के दिलों से उठ जाता है। इस तरह वह मानो फिर पुन: पहली शरीअत को लोगों में क़ायम करता है। इसलिए इसके बावजूद कि वह कोई नयी शरीअत नहीं लाता पर एक दृष्टि से कह सकते हैं कि वह शरीअत और किताब लाया है। उदाहरण के तौर पर हज़रत ईसा कोई नयी शरीअत नहीं लाए थे लेकिन इसमें क्या सन्देह है कि उनका प्रादुर्भाव ऐसे युग में हुआ जब तौरात अर्थों की दृष्टि से बनी इस्राईल से उठ गयी थी और हज़रत ईसा ने उसे पुन: क़ायम करने की कोशिश की, मानो इस दृष्टि से तौरात पुन: उन पर नाज़िल हुई। इसी प्रकार हदीस में लिखा है कि (मसीह मौऊद के प्रादुर्भाव से पूर्व) एक समय आएगा कि जिसमें क़ुर्आन दुनिया से उठ जाएगा। इससे भी यही तात्पर्य है कि क़ुर्आन दुनिया में होते हुए लोगों के दिलों से उठ जाएगा। अर्थात

उसके शब्द तो मौजूद होंगे पर उनका मार्मिक ज्ञान उठ जाएगा फिर मसीह मौऊद उसे पुन: संसार में क़ायम करेगा। मानो मसीह मौऊद पर क़ुर्आन शरीफ का पुन: नुज़ूल होगा। अत: इन अर्थों की दृष्टि से मानो हज़रत मिर्ज़ा साहिब भी शरीअत लाए हैं और किताब वाले हैं जिसकी आँखें हों देखे।

हर नबी अवश्यमेव अनुकरणीय होता है पर इसका यह अर्थ नहीं कि वह किसी दूसरे नबी का अनुयायी नहीं होता

क़ुर्आन शरीफ़ फ़रमाता है कि :-

وَمَآ اَرْسَلْنَا مِنْ رَّسُوْلٍ اِلَّا لِيُطَاعَ بِاِذْنِ اللّٰهِ

(सूरह अन-निसा 4:65)

हम हर एक रसूल को केवल इसलिए भेजते हैं ताकि अल्लाह के आदेशानुसार उसका आज्ञापालन किया जाए, अर्थात वह लोगों का वाजिबुल इताअत[1] इमाम बने।''

इससे साबित होता है कि हर रसूल के लिए अनुकरणीय होना अनिवार्य है, पर कहा जाता है कि ऐसा व्यक्ति रसूल नहीं हो सकता जो किसी दूसरे व्यक्ति का अनुयायी हो। किन्तु यह एक बहुत नीची सोच है जो केवल समझ की कमी के कारण पैदा हुई है। क्योंकि इस आयत में तो केवल यह बताया गया है कि रसूल इस लिए भेजा जाता है कि जिनकी ओर वह भेजा गया है वे उसकी आज्ञा का पालन करें और वह जो कुछ कहे उसके अनुसार चलें। अत: इस आयत के साथ ही दूसरी आयत में ख़ुदा तआला फ़रमाता है :-

1. जिसकी आज्ञा का पालन अनिवार्य हो। (अनुवादक)

فَلَا وَرَبِّكَ لَا يُؤْمِنُونَ حَتَّىٰ يُحَكِّمُوكَ فِيمَا شَجَرَ بَيْنَهُمْ ثُمَّ لَا يَجِدُوا فِي أَنفُسِهِمْ حَرَجًا مِّمَّا قَضَيْتَ وَيُسَلِّمُوا تَسْلِيمًا۔

(सूरह अन-निसा 4:66)

अर्थात ''ख़ुदा की क़सम यह लोग कभी अपने ईमान के दावे में सच्चे नहीं हो सकते, जब तक ये अपने सारे झगड़े तेरे पास निर्णय के लिए न लाएँ और फिर तू जो निर्णय करे उसके आगे उनके दिल पूरी संतुष्टि के साथ न झुक जाएँ।''

अब यह सारा विषय बता रहा है कि इस जगह उन लोगों का वर्णन है जिनकी ओर रसूल भेजा जाता है। अर्थात इस जगह यह बताया गया है कि रसूल उन सारे लोगों के लिए अनुकरणीय होता है जिनकी ओर वह भेजा जाता है। अत: इससे यह कहाँ साबित हुआ कि वह किसी दूसरे रसूल का अनुयायी नहीं हो सकता ? क़ुर्आन शरीफ़ खोलकर देखो क्या हज़रत मूसा अपने भाई हारून से यह नहीं कहते कि -

اَفَعَصَيْتَ اَمْرِىْ۔

(सूरह ताहा 20:94)

हे हारून! क्या तूने मेरे आदेश का आज्ञापालन नहीं किया ? इससे पूर्णत: साबित होता है कि हज़रत हारून हज़रत मूसा के अधीन और अनुयायी थे। हालाँकि हारून भी अल्लाह तआला के नबी थे लेकिन वह हज़रत मूसा के अधीन थे इसलिए हज़रत मूसा ने उन पर क्रोध व्यक्त किया और आज्ञापालन न करने पर सख़्ती से जवाब माँगा।

अत: हदीस में भी लिखा है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने एक अवसर पर फ़रमाया कि :-

لو كان موسیٰ حیًّا لما وسعه الّا اتباعی

(بخاری)

''यदि मूसा मेरे समय में ज़िन्दा होते तो मेरे अनुसरण के बिना उनको भी चारा न होता।'' इन सब प्रमाणों से स्पष्ट है कि एक नबी

दूसरे के अधीन हो सकता है हाँ जिन लोगों की ओर वह भेजा जाता है उनका वह अवश्य अनुकरणीय होता है।

अब मैं ख़ुदा के फ़ज़्ल से उन सारे तर्कों और सन्देहों का खण्डन कर चुका हूँ जो ख़त्मे नुबुव्वत के विषय की बहस में विरोधियों की ओर से प्रस्तुत किए जाते हैं।

अब में संक्षिप्त रूप से कुछ उन प्रमाणों का वर्णन भी कर देना चाहता हूँ जो हम अहमदी लोग अपने अक़ीदा के समर्थन में प्रस्तुत करते हैं।

सबसे पहले यह जानना आवश्यक है कि जो प्रमाण हमने मुलिफों के तर्कों के खण्डन में लिखे हैं वे जहाँ मुख़ालिफों के अक़ीदा को झूठा साबित कर रहे हैं वहाँ वे साथ-साथ हमारे अक़ीदे की सच्चाई भी ज़ाहिर कर रहे हैं। मानो वे एक दोधारी तलवार की तरह हैं जो एक ओर तो मुख़ालिफों की बातों को काटती है और दूसरी ओर हमारी बातों को सत्य सिद्ध कर रही है। अत: जो बहस ऊपर की जा चुकी है, वही इस बात के साबित करने के लिए भी काफी है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के बाद नुबुव्वत का दरवाज़ा पूर्णत: बन्द नहीं हुआ बल्कि केवल शरीअत वाली नुबुव्वत बन्द हुई है और यही हमारा अक़ीदा है।

वस्तुत: इस विषय में यह बिल्कुल आवश्यक नहीं कि हम अपने अक़ीदे के समर्थन में भी कुछ प्रमाण प्रस्तुत करें, क्योंकि इस विषय में हम मुद्दई नहीं बल्कि उत्तरदाता हैं और मुद्दई की हैसियत हमारे मुख़ालिफ़ों की है। हमारे अक़ीदा के सुबूत के लिए केवल इतना कहना पर्याप्त है कि जब से दुनिया बनी नुबुव्वत का सिलसिला चला आया है। अत: जो व्यक्ति इस बात का मुद्दई होता है कि अब यह सिलसिला बन्द हो गया है उसका कर्तव्य है कि अपने उस दावे के समर्थन में प्रमाण प्रस्तुत करे और यदि वह ऐसा न कर सके या जो प्रमाण वह प्रस्तुत करे वे

बहस से झूठे साबित हो जाएँ तो यह मानना पड़ेगा कि नुबुव्वत का सिलसिला नियमानुसार जारी है और यह बिल्कुल आवश्यक न होगा कि हम उसके जारी रहने के बारे में कोई और प्रमाण प्रस्तुत करें। इसलिए मुख़ालिफों के अक़ीदा के खण्डन में जो कुछ ऊपर बयान हुआ है वही इस बात के साबित करने के लिए भी काफी है कि नुबुव्वत का सिलसिला अब भी जारी है लेकिन एक सत्याभिलाषी की अधिक संतुष्टि के लिए अति संक्षेप में कुछ और बातें भी इस जगह वर्णन की जाती हैं।

क़ुर्आन शरीफ़ से सिलसिला-ए-नुबुव्वत का जारी होना साबित है

सबसे पहले हम क़ुर्आन शरीफ को लेते हैं। इस सन्दर्भ में आयत ''ख़ातमुन्नबीयीन'' की बहस ऊपर गुज़र चुकी है और यह साबित किया जा चुका है कि नुबुव्वत का दरवाज़ा बन्द करना तो दरकिनार, यह आयत पूर्णत: खुले-खुले तौर पर प्रतिरूपी और अधीन नुबुव्वत का दरवाज़ा खोल रही है। इसके अलावा हम देखते हैं कि अल्लाह तआला हमें सूर: फ़ातिहा में भी यह दुआ सिखाता है कि :-

اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ ۔ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔

(सूरह अल-फातिहा 1:6, 7)

अर्थात ''हे हमारे रब्ब! तू हमें सीधे रास्ते की ओर हिदायत दे। अर्थात उन लोगों के मार्ग पर चला जिन पर तूने अपने इनाम किए''

इस जगह अल्लाह तआला मुसलमानों को यह आज्ञा देता है कि तुम मुझ से यह दुआ किया करो कि हे ख़ुदा! हमें भी उस मुबारक गिरोह में शामिल कर जो इनाम प्राप्त लोगों की जमाअत है। अब हमें देखना यह है कि इनाम प्राप्त लोगों की जमाअत से कौन लोग तात्पर्य

हैं और वे कौन से इनाम हैं जो उन लोगों पर अल्लाह तआला की ओर से किए गए थे इसके लिए हमें अक़्ली घोड़े दौड़ाने की आवश्यकता नहीं। क्योंकि ख़ुद अल्लाह तआला ने क़ुर्आन शरीफ में इनाम प्राप्त गिरोह का स्पष्टीकरण कर दिया है। अत: फ़रमाता है

وَمَنْ يُّطِعِ اللّٰهَ وَالرَّسُوْلَ فَأُولٰٓئِكَ مَعَ الَّذِيْنَ أَنْعَمَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ مِّنَ النَّبِيّٖنَ وَالصِّدِّيْقِيْنَ وَالشُّهَدَآءِ وَالصّٰلِحِيْنَ وَحَسُنَ أُولٰٓئِكَ رَفِيْقًا۔

(सूरह अन-निसा 4:70)

अर्थात जो लोग अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का अनुसरण करते हैं वे उन लोगों में शामिल किए जाएँगे जिन पर अल्लाह ने इनाम किए हैं और वे इनाम प्राप्त कौन हैं ? **वे नबी हैं, सिद्दीक़ हैं और शहीद हैं और सालेह (सदाचारी) हैं।''**

इस आयत में अल्लाह तआला ने स्पष्ट कर दिया है कि इनाम याफ्ता गिरोह से तात्पर्य नबी, सिद्दीक़, शहीद और सदाचारी हैं। मानो रूहानी इनामों के चार स्तर हुए।

1. **नुबुव्वत** अर्थात ख़ुदा की ओर से अत्यधिक इल्हाम (संवाद) का सौभाग्य पाकर और नबी की उपाधि पाकर लोगों के सुधार के लिए अवतरित होना।

2. **सिद्दीक़ियत** सत्यलीनता अर्थात ख़ुदा और रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के आदेशों के पालन का ऐसा व्यापक आदर्श प्रस्तुत करना कि मनुष्य मानो अपनी वाणी और कर्म से साक्षात् प्रमाणित हो जाए और अल्लाह एवं रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम में पूर्णत: लीन होने का स्थान पा ले।

3. **शहादत (बलिदान)** अर्थात धर्ममार्ग में इस तरह अपने आप को अर्पण कर देना कि मनुष्य का अस्तित्व मानो धर्म की सच्चाई के लिए एक साक्षात गवाही बन जाए।

4. **सालिहियत (सदाचार)** अर्थात अपने आप को धर्म का रंग

अपनाने योग्य बनाना और अपने कर्मों को धर्म के अनुसार बनाने के लिए प्रयत्नशील रहना, मानो ख़ुदा का प्यार और रूहानी इनाम पाने का सबसे छोटा दर्जा यह है कि मनुष्य सदाचारी हो जाए। इससे ऊपर का दर्जा शहीद का है और फिर इससे ऊपर का दर्जा सिद्दीक़ का है और फिर इससे भी ऊपर का दर्जा जो रूहानियत का आख़िरी दर्जा है वह नबी का है और फिर इन चारों दर्जों के अन्दर भी बहुत से दर्जे हैं अर्थात सारे सदाचारी एक जैसे नहीं और सारे शहीद एक जैसे नहीं और सब सिद्दीक़ एक जैसे नहीं और सब नबी भी एक जैसे नहीं। इसलिए अल्लाह तआला फ़रमाता है कि :-

تِلْكَ الرُّسُلُ فَضَّلْنَا بَعْضَهُمْ عَلٰى بَعْضٍ۔

(सूरह अल-बक़र: 2:254)

''सब नबी और रसूल एक दर्जे के नहीं होते बल्कि हमने कुछ को कुछ पर प्रधानता दी है। परन्तु आमतौर पर विभाजन की दृष्टि से अल्लाह तआला ने चार ही दर्जे निर्धारित किए हैं जिनका ऊपर वर्णन किया जा चुका है।

अब जानना चाहिए कि एक ओर तो अल्लाह तआला ने सूर: फ़ातिहा में मुसलमानों को यह दुआ सिखाई है कि तुम मुझसे वे इनाम माँगो जो पहले लोगों पर मेरी ओर से होते रहे हैं और फिर इनामों का स्पष्टीकरण भी कर दिया कि उन इनामों से तात्पर्य नुबुव्वत, सिद्दीक़ियत, शहादत, और सालिहियत के इनाम हैं। अर्थात दूसरे शब्दों में अल्लाह तआला यह फ़रमाता है कि हम उससे नुबुव्वत, सिद्दीक़ियत, शहादत और सालिहियत के इनामों की प्राप्ति के लिए दुआ किया करें और अपनी रूहानी तरक़्क़ियों के चरमोत्कर्ष को पस्त न होने दें। अब इससे पूर्णत: स्पष्ट है कि उम्मते मुहम्मदिया में नुबुव्वत का सिलसिला जारी है। क्योंकि यदि नुबुव्वत का इनाम इस उम्मत पर बन्द होता तो ख़ुदा तआला हमें कदापि यह दुआ न सिखाता कि मुझसे नुबुव्वत का इनाम मांगो। अल्लाह तआला का

यह दुआ सिखलाना पूर्णत: स्पष्ट करता है कि उसकी यह इच्छा है कि यदि लोग उससे ये इनाम मांगे और स्वयं को उनका पाने वाला बनाएँ तो फिर वह उन्हें प्रतिष्ठा और समय की आवश्यकतानुसार ये इनाम प्रदान करेगा। अन्यथा नऊज़बिल्लाह (ख़ुदा की पनाह) यह मानना पड़ेगा कि एक ओर तो ख़ुदा ने यह दुआ सिखाई कि तुम मुझसे वे सारे इनाम मांगो जो मैंने तुमसे पहले लोगों को दिए हैं जिनमें नुबुव्वत भी शामिल है, और दूसरी ओर स्वयं नुबुव्वत का दरवाज़ा बन्द करके यह निर्णय कर दिया कि अब नुबुव्वत का इनाम किसी व्यक्ति को नहीं मिल सकता। ऐसी गिरी हुई हरकत तो एक निम्न प्रवृत्ति का आदमी भी नहीं करेगा कि एक ओर तो एक भिखारी से यह कहे कि तुम मुझसे अमुक चीज़ माँगो और दूसरी ओर उसे यह सुनाए कि यह चीज़ तो मैं तुम्हें कभी नहीं दूँगा।

क्या ऐसे व्यक्ति से कोई यह नहीं कहेगा कि हे भले मानुष! जब तुझे वह चीज़ देनी ही न थी तो बेचारे भिक्षु से उसको मांगने के लिए कहने की क्या आवश्यकता थी ? खेद है कि हमारे मुखालिफ़ों ने ख़ुदा की क़द्र न की। वह बादशाहों का बादशाह जिसके एक आदेश से सारा ब्रह्माण्ड अस्तित्व में आया, जिसके ख़ज़ाने कभी कम नहीं होते, हमें एक दुआ सिखाता है और स्वयं कहता है जो क़ुर्आन के बिल्कुल शुरू में है कि हे मेरे बन्दो! मुझ से अमुक-अमुक चीज़ माँगो, तो क्या अब यदि कोई बन्दा उससे वह चीज़ माँगे और अपने आप को उसका पाने वाला भी बनाए तो क्या वह उसे उस चीज़ के देने से इन्कार कर देगा ? यह अलग विषय है कि माँगने वाला उस इनाम का पात्र ही न हो या ज़माने को उसकी ज़रूरत न हो जिसके कारण उसकी दुआ निरस्त कर दी जाए। पर ख़ुदा के वास्ते यह अत्याचार तो मत करो कि इनाम का दरवाज़ा ही बन्द हो जाए और इनाम भी वह जिसके माँगने का स्वयं ख़ुदा तआला ने कहा है।

सारांशत: यह कि एक ओर तो ख़ुदा तआला का सूर: फ़ातिहा में यह दुआ सिखाना कि -

اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ ـ صِرَاطَ الَّذِيْنَ أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ـ

और दूसरी ओर اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ के स्पष्टीकरण में यह फ़रमाना कि इससे सालेह शहीद सिद्दीक़ और नबी तात्पर्य हैं, जो इस बात पर एक स्पष्ट प्रमाण है कि नुबुव्वत का इनाम इस उम्मत पर कदापि बन्द नहीं हुआ, बल्कि अब भी जारी है और जारी रहेगा। हाँ शरीअत वाली नुबुव्वत अवश्य बन्द है क्योंकि क़ुर्आन में शरीअत (धर्म विधान) के समस्त आदेश पूर्णरूप से अवतरित हो चुके हैं।

दूसरा प्रमाण क़ुर्आन शरीफ से जो नुबुव्वत के जारी होने की पुष्टि में मिलता है वह निम्नलिखित आयत में बयान हुआ है। अल्लाह तआला फ़रमाता है :-

يَابَنِيْ آدَمَ إِمَّا يَأْتِيَنَّكُمْ رُسُلٌ مِّنْكُمْ يَقُصُّوْنَ عَلَيْكُمْ آيَاتِيْ فَمَنِ اتَّقٰى وَأَصْلَحَ فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ـ

(सूरह अल-आराफ़ 7:36)

अर्थात ''हे आदम की सन्तानो! यदि तुम्हारे पास तुम्हीं में से मेरे रसूल आएँ और वे तुम पर मेरे निशान बयान करें तो उस समय जो व्यक्ति संयम रखेगा और अपना सुधार करेगा तो ऐसे लोगों पर किसी प्रकार का भय न होगा और न वे ग़मग़ीन होंगे।''

इस पवित्र आयत के सन्दर्भ को देखने से पता चलता है कि इसमें ''बनी आदम'' से आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के ज़माने के बाद के लोग तात्पर्य हैं अर्थात आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के द्वारा अल्लाह तआला लोगों को यह कह रहा है कि हे लोगो! यदि तुम्हारे पास मेरे रसूल आएँ जो तुम पर मेरी आयतें पढ़ें तो तुम संयम अपनाना और उन्हें मानकर अपना सुधार करना यदि तुम ऐसा करोगे तो तुम हर प्रकार के भय और ग़म से बच जाओगे। अब

पाठकगण न्यायपूर्वक देखें कि कितनी स्पष्टता के साथ इस पवित्र आयत में नुबुव्वत के जारी रहने का वर्णन मौजूद है।

अल्लाह तआला आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के माध्यम से लोगों को संबोधित करके कह रहा है कि लोगो यदि भविष्य में किसी समय तुम्हारे पास रसूल आएँ जो तुम्हीं में से हों तो तुम उनका इन्कार मत करना बल्कि अल्लाह का तक़्वा अपनाना और उन रसूलों को मानकर अपना सुधार करना। यह तुम्हारे भय और ग़म को दूर करने का कारण होगा। भय और ग़म से बचे रहने के शब्दों में इस ओर भी इशारा है कि आने वाला रसूल उस ज़माने में आएगा कि जब मुसलमानों पर बहुत भय और ग़म छाया हुआ होगा। पर जो लोग उस रसूल को मान लेंगे उनसे यह भय और गम दूर किया जाएगा और इस आयत में जो अरबी शब्द ''रुसुल'' बहुवचन के रूप में प्रयोग हुआ है इसमें उस वास्तविकता की ओर संकेत है जो निम्नलिखित आयत -

وَاِذَا الرُّسُلُ اُقِّتَتۡ۔

(सूरह अल-मुरसलात 77:12)

में बयान हुई है जिससे तात्पर्य यह है कि आख़िरी युग में ''तमाम् रसूल (एक ही प्रतिरूपी अस्तित्व में) एकत्र किए जाएँगे'' और यह प्रतिरूप ''मसीह मौऊद'' है मानो विचाराधीन आयत में जो ''रुसुल'' का शब्द बहुवचन के रूप में प्रयोग हुआ है इससे एक से अधिक रसूल भी तात्पर्य हो सकते हैं और केवल मसीह मौऊद भी तात्पर्य हो सकता है क्योंकि वह तमाम् रसूलों का प्रतिरूप होने के कारण उन सब का क़ाइममुक़ाम (स्थानापन्न) है और इस आयत में जो ''मिनकुम'' का शब्द रखा गया है इससे यह संकेत है कि मसीह मौऊद उसी समय अवतरित होगा जब मुसलमान आने वाले मसीह को किसी दूसरी उम्मत में से समझ रहें होंगे पर वह उन्हीं में से आएगा। इसीलिए कहा गया कि यदि वह तुम में से आए तो इन्कार न करना। यह आयत

साधारण हो या विशेष लेकिन हर हाल में मसीह मौऊद की पैदाइश के बारे में है। इसमें कोई सन्देह नहीं कि अल्लाह तआला ने इस आयत में बड़ी स्पष्टता के साथ इस बात का निर्णय कर दिया है कि उम्मते मुहम्मदिया में नुबुव्वत का द्वार बन्द नहीं हुआ, बल्कि आशा दिलाई है कि मुसलमानों में ख़ुदा की ओर से रसूल अवतरित किए जाएँगे।

हदीस से नुबुव्वत के सिलसिला का जारी होना साबित है

अब मैं हदीस को प्रस्तुत करता हूँ इस सन्दर्भ में कुछ हदीसों की बहस ऊपर गुज़र चुकी है उनके अतिरिक्त इस जगह मैं दो हदीसें और प्रस्तुत करता हूँ जिनसे यह बात स्पष्टरूप से साबित हो जाती है कि उम्मते मुहम्मदिया में नुबुव्वत का दरवाज़ा बन्द नहीं बल्कि खुला है। हदीस में लिखा है कि जब आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के बेटे इब्राहीम का देहान्त हुआ तो आपने फ़रमाया :-

لوعاش ابراهيم لكان صدّيقاً نبيّا۔

(ابن ماجه جلد١ كتاب الجنائز)

अर्थात ''यदि मेरा यह बेटा इब्राहीम ज़िन्दा रहता तो अवश्य सच्चा नबी हो जाता।''

इस हदीस के अर्थों में किसी प्रकार के सन्देह की गुंजाइश नहीं। शब्द स्पष्ट हैं और अर्थ बिल्कुल स्पष्ट, और वह यह है कि यदि मेरा यह बेटा जो ख़ुदा की मंशा से देहान्त पा गया है देहान्त न पाता तो अवश्य नबी होता। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने यह नहीं फ़रमाया कि इस बच्चे में प्राकृतिक सामर्थ्य के तौर पर नुबुव्वत का तत्व मौजूद था बल्कि यह फ़रमाया कि यदि यह ज़िन्दा रहता तो नबी हो जाता। अब संभावित रूप से इस हदीस के केवल दो ही अर्थ हो सकते हैं।

1. या तो यह कि मेरा बेटा इब्राहीम यदि ज़िन्दगी पाता तो अवश्य नुबुव्वत के मुक़ाम को पहुँच जाता, लेकिन चूँकि नुबुव्वत का दरवाज़ा बन्द हो चुका था इसलिए अल्लाह तआला ने उसे मृत्यु दे दी।

2. या यह समझा जाए कि नुबुव्वत का दरवाज़ा खुला है और यदि इब्राहीम ज़िन्दा रहता तो नबी बन जाता।

इन दो रास्तों के अलावा अन्य कोई रास्ता नहीं। अर्थात संभावित अर्थों की दृष्टि से बौद्धिक तौर पर केवल दो ही परिणाम निकाले जा सकते हैं या तो यह कि नुबुव्वत का दरवाज़ा ख़ुला है या यह कि चूँकि नुबुव्वत का दरवाज़ा बन्द है इसलिए अल्लाह तआला ने इब्राहीम को मृत्यु दे दी कि कहीं वह बड़ा होकर नबी न बन जाए। अर्थात या तो नुबुव्वत का दरवाज़ा खुला मानना पड़ेगा या इब्राहीम की मृत्यु का कारण यह मानना पड़ेगा कि ख़ुदा ने सोचा कि कहीं ऐसा न हो कि वह नबी बनकर नुबुव्वत के दरवाज़ा को जो बन्द हो चुका है खोल दे इसलिए ख़ुदा ने डरकर उसे बचपन में ही मृत्यु दे दी ताकि न इब्राहीम बड़ा हो और न नुबुव्वत का दरवाज़ा खुलने पाए, मानो इब्राहीम के जन्म के समय ख़ुदा यह बात भूल गया कि यह बच्चा बड़ा होकर नबी बन जाएगा इसलिए उसने ग़लती से उसे पैदा होने दिया और जब वह पैदा हो चुका तो बाद में ख़ुदा को यह बात याद आई और उस समय उसने जल्दी से उसे मृत्यु दे दी (नऊज़ुबिल्लाह)। अब पाठकगण स्वयं विचार करें कि इन दोनों अर्थों में कौन सा अर्थ सही और स्वीकार करने योग्य है। हमारे निकट तो यह हदीस चिल्ला-चिल्लाकर कह रही है कि इस दयनीय उम्मत के लिए नुबुव्वत का दरवाज़ा बन्द नहीं हुआ बल्कि खुला है।

इसके अतिरिक्त इस हदीस से ख़ातमुन्नबीयीन की आयत के अर्थों पर भी काफी रोशनी पड़ती है। क्योंकि इस्लामी इतिहास का थोड़ा सा भी ज्ञान रखने वालों को भी यह बात ज्ञात होगी कि हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के बेटे इब्राहीम के देहान्त की घटना

आयत ख़ातमुन्नबीयीन के अवतरण से कई वर्ष बाद की है। आयत ख़ातमुन्नबीयीन सन् 05 हिजरी में अवतरित हुई थी और साहिबज़ादा इब्राहीम की मृत्यु सन् 09 हिजरी में हुई थी। अत: आयत ख़ातमुन्नबीयीन के नाज़िल हो चुकने के बावजूद भी आप का यह कहना कि यदि इब्राहीम ज़िन्दा रहता तो नबी हो जाता, इस बात का ठोस प्रमाण है कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के निकट ख़ातमुन्नबीयीन से यह तात्पर्य कदापि न था कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के बाद नुबुव्वत का दरवाज़ा बिल्कुल बन्द हो चुका है।

दूसरा प्रमाण जो नुबुव्वत का दरवाज़ा खुला रहने के सम्बन्ध में हदीस से मिलता है यह है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने मसीह मौऊद को जिसका इस उम्मत में आने का वादा दिया गया है नबीयुल्लाह के नाम से याद किया है और केवल एक बार नहीं बल्कि कई बार इसी नाम से उसका वर्णन किया है। अत: सहीह मुस्लिम में जो हदीस नवास इब्नि सम्आन से वर्णित है उसमें आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने चार बार मसीह मौऊद के बारे में नबीयुल्लाह के शब्द प्रयोग किए हैं। अत: फ़रमाते हैं :-

يحصر نبی الله عیسیٰ--------یرغب نبی الله
عیسیٰ---------یھبط نبی الله عیسیٰ------فیرغب نبی الله
عیسیٰ-----(دیکھو مسلم باب ذکر الدجال)

अर्थात ''ख़ुदा का नबी ईसा मसीह जो आख़िरी ज़माने में अवतरित होगा वह यह करेगा वह यह करेगा इत्यादि इत्यादि।''

अब इस स्पष्ट प्रमाण के बाद क्या किसी सन्देह की गुंजाइश रह सकती है। यहाँ तक कि स्वयं आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम अपने मुँह से आने वाले मसीह को नबीयुल्लाह के नाम से पुकारते हैं और एक बार नहीं बल्कि चार बार यही शब्द दोहराते हैं ताकि किसी प्रकार का कोई सन्देह न रहे। इस हदीस से दो नतीजे निकलते हैं। एक यह कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम

के बाद नबी हो सकता है और दूसरा यह कि मसीह मौऊद अल्लाह का नबी है।

इसी प्रकार बुख़ारी की एक हदीस में लिखा है कि :-

انا اَوْلی الناس بابن مریم والانبیاء اولاد علّات لیس بینی وبینه نبیٌّ۔(بخاری باب واذ کرفی الکتاب مریم)

फिर अबू दाऊद की एक हदीस में लिखा है कि :-

لیس بینی و بینهٗ نبیٌّ وَانّه نَازِلٌ فاذا رأیتموہ فاعرفوهُ۔

(ابوداؤد کتاب الملاحم)

अर्थात ''मैं सब लोगों की अपेक्षा मसीह इब्नि मरियम से अधिक सदृशता (एकरूपता) रखता हूँ यद्यपि माँयें अलग-अलग हैं लेकिन सब नबी आध्यात्मिक दृष्टि से एक ही बाप के बेटे होते हैं और मेरे और मसीह के मध्य कोई नबी नहीं'' और ''मसीह आगे आने वाले युग में अवतरित होने वाला है। अत: जब तुम उसे देखो तो अवश्य पहचान लेना।''

अब देखो इस हदीस में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने मसीह मौऊद को नबी के नाम से याद किया है क्योंकि आप फ़रमाते हैं कि यद्यपि सारे नबी एक दूसरे के पैतृक भाई हैं लेकिन मैं सबसे अधिक मसीह मौऊद के सदृश हूँ।

जिससे पूर्णत: स्पष्ट है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के निकट मसीह मौऊद नबियों के गिरोह में दाखिल है। दूसरे इस हदीस में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम यह भी स्पष्ट रूप से फ़रमाते हैं कि मेरे और मसीह मौऊद के मध्य कोई नबी नहीं और पहले मसीह से अन्तर स्पष्ट करने के लिए यह स्पष्टीकरण फ़रमाते हैं कि इस जगह मेरा अभिप्राय उस मसीह से है जो मेरे बाद आने वाला है। इन शब्दों का भी यही स्पष्ट अर्थ है कि मसीह मौऊद अल्लाह का नबी है क्योंकि जब आपके शब्द यह हैं कि मेरे और मसीह मौऊद के मध्य कोई नबी नहीं तो इन शब्दों का स्वाभाविक परिणाम यही निकलता है कि मसीह मौऊद

ख़ुदा का नबी है।

इसके अतिरिक्त इस हदीस में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने اِنَّهٗ نَازِلٌ (इन्नहू नाज़िलुन) के शब्द कहकर ईसा इब्नि मरियम का व्यक्तिगत अस्तित्व भी स्पष्ट रूप से बता दिया कि उससे बनी इस्राईल का मसीह तात्पर्य नहीं जो गुज़र चुका है बल्कि उम्मते मुहम्मदिया का मसीह तात्पर्य है जो आख़िरी ज़माने में आने वाला है। इस हदीस के अगले भाग में मसीह का जो काम बताया गया है वह भी साबित करता है कि इस जगह पिछले मसीह का वर्णन नहीं बल्कि आने वाले मसीह का वर्णन है क्योंकि उसके बारे में सलीब के तोड़ने और दज्जाल के क़त्ल करने इत्यादि के शब्द प्रयोग किए गए हैं जो पूर्ण तौर पर आख़िरी ज़माने में प्रकट होने वाले मसीह से सम्बन्ध रखते हैं। अत: साबित हो गया कि उम्मते मुहम्मदिया में केवल नुबुव्वत का दरवाज़ा खुला ही नहीं बल्कि आने वाला मसीह मौऊद भी ख़ुदा का एक नबी है। आश्चर्य है कि हमारे विरोधी हदीस لَانَبِيَّ بَعْدِیْ (ला नबीय बअदी) को तो याद रखते हैं लेकिन उन हदीसों को भूल जाते हैं जिनमें स्पष्ट तौर पर मसीह मौऊद को अल्लाह का नबी कहा गया है। हालाँकि हक़ यह था कि जब दोनों आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की हदीसें थीं तो दोनों स्वीकार की जातीं और बाह्य मतभेद को दूर करके उनके मध्य समानता की राह निकाली जाती, पर ऐसा नहीं किया गया जो इस बात का प्रमाण है कि हमारे विरोधियों को केवल अपनी अनुचित इच्छाओं का पालन करना स्वीकार है और रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का अनुसरण मंज़ूर नहीं। अन्यथा रास्ता साफ था कि जहाँ لَانَبِيَّ بَعْدِیْ (ला नबीय बअदी) कहा गया है वहाँ शरीअत वाली नुबुव्वत तात्पर्य है और जहाँ अपने बाद किसी नबी के आने की ख़बर दी गई है वहाँ बिना शरीअत वाली और प्रतिरूपी नुबुव्वत तात्पर्य है। इस तरह दोनों प्रकार की हदीसें अपनी-अपनी जगह सच्ची साबित होती हैं और कोई प्रतिकूलता पैदा नहीं होती।

नुबुव्वत से सम्बन्धित बहस का सार

बहस का सार यह है कि यह एक बहुत बड़ी ग़लती है कि हर प्रकार की नुबुव्वत का दरवाज़ा पूर्णत: बन्द समझ लिया गया है। क़ुर्आन शरीफ और हदीसें इस अक़ीदे की कभी शिक्षा नहीं देतीं बल्कि बड़ी स्पष्टतापूर्वक बता रही हैं कि नुबुव्वत का इनाम अब भी उसी तरह जारी है जिस तरह पहली उम्मतों में जारी था,पर इसमें आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की तौहीन नहीं बल्कि आपकी श्रेष्ठ शान का प्रकटन है। क्योंकि जैसा कि ऊपर बताया जा चुका है कि यह इनाम हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के अनुसरण और आप स.अ.व के प्रतिरूप बनने की दशा में मिला है। लेकिन पहले नबियों में से कोई नबी ऐसा नहीं हुआ जिसने अपने अनुसरणीय नबी के अनुसरण से नुबुव्वत का इनाम पाया हो, बल्कि वे बिना किसी माध्यम के ये इनाम ख़ुदा से पाते थे जिसमें किसी नबी के अनुसरण का उसमें दखल नहीं होता था। जिसका कारण यह है कि पहले नबी नुबुव्वत की और व्यापक विशेषताओं से परिपूर्ण न थे। लेकिन मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का मुबारक अस्तित्व नुबुव्वत की समस्त विशेषताओं से परिपूर्ण है। अत: पहले जो इनाम बिना माध्यम से मिलता था अब वह क़ुर्आन और हज़रत ख़ातमुन्नबीयीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के माध्यम से मिलता है। हज़रत मूसा की उम्मत में अवश्य बहुत से नबी आए, लेकिन उन्होंने हज़रत मूसा अलैहि. के अनुसरण से नुबुव्वत नहीं पाई थी। बल्कि उनकी नुबुव्वत ख़ुदा का एक ऐसा इनाम था जो बिना किसी के अनुसरण किए बिना सीधे तौर पर उन पर किया गया और उसके बाद वे तौरात की सेवा के लिए आदेशित कर दिए गए। लेकिन मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की आध्यात्मिक अनुकम्पा इस चरमसीमा को पहुँची हुई है कि आपका अनुसरण, सामर्थ्य और

प्रतिष्ठानुसार हर प्रकार के रूहानी इनाम को अपनी ओर खींच सकता है और आपकी आध्यात्मिक कृपा नबी बना देने वाली है। इसीलिए आप ख़ातमुन्नबीयीन अर्थात मुहर वाले ठहराए गए, और कोई दूसरा नबी इस नाम का पात्र न हुआ। इस पर अल्लाह की कोटि-कोटि प्रशंसा।

किन्तु खेद है कि स्वयं मुसलमान कहलाने वालों ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के लिए यह प्रतिष्ठा पसन्द न की और साहिबे ख़ातम के महान पद के बारे में न चाहा कि वह आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की ओर मन्सूब हो। ख़ुदा ने आपको ख़ातमुन्नबीयीन बनाया और कहा कि अब समस्त आध्यात्मिक पराकाष्ठाओं की मुहर तेरे हाथ में दी जाती है। जिस पर यह मुहर लगी होगी वह इनाम पाएगा और दूसरा वंचित रहेगा, पर मुसलमानों को यह मुहर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पवित्र हाथों में न भायी और कहने लगे हम इस मुहर को नहीं मानते हम तो उस मुहर के क़ाइल हैं जो आती है तो सब कुछ समाप्त कर देती है, लगती है तो दफ्तर बन्द करके हटती है। ख़ुदा ने फ़रमाया कि अच्छा اَنَا عند ظنّ عبدی بی मैं तुम्हारी सोच के अनुसार ही तुमसे व्यवहार करूँगा और अब तुम पर वही मुहर लगाई जाएगी जो तुमने पसन्द की फिर क्या था :-

ختم اللہ علی قلوبھم وعلیٰ سمعھم وعلیٰ ابصارھم غِشَاوَۃ۔
صُمٌّ بُکْمٌ عُمْیٌ فھم لا یرجعون۔ فانا للہ وانّا الیہ راجعون۔

अनुवाद - अल्लाह ने उनके दिलों पर मुहर लगा दी और उनके कानों पर मुहर लगा दी और उनकी आँखों पर पर्दा डाल दिया। अत: वे बहरे गूँगे और अन्धे हो गए, और वे लौटकर नहीं आएँगे। (अनुवादक)

इन्ना लिल्लाहे व इन्ना इलैहि राजेऊन

(ख़त्मे नुबुव्वत के विषय पर विस्तारपूर्ण बहस देखने के लिए

इस पुस्तक के लेखक की रचना ''ख़त्मे नुबुव्वत की हक़ीक़त'' का गहन अध्ययन करें)

नुबुव्वत की बहस के सन्दर्भ में हज़रत मिर्ज़ा साहिब के दो निर्णायक उद्धरण

नुबुव्वत की बहस को हज़रत मिर्ज़ा साहिब के दो उद्धरणों पर समाप्त करता हूँ। आप फ़रमाते हैं :-

''नुबुव्वत की तमाम् खिड़कियाँ बन्द की गयीं, पर एक खिड़की सीरत-ए-सिद्दीक़ी की खुली है अर्थात فنافی الرسول (फनाफिर्रसूल)[1] की। अत: जो व्यक्ति इस ख़िड़की की राह से ख़ुदा के पास आता है उस पर ज़िल्ली (प्रतिरूपी) तौर पर वही नुबुव्वत की चादर पहनाई जाती है जो मुहम्मदी नुबुव्वत की चादर है। इसलिए उसका नबी होना ग़ैरत की जगह नहीं, क्योंकि वह अपने अस्तित्व से नहीं बल्कि अपने नबी के स्रोत से लेता है... मेरी नुबुव्वत व रिसालत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम और अहमद स.अ.व होने की दृष्टि से है न कि मेरे अस्तित्व की दृष्टि से और यह नाम रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम में पूर्णत: लीन होने की दृष्टि से मुझे मिला है। इसलिए ख़ातमुन्नबीयीन के भाव में फ़र्क़ न आया।'' (एक ग़लती का इज़ाला)

फिर फ़रमाते हैं :-

''इस उम्मत में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की पैरवी (अनुसरण) की बरकत से हज़ारों औलिया हुए हैं और एक वह भी हुआ जो उम्मती भी है और नबी भी... मैं ख़ुदा की क़सम खाकर कहता हूँ कि जिसके हाथ में मेरी जान है उसी ने मुझे

1. अर्थात आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम में लीन होना - अनुवादक।

भेजा है और उसी ने मेरा नाम नबी रखा है... ख़ुदा तआला की मस्लहत और हिकमत ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की आध्यात्मिक अनुकम्पा की विशेषता सिद्ध करने के लिए यह प्रतिष्ठा दी है कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की अनुकम्पा की बरकत से मुझे नुबुव्वत के स्थान तक पहुँचाया।''
(हक़ीक़तुल वह्यी)

किताब का समापन और विनीत लेखक की ओर से दुआ

अब मैं इस लेख को जिसमें हज़रत मिर्ज़ा साहिब अलैहिस्सलाम के विभिन्न दावों के बारे में बहस की गई है, समाप्त करते हुए ख़ुदा से प्रार्थना करता हूँ कि वह हमारे भाइयों की आँखों के पर्दों को दूर करे, ताकि वे देखें और उनके कानों के बोझों को उतारे ताकि वे सुनें और उनके दिलों की मुहरों को तोड़े ताकि वे समझें। खेद है उन पर कि रात का अन्धकार छटना प्रारम्भ हो गया और चमकता हुआ सूर्य पूरब की क्षितिज से चढ़ने लगा। यहाँ तक कि पश्चिम के सोने वालों ने भी करवट बदली। पर इन नींद के मारों को होश न आया।

हे प्यारे मित्रो, हमारी आँखों के तारो! उम्र थोड़ी है और समय बहुत कम। फिर ख़ुदा के सामने हाज़िर होना है जहाँ अपने किए का जवाब देना होगा, ऐसा न हो कि एक सच्चे का इन्कार कर बैठो और फिर पछताना पड़े। जो समय बीत जाता है वह फिर हाथ नहीं आता और जो अवसर हाथ से निकल जाता है वह फिर नहीं मिलता। अत: सोचो और समझो और फिर सोचो और समझो! और हज़रत मिर्ज़ा साहिब के दावे को अपने मनगढ़ंत उसूलों से

नहीं बल्कि ख़ुदा की बताई हुई कसौटियों पर परखो और सच्चाई को ईर्ष्या द्वेष की आँखों से नहीं बल्कि सच्चाई की प्यासी नज़रों से ढूँढो। ख़ुदा तुम्हारी आँखें खोले और हमारी आँखों को ठण्डा करे। आमीन, सुम्मा आमीन !

* * *

*